केरल केंद्रीय विश्वविद्यालय
CENTRAL UNIVERSITY OF KERALA
(संसद के अधिनियम /द्वारा स्थापित 2009 वर्ष ,*Established under the Act of Parliamentin 2009)*
TEJASWINI HILLS, PERIYA P.O., KASARAGOD – 671316,KERALA

HEAD
DEPARTMENT OF HINDI & COMPARATIVE LITERATURE

CUK/HEAD/HINDI/2594/2021

Board of studies meeting Dept. of Hindi & Comparative Literature held on 21st April 2021

Venue : HoD Chamber/online

Agenda : Restructure of syllabus of M.A Hindi, Ph.D Course work, PG Diploma course in Hindi Translation and Office Procedure, PG Diploma in Hindi Journalism and Media Writing and Hindi Communicative Bridge Course.

Chair : Dr. Taru S.Pawar, Head of the Department

Board of studies Members

Sl No	Name of the Members	Designation	Signature
01	Dr. Taru S. Pawar	Chairperson	Online
02	Prof. Sudha Balakrishnan	Member	Online
03	Dr. Dharmendra Pratap Singh	Member	Online
04	Dr. Shalini M	Member	Online
05	Dr. Jayanti Prasad Nautiyal	Member	Online
06	Prof. R. Jayachandran	Member	Absent
07	Prof. Shanti Nair	Member	Online
08	Dr. Suma T. Rodanwar	Member	Online

21/5/21

Dr. Taru S. Pawar
Chairperson

विभागाध्यक्ष / Head of the Dept.
हिन्दी विभाग / Dept. of Hindi
केरल केंद्रीय विश्वविद्यालय
Central University of Kerala
कासरगोड / Kasaragod

हिन्दी विभाग / Department of Hindi
केरल केंद्रीय विश्वविद्यालय
Central University of Kerala
कासरगोड / Kasaragod

पाठ्यक्रम (Syllabus of the Course)

स्नातकोत्तर हिन्दी एवं तुलनात्मक साहित्य (MA Hindi & Comparative Literature) :

प्रोग्राम परिचय (ProgrammeIntroduction) :

केरल केंद्रीय विश्वविद्यालय के परास्नातक कार्यक्रम को पूरा करने वाले शिक्षार्थी हिन्दी साहित्य, तुलनात्मक साहित्य और आलोचनात्मक सिद्धांतों में महत्वपूर्ण चिंतन, रचनात्मक सोच, मौखिक और लिखित संचार के क्षेत्रों में ज्ञान और कौशल प्राप्त करने में सक्षम होंगे। वे अनुसंधान करने, सामाजिक संपर्क में संलग्न होने, नैतिक निर्णय लेने और किसी की सोच और व्यवहार में स्थानीय और वैश्विक दृष्टिकोणों को संश्लेषित करने की क्षमता प्रदर्शित करने में सक्षम होंगे।

कार्यक्रम के उद्देश्य (The Objectives of the Programme)

हिन्दी और तुलनात्मक साहित्य में परास्नातक कार्यक्रम का पाठ्यक्रम इस विषय में विशेषज्ञों के परामर्श से और विश्वविद्यालय में हितधारकों-माता-पिता, पूर्व छात्रों और छात्रों के साथ-साथ पूरे भारत के अन्य विश्वविद्यालयों के शिक्षाविदों से प्रतिक्रिया के साथ विकसित किया गया है। इसका उद्देश्य छात्रों को साहित्य के सामाजिक, राजनीतिक, वैचारिक और सांस्कृतिक निहितार्थों के प्रति जागरूक करना और छात्रों को अंग्रेजी और तुलनात्मक साहित्य के अनुशासन में वर्तमान विकास के साथ अद्यतन करना है। विभिन्न क्षेत्रों में व्यापक ज्ञान और कौशल का विकास, एक भाषा के रूप में हिंदी का विकास, हिंदी साहित्य का इतिहास, हिंदी साहित्य के विभिन्न ग्रंथ, हिंदी आलोचना, कार्यात्मक हिंदी और अनुवाद, हिंदी सिनेमा, हिंदी पत्रकारिता, तुलनात्मक साहित्य, दलित, आदिवासी और महिला जैसे आधुनिक साहित्य विमर्श के मध्ययम से समस्याओं की पहचान करने के लिए आवश्यक ज्ञान और कौशल विकिसित करना है। भाषा विज्ञान, कविता, आलोचना, विश्लेषण से संबंधित विभिन्न ग्रंथों, सिनेमा और पत्रकारिता के क्षेत्र में जानकारी विकसित्त करना। कार्यालयी हिन्दी जो नौकरी, व्यापार और रोजगार में प्रासंगिक हैं, जैसे शिक्षण, लेखन, सिनेमा पत्रकारिता में छात्रों को रोजगार के लिए तैयार करना।

पाठ्यक्रम उपयोगिता (Programme Outcomes) :

कार्यक्रम के पूरा होने पर छात्रों को निम्नलिखित कार्यक्रम विशिष्ट परिणाम प्राप्त करने में सक्षमहोंगे-

1. हिन्दी भाषा, हिन्दी साहित्य और तुलनात्मक साहित्य, रचनात्मक लेखन, प्रस्तुति और अनुसंधान के शिक्षण में कैरियर के लिए एक मजबूत नींव का निर्माण होगा।

2. साहित्यिक ग्रंथों के आलोचनात्मक विश्लेषण में साहित्यिक सिद्धांत की प्रमुख अवधारणाओं की समालोचनात्मक रूप से जानकारी मिलेगी।
3. सांस्कृतिक अध्ययन और सीमाओं के पार संबंधित बुनियादी अवधारणाओं और सिद्धांतों की विश्लेषण क्षमता का विकास होगा।
4. साहित्य के ज्ञान के साथ-साथ अनुसंधान में प्रमुख विश्लेषणात्मक और सैद्धांतिक ढांचे की समझ बढ़ेगी।
5. साहित्यिक और सांस्कृतिक विश्लेषण में तुलनात्मक अध्ययन के उपकरण की समझ बढ़ेगी।
6. भाषाओं और संस्कृतियों में साहित्यिक, रचनात्मक और अभिव्यक्ति के अन्य तरीकों की जानकारी।
7. विश्लेषणात्मक तर्कों का विकास।
8. ग्रंथों, दृष्टिकोणों और सिद्धांतों की तुलना और तुलना करके आलोचनात्मक सोच का तरीका विकसित करना।
9. अनुशासन के विकास की दिशा की समझ और राजनीतिक और सौंदर्य संबंधी चिंताओं का स्पष्टीकरण।
10. हिन्दी और तुलनात्मक साहित्य में पेशेवर रिपोर्ट, समीक्षा और अकादमिक शोध पत्र लेखन कला का विकास।
11. अकादमिक लेखन में क्षमता का प्रदर्शन।
12. गंभीर सोच और विश्लेषणात्मक तर्क क्षमता का प्रदर्शन।
13. विभिन्न विषयों के आलोक में साहित्यिक पाठ का विश्लेषण।
14. नैतिक और नैतिक जागरूकता/तर्क क्षमता का प्रदर्शन।
15. अनुसंधान संबंधी कौशल का विकास।
16. सहयोग/सहयोग/टीमवर्क की क्षमता का विकास।
17. सूचना/डिजिटल साक्षरता आईसीटी का उपयोग करने की क्षमता प्रदर्शित करने और सीखने की कला का विकास।
18. हिंदी भाषा और साहित्य में अनुसंधान पद्धति के साथ-साथ विभिन्न अंतःविषय दृष्टिकोणों का ज्ञान।
19. जीवन भर सीखना, पढ़ने की आदत की क्षमता का विकास।
20. उन्नत क्षेत्रों में अंतरराष्ट्रीय मानकों का अनुसंधान करना।
21. नेतृत्व की तैयारी/गुण के लिए क्षमता प्रदर्शित करने के लिए एक टीम के रूप में संगठन, एक प्रेरक दृष्टि के रूप में विकास।

केरल केंद्रीय विश्वविद्यालय

CENTRAL UNIVERSITY OF KERALA

School of Languages and Comparative Literature
Department of Hindi and Comparative Literature

भाषा एवं तुलनात्मक साहित्य विद्यापीठ
हिंदी एवं तुलनात्मक साहित्य विभाग

पाठ्यक्रम एम० ए०
हिंदी एवं तुलनात्मक साहित्य विभाग
प्रवेश वर्ष 2021 से प्रारंभ

Syllabus
M.A. Hindi & Comparative Literature
Admission 2021 Onwards

पाठ्यक्रम समिति

एम0ए0 (हिन्दी एवं तुलनात्मक साहित्य)

पाठ्यक्रम समिति :

01	डॉ.तारु एस.पवार	उपाचार्य एवं अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, केरल केंद्रीय विश्वविद्यालय, केरल	अध्यक्ष
02	प्रो. सुधा बालकृष्णन	आचार्य, हिन्दी विभाग, केरल केंद्रीय विश्वविद्यालय, केरल	सदस्य
03	डॉ. धर्मेंद्र प्रताप सिंह	सहायक आचार्य, हिन्दी विभाग, केरल केंद्रीय विश्वविद्यालय, केरल	सदस्य
04	डॉ. शलिनी एम.	सहायक आचार्य, अँग्रेजी विभाग, केरल केंद्रीय विश्वविद्यालय, केरल	सदस्य
05	डॉ. जयंतीप्रसाद नौटियाल	डायरेक्टर जनरल, वैश्विक हिन्दी शोध संस्थान, देहरादून	सदस्य
06	प्रो. (डॉ.) जयचन्द्रन आर.	आचार्य एवं अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, केरल विश्वविद्यालय, तिरुवनंतपुरम, केरल	सदस्य
07	प्रो. (डॉ.) शांति नायर	आचार्य एवं अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, श्री शंकराचार्य संस्कृत विश्वविद्यालय, केरल	सदस्य
08	डॉ. सुमा रोडनवर	उपाचार्य एवं पी. जी. संयोजक, हिन्दी विभाग, विश्वविद्यालय कॉलेज मंगलोर, कर्नाटक	सदस्य

Syllabus Committee

M A (Hindi and Comprative Literature)

Syllabus Committee :

01	Dr. Taru S. Pawar	Associate Professor & Head, Department of Hindi, CUK.	Chairperson
02	Prof. Sudha Balakrishnan	Professor, Department of Hindi, CUK.	Member
03	Dr. Dharmendra Pratap Singh	Assistant Professor, Department of Hindi, CUK.	Member
04	Dr. Shalini M	Assistant Professor, Department of English, CUK.	Member
05	Dr. Jayanti Prasad Nautiyal	Director General, Global Hindi Research Institute, Dehradun.	Member
06	Prof. (Dr.) Jayachandran R.	Professor & Head, Department of Hindi, Kerala University, Kerala	Member
07	Prof. (Dr.) Shanti Nair	Professor & Head, Deaprtment of Hindi, Sree Sankarachayaya University of Sanskrit, Kalady, Kerala.	Member
08	Dr. Suma T. Rodanvar	Associate Professor & P.G. Co-ordinator, Department of Hindi, University College, Mangalore, Karanataka.	Member

M.A. Hindi and Comparative Literature

Syllabus Design :

MA (Hindi & Comparative Literature) programme is included in the Post Graduate programme of the Department of Hindi of the University. This programme is intended to acquire the Masters degree in Hindi & Comparative Literature. The curriculum is designed by Eminent professors, scholars and critics of Hindi in India.

In the MA Programme, there are three types of courses: Hard core Course (HC), Soft core Course (SC), and Elective Course (EC). Hard core course cannot be substituted by any other course. Soft core course is offered from within the Department and elective course are from other departments. There is also a project/Dissertation carrying 6 Credits.

The programme lasts for 4 Semesters. The students get the degree after successfully completing 72 credits in the programme. Of these, 60 credits must be from the core course offered in the Department. The other credits can be obtained from the elective courses. The total number of core credits including that of Hard core Course, soft core course and project shall not exceed 60 credits and shall not be lessthan 48 credits under the guidance of the faculty advisor who shall consider the relevance of the courses to the program and also the student's ability, a student may choose any course offered in the University as elective course. However, no students may register for elective exceeding 8 credits in a semester.

This degree is equivalent to MA in Hindi and MA in Comparative Literature. Its design enables those who complete this course successfully with 55 percentage marks to appear for UGC's JRF/ NET examinations in Hindi as well as in Comparative Literature.

Depending on the availability of expertise the elective course may vary from semester to semester. Some elective courses offered by the Department are open for students from other department also. The broad areas of the electives offered by the Department are given below. The specific title of the course to be offered and its prerequisites will be made available in the beginning of each academic year after the approval of the Board of Studies. An elective course could be either a basic course or an advanced course. Basic course is offered in the odd semesters and advanced course is offered in the even semesters. The title of the course may be suffixed 'I' for basic course and 'II' for advanced course. Successful completion of a basic course is mandatory in order to take up its advanced level.

Course Code :

The 7 characters code comprises of 3 letters and 4 digits: (E.g. LHC 5101). The letters represents the name of School and Department / Centers. E.g. LHC = (School of) Languages, (Department of) Hindi and Comparative Literature. The digits are arranged differently for hard core and soft core courses. In Hard Core Course, the first digit represents the level of the program. E.g. '5' represents post graduate program, where one graduates in the 5th year of joining the college/ university. The second digits shows the semester in which the core courses is offered. The third and fourth digit represents the number of the course. Elective courses may be offered at basic level in the odd semesters and at advanced levels in the even semesters. The title of these courses should be suffixed with 'I' for basic level courses and with 'II' or advanced level courses

पाठ्यक्रम : स्नातकोत्तर हिन्दी एवं तुलनात्मक साहित्य

Code	पाठ्यक्रम व विषयवस्तु	L	T	P	C
सेमेस्टर-1	आधारभूत पाठ्यक्रम				16
LHC5101	हिन्दी साहित्य का इतिहास (आदिकाल से रीतिकाल तक)	**3**	**1**		**4**
LHC5102	प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य	**3**	**1**		**4**
LHC5103	तुलनात्मक साहित्य की प्रविधि	**3**	**1**		**4**
LHC5104	भारतीय साहित्य	**3**	**1**		**4**
सेमेस्टर-2					20
LHC5201	हिन्दी साहित्य का आधुनिक काल	**3**	**1**		**4**
LHC5202	सामान्य भाषा विज्ञान और भाषा का इतिहास एवं संरचना	**3**	**1**		**4**
LHC5203	आधुनिक कथा साहित्य	**3**	**1**		**4**
LHC5204	हिन्दी गद्य साहित्य की अन्य विधाएँ	**3**	**1**		**4**
Elective Paper	वैकल्पिक प्रश्नपत्र	3	1		4
सेमेस्टर-3					20
LHC5301	भारतीय एवं पाश्चात्य साहित्य सिद्धांत	**3**	**1**		**4**
LHC5302	अनुवाद सिद्धांत एवं प्रयोग	**3**	**1**		**4**
LHC5303	आधुनिक काव्य	3	1		4
LHC5304	निबंध और आलोचना	**3**	**1**		**4**
Elective Paper	वैकल्पिक प्रश्नपत्र	3	1		4
सेमेस्टर-4					16
LHC5401	हिन्दी नाटक एवं रंगमंच	**3**	**1**		**4**
LHC5402	तुलनात्मक साहित्य	**3**	**1**		**4**
LHC5403	लघु शोध-प्रबंध			**4**	**4**
Elective Paper	वैकल्पिकप्रश्नपत्र	**3**	**1**		**4**
	ऐच्छिक विषय				
LHC5001	पत्रकारिताएवंमीडिया लेखन	**3**		**1**	**4**
LHC5002	प्रयोजनमूलक हिन्दी *	**3**		**1**	**4**
LHC5003	भाषा प्रद्योगिकी एवं हिंदी कंप्यूटिंग	3		1	4
LHC5004	हिन्दी भाषा शिक्षण	3		1	4
LHC5005	दलित साहित्य	**3**	**1**		**4**
LHC5006	स्त्री लेखन	**3**	**1**		**4**
LHC5007	लोक जगारण और भक्तिकाल	3	1		4
LHC5008	आदिवासी साहित्य का अध्ययन	**3**	**1**		**4**
LHC5009	लोक साहित्य	3	1		4

LHC5010	हिंदी साहित्य सिनेमा और समाज	3	1		4
LHC5011	केरल का हिन्दी लेखन	**3**	**1**		**4**
LHC5012	भारतीय संस्कृति	**3**	**1**		**4**
LHC5013	सांस्कृतिक पर्यटन (केरल के संदर्भ में)	**3**	**1**		**4**
LHC5014	हिन्दी नवजागरण	**3**	**1**		**4**
LHC5015	हिन्दी साहित्य में पारिस्थितिक विमर्श	**3**	**1**		**4**
LHC5016	हिन्दी साहित्य और मानवाधिकार	**3**	**1**		**4**
LHC5017	अनुदित विश्व साहित्य	**3**	**1**		**4**
LHC5018	जन संस्कृति	**3**	**1**		**4**

*ऐच्छिक विषय पढ़ाने का अन्तिम निर्णय विभाग द्वारा होगा।

*इनमें से किसी एक विषय के लिए पाठ्यचर्या के दौरान अध्ययन-यात्रा अनिवार्य मानी गई है।

स्नातकोत्तर हिन्दी एवं तुलनात्मक साहित्य (M.A. Hindi & Comparative Literature)

पाठ्यक्रम (Syllabus of the Course)

LHC 5101 – हिन्दी साहित्य का इतिहास (आदिकाल से रीतिकाल तक) :

Course Code	LHC 5101	Semester	I(First)
Name of Course	हिन्दी साहित्य का इतिहास : आदिकाल से रीतिकालतक (Hindi Sahitya Ka Itihaas : Adikal Se Ritikal Tak)		
क्रेडिट	4	Type	Core

पाठ्यक्रम परिचय (Course Description) :

हिन्दी साहित्य के इतिहास दर्शन और वृहद् परंपरा से छात्रों को परिचित बनाने के साथ साहित्यिक विकास की वैज्ञानिकता, काल विभाजन की तार्किकता के साथ संवेदनात्मक स्तर पर साहित्य की मन:स्थिति से परिचित कराना है।चार खण्डों में बँटा यह प्रश्नपत्र हिन्दी साहित्य के आदिकाल, मध्यकाल, रीतिकाल और आधुनिक काल के विभेदों, प्रमुख प्रवृत्तियों से परिचित कराने के बाद आधुनिक युग में हिन्दी नवजागरण की प्रमुख प्रवृत्तियों पर विचार किया जायेगा।

पाठ्यक्रम उपयोगिता (Course Outcome) :

- हिन्दी साहित्य के इतिहास दर्शन और वृहद् परंपरा से छात्रों को परिचितकराना।
- साहित्यिक विकास की वैज्ञानिकता, काल विभाजन की तार्किकता के साथ संवेदनात्मक स्तर पर साहित्य की मन:स्थिति से परिचित कराना।
- विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए छात्रों को पहले से तैयारी में सहायता मिलेगी ।

पाठ्यक्रम (Couse Structure) :

पाठ्यक्रम का सम्पूर्ण विवरण इस प्रकार है-

इकाई- एक (इतिहास दर्शन) :

इतिहास की अवधारणा, हिन्दी साहित्य के इतिहास लेखन की परंपरा, इतिहास लेखन की दृष्टि और विचारधारा, प्रमुख इतिहासकार और उनके ग्रंथ, उनकी प्रामाणिकता, कालविभाजन, नामकरण की समस्या , आदिकाल, आदिकालीन हिन्दी साहित्य की पृष्ठभूमि, प्रमुख साहित्यिक धाराएँ, रासों काव्य परंपरा, सिद्ध, नाथ, जैन साहित्य, खुसरो साहित्य ।

इकाई- दो (पूर्व मध्यकाल-निर्गुण भक्तिशाखा) :

निर्गुण भक्ति शाखा, भक्ति आंदोलन के विकास की पृष्ठभूमि, भक्ति आंदोलन और सांस्कृतिक समन्वय, निर्गुण भक्ति काव्य, संत काव्य और उसकी सामान्य प्रवृत्तियाँ, संत काव्य के श्रेष्ठ कवि, सूफी काव्य की सामान्य विशेषताएँ, श्रेष्ठ सूफी कवियों की परंपरा।

इकाई- तीन (पूर्व मध्यकाल- सगुण भक्ति शाखा) :

सगुण भक्ति काव्य की सामान्य विशेषताएँ, राम भक्ति धारा की सामान्य प्रवृत्तियाँ, तुलसीदास का राम काव्य, राम काव्य का समाजशास्त्रीय मूल्यांकन,राम भक्ति शाखा के प्रमुख कवि और उनकी श्रेष्ठ रचनाएँ, कृष्ण भक्ति शाखा की विशेषताएँ, सूरदास और उनकी कृष्ण भक्ति, सूर का वात्सल्य वर्णन, अष्टछाप और उनके प्रमुख कवि, कृष्ण भक्ति शाखा के प्रमुख कवि और उनकी रचनाएँ।

इकाई- चार (उत्तर मध्यकाल या रीतिकाल) :

रीतिकालीन साहित्य की सामान्य पृष्ठभूमि, रीतिकाल का शास्त्रीय आधार, रीतिकाल की सामान्य प्रवृत्तियाँ, रीतिकाल की सामान्य प्रवृत्तियाँ और उनका प्रमुख कवि और उनके काव्य, रीतिकालीन साहित्य का मूल्यांकन।

परीक्षा पद्धति (pattern of Examination) :

- **आंतरिक परीक्षा (कुल अंक 40) :** लिखित परीक्षा-15 अंक, सेमिनार-10 अंक, प्रदत्त कार्य-10 अंक, अन्य गतिविधियाँ (Overall)- उपस्थिति, छात्र व्यवहार, सांस्कृतिक गतिविधियाँ आदि - 5 अंक।
- **सत्रांत परीक्षा : (कुल अंक 60)** खंड 'क' में 1 से 10 बहुविकल्पीय प्रश्न होंगे जिसमें क, ख, ग और घ के रूप में चार विकल्प होंगे (10x1= 10)। खंड 'ख' में 11 से 16 संक्षिप्त टिप्पणी होंगी जिनमें से चार करने होंगे (4x5= 20)। खंड 'ग' 17 से 21 दीर्घ उत्तरीय (निबंध स्तरीय) प्रश्न होंगे जिनमें तीन लिखने होंगे (3x10 = 30)।

संदर्भ ग्रंथ :

1. आचार्य रामचंद्र शुक्ल, हिन्दी साहित्य का इतिहास, नागरी प्रचारणी सभा
2. डॉ.धीरेन्द्र वर्मा (संपादक), हिन्दी साहित्य (तीन खण्ड)
3. डॉ.नगेन्द्र, हिन्दी साहित्य का इतिहास, मयूर पेपर बैक्स
4. रामकुमार वर्मा, हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
5. आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी, हिन्दी साहित्य की भूमिका
6. डॉ.रामविलास शर्मा, हिन्दी जाति का इतिहास
7. डॉ.गुलाबराय, हिन्दी साहित्य का सुबोध इतिहास
8. डॉ.हजारीप्रसाद द्विवेदी, हिन्दी साहित्य का उद्भव और विकास
9. डॉ.गणपतिचंद्र गुप्त, हिन्दी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास
10. डॉ.बच्चन सिंह, हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, डॉ.विजयेन्द्रस्नातक
11. हिन्दी साहित्य का इतिहास, साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली
12. डॉ.सूर्यप्रसाद दीक्षित, हिन्दी साहित्येतिहास की भूमिका (चार भाग), हिन्दी संस्थान, लखनऊ
13. शिवकुमार शर्मा, हिन्दी साहित्य : युग और प्रवृत्तियाँ, अशोक प्रकाशन, नई दिल्ली

LHC 5102 – प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य :

Course Code	LHC 5102	Semester	I(First)
Name of Course	प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य (Pracheen Aur Madhyakaleen Kavya)		
क्रेडिट	4	Type	Core

पाठ्यक्रम परिचय (Course Description) :

मध्यकालीन हिन्दी साहित्य साहित्येतिहास में बेजोड़ है।यहाँ प्रवृत्तिमार्गी एवं निवृत्तिमार्गी कवियों का संगम और जनता के बीचोंबीच खड़े होकर धार्मिक, सामाजिकसमानता के स्वर मुखरित करने वाले, जनता के बोली में कथन शैली में बढ़ाने वाले कवि प्रतिभा पा जाते हैं। उनकी कविताओं का एक सौन्दर्यशास्त्र है, जो दलितों और पीड़ितों के लिए अपना ही सौन्दर्यशास्त्र रचता है।समस्त भारतीय साहित्य में भक्ति आन्दोलन का स्वर मुखरित हुआ।लेकिन भक्ति से रीति तक कुछेक कवि ऐसे पाये जाते हैं जो शास्त्र और सौन्दर्य के कवि के रूप में, दरबारी कवि के रूप में राज्याश्रित भी होते गये।अत: हिन्दी साहित्य का मध्यकाल भक्ति, श्रृंगार और काव्य शास्त्रीय दृष्टि से उल्लेखनीय है।निर्गुण में संत, सूफी और सगुण में राम, कृष्ण की आराधना को केन्द्र में रखकर युगद्रष्टा कवि चुने जाते हैं।कृष्णभक्त कवियत्री मीराबाई का विस्तृत अध्ययन या तो ऐच्छिक रूप से लिया जा सकता है, या प्रत्येक पाठ्यक्रम में छात्रों को यह चयन की छूट दी जा सकती है कि वे सूरदास या मीराबाई में किसी एक का चयन कर सकेंगे।रीतिकाल के दो विशेष प्रतिनिधि कवियों के रूप में बिहारी और घनानंद को भी चुना गया है।

पाठ्यक्रम उपयोगिता (Course Outcome) :

- प्राचीन और मध्यकालीन कवियों के बारे में जानकारी हासिल करना।
- NET/JRF तथा अन्य प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए छात्रों को तैयार करना।
- तत्कालीन समाज, संस्कृति और राजनीति से परिचित होना।
- प्रेम और भक्ति के माध्यम से भारतीय दर्शन के उत्स को समझना।
- शृंगारिकता और प्रकृति का ज्ञान।

पाठ्यक्रम (Couse Structure) :

पाठ्यक्रम का सम्पूर्ण विवरण इस प्रकार है-

इकाई– एक:

आदिकाल के प्रमुख कवि, विद्यापति की रचनाधर्मिता, विद्यापति की श्रेष्ठ रचनाएँ, विद्यापति की भाषा शैली, विद्यापति की भक्ति भावना , रासो काव्य की विशेषताएँ, आदिकालीन काव्य रुढियाँ, विद्यापति पदावली : रामवृक्ष बेनीपुरी – कुल

पांच पद - 3,5,7,8,10 (कुल पांच पद), पद्मावती समय (पृथ्वीराज रासो) – 1,4,12,16,17, 22, 39, 68 (कुल आठ पद)

इकाई- दो

ज्ञानाश्रयी शाखा के श्रेष्ठ कवि कबीर और उनका समाज सुधारक रूप, कबीर का रहस्यवाद, वाणी के डिक्डेटर कबीर, कबीर के दोहों के सामाजिक, धार्मिक और सास्कृतिक पक्ष। प्रेमाश्रयी शाखा के श्रेष्ठ कवि जायसी, जायसी का व्यक्तित्व एवं कृतित्व और उनकी काव्य की विशेषताएँ, विरह वर्णन का स्वरुप, जायसी के काव्य में समासोक्ति अन्योक्ति, विश्व बंधुत्व की भावना, पद्मावत पर हिन्दी विद्वानों के विचार। कबीर : हजारीप्रसाद द्विवेदी-(भक्ति भावना, समाज दर्शन, विद्रोह भावना, प्रासंगिकता) 162, 172, 176, 179, 190, 202 (कुल छह पद)। जायसी- पद्मावत : रामचंद्र शुक्ल -नागमती वियोग खंड (प्रेम भावना, लोक तत्व) –1, 2, 3, 5,10, 13, 17, 19(कुल आठ पद)।

इकाई- तीन

कृष्ण भक्ति शाखा के श्रेष्ठ कवि सूरदास और उनकी भक्ति भावना, सूरदास और उनका भ्रमरगीत, भ्रमरगीत परंपरा, भ्रमरगीत का नवऔपनिवेशिक संदर्भ में विवेचन, राम भक्ति शाखा के श्रेष्ठ कवि तुलसीदास के व्यक्तित्व एवं कृतित्व, तुलसी के काव्य में समन्वयात्मकता और लोक मंगल की कामना, रामचरितमानस की वर्तमान संदर्भ में सार्थकता। सूरदास : भ्रमरगीत सार- रामचंद्र शुक्ल -21, 24, 38, 50, 55, 62 (कुल छह पद)। रामचरितमानस का उत्तरकांड : संपा-वियोगी हरि – दोहा-चौपाई संख्या- 21 से 30 तक वात्सल्य वर्णन से दो पद जोड़ना है

मीरा : विश्वनाथ त्रिपाठी, प्रारंभिक 10 पद

इकाई- चार (हिन्दी के अन्य गद्य विधाएँ -2) :

रीतिकाल के श्रेष्ठ कवि बिहारी और उनकी रचनाधर्मिता , गागर में सागर भरने की शैली, रीतिमुक्त कवि घनानंद और उनका प्रेम वर्णन , घनानंद के प्रेम की स्वच्छंदता , कृष्ण भक्ति की गायिका मीरा, मीरा के प्रेम की स्वच्छंदता. स्त्री विमर्श के तहत मीरा,बिहारी सतसई : जगन्नाथ दास रत्नाकर (संपा) (श्रृंगारिक्ता, बहुज्ञता) –प्रारंभिक 15 दोहे,घनानंद कवित्त : विश्वनाथ प्रसाद मिश्र (संपा)- (स्वछंद प्रेम योजना) प्रारंभिक 10 कवित्त।

परीक्षा पद्धति (pattern of Examination) :

- **आंतरिक परीक्षा (कुल अंक 40) :** लिखित परीक्षा-15 अंक, सेमिनार-10 अंक, प्रदत्त कार्य-10 अंक, अन्य गतिविधियाँ (Overall)- उपस्थिति, छात्र व्यवहार, सांस्कृतिक गतिविधियाँ आदि - 5 अंक ।
- **सत्रांत परीक्षा : (कुल अंक 60)** खंड 'क' में 1 से 10 बहुविकल्पीय प्रश्न होंगे जिसमें क, ख, ग और घ के रूप में चार विकल्प होंगे (10x1= 10)। खंड 'ख' में 11 से 16 ससंदर्भ व्याख्या (RC) होंगी जिनमें से चार करने होंगे (4x5= 20)। खंड 'ग' 17 से 21 दीर्घ उत्तरीय (निबंध स्तरीय) प्रश्न होंगे जिनमें तीन लिखने होंगे (3x10 = 30)।

संदर्भ ग्रंथ :

1. विजेन्द्र स्नातक (सं)कबीर, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
2. आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी, कबीर, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
3. माताप्रसाद गुप्त, कबीर ग्रंथावली, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी
4. आचार्य रामचंद्र शुक्ल, जायसी ग्रंथावली, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी
5. वासुदेवशरण अग्रवाल, पद्मावत, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी
6. रामविलास शर्मा, परंपरा का मूल्यांकन, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
7. रामविलास शर्मा, भारतीय सौंदर्यबोध और तुलसीदास, साहित्य अकादमी, दिल्ली
8. तुलसीदास, रामचरितमानस सटीक, गीता प्रेस, गोरखपुर
9. आचार्य रामचंद्र शुक्ल, सूरदास- भ्रमरगीत सार
10. जगन्नाथ दास रत्नाक, बिहारी रत्नाकर, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
11. विश्वनाथ प्रसाद मिश्र, घनानंद कवित्त, संजय बुक सेंटर, वाराणसी
12. रामचंद्र शुक्ल, सूरदास, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
13. रघुवंश, कबीर एक नई दृष्टि, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
14. रामचंद्र तिवारी, कबीर मीमांसा, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
15. रमेश कुंतल मेघ, तुलसी, आधुनिक वातायन से, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली
16. उदयभानु सिंह, तुलसी काव्य मीमांसा, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली
17. विश्वनाथ त्रिपाठी, लोकवादी तुलसीदास, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
18. रघुवंश , जायसी : एक नई दृष्टि, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
19. प्रभाकर श्रोत्रिय, कबीरदास : विविध आयाम, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
20. नंददुलारे वाजपेयी, महाकवि सूरदास, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, हजारीप्रसाद द्विवेदी
21. सूर साहित्य, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद

LHC 5103 –तुलनात्मक साहित्य की प्रविधि :

Course Code	LHC 5103	Semester	I (First)
Name of Course	तुलनात्मक साहित्य की प्रविधि (Tulnatmak Sahitya ki Pravidhi)		
क्रेडिट	4	Type	Core

पाठ्यक्रम परिचय (Course Description) :

प्रस्तुत खंड में तुलनात्मक साहित्य के प्रमुख उपादानों और मूलाधारों को समझाने का प्रयास किया जाएगा, साथ-साथ साहित्य इतिहास की रचना, साहित्यिक सांस्कृतिक अन्तःसंबंधों आदि से छात्रों को अवगत करने का प्रयास भी। अनुप्रयुक्त अध्ययन का रास्ता खोले रखने के लिए नमूने के तौर पर हिंदी साहित्यिक विद्या को छायावाद को लिया जाता है और रोमांटिसिज्म जैसे सामान वैश्विक विधान से तालमेल बिठाने का अवसर दिया जा सकता है। बहुमुखी साहित्यकार के रचना कौशल को जानने के लिए हिंदी के कवि, उपन्यासकार को जानने का अवसर दिया जा सकता है। संस्कृत साहित्य के विरासत में,विश्व भाषा में रचना होती है तो हिंदी साहित्य में भी उनका अनुसरण देखने को मिलाता है और प्रविधि में इन संबंधों का सिलसिला समझाया जा सकता है। उत्तर-उपनिवेशवादी रंगमंच और शतरंज के ख़िलाड़ी (प्रेमचंद) का रचना समय जानने से तुलनात्मक साहित्य का साहित्येतर विधाओं से संबंध स्थापित करते दिखये जा सकते है।

पाठ्यक्रम उपयोगिता (Course Outcome):

1. भारतीय एवं विश्व साहित्य की पहचान, अतएव राष्ट्रीय एकता में सहायक।
2. शोध कार्य में नई दृष्टि का सृजन।
3. अंतरअनुशासनिक अध्ययन को बढ़ावा देना।
4. रोज़गार के साहित्येत्तर अवसर।

पाठ्यक्रम (Couse Structure) :

पाठ्यक्रम का सम्पूर्ण विवरण इस प्रकार है-

इकाई- एक

तुलनात्मक साहित्य –प्रमुख उपादान, तुलनात्मक साहित्य के मूलाधार, तुलनात्मक साहित्य में अनुवाद की भूमिका,

तुलनात्मक साहित्यिक क्षेत्र

इकाई- दो

छायावाद और रोमांटिसिज्म

इकाई- तीन

कालिदास के मेघदूतम् और मोहन राकेश का आषाढ़ का एक दिन

इकाई- चार

उत्तर-उपनिवेशवादी रंगमंच और शतरंज के ख़िलाड़ी (प्रेमचंद) का रचना समय

परीक्षा पद्धति (Pattern of Examination) :

- **आंतरिक परीक्षा (कुल अंक 40) :** लिखित परीक्षा-15 अंक, सेमिनार-10 अंक, प्रदत्त कार्य-10 अंक, अन्य गतिविधियाँ (Overall)- उपस्थिति, छात्र व्यवहार, सांस्कृतिक गतिविधियाँ आदि - 5 अंक ।
- **सत्रांत परीक्षा : (कुल अंक 60)** खंड 'क' में 1 से 10 बहुविकल्पीय प्रश्न होंगे जिसमें क, ख, ग और घ के रूप में चार विकल्प होंगे (10x1= 10)। खंड 'ख' में 11 से 16 टिप्पणी होंगी जिनमें से चार करने होंगे (4x5= 20)। खंड 'ग' 17 से 21 दीर्घ उत्तरीय (निबंध स्तरीय) प्रश्न होंगे जिनमें तीन लिखने होंगे (3x10 = 30)।

संदर्भ ग्रंथ :

1. इन्द्रनाथ चौधरी, तुलनात्मक साहित्य : भारतीय परिप्रेक्ष्य
2. बी.एच. राजुलकर,राजमल बोरा, तुलनात्मक अध्ययन : स्वरूप एवं संभावनाएँ, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
3. के.सच्चिदानंद, भारतीय साहित्य : स्थापनाएँ और प्रस्तावनाएँ
4. यू. आर.अनंतमूर्ति, किस प्रकार की है ये भारतीयता
5. प्रभाकर माचवे, आज का भारतीय साहित्य
6. प्रो.बी.वाई ललिताम्बा, तुलनात्मक साहित्य और अनुवाद
7. S.K. Das, A History of Hindi Literature, Vol-1
8. Susan Bassnet, Comparative Literature
9. K. Arvindakshan, Comparative Indian Literature
10. Amlya Dev, Idea of Comparative Literature
11. Anjala Maharish, A Comparative Study of Breethian Classical Indian Theater
12. Spivak Gaytri Chakravorty, Death of Discipline

LHC 5104 – भारतीय साहित्य :

Course Code	LHC 5104	Semester	I (First)
Name of Course	भारतीय साहित्य (Bhartiya Sahitya)		
क्रेडिट	4	Type	Core

पाठ्यक्रम परिचय (Course Description) :

भारतीय साहित्य के अंतर्गत भारतवर्ष के विभिन्न क्षेत्रें में विभिन्न कालखण्डों में लिखे गये साहित्य के जारिए भारतीयता की खोज कराना इस खण्ड का उद्देश्य है।भारतीय साहित्य की अंत:चेतना से छात्रों को परिचित करना भी है।जिस प्रकार मध्यकालीन साहित्यिक चेतना से समस्त दुनिया को एक-दो शताब्दियों में अपने दायरे में समेट लिया था, उसी प्रकार भारत के औपनिवेशिक परिवेश में उत्तर से लेकर दक्षिण तक और पूर्व से लेकर पश्चिम तक की जागरण स्थितियाँ पैदा हो गई।भारतीय भाषाओं में जो कालजयी कृतियाँ रची गई, उनके कथ्य और शिल्प भारतीय साहित्य की विविधता में एक होने का निदान है।भारतीय साहित्य की अवधारणा से लेकर उसकी परंपरा, अंत:चेतना जैसे सैद्धांतिक मुद्दों को समझाते हुए भारत की कालजयी कृतियों से छात्रों को अवगत कराया जायेगा ताकि उन्हें कृतियों की राहों से साहित्यास्वादन का मार्ग प्रशस्त हो।इसमें अन्य कृतियों को भी परखने की जिज्ञासा छात्रों में जग सकती है।

पाठ्यक्रम उपयोगिता (Course Outcome):

- हिंदी के माध्यम से भारतीय साहित्य की बुनियादी जानकारी प्राप्त करना।
- प्रांतीय भाषाओँ के अनुवाद के जरिए हिंदी को समृद्ध करने का मार्ग दिखाना।
- क्षेत्रीय संस्कृति और सोच को भारतीय साहित्य का हिस्सा बनाने की दिशा में छात्रों का दृष्टि विकास करना।
- जहाँ अन्य पर्चों में हिंदी साध्य है, इस पर्चे में हिंदी साधन है जिसकी जानकारी छात्रों को देना ही यहाँ उद्देश्य है।

पाठ्यक्रम (Couse Structure) :

पाठ्यक्रम का सम्पूर्ण विवरण इस प्रकार है-

इकाई– एक (भारतीय साहित्य : संक्षिप्त परिचय)

भारतीय साहित्य का स्वरूप और अवधारणा, भारतीयता, भारतीयताके तत्व, भारतीय साहित्य की परंपरा, भारतीय साहित्य की अंत:चेतना, विविधता में एकता का संकल्प।

इकाई– दो (उपन्यास)

रवीन्द्रनाथ टैगोर : गोरा (प्रारंभ के पचास पृष्ठों से व्याख्या तथा आलोचनात्मक अध्ययन)

इकाई- तीन (कहानी)

कन्नड़-बिके लोग- देवनूर महादेव (अनु- बी. आर नारायण), तेलगू- छाया और यथार्थ-जलंधरालो (अनु-ज़े.एन.रेड्डी), पंजाबी- लेहा प्रेम – गोरखी (अनु-कीर्ति केसर), मलयालम – सूर्यन (कमलादास), मराठी –साहब,दीदी और गुलाम – दया पावर (अनु-रतिलाल शाहीन)

इकाई- चार (कविताऔर नाटक)

सुब्रमण्यम भारती की एकप्रमुख कविता (निर्भय),**नाटक** – विजय तेंदुलकर खामोश अदालत जारी है।

परीक्षा पद्धति (Pattern of Examination) :

- **आंतरिक परीक्षा (कुल अंक 40) :** लिखित परीक्षा-15 अंक, सेमिनार-10 अंक, प्रदत्त कार्य-10 अंक, अन्य गतिविधियाँ (Overall)- उपस्थिति, छात्र व्यवहार, सांस्कृतिक गतिविधियाँ आदि - 5 अंक ।
- **सत्रांत परीक्षा : (कुल अंक 60)** खंड 'क' में 1 से 10 बहुविकल्पीय प्रश्न होंगे जिसमें क, ख, ग और घ के रूप में चार विकल्प होंगे (10x1= 10)। खंड 'ख' में 11 से 16 ससंदर्भ व्याख्या (RC) होंगी जिनमें से चार करने होंगे (4x5= 20)। खंड 'ग' 17 से 21 दीर्घ उत्तरीय (निबंध स्तरीय) प्रश्न होंगे जिनमें तीन लिखने होंगे (3x10 = 30)।

संदर्भ ग्रंथ :

1. नगेन्द्र, भारतीय साहित्य, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली
2. के.सच्चिदानंद, भारतीय साहित्य : स्थापनाएँ एवं प्रस्तावनाएँ, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
3. तारकनाथ बाली, भारतीय साहित्य सिद्धांत, शब्दकार, दिल्ली
4. रामविलास शर्मा, भारतीय साहित्य के इतिहास की समस्याएँ, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
5. Sisir Kumar Das, History of Indian Literature : 1911-1956, Struggle for Freedom : Trimph and Tragedy, Sahitya Academy, Amiya Dev
6. Idea of Comparative Literature
7. रामछबीला त्रिपाठी, यू.जी.सी.के नवीनतम पाठ्यक्रम के अनुसार भारतीय साहित्य देश के समस्त विश्वविद्यालयों के स्नातकोत्तर स्तर के संपूर्ण पाठ्यक्रम, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
8. रामविलास शर्मा, भारतीय साहित्य की भूमिका, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
9. रविशंकर, साहित्य और भारतीय एकता, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली
10. डॉ.आरसु, भारतीय साहित्य : आशा और आस्था, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली
11. लक्ष्मीकांतपाण्डेय/प्रमिला अवस्थी, भारतीय साहित्य, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद

LHC 5201 – हिन्दी साहित्य का आधुनिक काल :

Course Code	LHC 5201	Semester	II (Second)
Name of Course	हिन्दी साहित्य का आधुनिक काल (Hindi Sahitya Ka Adhunik Kal)		
क्रेडिट	4	Type	Core

पाठ्यक्रम परिचय (Course Description) :

आधुनिक काल में हिंदी साहित्य का विकास नाना रूपों में हुआ है। यह अपनी काव्य परंपरा से आगे बढ़ाते हुए नाटक, कहानी, उपन्यास, निबंध, आलोचना, संस्मरण,जीवनी रेखाचित्र आदि नवीन विधाओं की ओर उन्मुख हुई । छात्रों को इसकी पृष्ठभूमि और विकास से परिचित करना उक्त प्रश्नपत्र का लक्ष्य है । चार खण्डों में बटन यह प्रश्नपत्र हिंदी साहित्य के आधुनिक नवजागरण की प्रमुख प्रवृतियों से परिचित कराने के बाद आधुनिक युग में हिंदी नवजागरण की प्रमुख प्रवृतियों पर विचार किया जाएगा।

पाठ्यक्रम उपयोगिता (Course Outcome):

- आधुनिक हिन्दी साहित्य की विविध विधाओं का परिचय देना इस पाठ्यक्रम का लक्ष्य है।
- विभिन्न प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए छात्रों को तैयार करना।
- छात्रों को आधुनिक हिन्दी साहित्य की पृष्ठभूमि और विकास से परिचित करना है।

पाठ्यक्रम (Couse Structure) :

पाठ्यक्रम का सम्पूर्ण विवरण इस प्रकार है-

इकाई- एक

हिन्दी गद्य का उद्भव और विकास, भारतीय नवजागरण और हिन्दी नवजागरण, भारतेंदु युग और हिन्दी गद्य, 1857 की क्रांति और सांस्कृतिक पुनर्जागरण, पत्रकारिता का आरंभ और आधुनिक हिन्दी पत्रकारिता, आधुनिक साहित्य की सामाजिक,राजनीतिक तथा सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, भारतेंदु मंडल के कवि, भारतेंदु युग की विशेषताएं।

इकाई- दो

महावीर प्रसाद द्विवेदी और उनका युग, द्विवेदी युग की पृष्ठभूमि, द्विवेदी युग की सामान्य विशेषताएं, द्विवेदी युग के प्रमुख कवि, सरस्वती पत्रिका, खडीबोली काव्य का विकास, मैथीलीशरण गुप्त और राष्ट्रीय काव्यधारा के प्रमुख कवि।

इकाई- तीन

स्वछंदतावाद और उसके प्रमुख कवि, छायावाद, छायावाद की प्रमुख विशेषताएँ, प्रमुख छायावादी कवि, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, नई कविता, समकालीन कविता, अकविता की प्रमुख प्रवृतियाँ और कवि।

इकाई- चार

आधुनिक गद्य़ विधा का उद्भव और विकास : हिंदी उपन्यास का उद्भव और विकास, हिंदी कहानी का उद्भव और विकास, हिंदी नाटक का उद्भव और विकास, हिंदी निबंध का उद्भव और विकास एवं हिंदी आलोचना का उद्भव और विकास।

परीक्षा पद्धति (Pattern of Examination) :

- **आंतरिक परीक्षा (कुल अंक 40) :** लिखित परीक्षा-15 अंक, सेमिनार-10 अंक, प्रदत्त कार्य-10 अंक, अन्य गतिविधियाँ (Overall)- उपस्थिति, छात्र व्यवहार, सांस्कृतिक गतिविधियाँ आदि - 5 अंक ।
- **सत्रांत परीक्षा : (कुल अंक 60)** खंड 'क' में 1 से 10 बहुविकल्पीय प्रश्न होंगे जिसमें क, ख, ग और घ के रूप में चार विकल्प होंगे (10x1= 10)। खंड 'ख' में 11 से 16 संक्षिप्त टिप्पणी होंगी जिनमें से चार करने होंगे (4x5= 20)। खंड 'ग' 17 से 21 दीर्घ उत्तरीय (निबंध स्तरीय) प्रश्न होंगे जिनमें तीन लिखने होंगे (3x10 = 30)।

संदर्भ ग्रंथ :

1. आचार्य रामचंद्र शुक्ल, हिन्दी साहित्य का इतिहास, नागरी प्रचारणी सभा
2. डॉ. नगेन्द्र, हिन्दी साहित्य का इतिहास, मयूर पेपर बैक्स
3. डॉ. रामकुमार वर्मा, हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
4. आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी, हिन्दी साहित्य की भूमिका
5. डॉ. रामविलास शर्मा, हिन्दी जाति का इतिहास
6. डॉ. हजारीप्रसाद द्विवेदी, हिन्दी साहित्य का उद्भव और विकास
7. डॉ. गणपतिचंद्र गुप्त, हिन्दी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास
8. डॉ. बच्चन सिंह, हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली
9. डॉ. विजयेन्द्र स्नातक, हिन्दी साहित्य का इतिहास, साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली
10. डॉ. सूर्यप्रसाद दीक्षित, हिन्दी साहित्येतिहास की भूमिका (चार भाग), हिन्दी संस्थान, लखनऊ

LHC 5202 – सामान्य भाषा विज्ञान और हिन्दी भाषा का इतिहास एवं संरचना :

Course Code	LHC 5202	Semester	II (Second)
Name of Course	सामान्य भाषा विज्ञान और हिन्दी भाषा का इतिहास एवं संरचना (Samanya Bhasha Vigyaan Aur Hindi Bhasha Ka Itihaas Evam Sanrachana)		
क्रेडिट	4	Type	Core

पाठ्यक्रम परिचय (Course Description) :

इस पाठ्य खण्ड का उद्देश्य हिन्दी भाषा के उद्गम और स्रोत से छात्रों को अवगत कराना है।इसमें हिन्दी भाषा के प्राचीन रूप से आधुनिक हिन्दी के विविध रूपों और शैलियों का परिचय कराना है।डिंगल, पिंगल, प्राकृत, अवहट्ट, ब्रज, अवधी, मैथिली बोलियों-भाषाओं की विशिष्टता व हिन्दी भाषा के विकास में उनकी भूमिका से छात्रों को परिचित कराया जायेगा।उपर्युक्त प्रथम पाठ्यचर्या में जिन रचनाओं का उल्लेख किया जायेगा, उन्हें इस प्रकरण में अनुप्रयुक्त अध्ययन करके साहित्य में भाषा और बोलियों की प्रयुक्तियों को करीब से समझने की भूमिका प्राप्त होगी कि किन-किन सामाजिक, ऐतिहासिक कारणों से हिन्दी साहित्य के आदिकाल से आधुनिक काल तक की भाषा विकसित होती जाती है।आधुनिक युग में हिन्दी के विविध रूप, भौलियाँ व दक्षिण भारत में प्रयुक्त हिन्दी आदि की जानकारी दिला देने से छात्रों को हिन्दी भाषा के इतिहास व समाजशास्त्र तक का परिचय हो जायेगा।

पाठ्यक्रम उपयोगिता (Course Outcome):

- सामान्य भाषा विज्ञान और भाषा का इतिहास एवं संरचना - नेट, लोक सेवा आयोग, राज्य सरकार के अधीन परीक्षा हेतु आवश्यक है।
- हिन्दी भाषा की सामान्य जानकारी प्राप्त की जाती है।
- विदेशियों और अहिन्दी भाषा-भाषी आसानी से जानकारी प्राप्त कर सकता है।

पाठ्यक्रम (Couse Structure) :

पाठ्यक्रम का सम्पूर्ण विवरण इस प्रकार है-

इकाई- एक

भाषा की परिभाषा, भाषा के प्रमुख अंग, भाषा के प्रमुख तत्व, पक्ष एवं संरचना, भाषा के विविध रूप, प्राचीन भारतीय आर्य भाषा का विकास, मध्यकालीन भारतीय आर्य भाषाएँ- पालि, प्राकृत, शौरसेनी, मागधी, अर्ध मागधी और अपभ्रंश की विशेषताएँ, अवहट्ट और प्रारम्भिक हिन्दी, हिन्दी की प्रमुख बोलियाँ, खड़ीबोली, अवधी और ब्रज भाषा कीविशेषताएँ और उसका विकास, राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्वरूप।

इकाई- दो

हिन्दी का भाषिक स्वरूप : हिन्दी की स्वनिम व्यवस्था, स्वनि यंत्र की संरचना, स्वनों के वर्गीकरण- खण्ड्य और खण्ड्येतर स्वनिम, शब्द और पद, हिन्दी शब्द रचना, अर्थ तत्व और संबंध तत्व, संबंध तत्व के प्रकार

इकाई- तीन

हिन्दी भाषा का व्याकरणिक पक्ष, लिंग, वचन और कारक व्यवस्था के संदर्भ में संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रिया रूप, हिन्दी वाक्य संरचना, वाक्य के प्रकार, वाक्य रचना के भेद , अर्थ प्रतीति के साधन, अर्थ परिवर्तन के साधन और दिशाएँ

इकाई- चार

हिन्दी भाषा प्रयोग के विविध रूप : बोली, मानक भाषा, राजभाषा, राष्ट्रभाषा और संपर्क भाषा, हिन्दी की संवैधानिक स्थिति, देवनागरी लिपि : विशेषताएँ मानकीकरण

परीक्षा पद्धति (Pattern of Examination) :

- **आंतरिक परीक्षा (कुल अंक 40) :** लिखित परीक्षा-15 अंक, सेमिनार-10 अंक, प्रदत्त कार्य-10 अंक, अन्य गतिविधियाँ (Overall)- उपस्थिति, छात्र व्यवहार, सांस्कृतिक गतिविधियाँ आदि - 5 अंक ।
- **सत्रांत परीक्षा : (कुल अंक 60)** खंड 'क' में 1 से 10 बहुविकल्पीय प्रश्न होंगे जिसमें क, ख, ग और घ के रूप में चार विकल्प होंगे (10x1= 10)। खंड 'ख' में 11 से 16 ससंदर्भ व्याख्या (RC) होंगी जिनमें से चार करने होंगे (4x5= 20)। खंड 'ग' 17 से 21 दीर्घ उत्तरीय (निबंध स्तरीय) प्रश्न होंगे जिनमें तीन लिखने होंगे (3x10 = 30)।

संदर्भ ग्रंथ :

1. रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव, हिन्दी भाषा संरचना के विविध आयाम, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली
2. राजमणि शर्मा, हिंदी भाषा : इतिहास और स्वरूप, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
3. डॉ. भोलानाथ तिवारी, हिंदी भाषा, किताब महल
4. डॉ. हरदेव बाहरी, हिंदी भाषा, अभिव्यक्ति प्रकाशन, इलाहाबाद
5. डॉ. धीरेन्द्र वर्मा, हिंदी भाषा का इतिहास
6. कैलाशचंद्र भाटिया हिंदी भाषा : स्वरूप और विकास
7. डॉ. रामविलास शर्मा, भारत के प्राचीन भाषा परिवार और हिंदी (भाग-1, 2, 3) राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
8. देवेन्द्र नाथ शर्मा, भाषा विज्ञान की भूमिका
9. डॉ. कृपाशंकर सिंह, आधुनिक भाषाविज्ञान
10. उदय नारायण तिवारी, हिंदी भाषा का उद्भव और विकास
11. सुनीतिकुमार चटर्जी, भारतीय आर्य भाषा और हिंदी

LHC 5203–आधुनिक कथा साहित्य :

Course Code	LHC 5203	Semester	II (Second)
Name of Course	आधुनिक कथा साहित्य (Adhunik Katha Sahitya)		
क्रेडिट	4	Type	Core

पाठ्यक्रम परिचय (Course Description) :

भारतीय साहित्य में कथा साहित्य का प्राचीन रूप 'पंचतंत्र' में मौजूद है, लेकिन आधुनिक कथा साहित्य अपने नवीन भावबोध, सामाजिक पृष्ठभूमि, के कारण विशिष्ट अवस्थिति रखता है। कहानी व उपन्यास विधा का उदय आधुनिक युग की बिल्कुल नवीनतम परिघटना है। इस विधा का तार्किकता के विशिष्ट रूप से जुड़ाव है। इस खण्ड में हिन्दी कथा साहित्य के विभिन्न रूप व इन रूपों की विशिष्टता से छात्रों को समग्र रूप से परिचित कराया जायेगा। कहानी व उपन्यास विधा के साथ जुड़ी हुई सैद्धांतिकता के साथ ही इन विधाओं के मूल्यांकन की प्रविधि से भी छात्रों का परिचय कराया जायेगा। इसके अलावा विभिन्न उपन्यासों व कहानियों के माध्यम से छात्रों की विश्लेषण व आलोचनात्मक मेधा का परिष्कार करने का प्रयास किया जायेगा। हिन्दी उपन्यास और कहानीहिंदी साहित्य की महत्वपूर्ण विधा है । इसके अध्ययन भारतीय जनमानस की मनःस्थिति को छात्र सोच और समझ सकेगा । अतः जीवन के बहुमुखी विषयों को पेश करने वाला कथा साहित्य छात्रों को कला की संवेदना की दृष्टि से सोचने-समझने के लिए मजबूर करता है।

पाठ्यक्रम उपयोगिता (Course Outcome):

- उपन्यास और कहानी विधा से परिचित होना।
- NET/ JRF तथा अन्य प्रतियोगी परीक्षाओं में सहायक।
- वर्तमान समाज का ज्ञान प्राप्त करना।
- रचनात्मक और विश्लेषणात्मक ज्ञान प्राप्त करना।
- वर्तमान पृष्ठभूमि से परिचित होना।

पाठ्यक्रम (Couse Structure) :

पाठ्यक्रम का सम्पूर्ण विवरण इस प्रकार है-

इकाई– एक

हिन्दी कथा साहित्य का सैद्धातिंक पक्ष, हिंदी कथा साहित्य की प्रवृत्तियाँ, स्वच्छंदतावाद और हिंदी उपन्यास, आधुनिकता बोध के विविध उपन्यास

कृतिपाठ - प्रेमचन्द : गोदान

(व्याख्या- प्रारंभिक दस अनुच्छेद, आदर्श और यथार्थ, वस्तु और शिल्पगत वैशिष्ट, गोदान के मुख्य पात्र)

कृतिपाठ - आपका बंटी – मन्नु भंडारी (व्याख्या प्रारंभिक 35 पृष्ठ, आपका बंटी में निहित पारिवारिक समस्यायें, मन्नु भंडारी की रचनाधर्मिता , महिला लेखन और मन्नु भंडारी

इकाई- दो

हिन्दी कहानी का सैद्धातिंक पक्ष , - चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी' : उसने कहा था,प्रेमचन्द : ईदगाह, जयशंकर प्रसाद : आकाशदीप, भीष्म साहनी : चीफ की दावत, फणीश्वरनाथ 'रेणु' : लाल पान की बेगम

इकाई- तीन

मोहन राकेश- मलबे का मालिक, ज्ञानरंजन – पिता, मृदुला गर्ग- हरी बिंदी, उदयप्रकाश – तिरिछ, ओमप्रकाश वाल्मीकि- सलाम

इकाई- चार

कथा साहित्य की भाषा शैली, परिवर्तित भाषा स्वरूप, स्वातंत्र्योत्तर कथा साहित्य का परिवर्तित शिल्प विधान, भाषा और शैली के नए प्रयोग, स्त्री की भाषा और भाषा का यथार्थ, प्रतिरोध की भाषा और भाषा का सौंदर्य, उत्तराधुनिक युग में पुनर्पाठ की विशेषताएँ

परीक्षा पद्धति (Pattern of Examination) :

- **आंतरिक परीक्षा (कुल अंक 40) :** लिखित परीक्षा-15 अंक, सेमिनार-10 अंक, प्रदत्त कार्य-10 अंक, अन्य गतिविधियाँ (Overall)- उपस्थिति, छात्र व्यवहार, सांस्कृतिक गतिविधियाँ आदि - 5 अंक ।
- **सत्रांत परीक्षा : (कुल अंक 60)** खंड 'क' में 1 से 10 बहुविकल्पीय प्रश्न होंगे जिसमें क, ख, ग और घ के रूप में चार विकल्प होंगे (10x1= 10)। खंड 'ख' में 11 से 16 ससंदर्भ व्याख्या (RC) होंगी जिनमें से चार करने होंगे (4x5= 20)। खंड 'ग' 17 से 21 दीर्घ उत्तरीय (निबंध स्तरीय) प्रश्न होंगे जिनमें तीन लिखने होंगे (3x10 = 30)।

संदर्भ ग्रंथ :

1. प्रेमचंद, गोदान
2. रामचन्द्र तिवारी, हिंदी गद्य साहित्य, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
3. रामचन्द्र तिवारी, हिन्दी की नई गद्य विधाएँ
4. अज्ञेय, शेखर एक जीवनी (भाग-1)
5. शैलजा, समकालीन हिंदी कहानी, बदलते जीवन-सन्दर्भ, वाणी प्रकाशन नयी दिल्ली
6. चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी', उसने कहा था
7. विनयमोहन सिंह, आज की हिन्दी कहानी, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली

8. नामवर सिंह, कहानी : नई कहानी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
9. इंद्रनाथ मदान, हिन्दी उपन्यासों की पहचान और परख
10. मधुरेश, हिन्दी उपन्यास का विकास, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
11. गोपालराय, हिन्दी उपन्यास का इतिहास, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
12. नरेन्द्र कोहली, हिन्दी उपन्यास : सृजन और सिद्धांत, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
13. गोपालराय, हिन्दी कहानी का इतिहास, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
14. रामचंद्र तिवारी, हिन्दी गद्य : प्रकृति और रचना सन्दर्भ, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
15. विजयमोहन, आज की कहानी, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली

LHC 5204 – हिन्दी गद्य साहित्य की अन्य विधाएं :

Course Code	LHC 5204	Semester	II(Second)
Name of Course	हिन्दी गद्य साहित्य की अन्य विधाएं (Hindi Gadya Sahitya Ki Naya Vidhayein)		
क्रेडिट	4	Type	Core

पाठ्यक्रम परिचय (Course Description) :

मानव जीवन की व्यापकता, आधुनिक जीवन दृष्टि और सूचना प्रद्योगिकी के विस्फोट से हिन्दी साहित्य में गद्य विधाओं का उत्तरोत्तर विकास हो रहा है। विवरणात्मक, वर्णनात्मक और सुबोधगम्य भाषा-शैली के कारण हिन्दी साहित्य जगत में गद्य विधाओं की अपनी अलग पहचान है। इस पाठ्यक्रम के बल पर विद्यार्थी हिन्दी की गढ़ी विधाओं के प्रवृतिपरक परिचय के साथ-साथ उनकी शिल्प विधि का भी पाठाधारित-ज्ञान प्राप्त कर लेता है। गढ़ी विधाओं के दार्शनिक, सामाजिक, मनोवैज्ञानिक आधारों के ज्ञान के साथ-साथ विद्यार्थी मेन इन गद्य विधाओं की समीक्षा करने की योग्यता को विकसित करना प्रस्तुत पाठ्यक्रम का आशय है।

पाठ्यक्रम उपयोगिता (Course Outcome) :

- गद्य की सभी विधाओं का परिचय।
- गद्य लेखन के तरीक़ों की जानकारी।
- साहित्य रचने में प्रोत्साहन एवं रुचि बढ़ाना।
- हिन्दी गद्य संबंधी प्रतियोगी परीक्षाओं में सहायक।
- गद्य साहित्यकारों का ज्ञान।

पाठ्यक्रम (Couse Structure) :

पाठ्यक्रम का सम्पूर्ण विवरण इस प्रकार है-

इकाई– एक (हिन्दी उपन्यास) :

हिन्दी उपन्यास की अवधारणा और सामान्य पृष्ठभूमि, हिन्दी उपन्यास के सैद्धांतिक पक्ष का विकास, प्रेमचंद पूर्व उपन्यास, प्रेमचंद और उनका युग, प्रेमचंद युग के श्रेष्ठ उपन्यासकार, प्रेमचंदोत्तर युग और उसकी सामान्च प्रवृत्तियाँ, श्रेष्ठ उपन्यासकार, समकालीन उपन्यास और बदलते शैल्पिक पक्ष और श्रेष्ठ उपन्यासकार ।

इकाई– दो (हिन्दी कहानी) :

हिन्दी कहानी का सैद्धांतिक पक्ष, हिन्दी कहानी, उद्भव और विकास, 20वीं सदी की हिन्दी कहानी और प्रमुख कहानी आन्दोलन (नई कहानी, समकालीन कहानी, समानांतर कहानी और अकहानी)एवं प्रमुख कहानीकार, आत्मकथा, स्त्री और दलित आत्मकथा और रेखाचित्र (महादेवी वर्मा) ।

इकाई- तीन(हिन्दी के अन्य गद्य विधाएँ -1) :

आत्मकथा, जीवनी, संस्मरण, रेखाचित्र, साक्षात्कार, रिपोतार्ज का परिचय एवं श्रेष्ठ कृतियाँ

इकाई- चार (हिन्दी के अन्य गद्य विधाएँ -2) :

हिन्दी निबंध, आलोचना, यात्र-साहित्य, डायरी आदि का परिचय एवं श्रेष्ठ कृतियाँ, हिन्दी का प्रवासी साहित्य- अवधारणा एवं प्रमुख साहित्यकार।

परीक्षा पद्धति (pattern of Examination) :

- **आंतरिक परीक्षा (कुल अंक 40) :** लिखित परीक्षा-15 अंक, सेमिनार-10 अंक, प्रदत्त कार्य-10 अंक, अन्य गतिविधियाँ (Overall)- उपस्थिति, छात्र व्यवहार, सांस्कृतिक गतिविधियाँ आदि - 5 अंक ।
- **सत्रांत परीक्षा : (कुल अंक 60)** खंड 'क' में 1 से 10 बहुविकल्पीय प्रश्न होंगे जिसमें क, ख, ग और घ के रूप में चार विकल्प होंगे (10x1= 10)। खंड 'ख' में 11 से 16 संक्षिप्त टिप्पणी होंगी जिनमें से चार करने होंगे (4x5= 20)। खंड 'ग' 17 से 21 दीर्घ उत्तरीय (निबंध स्तरीय) प्रश्न होंगे जिनमें तीन लिखने होंगे (3x10 = 30)।

संदर्भ ग्रंथ :

1. इन्द्रनाथ मदान, हिन्दी उपन्यासों की पहचान और परख
2. मधुरेश, हिन्दी उपन्यास का विकास, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
3. गोपालराय, हिन्दी उपन्यास का इतिहास, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
4. नरेंद्र कोहली, हिन्दी उपन्यास : सृजन और सिद्धांत, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
5. गोपाल राय, हिन्दी कहानी का इतिहास, राजकमल प्रकाशन, इलाहाबाद
6. शैलजा, समकालीन हिन्दी कहानी, बदलते जीवन-संदर्भ, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, रामचन्द्र तिवारी
7. हिन्दी का गद्य साहित्य, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
8. माजदा असद, गद्य की नयी विधाएँ, ग्रन्थ अकादमी, नयी दिल्ली
9. प्रभाकर मिश्र, निबंधकार अज्ञेय, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली
10. विनय कुमार पाठक, आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी और समकालीन विमर्श
11. कृष्णदत्त पालीवाल, निर्मल वर्मा और उत्तर औपनिवेशिक विमर्श
12. जयंत नलिन, हिन्दी निबंधकार
13. द्वारिका प्रसाद सक्सेना, हिन्दी के प्रतिनिधि निबंधकार
14. एच.एल.शर्मा, हिन्दी रेखाचित्र
15. कैलाशचन्द्र भाटिया, हिन्दी की नयी गद्य विधाएँ

LHC5301– भारतीय एवं पाश्चात्य साहित्य सिद्धांत :

Course Code	LHC 5301	Semester	III (Third)
Name of Course	भारतीय एवं पाश्चात्य साहित्य सिद्धांत (Bhartiya Evam Pachatya Sahitya Siddhant)		
क्रेडिट	4	Type	Core

पाठ्यक्रम परिचय (Course Description) :

साहित्य को समझने के लिए जिन युक्तियों का प्रयोग किया जाता है, उन्हें साहित्यिक सिद्धांत की संज्ञा दी जाती है।इस परिप्रेक्ष्य में प्राचीन समय से ही प्रयास होते रहे हैं, सिद्धांत निरूपण होते गये हैं।यूनान से लेकर भारतीय साहित्य चिंतन का इस मामले में उदाहरण दिया जा सकता है।साहित्यिक सिद्धांत को भारतीय व पाश्चात्य कोटियों में बाँटकर छात्रों को इस खण्ड में अध्ययन कराया जायेगा।इसके अलावा इस खण्ड में विभिन्न राजनीतिक-दार्शनिक वादों के नजरिए से साहित्य अध्ययन व मूल्यांकन की प्रतिविधियों व सिद्धांतों से भी छात्रों का परिचय कराया जायेगा।

पाठ्यक्रम उपयोगिता (Course Outcome):

- नेट, लोक सेवा आयोग, राज्य सरकार के अधीन परीक्षा हेतु आवश्यक है।
- भारतीय जन मानस को पाश्चात्य चिंतकों से अवगत होने का मौका मिलेगा।
- विदेशियों और अहिन्दी भाषा-भाषी हिंदी चिंतन की जानकारी प्राप्त कर सकते हैं।

पाठ्यक्रम (Couse Structure) :

पाठ्यक्रम का सम्पूर्ण विवरण इस प्रकार है-

इकाई- एक

भारतीय काव्यशास्त्र : काव्य के लक्षण, काव्य हेतु, काव्य के तत्व, शब्द शक्ति, काव्य प्रयोजन, रस सिद्धांत, रस निष्पत्ति, साधारणीकरण

इकाई- दो

रसेतर सम्प्रदाय :इतिहास और परिचय, अलंकार सम्प्रदाय, रीति सम्प्रदाय, वक्रोक्ति सम्प्रदाय, ध्वनि सम्प्रदाय, औचित्य सम्प्रदाय

इकाई- तीन

पाश्चात्य काव्यशास्त्र –प्लेटो का काव्य सिद्धांत, अरस्तु : अनुकरण सिद्धांत और विरेचन सिद्धांत, वर्ल्डसवर्थ का काव्यभाषा सिद्धांत, कॉलरिज : कल्पना और फैंटेसी

इकाई- चार

टी. एस. इलियट- निर्वैयक्तिकता का सिद्धांत, आई.ए.रिचड्र्स : मूल्य सिद्धांत, सम्प्रेषण सिद्धांत, नई समीक्षा, मिथक, फंतासी, कल्पना, प्रतीक, बिम्ब

परीक्षा पद्धति (Pattern of Examination) :

- **आंतरिक परीक्षा (कुल अंक 40) :** लिखित परीक्षा-15 अंक, सेमिनार-10 अंक, प्रदत्त कार्य-10 अंक, अन्य गतिविधियाँ (Overall)- उपस्थिति, छात्र व्यवहार, सांस्कृतिक गतिविधियाँ आदि - 5 अंक ।
- **सत्रांत परीक्षा : (कुल अंक 60)** खंड 'क' में 1 से 10 बहुविकल्पीय प्रश्न होंगे जिसमें क, ख, ग और घ के रूप में चार विकल्प होंगे (10x1= 10)। खंड 'ख' में 11 से 16 संक्षिप्त टिप्पणी होंगी जिनमें से चार करने होंगे (4x5= 20)। खंड 'ग' 17 से 21 दीर्घ उत्तरीय (निबंध स्तरीय) प्रश्न होंगे जिनमें तीन लिखने होंगे (3x10 = 30)।

संदर्भ ग्रंथ :

1. श्यामसुन्दर दास, साहित्यालोचन, इंडियन प्रेस, प्रयाग
2. गुलाबराय, काव्य के रूप, आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली
3. रामबहोरी शुक्ल, काव्य प्रदीप, हिन्दी भवन, इलाहाबाद
4. कृष्णदेव झारी, साहित्यालोचन, पराग प्रकाशन, नई दिल्ली
5. डॉ.नगेन्द्र, अरस्तू का काव्य शास्त्र, आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली
6. गणेशत्रयंबक देश पाण्डेय, भारतीय साहित्य शास्त्र, पापुलर बुक डिपो, बंबई
7. बलदेव उपाध्याय, भारतीय साहित्य शास्त्र, वाराणसी
8. बच्चन सिंह, भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र : तुलनात्मक अध्ययन, हरियाणा साहित्य अकादमी, पंचकूला
9. राधाबल्लभ त्रिपाठी, भारतीय काव्यशास्त्र की आचार्य परंपरा, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
10. उदयभानु सिंह (संपादक), भारतीय काव्य शास्त्र, राजेश प्रकाशन, नई दिल्ली
11. सत्यदेव चौधरी, भारतीय काव्यशास्त्र चिंतन, अलंकार प्रकाशन, वाराणसी
12. राममूर्ति त्रिपाठी, भारतीय काव्य विर्मश, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
13. बलदेव उपाध्याय, भारतीय साहित्य शास्त्र, वाराणसी
14. सुरेन्द्र एस.बारलिंगे, भारतीय सौन्दर्य सिद्धांत की नई परिभाषा, भरतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली
15. नामवर सिंह (संपादक)
16. कार्लमार्क्स : कला एवं साहित्य चिन्तन, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
17. सत्यदेव मिश्र, पाश्चात्य सिद्धांत : अधुनातन संदर्भ, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
18. निर्मला जैन, काव्य चिंतन की पश्चिमी परंपरा, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
19. आचार्य देवेन्द्रनाथ शर्मा, काव्यालंकार, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद, पटना

20. आचार्य विश्वे वर, काव्यप्रकाश, ज्ञानमंडल लिमिटेड, वाराणसी
21. सिंगमन फ्रायड, मनोविश्लेषण, राजपाल एण्ड संस, दिल्ली
22. रवि कुमार मिश्र, मार्क्सवादी साहित्य चिंतन : इतिहास तथा सिद्धांत, मध्यप्रदेश ग्रंथ अकादमी, भोपाल
23. देवेंद्रनाथ शर्मा, पाश्चात्य काव्यशास्त्र, नेशनल पब्लिशिंग, दिल्ली
24. भगीरथ मिश्र, पाश्चात्य काव्यशास्त्र : इतिहास, सिद्धांत और वाद, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
25. अशोक केलकर, प्राचीन भारतीय साहित्य मीमांसा : एक अध्ययन, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
26. निर्मला जैन
27. रस सिद्धांत और सौंदर्य साहित्य, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
28. पी. वी. काने, संस्कृतकाव्यशास्त्र का इतिहास, मोतीलाल बनारसीदास, वाराणसी
29. एस. के. डे., संस्कृत काव्यशास्त्र का इतिहास (दो खण्ड), बिहार राष्ट्रभाषा परिषद, पटना
30. निर्मला जैन, उदात्तता के विषय में, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
31. W K Wimsatt & Beardsley, Literary Criticism – A Short History, Oxford IBH, New Delhi
32. I A Richards, Principles of Literary criticisms
33. रामचंद्र तिवारी, भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र की रूपरेखा, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
34. शेषेन्द्र शर्मा, आधुनिक काव्यशास्त्र, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
35. निशा अग्रवाल, भारतीय काव्यशास्त्र, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
36. योगेन्द्र प्रताप सिंह, भारतीय काव्यशास्त्र, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
37. गणपति चन्द्र गुप्त, रस सिद्धांत का पुनर्विवेचन, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
38. निर्मला जैन, पाश्चात्य साहित्य चिंतन, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली
39. करुणाशंकर उपाध्याय, पाश्चात्य काव्य चिंतन, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद

LHC5302–अनुवाद सिद्धांत एवं प्रयोग :

Course Code	LHC 5302	Semester	III (Third)
Name of Course	अनुवाद : सिद्धांत एवं प्रयोग (Anuvad : Siddhant Evam Prayog)		
क्रेडिट	4	Type	Core

पाठ्यक्रम परिचय (Course Description) :

विभिन्न भाषिक प्रदेशों के लोगों के बीच संवाद बढ़ाने के साथ भिन्न-भिन्न भाषाओं में मौजूद रचनाओं का अध्ययन करने के लिए अनुवाद की भूमिका अनिवार्य है।अनुवाद सिद्धांतों के क्रमिक अध्ययन और अनुवाद की समस्याओं से अवगत होने से छात्र कोई भी अनुप्रयुक्त अध्ययन करने में सक्षम होंगे।इस पाठ्यक्रम से छात्रों को अनुवाद कार्य की सामाजिक भूमिका के प्रति भी सचेत किया जायेगा।

पाठ्यक्रम उपयोगिता (Course Outcome):

- आज हिंदी का विस्तार अनुवाद के माध्यम से हो रहा है। अनुवाद के माध्यम से संस्कृति के विकास का मार्ग छात्रों को दिखा देना और अनुवाद के जरिए हिंदी को और हिंदी के माध्यम से अन्य भाषाओँ के बीच भाईचारा बढ़ाना ही यहाँ उद्देश्य है।
- अनुवाद में अभिरुचि बढ़ाकर उदीयमान पीढ़ी को अनुवाद के क्षेत्र में कदम रखने का प्रशिक्षण देना।
- भारत सरकार के उद्यम और उपक्रमों में रोजगारी पाने के लिए छात्रों को सक्षम बनाना।

पाठ्यक्रम (Couse Structure) :

पाठ्यक्रम का सम्पूर्ण विवरण इस प्रकार है-

इकाई- एक

अनुवाद प्रक्रिया- अनुवाद का अर्थ एवं परिभाषा, उपकरण, अनुवाद की प्रक्रिया और अनुवाद के प्रकार, श्रोत भाषा और लक्ष भाषा, तुलना और अर्थांतरण की प्रक्रिया , अनुवाद तथा समतुल्यता का सिद्धांत

इकाई- दो

पारिभाषिक शब्दावली- पारिभाषिक शब्दावली का अर्थ, पारिभाषिक शब्दावली का महत्त्व, पारिभाषिक शब्दावली का प्रयोग व प्रविधि (अनुवाद के संदर्भ में), पारिभाषिकशब्दावली के निर्माण की प्रक्रिया

इकाई- तीन

अनुवाद की समस्याएँ- गद्यानुवाद, पद्यानुवाद, मशीनी अनुवाद, अनुवाद की शैलीगत समस्याएँ (संरचनात्मक दृष्टिकोण), कार्यालयीन अनुवाद की समस्याएँ, वैज्ञानिक एवं तकनीकी अनुवाद की समस्यायें, विधि साहित्य की अनुवाद की समस्यायें

इकाई- चार

अनुवाद : पुनरीक्षण, संपादन और मूल्यांकन, अनुवाद की प्रासंगिकता और व्यावसायिक परिदृश्य

परीक्षा पद्धति (Pattern of Examination) :

- **आंतरिक परीक्षा (कुल अंक 40) :** लिखित परीक्षा-15 अंक, सेमिनार-10 अंक, प्रदत्त कार्य-10 अंक, अन्य गतिविधियाँ (Overall)- उपस्थिति, छात्र व्यवहार, सांस्कृतिक गतिविधियाँ आदि - 5 अंक ।
- **सत्रांत परीक्षा : (कुल अंक 60)** खंड 'क' में 1 से 10 बहुविकल्पीय प्रश्न होंगे जिसमें क, ख, ग और घ के रूप में चार विकल्प होंगे (10x1= 10)। खंड 'ख' में 11 से 16 संक्षिप्त टिप्पणी होंगी जिनमें से चार करने होंगे (4x5= 20)। खंड 'ग' 17 से 21 दीर्घ उत्तरीय (निबंध स्तरीय) प्रश्न होंगे जिनमें तीन लिखने होंगे (3x10 = 30)।

संदर्भ ग्रंथ :

1. भोलानाथ तिवारी एवं किरणवाला, भारतीय भाषाओं से अनुवाद की समस्याएँ,शब्दकार, दिल्ली
2. भोलानाथ तिवारी एवं ओमप्रकाश गाबा, अनुवाद की व्यवहारिक समस्याएँ, शब्दकार, दिल्ली
3. एन.इ.विश्वनाथ अय्यर, अनुवाद-भाषाएँ समस्याएँ, स्वाति प्रकाशन, त्रिवेंद्रम
4. अमर सिंह वधान, सं-अनुवाद और संस्कृति, त्रिपाठी एंड संस, अहमदाबाद,
5. कुसुम अग्रवाल, अनुवाद शिल्प-समकालीन संदर्भ, साहित्य सहकार, दिल्ली
6. के.सी.कुमारन एवं डॉ. प्रमोद कोव्व्रत (संपा.), इक्कीसवी सदी में अनुवाद –दशाएं दिशाएं, जवाहर पुस्तकालय, मथुरा
7. सुधांशु चतुर्वेदी, इन्दुलेखा, एन.बी.टी.नई दिल्ली
8. एन.इ.विश्वनाथ अय्यर, रामराज बहादुर, एन.बी.टी.नई दिल्ली
9. भारती विद्यार्थी, मछुवारे, साहित्य अकादमी, नई दिल्ली
10. पी.कृष्णन, कथा एक प्रान्तर की,भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली
11. राकेश कालिया, धान, एन.बी.टी. नई दिल्ली
12. हरिवंशराय बच्चन, उमर खय्याम की रुबाईयां, शब्दकार, नई दिल्ली
13. जयशंकर प्रसाद, कामायनी, अनु-श्रीधरमेनन, साहित्य अकादमी नई दिल्ली
14. Machwe Prabhakar, Kabir, Sahitya Academy, New Delhi
15. Bassenet Sussan, Translation studies, Methuen, London
16. Bijoy Kumar Das, The Horizon of Translation Studies, Atlantic Publishers & Distributers, New delhi
17. Usha Nilson. Surdas (Translation), Sahitya Academy, New Delhi

LHC 5303–आधुनिक काव्य :

Course Code	LHC 5303	Semester	III (Third)
Name of Course	आधुनिक काव्य (Adhunik Kavya)		
क्रेडिट	4	Type	Core

पाठ्यक्रम परिचय (Course Description) :

आधुनिक काव्य में हिन्दी कविता के नवीन काव्य संस्कार-काव्य बोध के उदय के कारणों के साथ कविता की परंपरा में हुए विकास से छात्रों का परिचय कराया जायेगा।विभिन्न कवियों की प्रतिनिधि कविताओं के माध्यम से कवियों के रचनाकर्म से तो छात्रों का परिचय कराया ही जायेगा, साथ ही छात्रों की विश्लेषणात्मक-आलोचनात्मक क्षमता के परिष्कार हेतु चुनी हुई कविताओं के पाठात्मक विवेचन पर ही ध्यान केन्द्रित किया जायेगा।

पाठ्यक्रम उपयोगिता (Course Outcome):

- भारतेन्दुयुग, द्विवेदी युग, छायावाद,प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, नईकविता, समकालीन कविता आदि के कवियों से परिचय होगा।
- दलित विमर्श, स्त्री विमर्श, आदि महत्वपूर्ण विमर्शों से परिचय होगा।
- स्त्री विमर्श महिलाओं के लिए अत्यंत उपयोगी है।
- भाषा शैली विज्ञान से परिचय होगा।
- आधुनिक काव्य से NET/JRF की तैयारी में सहयोग मिलेगा।

पाठ्यक्रम (Couse Structure) :

पाठ्यक्रम का सम्पूर्ण विवरण इस प्रकार है-

इकाई- एक

द्विवेदी युगीन कविता का वैचारिक पक्ष, द्विवेदी युग के प्रमुख कवि मैथिलीशरण गुप्त और उनकी श्रेष्ठ रचनाएँ

मैथिलीशरण गुप्त : साकेत (नवम सर्ग- प्रारम्भ से 25 पृष्ठ)

इकाई- दो

छायावाद युगीन कविता का वैचारिक पक्ष, छायावाद– अर्थ, स्वरूप एवं विकास, छायावाद और स्वच्छंदतावाद, छायावाद की प्रवृत्तियाँ और प्रमुख कवि

प्रसाद : कामायनी (चिंता सर्ग)

महादेवी वर्मा- मैं नीर भरी दुःख की बदली

सुमित्रानंदन पंत- परिवर्तन

निराला –राम की शक्तिपूजा

इकाई- तीन

राष्ट्र एवं सास्कृतिक काव्यधारा और प्रगतिवादी काव्य की वैचारिक पृष्ठभूमि, प्रगतिवाद की सामान्य परिस्थितियाँ और प्रमुख कवि

रामधारी सिंह 'दिनकर'- नीव का हाहाकार

नागार्जुन – अकाल और उसके बाद

केदारनाथ अग्रवाल – चंद्रगहना से लौटते हुए

इकाई- चार

प्रयोगवाद और नई कविता का वैचारिक पक्ष, अवधारणा, प्रयोगवाद के विकास में सप्तकों का योगदान, प्रयोगवादी- नई कविता के विकास के विविध चरण, समकालीन कविता और उसकी परिस्थितियाँ, समकालीन कविता के विविध विमर्श

अज्ञेय - कलगी बाजरे की

गजाननमाधव मुक्तिबोध : ब्रहमराक्षस

धूमिल- रोटी और संसद

ओमप्रकाश वाल्मीकि – तब तुम क्या करोगे

कात्यायनी – सात भाईयों के बीच चंपा

परीक्षा पद्धति (Pattern of Examination) :

- **आंतरिक परीक्षा (कुल अंक 40) :** लिखित परीक्षा-15 अंक, सेमिनार-10 अंक, प्रदत्त कार्य-10 अंक, अन्य गतिविधियाँ (Overall)- उपस्थिति, छात्र व्यवहार, सांस्कृतिक गतिविधियाँ आदि - 5 अंक ।
- **सत्रांत परीक्षा : (कुल अंक 60)** खंड 'क' में 1 से 10 बहुविकल्पीय प्रश्न होंगे जिसमें क, ख, ग और घ के रूप में चार विकल्प होंगे (10x1= 10)। खंड 'खंड 'ख' में 11 से 16 ससंदर्भ व्याख्या (RC) होंगी जिनमें से चार करने होंगे (4x5= 20)। खंड 'ग' 17 से 21 दीर्घ उत्तरीय (निबंध स्तरीय) प्रश्न होंगे जिनमें तीन लिखने होंगे (3x10 = 30)।

संदर्भ ग्रंथ :

1. नंद किशोर नवल, समकालीन काव्यधारा
2. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी, समकालीन हिन्दी कविता, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
3. डॉ.हरदयाल, हिन्दी कविता का समकालीन परिदृश्य, आलेख प्रकाशन
4. राजेश जोशी, समकालीन कविता और समकालीनता
5. ए.अरविंदाक्षन, समकालीन कविता की भारतीयता, आनंद प्रकाशन, कलकत्ता
6. मोहन, समकालीन कविता की भूमिका,अनंग प्रकाशन, दिल्ली, मनीषा झा
7. प्रकृति, पर्यावरण और समकालीन कविता, रंजना राजदान, समकालीन कविता और दर्शन
8. जगन्नाथ पंडित, समकालीन हिन्दी कविता का परिप्रेक्ष्य, नमन प्रकाशन
9. मोहन, नहीं होती ख़तम कविता, विमर्श प्रकाशन, वाराणसी
10. ए.अरविंदाक्षन, समकालीन हिन्दी कविता
11. रवि श्रीवास्तव, परंपरा इतिहासबोध और साहित्य, पोयिन्टर पब्लिकेशन्स
12. प्रो. पुष्पिता अवस्थी, अधुनिक हिंदी काव्यालोचन के सौ वर्ष, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली
13. नामवर सिंह, आधुनिक साहित्य की प्रवृतियाँ, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
14. करुणाशंकर उपाध्याय, आधुनिक कविता का पुनरारम्भ, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली
15. रामस्वरूप चतुर्वेदी, आधुनिक कविता यात्रा, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
16. शेषेन्द्र शर्मा, आधुनिक काव्य यात्रा, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
17. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी, आधुनिक हिंदी कविता, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
18. केदारनाथ सिंह, आधुनिक हिंदी कविता में बिम्बविधान, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
19. मालती सिंह, आधुनिक हिंदी काव्य और पुराण कथा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
20. ए.अरविन्दाक्षन, समकालीन हिन्दी कविता, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
21. पी.रवि (संपादक), समकालीन कविता के आयाम, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
22. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी, समकालीन हिन्दी कविता, लोकभारती प्रकाशन, नई दिल्ली

LHC5304 - निबंध और आलोचना :

Course Code	LHC 5304	Semester	III(Third)
Name of Course	निबंध और आलोचना (Nibandh Aur Alochana)		
क्रेडिट	4	Type	Core

पाठ्यक्रम परिचय (Course Description) :

हिन्दी साहित्य की अन्य गद्य विधाओं में निबन्ध और आलेचना का प्रमुख स्थान है। मानव जीवन की व्यापकता, आधुनिक जीवनदृष्टि और सूचना प्रौद्योगिकी के विस्फोट से हिन्दी साहित्य में इन विधाओं का उत्तरोत्र विकास हो रहा है। विशेष भाषा-शैली के कारण हिन्दी साहित्य जगत में निबन्ध और आलोचना विधा की अपनी अलग पहचान है। रचना के वैशिष्ट्य और मूल्यबोध के उद्घाटान के लिए निबन्ध और आलोचना का ज्ञान अपरिहार्य है। इससे साहित्यिक समझ विकसित होती है। वह दृष्टि मिलती है, जिसके आधार पर साहित्य के मर्म और मूल्यवता की वास्तविक परख की जा सके। रचना को उसकी समग्रता में समझने और जाँचने-परखने के लिए निबन्ध तथा हिन्दी के निजी साहित्यालोचन का अध्ययन समीचीन है। निबन्ध और आलोचना की जानकारी रखने वाला छात्र रचनात्मक कार्य में सफल होगा। उसे निबन्ध लिखने और आलोचनात्मक दृष्टि से जानने के लिए वह स्वतः अभ्यस्त होगा।

पाठ्यक्रम उपयोगिता (Course Outcome) :

1. निबंध और आलोचना साहित्य का ज्ञान
2. प्रतियोगी परीक्षाओं में सहायक।
3. निबंध लेखन कला का विकास करना।
4. संभाषण शैली का विकास करना।
5. निबंध और आलोचना की बारीकियों में सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक पक्ष की पड़ताल।

पाठ्यक्रम (Couse Structure) :

पाठ्यक्रम का सम्पूर्ण विवरण इस प्रकार है-

इकाई- एक

हिन्दी आलोचना की पृष्टभूमि :भारतेंदुयुगीन और द्विवेदीयुगीन आलोचना, आचार्य रामचंद्र शुक्ल और हिन्दी आलोचना, शुक्लोत्तर युग, हजारीप्रसाद द्विवेदीकी आलोचना दृष्टि

इकाई- दो

नंददुलारे बाजपेयी, नगेन्द्र, रामविलास शर्मा और नामवर सिंह की आलोचना दृष्टि

इकाई- तीन

निबन्ध :शिवशम्भू के चिट्ठे, श्रीमान का स्वागत- बालमुकुन्द गुप्त, आत्मनिर्भरता- बालकृष्ण भट्ट, श्रद्धा और भक्ति – रामचद्र शुक्ल

इकाई- चार

नाखून क्यूँ बढ़ते हैं?- हजारीप्रसाद द्विवेदी, मेरे राम का मुकुट भीग रहा है- विद्यानिवास मिश्र, संस्कृति और सौन्दर्य- नामवर सिंह

परीक्षा पद्धति (Pattern of Examination) :

- **आंतरिक परीक्षा (कुल अंक 40) :** लिखित परीक्षा-15 अंक, सेमिनार-10 अंक, प्रदत्त कार्य-10 अंक, अन्य गतिविधियाँ (Overall)- उपस्थिति, छात्र व्यवहार, सांस्कृतिक गतिविधियाँ आदि - 5 अंक ।
- **सत्रांत परीक्षा : (कुल अंक 60)** खंड 'क' में 1 से 10 बहुविकल्पीय प्रश्न होंगे जिसमें क, ख, ग और घ के रूप में चार विकल्प होंगे (10x1= 10)। खंड 'ख' में 11 से 16 संक्षिप्त टिप्पणी होंगी जिनमें से चार करने होंगे (4x5= 20)। खंड 'ग' 17 से 21 दीर्घ उत्तरीय (निबंध स्तरीय) प्रश्न होंगे जिनमें तीन लिखने होंगे (3x10 = 30)।

संदर्भ ग्रंथ :

1. रामचंद्र शुक्ल, चिंतामणि भाग-1, 2
2. रवीन्द्रनाथ मिश्र, इक्कसवीं सदी का हिन्दी साहित्य : समय और संवेदना, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
3. जवरीमल्ल पारख, आधुनिक हिन्दी साहित्य का मूल्यांकन और पुनर्मूल्यांकन, अनामिका प्रकाशन, दिल्ली
4. डॉ.रामकुमार वर्मा, हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
5. डॉ. गणपतिचन्द्र गुप्त, हिन्दी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास
6. डॉ. बच्चन सिंह, हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास, साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली
7. डॉ. मधु धवन, भारती गद्य संग्रह, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
8. डॉ. निर्मला जैन, पाश्चात्य साहित्य चिंतन, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली
9. डॉ. निर्मला जैन, रिचड्र्स के आलोचना सिद्धांत
10. डॉ. निर्मला जैन, नई समीक्षा के प्रतिमान
11. जगदीशचंद्र जैन, पाश्चात्य समीक्षा दर्शन, हिन्दी प्रचारक संस्थान, वाराणसी
12. अमृतराय, नई समीक्षा, हिन्दुस्तानी पब्लिशिंग हौस, वाराणसी

13. कृष्णदत्त पालीवाल,हिन्दी आलोचना के नए वैचारिक सरोकार, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
14. मुक्तिबोध. नए साहित्य का सौन्दर्यशास्त्र, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली
15. डॉ. सीतारामदीन
16. साहित्यालोचन : सिद्धांत और अध्ययन, भारती भवन, पटना
17. डॉ. अमरनाथ, हिन्दी आलोचना की पारिभाषिक शब्दावली, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली

LHC 5401–हिन्दी नाटक एवं रंगमंच :

Course Code	LHC 5401	Semester	IV (Fourth)
Name of Course	हिन्दी नाटक और रंगमंच (Hindi Natak Aur Rangmanch)		
क्रेडिट	4	Type	Core

पाठ्यक्रम परिचय (Course Description) :

हिन्दी नाटकों की परंपरा प्राचीनकाल से विद्यमान रही है।भरतमुनि का सिद्धांत प्राथमिक रूप से नाटकों को केन्द्र में रखकर है।लेकिन प्राचीन नाटकों की सीमाबद्धता आधुनिक ज्ञान-विज्ञान और तार्किकता से है।हिन्दी नवजागरण के साथ जिस साहित्यिक भावभूमि और सामाजिक यथार्थ का दर्शन हिन्दी के रचनाकारों ने किया, उसकी वजह से नाटकों के कथ्य के साथ नाटकों की शैली-प्रविधि का भी लगातार विकास होता गया है। 'अंधेर नगरी' से आधुनिक हिन्दी नाटकों का आरंभ मानकर समकालीन नाटककारों का नाटकों के कथ्य व रंग-शिल्प तथा रंगमंच प्रविधियों का अध्ययन करके आधुनिक हिन्दी नाटकों के इतिहास का समग्रता से परिचय कराया जायेगा।

पाठ्यक्रम उपयोगिता (Course Outcome):

- नेट, लोक सेवा आयोग, राज्य सरकार के अधीन प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए सहायक।
- नेशनल स्कूल आफ ड्रामा जैसे संस्थानों में प्रवेश हेतु अत्यंत उपयोगी है। यह व्यवसाय से भी संबंध रखने वाला प्रश्नपत्र है।
- रंगमंचीयता से परिचय।
- सिनेमा क्षेत्र में रोज़गार के अवसर।
- निर्देशन, स्क्रिप्ट लेखन, अभिनय, भाषा पर अधिकार।
- भारतीय एवं पाश्चात्य साहित्य की प्राचीनतम विधा से अवगत होना।

पाठ्यक्रम (Couse Structure) :

पाठ्यक्रम का सम्पूर्ण विवरण इस प्रकार है-

इकाई- एक

हिन्दी नाटक उद्भव और विकास, स्वातंत्र्योततर प्रमुख नाटककार, नाटक की वैचारिक पृष्ठभूमि, हिन्दी की विभिन्न नाट्य शैलियाँ, रंगमंच तथा अलग-अलग थियटरों का परिचय,हिन्दी की विभिन्न नाट्य शैलियाँ – (रामलीला, रासलीला, जात्रा, तमाशा, स्वांग, नौटंकी, पारसी रंगमंच, ब्रेख्तियन थियेटर)

इकाई- दो

नाटक का कालक्रम अध्ययन ,

कृतिपाठ -: अंधेर नगरी- भारतेंदु हरिश्चंद्र, चन्द्रगुप्त - जयशंकरप्रसाद।

इकाई- तीन

नाटक : आधे अधूरे–मोहन राकेश

इकाई- चार

एकांकी : लक्ष्मी का स्वागत- उपेन्द्रनाथ अश्क, भोर का तारा- जगदीशचन्द्र माथुर, सबसे बड़ा आदमी –भगवतीचरण वर्मा

परीक्षा पद्धति (Pattern of Examination) :

- **आंतरिक परीक्षा (कुल अंक 40) :** लिखित परीक्षा-15 अंक, सेमिनार-10 अंक, प्रदत्त कार्य-10 अंक, अन्य गतिविधियाँ (Overall)- उपस्थिति, छात्र व्यवहार, सांस्कृतिक गतिविधियाँ आदि - 5 अंक ।
- **सत्रांत परीक्षा : (कुल अंक 60)** खंड 'क' में 1 से 10 बहुविकल्पीय प्रश्न होंगे जिसमें क, ख, ग और घ के रूप में चार विकल्प होंगे (10x1= 10)। खंड 'खंड 'ख' में 11 से 16 ससंदर्भ व्याख्या (RC) होंगी जिनमें से चार करने होंगे (4x5= 20)। खंड 'ग' 17 से 21 दीर्घ उत्तरीय (निबंध स्तरीय) प्रश्न होंगे जिनमें तीन लिखने होंगे (3x10 = 30)।

संदर्भ ग्रंथ :

1. प्रेम सिंह एवं सुषमा आर्य, रंग प्रक्रिया के विविध आयाम, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली
2. डॉ.नीलम राठी, साठोत्तरी हिन्दी नाटक, संजय प्रकाशन, दिल्ली
3. गोविन्द चातक, रंगमंच : कला और दृष्टि, तक्षशिला प्रकाशन, दिल्ली
4. केदार सिंह, हिन्दी नाटक : कल और आज, क्लासिकल पब्लिकेशन हाउस, दिल्ली
5. नेमिचंद्र जैन, दृश्य अदृश्य, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
6. बी.बालाचंद्रन, साठोत्तरी हिन्दी नाटक : परंपरा और प्रयोग, अन्नपूर्णा प्रकाशन, कानपुर
7. देवेन्द्र कुमार गुप्ता, हिन्दी नाट्य शिल्प : बदलती रंगदृष्टि, पियूष प्रकाशन, दिल्ली

8. जसवंतभाई पंड्या , समाकलीन हिन्दी नाटक, ज्ञान प्रकाशन, कानपुर
9. प्रवीण अख्तर, समकालीन हिन्दी नाटक परिदृश्य, विकास प्रकाशन, कानपुर
10. प्रभात शर्मा, हिन्दी नाटक : इतिहास, दृष्टि और समकालीन बोध, संजय प्रकाशन, दिल्ली
11. दमयंती श्रीवास्तव, हिन्दी नाटक में आधुनिक प्रवृत्तियाँ, राजा प्रकाशन, इलाहाबाद
12. गोविंद चातक, आधुनिक हिन्दी नाटक : भाशिक और संवादिक संरचना, तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली
13. भारतेन्दु हरिश्चंद्र, अंधेर नगरी
14. जगदीशचन्द्र माथुर, कोणार्क
15. नरेश मेहता, संशय की एक रात
16. डॉ.सोमनाथ गुप्ता, पारसी थियेटर, उद्भव और विकास, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
17. देवेन्द्रराज अंकुर, रंगमंच का सौन्दर्यबोध, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
18. मोहन राकेश, नाट्रय दर्पण, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
19. जगदीशचंद्र माथुर, परंपराशील नाट्य,लोकभारती प्रकाशन, नई दिल्ली
20. महेश आनंद, रंगमंच के सिद्धांत, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
21. रमेश राजहंस, नाट्रय प्रस्तुति, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली

LHC5402–तुलनात्मक साहित्य :

Course Code	LHC 5402	Semester	IV (Fourth)
Name of Course	तुलनात्मक साहित्य (Tulnatmak Sahitya)		
क्रेडिट	4	Type	Core

पाठ्यक्रम परिचय (Course Description) :

साहित्य की तुलनात्मक अवधारणा आज के संदर्भ में प्रासंगिक है।यह पाठ्यक्रम साहित्यानुसंधान को सामयिक सांस्कृतिक गतिविधियों के पूर्ण आस्वादन करने के लिए रास्ता खोल देता है, जबकि बहुमुखी साहित्यकार, कलाकार और आलोचक संस्कृति के विभिन्न अंत:सम्बन्धों को ही पुनर्सृजित करते आ रहे हैं।आज के पाठक इस बात से परिचित हैं कि लेखन में किस प्रकार विभिन्न आशयों का तानाबाना बुना जाता है और विभिन्न अनुशासनों से लेखक को प्रेरणा मिल जाती है।विश्व में और भारत में विशेष कर तुलनात्मक साहित्य को एक विधा या अनुशासन के रूप में पढ़ने-पढ़ाने की माँग को यह पूरा कर पायेगा।तुलनात्मक साहित्य के विभिन्न स्कूलों का यहाँ परिचय हो जायेगा।साहित्यिक इतिहास लेखन, भारत के विशेष संदर्भ में तुलनात्मक साहित्य आदि पर भी विशेष अध्ययन इसमें समाहित है।इसी के अंतर्गत तुलनात्मक भारतीय एवं विश्व साहित्य का संक्षिप्त इतिहास एवं तुलनात्मक साहित्य का अंतरनुशासनिक विवेचन किया जायेगा।

पाठ्यक्रम उपयोगिता (Course Outcome):

5. अनुवाद के व्यावहारिक ज्ञान से परिचित होना।
6. भारतीय एवं विश्व साहित्य की पहचान, अतएव राष्ट्रीय एकता में सहायक।
7. शोध कार्य में नई दृष्टि का सृजन।
8. अंतरअनुशासनिक अध्ययन को बढ़ावा देना।
9. रोज़गार के साहित्येत्तर अवसर।

पाठ्यक्रम (Couse Structure) :

पाठ्यक्रम का सम्पूर्ण विवरण इस प्रकार है-

इकाई– एक

तुलनात्मक साहित्य का अर्थ, परिभाषा, स्वरूप और महत्व, साहित्य के परिप्रेक्ष्य में तुलना के घटक, तुलनात्मक साहित्य का विकास , तुलनात्मक साहित्य संबंधी मान्यताएँ, पाशचात्य व भारतीय साहित्य

इकाई- दो

प्रविधि के विविध रूप, तुलनात्मक साहित्य में अनुवाद की भूमिका, तुलनात्मक साहित्य की आवश्यकता, तुलनात्मक साहित्य का शिल्प , वैश्वीकरण के संदर्भ में तुलनात्मक साहित्य

इकाई- तीन

तुलनात्मक साहित्य केविभिन्न सम्प्रदाय, भारतीय साहित्य का सामान्य परिचय, हिन्दी और अंग्रेजी साहित्य के विकास के चरण।

इकाई- चार

तुलनात्मक साहित्य व अंतरानुशासनिक विवेचन, तुलनात्मक भारतीय साहित्य व विश्व साहित्य का इतिहास, हिन्दी और अंग्रेजी का स्वछंदतावादी साहित्य, प्रगतिशील साहित्य, वैश्वीकरण के सन्दर्भ में तुलनात्मक साहित्य

परीक्षा पद्धति (Pattern of Examination) :

- **आंतरिक परीक्षा (कुल अंक 40) :** लिखित परीक्षा-15 अंक, सेमिनार-10 अंक, प्रदत्त कार्य-10 अंक, अन्य गतिविधियाँ (Overall)- उपस्थिति, छात्र व्यवहार, सांस्कृतिक गतिविधियाँ आदि - 5 अंक।
- **सत्रांत परीक्षा : (कुल अंक 60)** खंड 'क' में 1 से 10 बहुविकल्पीय प्रश्न होंगे जिसमें क, ख, ग और घ के रूप में चार विकल्प होंगे (10x1= 10)। खंड 'ख' में 11 से 16 संक्षिप्त टिप्पणी होंगी जिनमें से चार करने होंगे (4x5= 20)। खंड 'ग' 17 से 21 दीर्घ उत्तरीय (निबंध स्तरीय) प्रश्न होंगे जिनमें तीन लिखने होंगे (3x10 = 30)।

संदर्भ ग्रंथ :

1. इन्द्रनाथ चौधरी, तुलनात्मक साहित्य : भारतीय परिप्रेक्ष्य
2. बी.एच.राजुलकर, राजमल बोरा, तुलनात्मक अध्ययन : स्वरूप एवं संभावनाएँ, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
3. के.सच्चिदानंद, भारतीय साहित्य : स्थापनाएँ और प्रस्तावनाएँ
4. यू. आर.अनंतमूर्ति, किस प्रकार की है ये भारतीयता
5. प्रभाकर माचवे, आज का भारतीय साहित्य
6. प्रो.बी.वाई ललिताम्बा, तुलनात्मक साहित्य और अनुवाद
7. S.K. Das, A History of Hindi Literature, Vol-1
8. Susan Bassnet, Comparative Literature
9. K. Arvindakshan, Comparative Indian Literature
10. Amlya Dev, Idea of Comparative Literature
11. Anjala Maharish, A Comparative Study of Breethian Classical Indian Theater
12. Spivak Gaytri Chakravorty, Death of Discipline
13. Homy K Babha, A Location of Culture, London, Routiedge
14. Jonathen Rutheford (Edited), Identity : Community, Culture, Difference, London, Routidge

15. Vasudha Daimia and Damsteegi, Narrative Strategies : Essays on South Asian Literature and Film, New Delhi, OUP
16. Chandra Mohan (Edited), Aspects of Comparative Literature in India, India Publishers.
17. हनुमानप्रसाद शुक्ल (सं), तुलनात्मक साहित्य : सैद्धांतिक परिप्रेक्ष्य, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
18. के.वनजा, तुलना तुलना, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
19. डॉ. नगेन्द्र, भारतीय साहित्य, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली

LHC 5403–लघु शोध प्रबंध :

Course Code	LHC 5403	Semester	IV (Fourth)
Name of Course	लघु शोध प्रबंध (Labhu Shodh Prabandh)		
क्रेडिट	4	Type	Core

पाठ्यक्रम परिचय (Course Description) :

शोध प्रविधि का ज्ञान तथा एम. फिल. पीएच. डी. करने के प्रति छात्रों का ध्यान आकर्षित करना रहा है। इस पाठ्यक्रम के माध्यम से छात्रों में आलोचना का ज्ञानार्जन कर रचनात्मकता को बढ़ावा देने के साथ-साथ सामाजिक चिंतन-मंथन करवाना भी रहा है। गहन अध्ययन के द्वारा छात्रों में समाज के प्रति रुचि पैदा करना ही प्रस्तुत पाठ्यक्रम का मूल ध्येय है।

पाठ्यक्रम उपयोगिता (Course Outcome):

- शोध प्रविधि से परिचित होना।
- पीएच. डी. और एम. फिल. की पूर्व तैयारी।
- आलोचना और विश्लेषण करने की क्षमता विकसित करना।
- साहित्य और समाज के बीच सकारात्मक दृष्टिकोण विकिसित करना।
- पढ़ने-लिखने की रुचि पैदा करना।

परीक्षा पद्धति (Pattern of Examination) :

- लघु शोध प्रबंध मूल्यांकन के कुल अंक (Total Marks) 100 : इसमें 40 अंक आंतरिक मूल्यांकन के लिए (CA Marks)।
- बाकी 60 अंक में 40अंक लघु शोध प्रबंध की जांच (Dissertation Evaluation Mark's)।
- 20 अंक मैखिकी।

LHC 5001–पत्रकारिता एवं मीडिया लेखन :

Course Code	LHC 5001	Semester	Elective
Name of Course	पत्रकारिता एवं मीडिया लेखन(Patrakarita Aur Media Lekhan)		
क्रेडिट	4	Type	Elective

पाठ्यक्रम परिचय (Course Description) :

छापेखाने के आविष्कार की सबसे बड़ी यह भूमिका रही कि इससे सामाजिक स्तर पर संवाद करने की सुविधा प्राप्त हो पाई।सामाजिक स्तर पर संवाद विभिन्न विचारों, सूचनाओं को विस्तृत जनता तक पहुँचाने के लिए किया जाता है।इसी दृष्टिकोण से छात्रों को इस प्रश्नपत्र में संचार माध्यम लेखन से परिचित कराया जायेगा।इससे छात्रों को समाचार पत्र, टेलीविजन, रेडियो, इंटरनेट आदि विशिष्ट संचार माध्यमों में सामाजिक संवाद लेखन में सक्षमकरने के लिए प्रविधियों से परिचित कराने के साथ व्यवहारिक रूप से इस संचार लेखन में सक्षमकरने का प्रयास किया जायेगा।इससे हिन्दी साहित्य का अध्ययन करने वाले छात्रों के लिए रोजगार की संभावनाएँ भी प्रशस्त होंगी।

पाठ्यक्रम उपयोगिता (Course Outcome):

- यह व्यसायिक शिक्षा के साथ रोजगारपरक विषय है जिससे छात्र स्वयं विज्ञापन एजेंसी खोल सकता है।
- फिलांसिंग में कार्य कर सकताहैं।
- पत्रकारिता से संबंधित रेडियो, टेलीविजन, समाचारपत्र मे रोजगार प्राप्त कर सकता है।
- रिपोर्टर, एंकरिंग, एडिटर, मीडिया रिसर्चर से संबंधित कई प्रकार के रोजगार प्राप्त कर सकता है ।
- सरकारी और गैरसरकारी नौकरी प्राप्त कर सकता है।

पाठ्यक्रम (Couse Structure) :

पाठ्यक्रम का सम्पूर्ण विवरण इस प्रकार है-

इकाई- एक

पत्रकारिता : स्वरूप और प्रकार, अर्थ, समाचार संकलन व स्रोत, भारत में पत्रकारिता, समाचार के प्रकार,

जनसंचार का अर्थ व् स्वरूप, संचार और जनसंचार के माध्यम और अंतर ।

इकाई- दो

मुद्रित माध्यमों में पत्रकारिता, समाचार लेखन, संपादकीय लेखन, फीचर लेखन, नाट्य लेखन, विज्ञापन लेखन,

समाचार प्रस्तुति, रिपोर्ट लेखन ।

इकाई- तीन

इलेक्ट्रानिक माध्यम के विविध रूप, रेडियो, टेलीविजन, सिनेमा, सोशल मीडिया, वेब पेज, ई-पत्रिका, रेडियो समाचार लेखन, रेडियो वार्ता लेखन, रेडियो साक्षात्कार, रेडियो विज्ञापन, रेडियो कमेंट्री, टेलीविजन समाचार लेखन, टेलीविजन विज्ञापन धारावाहिक लेखन ।

इकाई- चार

फोटो पत्रकारिता, जनसंचार माध्यमों की भाषा, समाचार की भाषा, संपादकीय पृष्ट की भाषा, न्यू-मीडिया की भाषा, प्रेस कानून और आचार संहिता, सूचना अधिकार, प्रसार भारती अधिनियम।

परीक्षा पद्धति (Pattern of Examination) :

- **आंतरिक परीक्षा (कुल अंक 40) :** लिखित परीक्षा-15 अंक, सेमिनार-10 अंक, प्रदत्त कार्य-10 अंक, अन्य गतिविधियाँ (Overall)- उपस्थिति, छात्र व्यवहार, सांस्कृतिक गतिविधियाँ आदि - 5 अंक ।
- **सत्रांत परीक्षा : (कुल अंक 60)** खंड 'क' में 1 से 10 बहुविकल्पीय प्रश्न होंगे जिसमें क, ख, ग और घ के रूप में चार विकल्प होंगे (10x1= 10)। खंड 'ख' में 11 से 16 टिप्पणी होंगी जिनमें से चार करने होंगे (4x5= 20)। खंड 'ग' 17 से 21 दीर्घ उत्तरीय (निबंध स्तरीय) प्रश्न होंगे जिनमें तीन लिखने होंगे (3x10 = 30)।

संदर्भ ग्रंथ :

1. के.एन. गोस्वामी, सरोजमणि मार्कण्डेय,आकाशवाणी वार्ताएँ, तीन खण्ड
2. डॉ.रवीन्द्र मिश्रा,दृश्य श्रव्य माध्यम लेखन, तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली
3. देवेन्द्र इस्सर,जनमाध्यम सम्प्रेषण और विकास
4. सूर्यप्रसाद दीक्षित,जनसंचार : प्रकृति और परंपरा
5. एन.सी.पंत,मीडिया लेखन सिद्धांत, तक्षशिला प्रकाशन, दिल्ली
6. रमेशचन्द्र त्रिपाठी,मीडिया लेखन
7. रामचंद्र जोशी,मीडिया विर्मश
8. नरेश मिश्रा,मीडिया लेखन : भारतीय चिंतन, दर्शन और साहित्य
9. सूर्यप्रसाद दीक्षित, पत्रकारिता, जनसंचार और जनसम्पर्क
10. नीरजा माधव,रेडियो का कला पक्ष
11. उषा सक्सेना,रेडियो नाटक लेखन
12. पी. के. आर्य,समाचार लेखन, विद्याविहार, दिल्ली
13. नारायण दवाले,संवाद संकलन विज्ञान
14. गौरी शंकर रैना,संचार माध्यम लेखन, वाणी प्रकाशन, दिल्ली

15. नंद किशोर त्रिखा,संवाद संकलन और लेखन
16. हरिमोहन,संपादन कला और प्रूफ संपादन
17. प्रभु जिंगरन,टेलीविजन की दुनिया
18. सुधीश पचौरी और अचला शर्मा,नये संचार माध्यम और हिन्दी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
19. मोहन, स्वाधीनता आन्दोलन की पत्रकारिता और हिंदी, अनंग प्रकाशन, दिल्ली
20. Ravindra vajpai,Communication through the Ages, Publication Society of India, Communication Today, Jaipur
21. Prabhu Jingaran,Film Cinematography
22. Angela Philips,Good Writing for Journalism, Sage, New Delhi
23. Sajitha jayaprakash,Technical Writing, Himalaya Publication, Delhi
24. Edward S Herman,The Global Media
25. Esta de Fossad,Writing and producing for television and film, Saga Publications Delhi
26. विष्णु राजगढ़िया,जनसंचार सिद्धांत और अनुप्रयोग, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली
27. संतोष भारतीय,पत्रकारिता : नया दौर नये प्रतिमान, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली
28. डॉ.अर्जुन चौहान,मीडिया कालीन हिन्दी स्वरूप और संभवानाएँ, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
29. शालिनी जोशी,वेब पत्रकारिता : नया मीडिया नए रुझान, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
30. अखिलेश मिश्र,पत्रकारिता मिशन से मीडिया तक, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
31. डॉ. महासिंह पूनिया, पत्रकारिता का बदलता स्वरूप, हरियाणा साहित्य अकादेमी, पंचमूला
32. डॉ. मुकेश मानस, मीडिया लेखन : सिद्धांत और प्रयोग, स्वराज प्रकाशन

LHC 5002–प्रयोजनमूलक हिन्दी :

Course Code	LHC 5002	Semester	Elective
Name of Course	प्रयोजनमूलक हिन्दी (Prayojanmoolak Hindi)		
क्रेडिट	4	Type	Elective

पाठ्यक्रम परिचय (Course Description) :

हिन्दी नाटकों की परंपरा प्राचीनकाल से विद्यमान रही है।भरतमुनि का सिद्धांत प्राथमिक रूप से नाटकों को केन्द्र में रखकर है।लेकिन प्राचीन नाटकों की सीमाबद्धता आधुनिक ज्ञान-विज्ञान और तार्किकता से है।हिन्दी नवजागरण के साथ जिस साहित्यिक भावभूमि और सामाजिक यथार्थ का दर्शन हिन्दी के रचनाकारों ने किया, उसकी वजह से नाटकों के कथ्य के साथ नाटकों की शैली-प्रविधि का भी लगातार विकास होता गया है। 'अंधेर नगरी' से आधुनिक हिन्दी नाटकों का आरंभ मानकर समकालीन नाटककारों का नाटकों के कथ्य व रंग-शिल्प तथा रंगमंच प्रविधियों का अध्ययन करके आधुनिक हिन्दी नाटकों के इतिहास का समग्रता से परिचय कराया जायेगा।

पाठ्यक्रम उपयोगिता (Course Outcome):

1. हिन्दी के क्षेत्र में रोज़गार के लिए अवसर।
2. कार्यालय में कार्य करने की दक्षता।
3. हिन्दी भाषा के नए प्रयोगों से अवगत होना।
4. तकनीकी कम्प्यूटर भाषा का ज्ञान।
5. हिन्दी भाषा का व्यावहारिक अनुप्रयोग।

पाठ्यक्रम (Couse Structure) :

पाठ्यक्रम का सम्पूर्ण विवरण इस प्रकार है-

इकाई- एक

हिन्दी भाषा व क्रियान्वयन- व्यावहारिक हिन्दी : राजभाषा, राष्ट्रभाषा, विभाषा व सम्पर्क भाषा कार्यालयी भाषा हिन्दी : विज्ञप्ति, संक्षेपण, टिप्पण, प्रारूपण, आवेदन।

इकाई- दो

हिन्दी पत्रकारिता- पत्रकारिता की परिभाषा, पत्रकारिता का स्वरूप और प्रकार, राष्ट्रीय स्वाधीनता संग्राम मेंहिन्दी पत्रकारिता का महत्त्व जनसंचार लेखन : संपादकीय लेख, रेडियो, टेलीविजन और समाचार पत्र (विज्ञापन लेखन और समाचार लेखन)।

इकाई- तीन

हिंदी कंप्यूटिंग : संक्षिप्त परिचय – प्रयोग, पब्लिशिंग, इन्टरनेट।

इकाई- चार

मीडिया व जनसंचार लेखन - न्यू मीडिया की भाषा।

परीक्षा पद्धति (Pattern of Examination) :

- **आंतरिक परीक्षा (कुल अंक 40) :** लिखित परीक्षा-15 अंक, सेमिनार-10 अंक, प्रदत्त कार्य-10 अंक, अन्य गतिविधियाँ (Overall)- उपस्थिति, छात्र व्यवहार, सांस्कृतिक गतिविधियाँ आदि - 5 अंक ।
- **सत्रांत परीक्षा : (कुल अंक 60)** खंड 'क' में 1 से 10 बहुविकल्पीय प्रश्न होंगे जिसमें क, ख, ग और घ के रूप में चार विकल्प होंगे (10x1= 10)। खंड 'खंड 'ख' में 11 से 16 ससंदर्भ व्याख्या (RC) होंगी जिनमें से चार करने होंगे (4x5= 20)। खंड 'ग' 17 से 21 दीर्घ उत्तरीय (निबंध स्तरीय) प्रश्न होंगे जिनमें तीन लिखने होंगे (3x10 = 30)।

संदर्भ ग्रंथ :

1	विनीता सहगल	:	आज का युग : इंटरनेट युग
2	मनोज सिंह	:	आओ कम्प्यूटर सीखें
3	विनोद कुमार मिश्रा	:	आधुनिक कम्प्यूटर विज्ञान
4	गुंजन शर्मा	:	कम्प्यूटर : बेसिक शिक्षा
5	विष्णुप्रिया सिंह	:	कम्प्यूटर का परिचय
6	राजेश कुमार	:	कम्प्यूटर एक अद्रभुत आविष्कार
7	शादाब मलिक	:	कम्प्यूटर और इसके अनुप्रयोग
8	नीति मेहता	:	कम्प्यूटर इंटरनेट शब्दकोश
9	राजगोपाल सिंह जादिन	:	कम्प्यूटर के विविध आयाम
10	विष्णुप्रिया सिंह	:	कम्प्यूटर नेटवर्किंग कोर्स
11	पी. के.शर्मा	:	कम्प्यूटर परिपालन की पद्धतियाँ
12	गुणाकर मुले	:	कम्प्यूटर क्या है?, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली

13	विनोद कुमार मिश्र	:	कम्प्यूटर व सूचना प्रौद्योगिकी शब्दकोश, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
14	बालेन्दुशेखर तिवारी	:	प्रयोजनमूलक हिन्दी, संजय बुक डिपो, वाराणसी
15	विजयपाल सिंह	:	कार्यालय हिन्दी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
16	डॉ.भोलानाथ तिवारी	:	राजभाषा हिन्दी, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली
17	डॉ.रामगोपाल सिंह	:	हिन्दी मीडिया लेखन और अनुवाद, पार्श्व, अहमदाबाद
18	डॉ.सुनागलक्ष्मी	:	प्रयोजनमूलक हिन्दी : प्रासंगिकता एवं परिदृश्य, जवाहर पुस्तकालय, मथुरा
19	डॉ.षिबा मनोज	:	पत्रकारिता का जनसंचार और हिन्दी उपन्यास, जवाहर पुस्तकालय, मथुरा
20	अमी आधार निडर	:	समाचार संकल्पना और अनुवाद, जवाहर पुस्तकालय, मथुरा
21	डॉ.हरिमोहन	:	सूचनाक्रांति और विश्वभाषा हिन्दी, जवाहर पुस्तकालय, मथुरा
22	डॉ.हरिमोहन	:	आधुनिक संचार और हिन्दी, जवाहर पुस्तकालय, मथुरा
23	एन. सी. पंत	:	मीडिया लेखन के सिद्धांत, जवाहर पुस्तकालय, मथुरा
24	डॉ.माधव सोनटके	:	प्रयोजनमूलक हिन्दी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
25	डॉ.रामप्रकाश	:	प्रयोजनमूलक हिन्दी : संरचना और प्रयोग, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली
26	डॉ.कैलाशनाथ पाण्डेय	:	प्रयोजनमूलक हिन्दी की नई भूमिका
27	पी.लता	:	प्रयोजनमूलक हिन्दी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद

LHC 5003– भाषा प्रोद्योगिकी एवं हिंदी कंप्यूटिंग :

Course Code	LHC 5003	Semester	Elective
Name of Course	भाषा प्रोद्योगिकी एवं हिंदी कंप्यूटिंग (Bhasha Pradyogiki Evam Hindi Computing)		
क्रेडिट	4	Type	Elective

पाठ्यक्रम परिचय (Course Description) :

वर्तमान युग कम्प्यूटर का है।ज्ञान-विज्ञान से लेकर समाज के किसी भी अंग में कम्प्यूटर का अनुप्रयोग अब बहुत स्पष्ट रूप से हमारे सामने है।हिन्दी साहित्य का अध्ययन करने वाले छात्रों को भी ज्ञान-विज्ञान की नवीनतम् उपलब्धियों से परिचित कराने के लिए हिन्दी कम्प्यूटिंग के प्रश्नपत्र को वैकल्पिक रूप में रखा गया है।छात्रों को कम्प्यूटर अनुप्रयोग से परिचित कराने के साथ उन्हें कम्प्यूटर में हिन्दी प्रयोग परक्षमता बढ़ाने की प्रेरणा दिलाना पाठ्यक्रम का उद्देश्य है।

पाठ्यक्रम उपयोगिता (Course Outcome):

- भाषा प्रद्योगिकी और हिन्दी कम्प्यूटिंग - लोक सेवा आयोग, राज्य सरकार के अधीन शिक्षण संस्थानों के लिए आवश्यक है।
- स्वरोजगार के लिए उपयुक्त है। सरकारी और गैरसरकारी रोजगार प्राप्त किया जा सकता है।
- कम समय में अधिक से अधिक अभिव्यक्ति करने की क्षमता रखता है ।

पाठ्यक्रम (Couse Structure) :

पाठ्यक्रम का सम्पूर्ण विवरण इस प्रकार है-

इकाई– एक

कंप्यूटिंग का परिचय, कंप्यूटर का इतिहास,कंप्यूटर के विभिन भाग ।

इकाई– दो

प्रमुख प्राविधि : ओपन सोर्स, सोर्स, हिंदी कंप्यूटिंग के विभिन धरातल।

इकाई– तीन

कंप्यूटर का तकनीकी उपयोग, हिंदी कंप्यूटिंग व् तकनीकि हिंदी।

इकाई– चार

कंप्यूटर का उपयोग –इन्टरनेट, वेब पब्लिशिंग व हिंदी कंप्यूटिंग, ईमेल, ब्लॉग लेखन, ई बुक्स।

परीक्षा पद्धति (Pattern of Examination) :

- **आंतरिक परीक्षा (कुल अंक 40) :** लिखित परीक्षा-15 अंक, सेमिनार-10 अंक, प्रदत्त कार्य-10 अंक, अन्य गतिविधियाँ (Overall)- उपस्थिति, छात्र व्यवहार, सांस्कृतिक गतिविधियाँ आदि - 5 अंक ।
- **सत्रांत परीक्षा : (कुल अंक 60)** खंड 'क' में 1 से 10 बहुविकल्पीय प्रश्न होंगे जिसमें क, ख, ग और घ के रूप में चार विकल्प होंगे (10x1= 10)। खंड 'खंड 'ख' में 11 से 16 ससंदर्भ व्याख्या (RC) होंगी जिनमें से चार करने होंगे (4x5= 20)। खंड 'ग' 17 से 21 दीर्घ उत्तरीय (निबंध स्तरीय) प्रश्न होंगे जिनमें तीन लिखने होंगे (3x10 = 30)।

संदर्भ ग्रंथ :

1	विनीता सहगल	:	आज का युग : इंटरनेट युग
2	मनोज सिंह	:	आओ कम्प्यूटर सीखें
3	विनोद कुमार मिश्रा	:	आधुनिक कम्प्यूटर विज्ञान
4	गुंजन शर्मा	:	कम्प्यूटर : बेसिक शिक्षा
5	विष्णुप्रिया सिंह	:	कम्प्यूटर का परिचय
6	राजेश कुमार	:	कम्प्यूटर एक अद्रभुत आविष्कार
7	शादाब मलिक	:	कम्प्यूटर और इसके अनुप्रयोग
8	नीति मेहता	:	कम्प्यूटर इंटरनेट शब्दकोश
9	राजगोपाल सिंह जादिन	:	कम्प्यूटर के विविध आयाम
10	विष्णुप्रिया सिंह	:	कम्प्यूटर नेटवर्किंग कोर्स

LHC 5004–हिन्दी भाषा शिक्षण :

Course Code	LHC 5004	Semester	Elective
Name of Course	हिन्दी भाषा शिक्षण (Hindi Bhasha Shikshan)		
क्रेडिट	4	Type	Elective

पाठ्यक्रम परिचय (Course Description) :

हिन्दी भाषा के वैज्ञानिक शिक्षण के छात्रों को सक्षम करने का प्रयास किया जायेगा।हिन्दी शिक्षण की विधियाँ समझना पहला उद्देश्य है, फिर शिक्षण का इतिहास भी वे जानें।भाषाई शिक्षण की बारीकियों को समझाते हुए प्रथम, द्वितीय और तृतीय भाषा के तौर पर हिन्दी भाषा को पढ़ाने का तरीका, शिक्षा के चारों कौशलों को हिन्दी शिक्षण में भी प्रयोग में लाने की आवश्यकता आदि से छात्र अवगत होगा।छात्रों को हिन्दी शिक्षण के साथ जुड़ी हुई रोजगार संभावनाओं की जानकारी मिलेगी।हिन्दी शिक्षण, हिन्दी शिक्षण की विभिन्न विधियाँ - निगमनात्मक व आगमनात्मक, संश्लेष णात्मकव विश्लेषणात्मक, वस्तुविधि, दृष्टान्त विधि, कथनविधि एवं व्याख्यान विधि प्रश्नोत्तर विधि (सुकराती विधि), शोध विधि, प्रोजेक्ट विधि, डाल्टन योजना एवं वर्धा योजना शैक्षिक विधियों के विकास का इतिहास : हिन्दी शिक्षण में द्वितीय भाषा और प्रथम भाषाई शिक्षण आदिकालीन शिक्षण एवं मध्यकालीन शिक्षण उन्नीसवीं भाताब्दी का शिक्षण - अनिवार्य शिक्षण बीसवीं शताब्दी का शिक्षण।

पाठ्यक्रम उपयोगिता (Course Outcome):

- हिन्दी भाषा शिक्षण - साक्षात्कार हेतु लोक सेवा आयोग, राज्य सरकार के अधीन परीक्षा के लिए आवश्यक है।
- इसके माध्यम से विदेशियों और अहिन्दी भाषा-भाषियों द्वारा भारतीय समाज और संस्कृति को आसानी से समझ सकते हैं।
- पयर्टन सेवा कार्य के लिए अत्यंत आवश्यक है ।
- एम्बेसी में विदेशियों को हिन्दी शिक्षण कराने का रोजगार प्राप्त किया जा सकता है।

पाठ्यक्रम (Couse Structure) :

पाठ्यक्रम का सम्पूर्ण विवरण इस प्रकार है-

इकाई- एक

हिंदी भाषाशिक्षण : सिद्धांत और उद्देश्य, भाषा शिक्षण : प्रकृति और प्रयोजन, भाषा शिक्षण में प्रद्योगिकी का अनुप्रयोग, सैद्धांतिक भाषा विज्ञान और अनुप्रयुक्त भाषा विज्ञान, अनुप्रयुक्त भाषाविज्ञान में भाषा का स्थान, शैक्षिक व्याकरण की प्रकृति।

इकाई- दो

भाषा अर्जन और अधिगम : भाषा अधिगम के सिद्धांत और भाषा-शिक्षण, व्यवहारवाद एवं बुद्धिवाद तथा भाषा शिक्षण में इनका योगदान।

इकाई- तीन

भाषा शिक्षण सन्दर्भ : मातृभाषा, द्वितीय भाषा और विदेशी भाषा, मातृभाषा, द्वितीय भाषा और विदेशी भाषा के रूप में हिंदी, मातृभाषा, द्वितीय भाषा में अधिगम – समानता और विभिन्नता।

इकाई- चार

भाषा शिक्षण प्रणाली : भाषा शिक्षण प्रणाली के मुख्य प्रकार- व्याकरण अनुवाद विधि, सम्प्रेषणपरक विधि और संकलन विधि।

परीक्षा पद्धति (Pattern of Examination) :

- **आंतरिक परीक्षा (कुल अंक 40) :** लिखित परीक्षा-15 अंक, सेमिनार-10 अंक, प्रदत्त कार्य-10 अंक, अन्य गतिविधियाँ (Overall)- उपस्थिति, छात्र व्यवहार, सांस्कृतिक गतिविधियाँ आदि - 5 अंक ।
- **सत्रांत परीक्षा : (कुल अंक 60)** खंड 'क' में 1 से 10 बहुविकल्पीय प्रश्न होंगे जिसमें क, ख, ग और घ के रूप में चार विकल्प होंगे (10x1= 10)। खंड 'खंड 'ख' में 11 से 16 ससंदर्भ व्याख्या (RC) होंगी जिनमें से चार करने होंगे (4x5= 20)। खंड 'ग' 17 से 21 दीर्घ उत्तरीय (निबंध स्तरीय) प्रश्न होंगे जिनमें तीन लिखने होंगे (3x10 = 30)।

संदर्भ ग्रंथ :

1. रामचन्द्र वर्मा, अच्छी हिन्दी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
2. किशोरीलाल शर्मा, भाषा माध्यम तथा प्रकाशन
3. एन.पी. कट्टन पिल्लै, भाषा प्रयोग
4. रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव, भाषा शिक्षण, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
5. मनोरमा गुप्ता, भाषा शिक्षण : सिद्धांत और प्रयोग, केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा
6. के. वी. वी. वी. एल. नरसिंहराव, भाषा शिक्षण : परीक्षण तथा मूल्यांकन, कलिंगा, दिल्ली
7. वाई.वेंकेटे वर राव, भाषा विज्ञान और भाषा शिक्षण, अन्नपूर्णा प्रकाशन, कानपुर

8. दिलीप सिंह, भाषा, साहित्य और संस्कृति शिक्षण, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
9. ओमकार सिंह देवाल, दूरस्थ शिक्षण में भाषा शिक्षण
10. कैलाशचंद्र भाटिया, हिन्दी भाषा शिक्षण
11. वी. एन. तिवारी, हिन्दी भाषा
12. हरदेव बाहरी, हिन्दी का सामान्य प्रयोग
13. वी. वी. हेगड़े, हिन्दी के लिंग प्रयोग
14. एल. एन. शर्मा, हिन्दी संरचना
15. किशोरीलाल बाजपेई, हिन्दी शब्दानुशासन
16. सूर्यप्रसाद दीक्षित, प्रयोजनमूलक हिन्दी, भारत बुक सेंटर, लखनऊ
17. हरदेव बाहरी, शुद्ध हिन्दी
18. के. के.गोस्वामी, व्याकरणिक हिन्दी और रचना
19. के. के.रत्तू, व्याकरणिक हिन्दी
20. पूरनचद टण्डन, व्याकरणिक हिन्दी
21. सुभाष चन्द्र गुप्त, हिन्दी शिक्षण, खेल साहित्य केन्द्र
22. भोलानाथ तिवारी, भाषा शिक्षण, लिपि प्रकाशन, नई दिल्ली
23. ब्रजेश्वर वर्मा, भाषा शिक्षण और भाषा विज्ञान, केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा
24. रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव, भाषा शिक्षण, मैकमिलन, दिल्ली
25. Jack C Richards & Theodore S Rodgers, Approaches and Methods of language teaching
26. Little Wood, Communicative Language Teaching, Longman, London
27. Richard C Jack(Ed.), Error Anlysis, Longman
28. Robert Lado, Language Teaching
29. C-DAC, Pune, Leela (Set of Com. Web/Cassetes)

LHC 5005–दलित साहित्य :

Course Code	LHC 5005	Semester	Elective
Name of Course	दलित साहित्य (Dalit Sahitya)		
क्रेडिट	4	Type	Elective

पाठ्यक्रम परिचय (Course Description) :

उक्त प्रश्नपत्र में दलित साहित्य के इतिहास-विकास के साथ-साथ दलित साहित्य की अवधारणा से छात्रों का परिचय कराया। दलित साहित्य की विशिष्ट कृतियों जूठन- ओमप्रकाश बाल्मीकि, परिशिष्ट- गिरिराज किशोर, उठाईगीर- लक्ष्मण गायकवाड़ का सामाजिक, रजनीतिक और आर्थिक परिवेश में अध्ययन कराया जायेगा।

पाठ्यक्रम उपयोगिता (Course Outcome):

1. समाज का उत्थान।
2. जाति-व्यवस्था से दूर संपूर्ण राष्ट्र को एकता के सूत्र में पिरोने की इच्छा शक्ति पैदा करना।
3. दलित साहित्य से अवगत होना।
4. प्रतियागी परीक्षाओं में सहभागिता एवं लाभ।
5. भारतीय नागरिक होने के नाते अच्छे व्यक्तित्व का विकास करना।

पाठ्यक्रम (Couse Structure) :

पाठ्यक्रम का सम्पूर्ण विवरण इस प्रकार है-

इकाई- एक

दलित : अवधारणा - (भारत की विशिष्ट जातिगत व वर्गगत अवस्था-ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य) दलित साहित्य की अवधारणा, परिभाषा व दलित साहित्य का सामाजिक-राजनीतिक आयाम, भारतीय दलित साहित्य का उद्भव व विकास (इतिहास- विशेष संदर्भ मराठी दलित साहित्य) हिन्दी दलित साहित्य का इतिहास।

इकाई- दो

ओमप्रकाश बाल्मीकि –जूठन (व्याख्या प्रारंभिक 50 पृष्ठ)।

इकाई- तीन

जय प्रकाश कर्दम –छप्पर(व्याख्या प्रारंभिक 50 पृष्ठ)।

इकाई- चार

सुशीला टाकभौरे- रंग और व्यंग्य (नाटक)।

दलित कविताएं - पेड़ (ओमप्रकाश बाल्मीकी), बुद्ध चाहित युद्ध नहीं (रजनी तिलक), समय को इतिहास लिखने दो (असंगघोष), सुनो ब्राह्मण (मलखानसिंह)।

परीक्षा पद्धति (Pattern of Examination) :

- **आंतरिक परीक्षा (कुल अंक 40) :** लिखित परीक्षा-15 अंक, सेमिनार-10 अंक, प्रदत्त कार्य-10 अंक, अन्य गतिविधियाँ (Overall)- उपस्थिति, छात्र व्यवहार, सांस्कृतिक गतिविधियाँ आदि - 5 अंक ।
- **सत्रांत परीक्षा : (कुल अंक 60)** खंड 'क' में 1 से 10 बहुविकल्पीय प्रश्न होंगे जिसमें क, ख, ग और घ के रूप में चार विकल्प होंगे (10x1= 10)। खंड 'खंड 'ख' में 11 से 16 ससंदर्भ व्याख्या (RC) होंगी जिनमें से चार करने होंगे (4x5= 20)। खंड 'ग' 17 से 21 दीर्घ उत्तरीय (निबंध स्तरीय) प्रश्न होंगे जिनमें तीन लिखने होंगे (3x10 = 30)।

संदर्भ ग्रंथ :

1. Eleanor Zelliot,from Untouchable to Dalit, Mnohar
2. Ghanashyam Sha,Dalit AIdentity and Politics, Saga Delhi
3. Harold R Issac,Indias Ex-Untouchables, Harper & Row
4. S M Micheal, Dalit in Modern India: Vision & Values, Vistar
5. Y Chinna Rao, Writing Dalit History and other Essays, Manohar
6. V.K. Krishna Iyer, Dr. Ambedkar & Dalit Future, B.R. Publication
7. Nandu Ram, Ambedkar, Dalit a& Buddism, Mankak
8. Narayan Das, Abmbedkar, Ghandhi and Empowerment of Dalits, ABD Publication
9. Gail Omvet, Dalit Vision, Orient Blackswan
10. S.K. Thorat, Dalit in India, Search for a common destiny, Saga
11. Kanch Ilaiah, Post – Hindu India: A discourse in Dalit-Bahujan,Socio-spiritual and Scientific revolution, Saga
12. Tamo, Nibang & MC Behera, Nadeem HasnainTribal India, Harnam
13. Govindachandra Rath, ribal Development in India: The contemporary debate, Saga
14. Sunil Janah, The Tribals of India, Oxford
15. Priyaram M Chaco, Tribal Communities and Social Change, Oxford
16. G Stanley & Jay Kumar, Tribals from tradition to transition, M D Publications

17. L P Vidhyardhi &B K Ray, Tribal culture in India, Concept
18. Devi K Uma, Tribal Rights in India, Eastern Corporation
19. K Mann, Tribal Women: on the threshold of 21st century, M D Publication
20. Munni Lakara, Tribal India, Communities, Custom & Cultures and Dominant
21. ओमप्रकाश बाल्मीकि, दलित साहित्य का सौन्दर्यशास्त्र, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली
22. मोहनदास नेमिशराय, भारतीय दलित आन्दोलन का इतिहास (चार खण्डों में), राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली
23. डॉ.एल. जी.मेश्राम, और बाबा साहेब आंबेडकर ने कहा (पाँच खण्डों में), राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली
24. ओम प्रकाश बाल्मीकि, दलित साहित्य : अनुभव, संघर्ष एवं यथार्थ, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली
25. ओम प्रकाश बाल्मीकिजूठन (दो भागों में), राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली
26. गिरिराज किशोर, परिशिष्ट, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली
27. सुशीला टाकभौरे, रंग में भंग

LHC 5006–स्त्री लेखन :

Course Code	LHC 5006	Semester	Elective
Name of Course	स्त्री लेखन (Stree Lekhan)		
क्रेडिट	4	Type	Elective

पाठ्यक्रम परिचय (Course Description) :

महिला लेखन समग्र रूप में महिला आंदोलन की इकाई के रूप में है। महिला आंदोलन की मूल धारणा पुरुषों और स्त्रियों के समान सामाजिक, राजनीतिक व आर्थिक अधिकार होने के रूप में है। इस विचारसरणी में स्त्री को पुरुष के बराबर समझने पर ज़ोर दिया गया है। दोयम दर्जे की नागरिकता से असहमति के साथ महिला आंदोलन इस बात की भी माँग करता है कि जिन सामाजिक आचार-विचारों की बुनियाद इस स्त्री-पुरुष भेद के आधार पर है, उन्हें समाप्त किया जाए। इन महिला अधिकारों की पक्षधरता करता हुआ साहित्य महिला लेखन के दायरे में आता है। विभिन्न पुरुषों व महिलाओं द्वारा लिखे गए साहित्य का मूल्यांकन स्त्रीवादी विचारों के आधार पर करना स्त्रीवादी आंदोलन के दायरे में आता है। इस वैकल्पिक पत्र में छात्रों को महिला लेखन की सैद्धांतिक व दार्शनिक आधारभूमि से परिचित कराने के साथ स्त्रीवादी आलोचना के मूल्यों को निर्धारित करने में सक्षम करने का प्रयास किया जाएगा।

पाठ्यक्रम उपयोगिता (Course Outcome):

1. स्त्रियों को समान अधिकार दिलाना।
2. स्त्री की समस्याओं से रू-ब-रू होना।
3. संवैधानिक व मानवाधिकारों का ज्ञान।
4. समाज में लिंग संबंधी समान अधिकार दिलाना।
5. स्त्री स्वाभिमान को मज़बूत करना।

पाठ्यक्रम (Couse Structure) :

पाठ्यक्रम का सम्पूर्ण विवरण इस प्रकार है-

इकाई- एक

महिला लेखन और उसका सैद्धांतिक पक्ष –स्त्री विमर्श का इतिहास, स्त्रीवादी आन्दोलन का परिचय,स्त्रीवादी लेखन की पृष्टभूमि, स्त्रीवादी आन्दोलन और हिंदी साहित्य

इकाई- दो

उपन्यास –पोस्ट बॉक्स नं. 203 नाला सोपारा – चित्रा मुद्गल (व्याख्या प्रारंभिक 50 पृष्ठ)

इकाई- तीन

कहानियाँ- यही सच है – मन्नू भण्डारी, अंतर्यात्रा – क्षमा शर्मा, मेर्सी किल्लिंग – कमल कुमार

इकाई- चार

कविताएँ- कात्यायनी – इस स्त्री से डरो, अपराजित

निर्मला पुतुल – अगर तुम मेरी जगह होते, इतनी दूर मत ब्याहना बाबा

अनामिका – बेजगह, पतिव्रता, एक औरत का पहला राजकीय प्रवास

परीक्षा पद्धति (Pattern of Examination) :

- **आंतरिक परीक्षा (कुल अंक 40) :** लिखित परीक्षा-15 अंक, सेमिनार-10 अंक, प्रदत्त कार्य-10 अंक, अन्य गतिविधियाँ (Overall)- उपस्थिति, छात्र व्यवहार, सांस्कृतिक गतिविधियाँ आदि - 5 अंक ।
- **सत्रांत परीक्षा : (कुल अंक 60)** खंड 'क' में 1 से 10 बहुविकल्पीय प्रश्न होंगे जिसमें क, ख, ग और घ के रूप में चार विकल्प होंगे (10x1= 10)। खंड 'खंड 'ख' में 11 से 16 ससंदर्भ व्याख्या (RC) होंगी जिनमें से चार करने होंगे (4x5= 20)। खंड 'ग' 17 से 21 दीर्घ उत्तरीय (निबंध स्तरीय) प्रश्न होंगे जिनमें तीन लिखने होंगे (3x10 = 30)।

संदर्भ ग्रंथ :

1. जगदीश चतुर्वेदी, स्त्रीवादी साहित्य विमर्श, अनामिका प्रकाशन, दिल्ली
2. राजेंद्र यादव, पितृसत्ता के नए रूप, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
3. प्रकाश सरोज(संपा.),स्त्री पुरुष संबंधों के आइने में मोहन राकेश, स्वराज प्रकाशन, दिल्ली
4. मन्मथनाथ गुप्ता, स्त्री पुरुष संबंधों का रोमांचकारी इतिहास, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
5. राजकिशोर, स्त्री और पुरुष पुनर्विचार, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
6. लियो तॉलस्टाय, स्त्री और पुरुष, सस्ता साहित्य मंडल
7. Kamala Ganesh & Usha Thakkar, Culture and Making Identity in Contemporary India
8. Vandana Shiva, Staying Alive: Women, Ecology and Development
9. Tankia Sankar, Hindi Wife, Hindu Nation: Community, Religion and Nationalism
10. Lata Singh (Ed.), Play House of Power Theatre in Colonial India
11. Sula Myth Rane Harch, Feminist Research Methodology in Social Science
12. Gerda Lerner, The Creation of feminist Consciousness: From the Middle Ages to Eighteen Seventy

13. Gerda Lerner, The Creation of Patriarchy

LHC 5007–लोक जागरण और भक्तिकाव्य :

Course Code	LHC 5007	Semester	Elective
Name of Course	लोक जागरण और भक्तिकाव्य (Lok Jagran Aur Bhaktikavya)		
क्रेडिट	4	Type	Elective

पाठ्यक्रम परिचय (Course Description) :

भारत के सांस्कृतिक परिवेश को विशिष्ट बनाने में भक्तिकालीन रचनाओं का अभूतपूर्व योगदान रहा है।भारतीय सांस्कृतिक परिवेश को समग्रता से समझने के लिए भक्तिकाल की रचनाओं का अध्ययन छात्रों के लिए अनिवार्य है।इस अनिवार्यता का कारण यह है कि यह अध्ययन अलग-अलग भाषाओं के विभिन्न भावबोध एवं विचारों के अजस्र स्रोत का तार्किक निर्धारण 'भारतीयता' का सृजन करता है ।मध्यकालीन हिन्दी साहित्य साहित्येतिहास में बेजोड़ है।यहाँ प्रवृत्तिमार्गी एवं निवृत्तिमार्गी कवियों का संगम और जनता के बीचोंबीच खड़े होकर धार्मिक, सामाजिकसमानता के स्वर मुखरित करने वाले, जनता के बोली में कथन शैली में बढ़ाने वाले कवि की प्रतिभा पा जाते हैं। उनकी कविताओं का एक सौन्दर्यशास्त्र है।समस्त भारतीय साहित्य में भक्ति आन्दोलन का स्वर मुखरित हुआ।लेकिन भक्ति से रीति तक कुछेक कवि ऐसे पाये जाते हैं जो शास्त्र और सौन्दर्य के कवि के रूप में, दरबारी कवि के रूप में राज्याश्रित भी होते गये।अत: हिन्दी साहित्य का मध्यकाल भक्ति, श्रृंगार और काव्य शास्त्रीय दृष्टि से उल्लेखनीय है।निर्गुण में संत, सूफी और सगुण में राम, कृष्ण की आराधना को केन्द्र में रखकर युगद्रष्टा कवि चुने जाते हैं।भक्तिकालीन कवियों की रचनाओं का विस्तृत अध्ययन या तो ऐच्छिक रूप से लिया जा सकता है, या प्रत्येक पाठ्यक्रम में छात्रों को यह चयन की छूट दी जा सकती है।

पाठ्यक्रम उपयोगिता (Course Outcome):

- लोकजागरण और भक्ति काल - लोक सेवा आयोग, राज्य सरकार के अधीन परीक्षा हेतु एतिहासिक तथ्यों के लिए आवश्यक है।
- साक्षात्कार में बदलती भारतीय संस्कृति से संबंधित प्रश्न पूछे जाते है।
- एतिहासिक पृष्ठभूमि की जानकारी प्राप्त की जा सकती है।
- बदलते मनौवैज्ञानिक पृष्ठभूमि की जांच-परताल हेतु अत्यंत महत्वपूर्ण है। आस्था और समाज को रेखांकित करता है।

पाठ्यक्रम (Couse Structure) :

पाठ्यक्रम का सम्पूर्ण विवरण इस प्रकार है-

इकाई- एक

लोकजागरण की अवधारणा, 'लोक' शब्द का अर्थ और प्रयोग, 'लोक' शब्द की परिभाषा, भारतीय साधना का क्रमिक विकास

इकाई- दो

लोक जागरण: सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक और आर्थिक परिस्थिति, ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य

इकाई- तीन

हिंदी भक्तिकाव्य और लोकजागरण, भक्तिकाल की पृष्टभूमि, प्रेममार्गी धारा और जायसी के काव्य में लोकोन्मुखता, हिंदी की सगुण भक्तिकाव्य धारा और लोकजागरण, कृष्णभक्ति काव्य धारा और सूरदास, रामभक्ति शाखा और तुलसीदास

इकाई- चार

हिंदी संतकाव्य में लोकजागरण की अभिव्यक्ति – नामदेव, कबीरदास, गुरुनानक देव, दादू

परीक्षा पद्धति (Pattern of Examination) :

- **आंतरिक परीक्षा (कुल अंक 40) :** लिखित परीक्षा-15 अंक, सेमिनार-10 अंक, प्रदत्त कार्य-10 अंक, अन्य गतिविधियाँ (Overall)- उपस्थिति, छात्र व्यवहार, सांस्कृतिक गतिविधियाँ आदि - 5 अंक ।
- **सत्रांत परीक्षा : (कुल अंक 60)** खंड 'क' में 1 से 10 बहुविकल्पीय प्रश्न होंगे जिसमें क, ख, ग और घ के रूप में चार विकल्प होंगे (10x1= 10)। खंड 'ख' में 11 से 16 टिप्पणी होंगी जिनमें से चार करने होंगे (4x5= 20)। खंड 'ग' 17 से 21 दीर्घ उत्तरीय (निबंध स्तरीय) प्रश्न होंगे जिनमें तीन लिखने होंगे (3x10 = 30)।

संदर्भ ग्रंथ :

1. आचार्य रामचंद्र शुक्ल, हिन्दी साहित्य का इतिहास, नागरी प्रचारणी सभा, वाराणसी
2. आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी, हिन्दी साहित्य की भूमिका
3. रामविलास शर्मा, लोकजागरण और हिंदी साहित्य, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
4. रामविलास शर्मा, लोकजीवन और साहित्य, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा
5. प्रेमशंकर, भक्तिकाव्य का समाजदर्शन, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
6. राजमणि शर्मा, भारतीय प्राणधारा का स्वाभाविक विकास, हिंदी कविता, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
7. शिवकुमार मिश्र, भक्तिकाव्य और लोकजीवन

8. आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी, कबीर, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
9. रामचंद्र शुक्ल, सूरदास, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
10. विश्वनाथ त्रिपाठी, लोकवादी तुलसीदास, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद

LHC 5008–आदिवासी साहित्य का अध्ययन :

Course Code	LHC 5008	Semester	Elective
Name of Course	आदिवासी साहित्य का अध्ययन (Adivasi Sahitya Ka Adhyayan)		
क्रेडिट	4	Type	Elective

पाठ्यक्रम परिचय (Course Description) :

आदिवासी साहित्य में विभिन जन-जातीय समुदायों द्वारा, लिखित या वाचिक, जिस तरह के भी साहित्य का सृजन हुआ है, प्रस्तुत प्रकरण में उसका अध्ययन किया जाता है। इस अध्ययन में आदिवासी के जीवन पर लिखे गए साहित्य को भी शामिल करा सकते है। आदिवासी साहित्य अध्ययन में आदिवासी साहित्य अध्यन में आदिवासी साहित्य के विभिन आयामों व् पक्षों पर विचार करना आवश्यक है।

पाठ्यक्रम उपयोगिता (Course Outcome):

1. भारत के आदिम समाज के हितो का संरक्षण।
2. आदिवासी साहित्य का ज्ञान।
3. आधुनिक दौर में में आदिवासियों और उनके सांस्कृतिक ज्ञान की आवश्यकता पर गौर करना।
4. जल, जंगल, ज़मीन की महत्ता को रेखांकित करना।
5. आदिवासियों को मुख्यधारा में ले आने का प्रोत्साहन जगाना।

पाठ्यक्रम (Couse Structure) :

पाठ्यक्रम का सम्पूर्ण विवरण इस प्रकार है-

इकाई- एक

आदिवासी साहित्य की अवधारणा, आदिवासी साहित्य की परम्परा, आदिवासी साहित्य के स्रोत, परम्परा और भाषिक संरचना, आदिवासी साहित्य का सामाजिक आधार।

इकाई- दो

मुख्यधारा के साहित्य से आदिवासी साहित्य का अंतर व विशिष्टता, आदिवासी साहित्य के मूल्यांकन की प्रविधि।

इकाई- तीन

उपन्यास- मरंग गोड़ा नीलकंठ हुआ- महुआ माझी (व्याख्या प्रारम्भिक 50 पृष्ठ)।
कहानी- वनकन्य (एलिस एक्का)

इकाई- चार

कविता- परिवर्तन (रामदयाल मुंडा), महुआ का फूल- (मंगल सिंह मुंडा), गुरिल्ला की आत्मकथन (अनुज लुगुन), समय की सबसे सुंदर तस्वीर (जसिन्ता केरकेट्टा)

परीक्षा पद्धति (Pattern of Examination) :

- **आंतरिक परीक्षा (कुल अंक 40) :** लिखित परीक्षा-15 अंक, सेमिनार-10 अंक, प्रदत्त कार्य-10 अंक, अन्य गतिविधियाँ (Overall)- उपस्थिति, छात्र व्यवहार, सांस्कृतिक गतिविधियाँ आदि - 5 अंक ।
- **सत्रांत परीक्षा : (कुल अंक 60)** खंड 'क' में 1 से 10 बहुविकल्पीय प्रश्न होंगे जिसमें क, ख, ग और घ के रूप में चार विकल्प होंगे (10x1= 10)। खंड 'ख' में 11 से 16 टिप्पणी होंगी जिनमें से चार करने होंगे (4x5= 20)। खंड 'ग' 17 से 21 दीर्घ उत्तरीय (निबंध स्तरीय) प्रश्न होंगे जिनमें तीन लिखने होंगे (3x10 = 30)।

संदर्भ ग्रंथ :

1. महाश्वेता देवी, जंगल के दावेदार, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
2. शानी, शाल बने के दीप, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
3. रामशरण जोशी, आदिवासी समाज और शिक्षा, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
4. रामशरण जोशी, आदमी बैल और सपने, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
5. गोपीनाथ महान्ती, माटी मदाल,साहित्य अकादमी, दिल्ली
6. केदार प्रसाद मीणा, आदिवासी कहानियाँ, अलख प्रकाशन, जयपुर
7. विनोद कुमार, आदिवासी जीवन - जगत की बारह कहानियाँ- एक नाटक, अनुज्ञा बुक्स, दिल्ली
8. हीराराम मीणा, आदिवासी दुनिया, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, दिल्ली
9. जनार्दन, आदिवासी समाज, साहित्य और संस्कृति , अनंग प्रकाशन, दिल्ली
10. शरद सिंह, भारत के आदिवासी क्षेत्रों की लोककथाएं, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, दिल्ली
11. निर्मल कुमार बोस, भारतीय आदिवासी जीवन, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, दिल्ली
12. हाँसदा सौभेन्द्र शेखर, आदिवासी नहीं नाचेंगे, राजपाल एण्ड सन्ज, दिल्ली
13. डा. रूबी एलसा जेकब, समकालीन हिन्दी उपन्यासों में विस्थापन, विद्या प्रकाशन, कानपुर

LHC 5009–लोक साहित्य :

Course Code	LHC 5009	Semester	Elective
Name of Course	लोक साहित्य (लोक साहित्य)		
क्रेडिट	4	Type	Elective

पाठ्यक्रम परिचय (Course Description) :

लोक से आशय समाज के उस वर्ग से है, जिसका अपना ही रीति-रिवाज, संस्कार व साहित्य होता है और मुख्य धारा से जो दूर रहते हैं।उनका साहित्य वाचिक ज्यादा होता है और उन्हें पढ़ना-लिखना कम ही आता है।देश भाषाओं की व्यक्ति बोलियाँ उनके आचारानुष्ठानों व साहित्यिक गतिविधियों में समाहित हैं।उन्हें संकलित करना तो दूर कहीं आचरण के तौर पर वह साहित्य देश की अमूल्य सम्पत्ति होता है।साहित्य के विद्यार्थी ऐसे लोक एवं उनके द्वारा सृजित साहित्य का अध्ययन अवश्य कर सकें और मुख्यधारा साहित्य से उसका ताल-मेल बिठायें।इस पाठ्य-विषय में लोक साहित्य के विभिन्न पक्षों से छात्रों को परिचित कराया जायेगा।लोक साहित्य का मुख्यधारा के साहित्य के साथ क्या रिश्ता है? इस प्रश्न पर भी विचार किया जायेगा।लोक साहित्य के मूल्यांकन के क्या आधार हों, छात्रों को उनसे भी परिचित कराया जायेगा।

पाठ्यक्रम उपयोगिता (Course Outcome):

- लोक सेवा आयोग, राज्य सरकार के अधीन परीक्षा हेतु आवश्यक है।
- साक्षात्कार में भारतीय संस्कृति से संबंधित प्रश्न पूछे जाते है।
- इससे लोक संबंधित व्यसायिक पद्धतियों को बढावा दिया जा सकता है।
- विदेशियो को लोक संबंधित संस्कृति की जानकारी और पर्यटन से जोडा जा सकता है।
- पयर्टन सेवा का कार्य आरम्भ किया जा सकता है ।
- लोक वस्तु शिल्प का निर्माण और विदेशी कम्पनियों से व्यवसाय को बढावा देने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।

पाठ्यक्रम (Couse Structure) :

पाठ्यक्रम का सम्पूर्ण विवरण इस प्रकार है-

इकाई– एक (लोक साहित्य : सामान्य परिचय)

लोक साहित्य के अध्ययन का इतिहास, लोक साहित्य : परिभाषा, प्रकृति, क्षेत्र और महत्व, लोकसंस्कृति, लोकमानस, लोकसंगीत, लोकविश्वास, लौकिक रीति-रिवाज एवं परम्पराएं, लोकसाहित्य का अन्य विषयों से सम्बन्ध, लोक और लोकवार्ता, लोकवार्ता : परिभाषा, प्रकृति, क्षेत्र और महत्व।

इकाई– दो (लोक साहित्य के विभिन्न रूप)

लोकसाहित्य के विभिन्न रूपों का वर्गीकरण-लोकगाथा (परिभाषा, वर्गीकरण, उत्पत्ति तथा विशेषताएँ), लोकगीत- (परिभाषा, वर्गीकरण तथा विशेषताएँ), श्रम-लोकगीत, संस्कार-लोकगीत, ऋतु-लोकगीत, जाति-गीत तथा देवी-देवताओं से सम्बन्धित लोकगीत।लोककथा- (परिभाषा, वर्गीकरण तथा विशेषताएँ) लोक-कथा, व्रत-कथा, परी-कथा, बोध-कथा तथा कथानक रूढियाँ।

इकाई– तीन (भारतीय संस्कृति और लोकगीत)

संस्कार- लोकगीत, श्रम-लोकगीत, ऋतु-लोकगीत तथा देवी-देवीताओं से सम्बन्धित लोकगीत।लोक साहित्य के संकलन में आने वाली कठिनाइयाँ एवं निवारण के उपाय, लोकनाट्य- (परिभाषा, वर्गीकरण, उत्पत्ति, परम्परा तथा विशेषताएं), नौटंकी, विदेसिया, रामलीला, रासलीला, भवाई, भांड, तमाशा, जात्रा तथा कथककलि।

इकाई– चार (लोक साहित्य का प्रदेय)

हिन्दी साहित्य और भाषा के विकास में लोकसाहित्य का योगदान, लोक साहित्य का स्रोत परंपरा व भाषिक संरचना (वाचिक/लिखित), लोक साहित्य का सामाजिक आधार, लोक साहित्य का मुख्यधारा के साहित्य पर प्रभाव व मुख्यधारा के साहित्य का लोक साहित्य पर प्रभाव, लोक साहित्य के मूल्यांकन की प्रविधि।

परीक्षा पद्धति (Pattern of Examination) :

- **आंतरिक परीक्षा (कुल अंक 40) :** लिखित परीक्षा-15 अंक, सेमिनार-10 अंक, प्रदत्त कार्य-10 अंक, अन्य गतिविधियाँ (Overall)- उपस्थिति, छात्र व्यवहार, सांस्कृतिक गतिविधियाँ आदि - 5 अंक ।
- **सत्रांत परीक्षा : (कुल अंक 60)** खंड 'क' में 1 से 10 बहुविकल्पीय प्रश्न होंगे जिसमें क, ख, ग और घ के रूप में चार विकल्प होंगे (10x1= 10)। खंड 'ख' में 11 से 16 टिप्पणी होंगी जिनमें से चार करने होंगे (4x5= 20)। खंड 'ग' 17 से 21 दीर्घ उत्तरीय (निबंध स्तरीय) प्रश्न होंगे जिनमें तीन लिखने होंगे (3x10 = 30)।

संदर्भ ग्रंथ :

1. हरीराम यादव,लोक साहित्य, बोहरा प्रकाशन, जयपुर
2. डॉ अल्पना सिंह/डॉ.अशोक मर्डे, लोक साहित्य और संस्कृति का वर्तमान स्वरूप, वांग्मय बुक्स, अलीगढ़
3. डॉ.दिनेश्वर प्रसाद, लोक साहित्य और संस्कृति
4. विष्णु रानडिलिया,जनशक्ति का लोक साहित्य, आर्य प्रकाशन मण्डल, दिल्ली
5. कृष्णदेव उपाध्याय,लोक साहित्य की भूमिका, साहित्य भवन, इलाहाबाद
6. मधु उपोटिस,ब्रज लोक साहित्य, इंदु प्रकाशन, अलीगढ़

7. मनोहर शर्मा,लोक साहित्य की सांस्कृतिक परंपरा
8. शांताराम देशमुख विमल,लोकमंच के पुरोधा
9. हरिदूर भट्रटा शैलेश,
10. भाषा और उसका साहित्य, हिन्दी संस्थान, लखनऊ
11. वापचरणा महंत, असम के बारगीत, कमलकुमारी फाउंडेशन, असम

LHC 5010–हिन्दी साहित्य, सिनेमा और समाज :

Course Code	LHC 5010	Semester	Elective
Name of Course	हिन्दी साहित्य सिनेमा और समाज (Hindi Sahitya Cinema Aur Samaj)		
क्रेडिट	4	Type	Elective

पाठ्यक्रम परिचय (Course Description) :

आदमी की सृजनात्मक विधा के रूप में सिनेमा का महत्व असंदिग्ध है।सिनेमा और साहित्य का आपस में बहुत गहरा अंत:संबंध है।दोनों ही सृजनात्मक विधाएं मनुष्य जीवन को संवेदना क्या स्तर पर समझने का प्रयास करती हैं।इन दोनों के अंत:संबंधों को स्पष्ट करना और परस्पर प्रभाव के अध्ययन के बल पर बेहतर समाज के निर्माण की दिशा में बढ़ना आज की आवश्यकता है।यह पाठ्यक्रम हिंदी साहित्य के छात्रों को सिनेमा माध्यम की विशेषताएं और आधुनिक विधा से विभिन्न स्तर पर परिचय कराया जाएगा।सिनेमा और साहित्य किस तरह से संवेदनात्मक स्तर पर समाज की अभिव्यक्ति करता है, यही प्रस्तुत अध्ययन का विशिष्ट बिंदु है।

पाठ्यक्रम उपयोगिता (Course Outcome):

- हिन्दी साहित्य सिनेमा और समाज - नेशनल स्कूल ऑफ Drama के परीक्षा हेतु आवश्यक है।
- साहित्यिक फिल्मों का स्क्रिप्ट लेखन, अभिनय कला निर्माण के लिए फिलांस में रोजगार हासिल किया जा सकता है।
- साहित्यिक विधाओं का फिल्मांकन किया जा सकता है जिसे टेलीविजन सीरीज़ के प्रस्तुत हो सकता है।
- वेब सीरीज़ में भी प्रसारित किया जा सकता है। इससे भारतीय समाज की भिन्नतापरक संस्कृति, साहित्य और भौगोलिक क्षेत्रों की सामान्य जानकारी प्राप्त की जा सकती है।

पाठ्यक्रम (Couse Structure) :

पाठ्यक्रम का सम्पूर्ण विवरण इस प्रकार है-

इकाई– एक

सिनेमा का उद्भव व विकास एवं स्वरूप, साहित्य का व्यवसायिक पक्ष, प्रभाव, भूमिका स्वरूप।

इकाई– दो

सिनेमा और समाज : विविध आयाम, कला सिनेमा बनाम लोकप्रिय सिनेमा, सिनेमा : व्यवसाय उद्योग।

इकाई- तीन

सिनेमा में साहित्य गीत और संवाद, पटकथा, कथा-सिने, पत्रकारिता और सिने समीक्षा, साहित्य आधारित सिनेमा : भारत और विश्व, हिंदी सिनेमा और हिंदी साहित्य।

इकाई- चार

साहित्य, सिनेमा और समाज : अन्तःसंबंध और अंत:प्रभाव, भविष्य का सिनेमा हॉल सिनेमा का भविष्य।

परीक्षा पद्धति (Pattern of Examination) :

- **आंतरिक परीक्षा (कुल अंक 40) :** लिखित परीक्षा-15 अंक, सेमिनार-10 अंक, प्रदत्त कार्य-10 अंक, अन्य गतिविधियाँ (Overall)- उपस्थिति, छात्र व्यवहार, सांस्कृतिक गतिविधियाँ आदि - 5 अंक ।
- **सत्रांत परीक्षा : (कुल अंक 60)** खंड 'क' में 1 से 10 बहुविकल्पीय प्रश्न होंगे जिसमें क, ख, ग और घ के रूप में चार विकल्प होंगे (10x1= 10)। खंड 'ख' में 11 से 16 टिप्पणी होंगी जिनमें से चार करने होंगे (4x5= 20)। खंड 'ग' 17 से 21 दीर्घ उत्तरीय (निबंध स्तरीय) प्रश्न होंगे जिनमें तीन लिखने होंगे (3x10 = 30)।

संदर्भ ग्रंथ :

1. फिरोज रंगूलवाला, भारतीय चलचित्र का इतिहास, राजपाल एंड संस, दिल्ली
2. श्री बच्चा, भारतीय फिल्मों की कहानी, राजपाल एंड संस दिल्ली, दिल्ली
3. जवरीमल्ल पारख, हिंदी सिनेमा का समाजशास्त्र, ग्रन्थ शिल्पी, दिल्ली
4. विष्णु रानडिलिया, जनशक्ति का लोक साहित्य, आर्य प्रकाशन मण्डल, दिल्ली
5. राही मासूम रजा, सिनेमा और संस्कृति, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
6. विश्वनाथ वाराणसी, हिंदी चलचित्रों के साहित्यिक उपादान, हिंदी प्रचारक संस्थान
7. विनोद भारद्वाज, सिनेमा एक समझ, सं.म. न. वि. फि. प्र.
8. सिनेमा की संवेदना, दिल्ली प्रतिभा प्रतिष्ठान
9. सत्यजित राय, चलचित्र : कल और आज, राजपाल एंड संस, दिल्ली
10. अनुपम ओझा, भारतीय सिने सिद्धांत, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली
11. जवरीमल्ल पारख, लोकप्रिय सिनेमा और सामाजिक यथार्थ, ग्रन्थ शिल्पी, दिल्ली
12. Nirmal Kumar Chaudhary, How to write films screen plays

13. Nirmal Kumar Chaudhary, Satyajeet Ray Gastyon Roberge
14. Rhitwik Ghatak, Cinema & I, Roop Publication, Kolkata
15. Monaco James, How to Read a film, Oxford University Press, Newyork
16. Jasbir Jain, Films, Literature and Culture
17. Thomas Elsoessar, Films Theory
18. Gracme Turner, Films as Social Practice
19. Shivkumar Vasudae, Reflection of Indian Cinema, ICCR, Delhi
20. Madhav Prasad, Ideology of Tndian Cinema, Oxpord University Press, Newyork

LHC 5011 – केरल का हिन्दी लेखन :

Course Code	LHC 5011	Semester	Elective
Name of Course	केरल का हिन्दी लेखन (Keral Ka Hindi Lekhan)		
क्रेडिट	4	Type	Elective

पाठ्यक्रम परिचय (Course Description) :

हिन्दी साहित्य को समृद्ध करने में केरल के रचनाकारों की भूमिका महत्वपूर्ण है।इस अध्ययन का लक्ष्य केरल के हिन्दी लेखकों की देन पर छात्रों का ध्यान आकार्षित करना है।

पाठ्यक्रम उपयोगिता (Course Outcome):

- राज्य सरकार के अधीन परीक्षा हेतु आवश्यक।
- केरल का समाज संस्कृति और साहित्य की सामान्य जानकारी प्राप्त की जा सकती है।
- विदेशियों और हिन्दी भाषा-भाषियों द्वारा केरल का इतिहास और बदलते समाज को समक्ष कर सकते हैं।

पाठ्यक्रम (Couse Structure) :

पाठ्यक्रम का सम्पूर्ण विवरण इस प्रकार है-

इकाई- एक

दक्षिण भारत में राष्ट्रीय आन्दोलन के रूप में हिन्दी का प्रचार- दक्षिणी क्षेत्रों में हिन्दी भाषा का विकास : केरल के संदर्भ में- दक्षिण की विविध हिन्दी प्रचार संस्थाएं- केरल की हिन्दी पत्रिकाएं- केरल का हिन्दी साहित्य- शुरूआती दौर- आजादी के पहले- महराजा स्वाति तिरुनाल और उनके समकालीन रचनाकार।

इकाई- दो

केरल की हिन्दी कविताएँ- केरल की हिन्दी कविता का इतिहास एवं प्रमुख कवि।

कविताएँ-

1. जीने की ललकार – पी.नारायण देव
2. नर – डॉ. एन. रामन नायर
3. मौन – डॉ. पी. वी. विजयन
4. प्रकृति रहस्यमयी माँ – डॉ. एन. चंद्रशेखरन नायर
5. नकाब – डॉ. एन. रवीन्द्रनाथ
6. राग लीलावती – डॉ.ए. अरविंदाक्षन ।

इकाई- तीन

केरल का हिन्दी कथा साहित्य : उपन्यास- सागर की गलियां – डॉ.एन. रामन नायर (वस्तुगत एवं शिल्पगत अध्ययन) ।(व्याख्या प्रारंभिक 50 पृष्ठ)

इकाई- चार

कहानियाँ:

1. आगे कौन हवाल – डॉ.गोविन्द शेणाय
2. तखमीर – डॉ. जे. बाबू

निबंध:

1. आ जा रे परदेशी (फूल और कांटे) – डॉ. एन. विश्वनाथ अय्यर
2. पारिस्थितिकी सौन्दर्य शास्त्र (साहित्य का पारिस्थितिकी दर्शन)– डॉ. के. वनजा

परीक्षा पद्धति (Pattern of Examination) :

- **आंतरिक परीक्षा (कुल अंक 40) :** लिखित परीक्षा-15 अंक, सेमिनार-10 अंक, प्रदत्त कार्य-10 अंक, अन्य गतिविधियाँ (Overall)- उपस्थिति, छात्र व्यवहार, सांस्कृतिक गतिविधियाँ आदि - 5 अंक ।
- **सत्रांत परीक्षा : (कुल अंक 60)** खंड 'क' में 1 से 10 बहुविकल्पीय प्रश्न होंगे जिसमें क, ख, ग और घ के रूप में चार विकल्प होंगे (10x1= 10)। खंड 'ख' में 11 से 16 ससंदर्भ व्याख्या (RC) होंगी जिनमें से चार करने होंगे। खंड 'ग' 17 से 21 दीर्घ उत्तरीय (निबंध स्तरीय) प्रश्न होंगे जिनमें तीन लिखने होंगे (3x10 = 30)।

संदर्भ ग्रंथ :

1. डॉ.एन चंद्रशेखर नायर, केरल के हिन्दी साहित्य का वृहत इतिहास, केरल हिन्दी साहित्य अकादमी, तिरुवंतपुरम, वर्ष-1989
2. डॉ. मालिक मोहम्मद, हिन्दी साहित्य को हिन्दीतर प्रदेशों की देन
3. डॉ. जी.गोपीनाथन, केरलीयों की हिन्दी को देन, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, वर्ष- 1973
4. एन.ई.विश्वनाथ अय्यर, केरल में हिन्दी भाषा और साहित्य का विकास, वर्ष-1996
5. डॉ. पी. के केशव नायर, दक्षिण के हिन्दी प्रचार का समीक्षात्मक इतिहास
6. डॉ.एन. ई. विश्वनाथ अय्यर, दक्षिण हिन्दी प्रचार आन्दोलन दक्षिण हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास
7. डॉ.एन.ई.विश्वनाथ अय्यर, केरल के प्रथम हिन्दी गीतकार
8. डॉ. विलास गुप्ता, आधुनिक हिन्दी साहित्य को अहिन्दी भाषी साहित्यकारों की देन

9. डॉ.एन.चंद्रशेखर नायर (सं), केरल की हिन्दी कविताएँ, केरल हिन्दी साहित्य अकादमी, तिरुवंतपुरम
10. डॉ.आरशशिधरन (सं), दक्षिण में हिन्दी भाषा एवं साहित्य : दशा और दिशा, जवाहर पुस्तकालय, मधुरा, वर्ष-2013

LHC 5012 – भारतीय संस्कृति :

Course Code	LHC 5012	Semester	Elective
Name of Course	भारतीय संस्कृति (Bhartiya Sanskriti)		
क्रेडिट	4	Type	Elective

पाठ्यक्रम परिचय (Course Description) :

भारतीय संस्कृति की एक सामान्य जानकारी प्रत्येक भारतीय नागरिक के लिए अपेक्षित है।अत: भारतीय संस्कृति की अवधारणा और उसके विभिन्न पहलुओं का परिचय देना इस पाठ्यक्रम का लक्ष्य है जो इस देश को समझने में उपयोगी होगा।

पाठ्यक्रम उपयोगिता (Course Outcome):

- लोक सेवा आयोग, राज्य सरकार के अधीन परीक्षा हेतु आवश्यक है।साक्षात्कार में भारतीय संस्कृति से संबंधित प्रश्न पूछे जाते हैं।
- इससे भारतीय समाज संस्कृति और साहित्य की सामान्य जानकारी प्राप्त की जाती है।
- विदेशियों और अहिन्दी भाषा-भाषियों द्वारा भारतीय समाज को आसानी से समझा जा सकता है।

पाठ्यक्रम (Couse Structure) :

पाठ्यक्रम का सम्पूर्ण विवरण इस प्रकार है-

इकाई- एक

आदिकाल, मध्यकाल एवं आधुनिककालीन संस्कृति का सामान्य परिचय, आदिकाल : संस्कृति क्या है – अर्थ एवं परिभाषा, संस्कृति और सभ्यता का परिचय एवं दोनों के बीच का अंतर।

इकाई- दो

संस्कृति के विकास : एक ऐतिहासिक सर्वेक्षण, भारतीय संस्कृति, भारतीय संस्कृति के विविध पहलु, वैदिक काल, वेड, पुराण, आरण्यक, उपनिषद – जैन धर्म, बौद्ध धर्म, भक्ति आन्दोलन – दर्शन, वैष्णव धर्म, शैव धर्म, रामायण – महाभारत।

इकाई- तीन

मध्यकाल : भरता में मुसलमानों का आगमन, मुस्लिम संस्कृति, सूफीवाद, पाश्चत्य संस्कृति, पुर्तगाली, फ्रेंच, डच, ब्रिटिश, औपनिवेशिक काल।

इकाई- चार

भारतीय जनता का नवजागरण, नवजागरण कालीन विभिन्न आन्दोलन, गाँधी विचारधारा – पाश्चात्य विचारधाराओं का प्रभाव, औपनिवेशिक संस्कृति, नव औपनिवेशिक संस्कृति।

परीक्षा पद्धति (Pattern of Examination) :

- **आंतरिक परीक्षा (कुल अंक 40) :** लिखित परीक्षा-15 अंक, सेमिनार-10 अंक, प्रदत्त कार्य-10 अंक, अन्य गतिविधियाँ (Overall)- उपस्थिति, छात्र व्यवहार, सांस्कृतिक गतिविधियाँ आदि - 5 अंक।
- **सत्रांत परीक्षा : (कुल अंक 60)** खंड 'क' में 1 से 10 बहुविकल्पीय प्रश्न होंगे जिसमें क, ख, ग और घ के रूप में चार विकल्प होंगे (10x1= 10)। खंड 'ख' में 11 से 16 टिप्पणी होंगी जिनमें से चार करने होंगे। खंड 'ग' 17 से 21 दीर्घ उत्तरीय (निबंध स्तरीय) प्रश्न होंगे जिनमें तीन लिखने होंगे (3x10 = 30)।

संदर्भ ग्रंथ :

1. रामधारी सिंह दिनकर,संस्कृति के चार अध्याय, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, सं 1956
2. डॉ.एस.राधाकृष्णन, भारतीय संस्कृति : कुछ विचार, राजपाल एंड संस्, सं. 1996
3. रायमेण्ड विल्यम्स, कल्चर एंड सोसाईटी, chatto and windus, 20 vauxhall bridge road, London - 1958
4. राममूर्ति शर्मा, भारतीय दर्शन की चिंतनधारा, मणिदीप प्रकाशन, दिल्ली, सं. 2001
5. डॉ. गोविन्द चन्द्र पाण्डेय, भारतीय परम्परा के मूल स्वर, नेशनल पब्लिकेशन हॉउस
6. ए.एल भाषाम, ए कल्चर हिस्टरी ऑफ़ इंडिया. ऑक्सफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी- 12 सं. 2008
7. देवदत्त रामकृष्ण बेनी माधव वाष्या विमला चून,इंडियन कल्चर, ऐ.बी.कोरपरेटी, सं.1984
8. वि.के गोकक, इंडिया एंड वेल्ड कल्चर, साहित्य अकादमी, सं.1994
9. नरेंद्र मोहन,भारतीय संस्कृति, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, सं 1997
10. बाल्मीकि प्रसाद सिंह, संस्कृति रमी कलाएं और उनसे प्रे, राजकमल प्रकाशन, सं. 1999
11. लता शर्मा एंड डॉ. प्रकाश व्यास,भारतीय संस्कृति का विकास, पंचशील प्रकाशन, जयपुर
12. शम्भुनाथ,संस्कृति की उत्तरकथा, वाणी प्रकाशन, सं. 2000
13. कृष्णमोहन श्रीमलि,धर्म, समाज और संस्कृति, ग्रन्थ शिल्पी, सं.2005

LHC 5013 – सांस्कृतिक पर्यटन (केरल के संदर्भ में) :

Course Code	LHC 5013	Semester	Elective
Name of Course	सांस्कृतिक पर्यटन -केरल के संदर्भ में (Sanskritik Paryatan - Keral Ke Sandarbh Mein)		
क्रेडिट	4	Type	Elective

पाठ्यक्रम परिचय (Course Description) :

पाठ्यक्रम उपयोगिता (Course Outcome):

- लोक सेवा आयोग, राज्य सरकार के अधीन परीक्षा हेतु आवश्यक है। साक्षात्कार में भारतीय संस्कृति से संबंधित प्रश्न पूछे जाते है।
- इससे भारतीय समाज की भिन्नतापरक संस्कृति, साहित्य और भौगोलिक क्षेत्रों की सामान्य जानकारी प्राप्त की जा सकती है।
- विदेशियों और अहिन्दी भाषा-भाषियों द्वारा भारतीय समाज और संस्कृति को आसानी से समझा जा सकता है।
- पयर्टन सेवा कार्य आरम्भ किया जा सकता है ।

पाठ्यक्रम (Couse Structure) :

पाठ्यक्रम का सम्पूर्ण विवरण इस प्रकार है-

इकाई- एक

सांस्कृतिक पर्यटन का सामान्य परिचय, अर्थ, परिभाषा एवं संकल्पना, भारत की संस्कृति और सांस्कृतिक पर्यटन ।

इकाई- दो

भारत में सांस्कृतिक पर्यटन का महत्व, संस्कृति विरासत के अलग-अलग पहलु – संगीत, नृत्य, नाटक , कला और कुशलता, भाषा जाति और धर्म, पर्व-उत्सव आदि।

इकाई- तीन

केरल में सांस्कृतिक पर्यटन – केरल में सांस्कृतिक केरल भौगोलिक क्षेत्र जनता एवं आबादी में सांस्कृतिक पर्यटन का महत्व, महत्वपूर्ण संस्कृति और धार्मिक संस्थाएँ, केरल के लोकधर्मी, नाट्यधर्मी सम्प्रदाय, केरल का वस्तुकला विरासत, आयुर्वैदिक संस्थाएँ, केरल के हिन्दी यात्रा दिग्दर्शन, केरल के महत्वपूर्ण पर्व या उत्सव ।

इकाई- चार

शैक्षिक यात्रा और प्रदत्त कार्य

प्रदत्त कार्य का रिपोर्ट केरल के महत्वपूर्ण सांस्कृतिक संस्थाओं की यात्रा के आधार पर होगा । प्रत्येक विद्यार्थी अपने मार्गदर्शक की सहायता लेकर इस रिपोर्ट को प्रस्तुत करेगा।

परीक्षा पद्धति (Pattern of Examination) :

- **आंतरिक परीक्षा (कुल अंक 40) :** लिखित परीक्षा-15 अंक, सेमिनार-10 अंक, प्रदत्त कार्य-10 अंक, अन्य गतिविधियाँ (Overall)- उपस्थिति, छात्र व्यवहार, सांस्कृतिक गतिविधियाँ आदि - 5 अंक ।
- **सत्रांत परीक्षा : (कुल अंक 60)** खंड 'क' में 1 से 10 बहुविकल्पीय प्रश्न होंगे जिसमें क, ख, ग और घ के रूप में चार विकल्प होंगे (10x1= 10)। खंड 'ख' में 11 से 16 टिप्पणी होंगी जिनमें से चार करने होंगे । खंड 'ग' 17 से 21 दीर्घ उत्तरीय (निबंध स्तरीय) प्रश्न होंगे जिनमें तीन लिखने होंगे (3x10 = 30)।

संदर्भ ग्रंथ :

1. Kichna Chaithanya, Kerala
2. A Sreedhara Menon, Social and cultural History of Kerala
3. Kerala through aged –Department of Publications, Govt. of Kerala
4. P.K.S Raja, Medieval Kerala
5. C.Rojek and J. Urry (Eds), Touring Cultural (Routledge 1997)
6. D. Mac Cannell, The tourist (Schloars Books-1989)
7. Loknatya AM Sanskriti, Dr. A. Dehutar Rashtravani Prakashan, Delhi
8. Dr. N.E. Viswanath Iyer, Abhaya Kumar Ki Atmakahani
9. Dr. S. Thanamony Amma, Sanskriti Ke Swar
10. Dr. G. Gopinathan, Kehul Ki Virasat, Vani Prakashan, Delhi
11. Dr. M.G.S Narayanan, Calicut the city of Truth, Publications Division, Calicut University

LHC 5014 – हिन्दी नवजागरण :

Course Code	LHC 5014	Semester	Elective
Name of Course	हिन्दी नवजागरण (Hindi Navjagran)		
क्रेडिट	4	Type	Elective

पाठ्यक्रम परिचय (Course Description) :

भारतीय नवजागरण राष्ट्रीय पराधीनता की उपज है। उसको तीव्रतर करने में देश की सुधारवादी संस्थाओं, आधुनिक शिक्षा और ज्ञान-विज्ञान की नूतन समाग्रियों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। नवजागरणकालीन भाषा एवं साहित्य का अध्ययन पराधीन भारत की वास्तविकता को जानने के लिए और बाज़ार के अधिशत्व पर अधिष्ठित वर्तमान समय की विभीषिका को समझने के लिए बहुत ही आवश्यक है। इस उद्द्देश्य से उसको एक वैकल्पिक पर्चे के रूप में प्रस्तुत कर रहा है।

पाठ्यक्रम उपयोगिता (Course Outcome):

- विद्यार्थियों में नई सोच व जागरण पैदा करना।
- अपने अधिकारों के प्रति जागरूक कराना।
- नवजागरण काल को नए सिरे से देखना।
- समाज जागरण के नए पहलुओं पर विचार करना।
- प्रतियोगिताओं के लिए तैयार करना।

पाठ्यक्रम (Couse Structure) :

पाठ्यक्रम का सम्पूर्ण विवरण इस प्रकार है-

इकाई- एक

भारतीय नवजागरण – 1857 की स्वतंत्रता की प्रथम लड़ाई – सुधारवादी संस्थाएँ, आधुनिक शिक्षा, ज्ञान-विज्ञान के नवीन क्षेत्रों का विकास- भारतीय समाज का आधुनिकीकरण- स्वभाषा चिंतन, राष्ट्रीय, हिन्दी नवजागरण– नवजागरणकालीन साहित्य ।

इकाई- दो

नवजागरणकालीन नाटक एवं कथा साहित्य – गद्य का विकास, प्रारम्भिक गद्य कृतियों का लक्ष्य और रूप, भारतीय रंगमच

नाटक : भारत दुर्दशा – भारतेन्दु हरिश्चंद्र, **आत्मकथा :** सरला एक विधवा की आत्मजीवनी- दुखिनिबाला

इकाई- तीन

कहानियाँ : ग्यारह वर्ष का समय – आचार्य रामचंद्र शुक्ल, दुलाईवाली – बंगमहिला, एक टोकरी भर मिट्टी- माधवराव सप्रे, उसने कहा था – चंद्रधर शर्मा गुलेरी

इकाई- चार

हिन्दी नवजागरण और पत्र-पत्रिकाएँ – कविवचन सुधा, हरिश्चंद्र मैगज़ीन, हिन्दी प्रदीप, आनंद कादम्बिनी, नगरी नीरद, ब्राहमण सरस्वती

निबंध : सच्ची समालोचना – बालकृष्ण भट्ट, देश की बात – आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, हिन्दी की उन्नति – बालमुकुन्द गुप्त

परीक्षा पद्धति (Pattern of Examination) :

- **आंतरिक परीक्षा (कुल अंक 40) :** लिखित परीक्षा-15 अंक, सेमिनार-10अंक, प्रदत्त कार्य-10 अंक, अन्य गतिविधियाँ (Overall)- उपस्थिति, छात्र व्यवहार, सांस्कृतिक गतिविधियाँ आदि - 5 अंक ।
- **सत्रांत परीक्षा : (कुल अंक 60)** खंड 'क' में 1 से 10 बहुविकल्पीय प्रश्न होंगे जिसमें क, ख, ग और घ के रूप में चार विकल्प होंगे (10x1= 10)। खंड 'ख' में 11 से 16 ससंदर्भ व्याख्या (RC) होंगी जिनमें से चार करने होंगे। खंड 'ग' 17 से 21 दीर्घ उत्तरीय (निबंध स्तरीय) प्रश्न होंगे जिनमें तीन लिखने होंगे (3x10 = 30)।

संदर्भ ग्रंथ :

1. शम्भुनाथ, दुस्समय में साहित्य, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, सं. 2002
2. कर्मेन्दु शिशिर, नवजागरण और संस्कृति , आधार प्रकाशन, हरियाणा, सं. 2000
3. रामविलाश शर्मा, महावीर प्रसाद द्वेद्वी और हिन्दी नवजागरण, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, सं.1997
4. रामविलाश शर्मा, भारतेंदु हरिश्चंद्र और हिन्दी नवजागरण की समस्याएँ, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 1999
5. शम्भुनाथ, हिन्दी नवजागरण और संस्कृति, आनंद प्रकाशन, कोलकाता, सं.2004
6. कर्मेन्दु शिशिर, भारतीय नवजागरण और समकालीन संदर्भ, राज प्रकाशन सं. 2013
7. दशरथ ओझा, हिन्दी नाटक और विकास, राजपाल एंड साँस, दिल्ली, सं. 1984
8. डॉ.बच्चन सिंह, हिन्दी नाटक, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, सं. 1989
9. गोपालराय, हिन्दी उपन्यास का विकास, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, सं.2005
10. नंदकिशोर नवल, हिन्दी आलोचना का विकास, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, सं.1981
11. गोपालराय, हिन्दी कहानी का इतिहास, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, सं. 2016

LHC 5015 –हिन्दी साहित्य में पारिस्थितिक विमर्श :

Course Code	LHC 5015	Semester	Elective
Name of Course	हिन्दी साहित्य में पारिस्थितिक विमर्श (Hindi Sahitya Mein Paristhitik Vimarsh)		
क्रेडिट	4	Type	Elective

पाठ्यक्रम परिचय (Course Description) :

आधुनिक संदर्भ में पारिस्थितिक विमर्श अध्ययन का नया क्षेत्र है। प्रकृति और मनुष्य के बीच के अटूट संबंध का बोध कराने वाला यह विमर्श इस पर बल देता है कि सुनहरे भविष्य के लिए प्रकृति का शोषण नहीं पोषण अनिवार्य है। इस समझदारी के फलस्वरुप दुनिया भर में एक नया आंदोलन शुरू हुआ, यह पर्यावरण बोध साहित्य में भी झलकने लगा इसलिए इस साहित्य विमर्श का अध्ययन आज के वातावरण में बहुत अनिवार्य है।

पाठ्यक्रम उपयोगिता (Course Outcome):

- पारिस्थितिक का ज्ञान।
- पारिस्थितिक हानि से बचाव के तरीक़े ढूँढना।
- पर्यावरण को सुरक्षित रखना।
- पर्यावरण को मानवता जोड़कर जागरूकता पैदा करना।
- वर्तमान प्रदूषण संबंधी समस्याओं को दूर करने का। प्रयास करने।

पाठ्यक्रम (Couse Structure) :

पाठ्यक्रम का सम्पूर्ण विवरण इस प्रकार है-

इकाई– एक

पारिस्थितिक सौंदर्यशास्त्र- पारिस्थितिक चिंतन एवं उसकी आधारशिला, विभिन्न शाखाएं-गहन-सामाजिक-मार्क्सवादी और इको फेमिनिसम, पारिस्थितिक विमर्श- आरंभ-प्रतिमान, पर्यावरण शोषण के विभिन्न कारण, भूमंडलीकरण एवं विकास की योजनाएं- उपभोग संस्कार, पश्चात्य देश में पर्यावरण संरक्षण आंदोलन, भारत में आंदोलन-साहित्य में पर्यावरण विमर्श, हिंदी साहित्य में पर्यावरण विमर्श।

इकाई– दो

समकालीन हिंदी कविता में पारिस्थितिक विमर्श- विषय एवं भाषा, कविता : एकांत श्रीवास्तव- अब मैं घर लौटूंगा, अरुण कमल-दुस्वप्न, स्वप्निल श्रीवास्तव- मुझे दूसरी पृथ्वी चाहिए, ज्ञानेंद्रपति- नदी और साबुन

इकाई- तीन

हिंदी उपन्यास साहित्य में पारिस्थितिक विमर्श- विषय एवं भाषा, संजीव कृत उपन्यास- रह गई दिशायें इसी पार (प्रारंभिक 50 पृष्ठ व्याख्या हेतु)

इकाई- चार

हिंदी कहानी साहित्य में पारिस्थितिक विमर्श- विषय एवं भाषा, कहानियां- स्वयं प्रकाश-बलि,बटरोही- कहीं दूर जब दिन ढल जाए, राजेश जोशी- कपिल का पेड़

परीक्षा पद्धति (Pattern of Examination) :

- **आंतरिक परीक्षा (कुल अंक 40) :** लिखित परीक्षा-15 अंक, सेमिनार-10 अंक, प्रदत्त कार्य-10 अंक, अन्य गतिविधियाँ (Overall)- उपस्थिति, छात्र व्यवहार, सांस्कृतिक गतिविधियाँ आदि - 5 अंक ।
- **सत्रांत परीक्षा : (कुल अंक 60)** खंड 'क' में 1 से 10 बहुविकल्पीय प्रश्न होंगे जिसमें क, ख, ग और घ के रूप में चार विकल्प होंगे (10x1= 10)। खंड 'ख' में 11 से 16 ससंदर्भ व्याख्या (RC) होंगी जिनमें से चार करने होंगे। खंड 'ग' 17 से 21 दीर्घ उत्तरीय (निबंध स्तरीय) प्रश्न होंगे जिनमें तीन लिखने होंगे (3x10 = 30)।

संदर्भ ग्रंथ :

1. सुंदरलाल बहुगुणा, धरती की पुकार, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
2. डॉ. के वनजा, इकोफेमिनिज्म, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
3. डॉ. के वनजा, साहित्य का पारिस्थितिक दर्शन, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
4. डॉ. के वनजा, हरित भाषा वैज्ञानिक विमर्श, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
5. Raichel Carson, Silent Spoing, Houglatn Miflin, Year 1962
6. Edt. by Cheryil, The Eco Criticism Reader, Glotfely & Hanold from Publised by The University of Gergin Press in 1996
7. Etd. Alwin Fill & Peter Mahlahausler, The Ecolinguistics Read, Laungage, Ecology & Environment in 2001
8. Maria Mics & Vanduna Shiva, Introduction to Eco-Femism
9. L. Josepn Russerf, Literature and Ecology : An Experint in Eco-Criticism
10. G. Maadhusudhanan, Kathaaayam Paristhiyam D.C. Books, Kollam-2006
11. Anand, Jaiva Manishyan, D.C. Books, Kottayam
12. John Belly Foster, Maxs Ecoloy, International Publishies, New York, 2000

LHC 5016 –हिन्दी साहित्य और मानवाधिकार :

Course Code	LHC 5016	Semester	Elective
Name of Course	हिन्दी साहित्य और मानवाधिकार (Hindi Sahitya Aur Manavadhikar)		
क्रेडिट	4	Type	Elective

पाठ्यक्रम परिचय (Course Description) :

मनुष्य के जीवन, स्वतंत्रता, समानता और गरिमा संबंधी अधिकार ही मानवाधिकार है। व्यक्ति के अधिकारों को सत्ता के अतिक्रमण से बचाने की चिंताओं से मानवाधिकार की अवधारणा का प्रादुर्भाव हुआ। मनुष्य होने के नाते बिना किसी शर्त के उपलब्ध यह अधिकार सार्वभौम अपरिवर्तनीय विभाग माने जाते हैं। 1948 में संयुक्त राष्ट्र संघ के द्वारा जारी मानवाधिकारों की सार्वभौमिक घोषणा एक बुनियादी दस्तावेज है। इसके अंतर्गत यह अधिकार सुरक्षित हैं। मानवाधिकार आज हिंदी साहित्य में भी बहस का विषय बन रहा है। दरअसल साहित्य मनुष्य के अधिकारों पर होने वाले रोकथाम के खिलाफ प्रतिरोध दर्ज करता है।

पाठ्यक्रम उपयोगिता (Course Outcome):

- मानवाधिकार की जानकारी देना।
- सभी को समान समझने की क्षमता पैदा करना।
- स्त्रियों को आदर की दृष्टि से देखने की संस्कृति पैदा करना।
- राष्ट्र का सही पथप्रदर्शन करना।
- मानवाधिकारों का सही उपयोग करने की सीख देना।

पाठ्यक्रम (Couse Structure) :

पाठ्यक्रम का सम्पूर्ण विवरण इस प्रकार है-

इकाई- एक

मानवाधिकार अवधारणा, मानवाधिकार : अर्थ एवं स्वरूप, इतिहास-व्यक्ति-समाज-सत्ता संविधान एवं मानवाधिकार।

इकाई- दो

उपन्यास : परिशिष्ट- गिरिराज किशोर (प्रारंभिक 50 पृष्ठ व्याख्या हेतु) ।

इकाई- तीन

कहानियाँ : पार्टीशन- स्वयं प्रकाश, ग्लोबलाइजेशन- जितेंद्र भाटिया, सिलिया- सुशीला टाकभौरे- भीख नहीं अधिकार चाहिए- मृदुला सिन्हा।

इकाई- चार

कविता : गूंगा मत समझो- सूरजपाल चौहान, मुझे नहीं चाहिए- निलय उपाध्याय, सबसे बड़ा खतरा- महादेव टोप्पो।

परीक्षा पद्धति (Pattern of Examination) :

- **आंतरिक परीक्षा (कुल अंक 40) :** लिखित परीक्षा-15 अंक, सेमिनार-10 अंक, प्रदत्त कार्य-10 अंक, अन्य गतिविधियाँ (Overall)- उपस्थिति, छात्र व्यवहार, सांस्कृतिक गतिविधियाँ आदि - 5 अंक ।
- **सत्रांत परीक्षा : (कुल अंक 60)** खंड 'क' में 1 से 10 बहुविकल्पीय प्रश्न होंगे जिसमें क, ख, ग और घ के रूप में चार विकल्प होंगे (10x1= 10)। खंड 'ख' में 11 से 16 ससंदर्भ व्याख्या (RC) होंगी जिनमें से चार करने होंगे। खंड 'ग' 17 से 21 दीर्घ उत्तरीय (निबंध स्तरीय) प्रश्न होंगे जिनमें तीन लिखने होंगे (3x10 = 30)।

संदर्भ ग्रंथ :

1. ग्रेनविल ओंस्ट्रिन अनुवाद- नरेश गोस्वामी, भारतीय संविधान : राष्ट्र की आधारशिला, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
2. एन. एम. सभि अन्ना साली, भारत में मानवाधिकार, नेशनल बुक ट्रस्ट, दिल्ली
3. शशिप्रभा महिला, मजदूरों की मानवाधिकार, नीरज पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली
4. राजकिशोर, मानवाधिकारों का शोषण, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
5. सी. एस. बाजवा, ह्यूमन राइट्स इन इंडिया, अनमोल पब्लिकेशन
6. नंदकिशोर आचार्य, मानवाधिकार के तकाजे, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
7. मोहिनी चटर्जी, फैमिली एंड ह्यूमन राइट्स, बी पी पब्लिकेशन
8. देवेंद्र चौबे, समकालीन हिंदी कहानी का समाजशास्त्र, प्रकाशन संस्थान, नई दिल्ली
9. हेतु भारद्वाज, हिंदी कथा साहित्य का विकास, पंचशील प्रकाशन
10. पुष्पपाल सिंह , वैश्विक गांव बनाम आम आदमी, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली
11. सूरज पालीवाल, 21वीं सदी का पहला दशक और हिंदी कहानी, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
12. पुष्पपाल सिंह, समकालीन नया परिप्रेक्ष्य, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली
13. शंभूनाथ, कहानी : यथार्थवाद से मुक्ति, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली
14. भीष्म साहनी, आधुनिक हिंदी उपन्यास (दो खंड), राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
15. नामवर सिंह, आधुनिक हिंदी उपन्यास (दो खंड),राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
16. एन. मोहनन, समकालीन हिंदी उपन्यास, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
17. मोहिनी चैटर्जी, फेमिनिज्म एंड ह्यूमन राइट्स इन इंडिया, विपियर पब्लिकेशन
18. सुभाष शर्मा, भारत में मानवाधिकार, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली

LHC 5017 –अनूदित विश्व साहित्य :

Course Code	LHC 5017	Semester	Elective

Name of Course	अनूदित विश्व साहित्य (Anoodit Vishwa Sahitya)		
क्रेडिट	4	Type	Elective

पाठ्यक्रम परिचय (Course Description) :

हिन्दी साहित्य के अध्ययन के साथ छात्रों को इस तथ्य से परिचित कराना है कि हिन्दी साहित्य में व्यक्त सम्वेदना किसी ख़ास या अलग-थलग पड़े मानवीय समुदाय की न होकर समग्र मनुष्यता की सम्वेदना का एक हिस्सा है। इस तथ्य से परिचित कराने के लिए विश्व साहित्य के हिन्दी मेन अनुदित कृतियों को अध्ययन का माध्यम बनायेंगे। इस खंड में विश्व भाषाओँ की विभिन्न अनुदित कृतियों के माध्यम से छात्रों को मानवीय समुदाय की संवेदना से परिचित कराया जाएगा।

पाठ्यक्रम उपयोगिता (Course Outcome):

- अनुवाद जो की एक सेतु का काम करता है इससे अलग-अलग संस्कृतियों को जानने व समझने में मदद मिलेगी।
- विद्यार्थियों को सम्पूर्ण विश्व की जानकारी में इसकी निश्चित रूप से भूमिका है।
- अनेक देश के नए-नए भाषा शब्द से परिचय होगा।
- विभिन्न देशों के सभ्यता से परिचय होगा।
- विद्यार्थियों के लिए एक विस्तृत फ़लक प्राप्त होगा।

पाठ्यक्रम (Couse Structure) :

पाठ्यक्रम का सम्पूर्ण विवरण इस प्रकार है-

इकाई- एक

विश्व साहित्य परिचय, विश्व साहित्य की अवधारणा एवं महत्व, अनुदित विश्व साहित्य का संक्षिप्त इतिहास ।

इकाई- दो

चुनी हुई अनुदित रचनाओं का अध्ययन :

उपन्यास : माँ – गोर्की (व्याख्या प्रारंभिक 50 पृष्ठ), अफीम का समुंद्र – अमिताभ घोष (व्याख्या प्रारंभिक 50 पृष्ठ)

इकाई- तीन

कहानियाँ : आखिरी पत्ता – ओ. हेनरी, गुलाबी आईसक्रीम – मर्से रुदुरेदा

कविताएँ : निजीम हिकमत, पाब्लो नेरुदा- दोनों की अनुदित दो-दो कविताएँ ।

इकाई- चार

नाटक : शाकुन्तलम् – कालिदास, मैकबेथ – शेक्सपियर (अनुवाद-बच्चन)।

परीक्षा पद्धति (Pattern of Examination) :

- **आंतरिक परीक्षा (कुल अंक 40) :** लिखित परीक्षा-15 अंक, सेमिनार-10 अंक, प्रदत्त कार्य-10 अंक, अन्य गतिविधियाँ (Overall)- उपस्थिति, छात्र व्यवहार, सांस्कृतिक गतिविधियाँ आदि- 5 अंक ।
- **सत्रांत परीक्षा : (कुल अंक 60)** खंड 'क' में 1 से 10 बहुविकल्पीय प्रश्न होंगे जिसमें क, ख, ग और घ के रूप में चार विकल्प होंगे (10x1= 10)। खंड 'ख' में 11 से 16 ससंदर्भ व्याख्या (RC) होंगी जिनमें से चार करने होंगे। खंड 'ग' 17 से 21 दीर्घ उत्तरीय (निबंध स्तरीय) प्रश्न होंगे जिनमें तीन लिखने होंगे (3x10 = 30)।

संदर्भ ग्रंथ :

1. ऋषभदेव शर्मा, विश्व साहित्य एवं अनुवाद : हिन्दी का संदर्भ
2. होमर, ओडिसी, अनु. रमेशचन्द्र सिन्हा, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2012
3. कन्हैयालाल ओझा, भारतीय श्रेष्ठ कहानियाँ– दो खंड, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
4. अभय कुमार, विश्व की श्रेष्ठ कहानियाँ, अनुकर प्रकाशन
5. विकास खत्री, विश्व प्रसिद्ध लोक-कथाएँ, राजभाषा पुस्तक प्रतिष्ठान, 2010
6. शेक्सपियर, जुलियस सीसर, अनु.रांगेय राघव, राजपाल, नयी दिल्ली
7. शेक्सपियर, तूफ़ान, अनु. रांगेय राघव, राजपाल, नयी दिल्ली
8. शेक्सपियर, वेनिस का सौदागर, अनु.रांगेय राघव, राजपाल, नयी दिल्ली
9. शेक्सपियर, जैसा तुम कहो, अनु.रांगेय राघव, राजपाल, नयी दिल्ली
10. अरुंधती रॉय, मामूली चीजों का देवता, राजपाल, नयी दिल्ली
11. पॉलो को झुल्हो, ब्रीड़ा, हापरकोलिम्स (हिन्दी)
12. E.Chaitfitz, The Poetics Of Imperialism "Translation and Colonozation From the Tempest to Tarzan, OUP, London
13. E.A.Gutt, Translation and Relevance : Cognition and Context, OUP, London
14. B.Hating and I Masion, Discourse and the Translation, London, Longman
15. Frank J. Lechneer and Bali John ED, The Globlization Reader, Blackwll, Oxford
16. मोहनकृष्ण बोहरा, इलियट और हिन्दी साहित्य चिंतन, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली

LHC 5018 –जन संस्कृति :

Course Code	LHC 5018	Semester	Elective
Name of Course	जन संस्कृति		

क्रेडिट	4	Type	Elective

पाठ्यक्रम परिचय (Course Description) :

जन संस्कृति का अध्ययन छात्रों को नोर्धरित संस्कृति से अलग एक नयी दृष्टि देता है।जन संस्कृति साधारण जनता की रोजमर्रा जिंदगी की है। आज जीवन के तौर तरीके का जो रूप है वह फिल्म, टेलीविजन, समाचार पत्र, न्यूमिडिया आदि में प्राप्त है।

पाठ्यक्रम उपयोगिता (Course Outcome):

- जन संस्कृति का अभिप्राय सर्व-साधारण से है।
- किसी भी देश की उन्नति में संस्कृति, सभ्यता, मूल्य, परम्पराओं और सहेजी गई धरोहरों का बहुत ही महत्व योगदान होता है, जिसे समझने में मदद मिलेगी।
- इसमें बोली-भाषा,रहन-सहन, और खान-पान आदि देखने को मिलता है।
- भारत विविधताओ का देश है यहाँ अनेक जन-जाति है।
- भारत में विभिन्न धर्म, जाति, वर्ण और वर्ग के लोग रहते है,जिन्हें समझने में लाभ मिलेगा।

पाठ्यक्रम (Couse Structure) :

पाठ्यक्रम का सम्पूर्ण विवरण इस प्रकार है-

इकाई- एक

जन-संस्कृति : अर्थ, परिभाषा, उद्भव और विकास, लोक-संस्कृति और जन संस्कृति।

इकाई- दो

वैश्वीकरण और मिडिया के दौर मेन संस्कृति, उपभोग संस्कृति और बाज़ार संस्कृति।

इकाई- तीन

फिल्म, नाटक आदि मेन चित्रित जन-संस्कृति-टेलीविजन, मोबाइल और न्यूमिडिया मेन अभिव्यक्त संस्कृति।

इकाई- चार

अस्मिताबोध- लिंग, जाति, धर्म, प्रदेश, वर्ण, वंश, स्थानीयता, लोकबोध, साहित्य विमर्श का रूपायन, खण्ड संस्कृति, प्रतिरोध की नीति।

परीक्षा पद्धति (Pattern of Examination) :

- **आंतरिक परीक्षा (कुल अंक 40) :** लिखित परीक्षा-15 अंक, सेमिनार-10 अंक, प्रदत्त कार्य-10 अंक, अन्य गतिविधियाँ (Overall)- उपस्थिति, छात्र व्यवहार, सांस्कृतिक गतिविधियाँ आदि - 5 अंक ।
- **सत्रांत परीक्षा : (कुल अंक 60)** खंड 'क' में 1 से 10 बहुविकल्पीय प्रश्न होंगे जिसमें क, ख, ग और घ के रूप में चार विकल्प होंगे (10x1= 10)। खंड 'ख' में 11 से 16 टिप्पणी होंगी जिनमें से चार करने होंगे। खंड 'ग' 17 से 21 दीर्घ उत्तरीय (निबंध स्तरीय) प्रश्न होंगे जिनमें तीन लिखने होंगे (3x10 = 30)।

संदर्भ ग्रंथ :

1. नितिन सिंघानिया, भारतीय कला एवं संस्कृति, प्रभात प्रकाशन, 2012
2. गोपीनाथ कविराज, भारतीय संस्कृति और साधन खण्ड- 2
3. जर्नल ऑफ़ पोपुलर कल्चर, ऑनलाइन पोपुलर कल्चर
4. Jhon Story, Culture Theory and Popular Culture, Pengine- 2001
5. Journal of Consumer Culture – On-line
6. सुधीश पचौरी, पोपुलर कल्चर, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2009

The AC welcomed the proposal. To have greater thrust in this area Dr. Ifthikar Ahmed has been nominated as the Coordinator for drafting the proposal and follow up work by the AC.

AC 03:05:06 Commencement of P.G. Diploma Courses in Dept. of Hindi - Reg.

The Dept. of Hindi in its BoS 08.03.2019 has proposed to start following Hindi Diploma courses from this Academic Year i.e. 2019-2020. The Competent authority has approved the proposal on 16.04.2019 subject to Academic Council ratification. **(Annexure - IV)**

i. Post –Graduate Diploma in Mass Communication in Hindi

ii. Post –Graduate Diploma in Translation and Office Procedure

Decision: AC Ratified the Proposal. Credits shall be as per the CBCS/Diploma Regulations of CUK. VC pointed out that other Departments can also try for similar proposals. The HoD EVS should take action to introduce a PG diploma in EVS with the support of External agencies

A sub-committee has been constituted to frame guidelines for the operationalization of Certificate/Diploma/PG Diploma of CUK with following members: HOD Hindi (Coordinator), HoD Education, HoD English and Dr TJ Joseph Asst Professor, Economics .

AC 03:05:07 Approval of the BoS Minutes and Syllabus – Reg.

The following Departments have conducted their BoS for revision of syllabus. The revised syllabus is attached;

i. **Dept. of Hindi:-**

The BoS met on 08.03.2019, and approved the syllabus of MA Hindi and Ph.D. Course Work **(Annexure V-A)**

The revised syllabus of Ph.D. Course Work and MA Hindi and Comparative Literature to be implemented from 2019- academic year onwards.

Decision: The Academic Council approved the syllabus containing 72 credits incorporated with many contemporary items.

ii. **Dept. of Mathematics:-**

The BoS Meeting of Dept. of Mathematics held on 07.02.2019 has approved the revised syllabus of M.Sc. Mathematics to be implemented from 2019 onwards.

Decision: The Academic Council approved the proposal (72 credits)

iii. **Dept. of Plant Science:-**

The BoS Meeting of Dept. of Plant Science held on 15.04.2019 has proposed a revised syllabus of M.Sc. Plant Science. This is to be made effective from 2019- onwards.

Decision: The Academic Council approved the proposal in principle. The AC suggested 8 credits for both dissertation and viva voce together. The AC further pointed out to have Continuous Assessment of 40 marks and it is to be moderated by guide. Dissertation requires to be treated as a Core Course with double valuation.

iv. **Dept. of Environmental Science:-**

The BoS Meeting of Dept. of EVS held on 03.06.2019 has proposed a modified syllabus (Skeleton) and scheme of Evaluation for M.Sc. Environmental Science effective from 2019 onwards. **(Annexure V-D)**

Decision: Resolved to approve the syllabus with retrospective effect 2018-19. AC directed the department to change the Credits for core courses from the existing 3 to 4 credits.

AC resolved to have only one external evaluation and one internal evaluation for each core course.

v. **Dept. of Computer Science:-**

The BoS Meeting of Dept. of Computer Science held on 05.01.2019 (Minutes Enclosed) has proposed the following. **(Annexure V-E)**

i. Revised programme Structure for M.Sc. Computer Science(2019 Onwards).

ii. Establishment of Computational Intelligence

iii. Amendment on the Eligibility conditions for M.Sc. Computer Sciences(from next year onwards)

Decision: AC approved the proposal.

The Academic Council also constituted a committee to revisit the issue of credits to be assigned to Elective courses with Controller of Examinations, Dr. Govinda Rao, Dr. Rajendra Pilankatta and AR (Academic) to finalise the credit matter.

AC 03:05:08 New Departments – Commencement -Reg.

The UGC vide letter No. F.No.1-1/2013(CU) Vol-XVII dated 06.03.2019 has conveyed the approval of the University Grants Commission for commencing 4 New Department and also confirmed the establishment of Dept. of International Relations (UG). Accordingly(**ANNEXURE X**).

1. **Dept. of Management Studies:-** A meeting of the duly constituted Consultative Committee for **MBA** Programme was held on 8.05.2019 and 29-30 May 2019 for deliberation on implementation of MBA Scheme, Regulation, Syllabus and qualification for faculty recruitment. Proceeding of the Committee is placed at **(Annexure VI)** for perusal please. The total credit will be 100 with 4 semesters.

   The Committee recommended commencing of the MBA Programme at the Central University of Kerala during the Academic year 2019-20 in accordance with UGC guidelines /AICTE regulations.

   The regulations framed by the Consultative Committee may be adopted in the University for Commencement of MBA Programme.

2. **Dept. of Tourism Studies:- MBA in T&TM**. The Consultative Committee of Tourism and Travel Management met on 16.05.2019 and 06.06.2019 at CUK Periya and finalized the MBA as MBA (Tourism and Travel Management). The total credit will be 100 with 4 semesters. **(Annexure VII)**

CENTRAL UNIVERSITY OF KERALA

DEPARTMENT OF HINDI & COMPARATIVE LITERATURE

Board of studies meeting Department of Hindi held on 8th March 2019at 10 AM

Venue : HoD office cabin Hindi & Comparative Literature

Agenda : Restructure of MA Hindi syllubus,PhD syllubus and Two diploma course (Diploma in Mass Communication and Diploma in translation)

Chair : **Prof.(Dr.) Sudha Balakrishanan**, Head of Department , Hindi

Board Members

Sl No	Name of the Members	Designation	Remarks
1	Prof.Sudha Balakrishnan	Chairperson	
2	Dr. Taru S Pawar	Member	8/3/2019
3	Dr. Seema Chandran	Member	8/3/2019
4	Dr. Thennarasu S	Member	
5	Prof.(Dr) Mohan	Member	- Ab -
6	Prof.(Dr) Jayachandran	Member	
7	Prof(Dr) Vanaja	Member	
8	Prof.(Dr) Ganesh Pawar	Member	8-3-19

केरल केंद्रीय विश्वविद्यालय

CENTRAL UNIVERSITY OF KERALA

School of Languages and Comparative Literature

Department of Hindi and Comparative Literature

भाषा एवं तुलनात्मक साहित्य विद्यापीठ

हिंदी एवं तुलनात्मक साहित्य विभाग

पाठ्यक्रम एम० ए०
हिंदी एवं तुलनात्मक साहित्य विभाग
प्रवेश वर्ष 2019 से प्रारंभ

Syllabus

M.A. Hindi & Comparative Literature

Admission 2019 Onwards

पाठ्यक्रम समिति

एम0ए0 (हिन्दी एवं तुलनात्मक साहित्य)

पाठ्यक्रम समिति :

01	1	प्रो.सुधा बालकृष्णन	आचार्य एवं अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, केरल केंद्रीय विश्वविद्यालय.केरल	अध्यक्ष
02	2	डॉ. तारु एस. पवार	उपाचार्य, हिन्दी विभाग, केरल केंद्रीय विश्वविद्यालय , केरल	सदस्य
03	3	डॉ. सीमा चन्द्रन	सहायक आचार्य, हिन्दी विभाग, केरल केंद्रीय विश्वविद्यालय.केरल	सदस्य
04	4	डॉ. थेन्नारासु एस	सहायक आचार्य, भाषा विज्ञान विभाग, केरल केंद्रीय विश्वविद्यालय	सदस्य
05	5	प्रो. (डॉ.) मोहन	आचार्य एवं अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली	सदस्य
06	6	प्रो. (डॉ.) जयचन्द्रन	आचार्य एवं अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, केरल विश्वविद्यालय, केरल	सदस्य
07	7	प्रो. (डॉ.) के. वनजा	आचार्य एवं अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, सी.यू.एस.ए.टी., केरल	सदस्य
08	8	प्रो. (डॉ.) गणेश पवार	आचार्य एवं अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, कर्नाटक केंद्रीय विश्वविद्यालय, कर्नाटक	सदस्य

Syllabus Committee

M A (Hindi and Comprative Literature)

Syllabus Committee :

01	Prof. Sudha Balakrishnan	Professor & Head, Deaprtment of Hindi, CUK	Chairperson
02	Dr. Taru S Pawar	Associate Professor, Department of Hindi, CUK	Member
03	Dr. Seema Chandran	Assistant Professor, Deaprtment of Hindi, CUK	Member
04	Dr. Thennarasu S	Assistant Professor & Deaprtment of Linguistic	Member
05	Prof. (Dr.) Mohan	Professor &Head, Deaprtment of Hindi, Delhi University, Delhi	Member
06	Prof. (Dr.) Jayachandran	Professor &Head, Department of Hindi, Kerala University, Kerala	Member
07	Prof. (Dr.) K. Vanaja	Professor &Head, Deaprtment of Hindi, CUSAT, Kerala	Member
08	Prof. (Dr.) Ganesh Pawar	Professor &Head, Department of Hindi, CUKaranataka , Karanataka	Member

M.A. Hindi and Comparative Literature

Syllabus Design

MA (Hindi & Comparative Literature) programme is included in the Post Graduate programme of the Department of Hindi of the University. This programme is intended to acquire the Masters degree in Hindi & Comparative Literature. The curriculum is designed by Eminent professors, scholars and critics of Hindi in India.

In the MA Programme, there are three types of courses: Hard core Course (HC), Soft core Course (SC), and Elective Course (EC). Hard core course cannot be substituted by any other course. Soft core course is offered from within the Department and elective course are from other departments. There is also a project/Dissertation carrying 6 Credits.

The programme lasts for 4 Semesters. The students get the degree after successfully completing 72 credits in the programme. Of these, 60 credits must be from the core course offered in the Department. The other credits can be obtained from the elective courses. The total number of core credits including that of Hard core Course, soft core course and project shall not exceed 60 credits and shall not be lessthan 48 credits under the guidance of the faculty advisor who shall consider the relevance of the courses to the program and also the student's ability, a student may choose any course offered in the University as elective course. However, no students may register for elective exceeding 8 credits in a semester.

This degree is equivalent to MA in Hindi and MA in Comparative Literature. Its design enables those who complete this course successfully with 55 percentage marks to appear for UGC's JRF/ NET examinations in Hindi as well as in Comparative Literature.

Depending on the availability of expertise the elective course may vary from semester to semester. Some elective courses offered by the Department are open for students from other department also. The broad areas of the electives offered by the Department are given below. The specific title of the course to be offered and its prerequisites will be made available in the beginning of each academic year after the approval of the Board of Studies. An elective course could be either a basic course or an advanced course. Basic course is offered in the odd semesters and advanced course is offered in the even semesters. The title of the course may be suffixed 'I' for basic course and 'II' for advanced course. Successful completion of a basic course is mandatory in order to take up its advanced level.

Course Code:

The 7 characters code comprises of 3 letters and 4 digits: (E.g. LHC 5101). The letters represents the name of School and Department / Centers. E.g. LHC = (School of) Languages, (Department of) Hindi and Comparative Literature. The digits are arranged differently for hard core and soft core courses. In Hard Core Course, the first digit represents the level of the program. E.g. '5' represents post graduate program, where one graduates in the 5th year of joining the college/ university. The second digits shows the semester in which the core courses is offered. The third and fourth digit represents the number of the course. Elective courses may be offered at basic level in the odd semesters and at advanced levels in the even semesters. The title of these courses should be suffixed with 'I' for basic level courses and with 'II' or advanced level courses

पाठ्यक्रम : स्नातकोत्तर हिन्दी एवं तुलनात्मक साहित्य

Code	पाठ्यक्रम व विषयवस्तु	L	T	P	C
सेमेस्टर-1	आधारभूत पाठ्यक्रम				20
LHC5101	हिन्दी साहित्य का इतिहास (आदिकाल से रीतिकाल)	3	1		4
LHC5102	हिन्दी गद्य साहित्य की अन्य विधाएँ	3	1		4
LHC5103	प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य	3	1		4
LHC5104	निबंध और आलोचना	3	1		4
Elective Paper	वैकल्पिक प्रश्नपत्र	3	1		4
सेमेस्टर-2					20
LHC5201	हिन्दी साहित्य का आधुनिक काल	3	1		4
LHC5202	भारतीय साहित्य	3	1		4
LHC5203	सामान्य भाषा विज्ञान और भाषा का इतिहास एवं संरचना	3	1		4
LHC5204	आधुनिक कथा साहित्य	3	1		4
Elective Paper	वैकल्पिक प्रश्नपत्र	3	1		4
सेमेस्टर-3					20
LHC5301	भारतीय एवं पाश्चात्य साहित्य सिद्धांत	3	1		4
LHC5302	अनुवाद सिद्धांत एवं प्रयोग	3	1		4
LHC5303	तुलनात्मक साहित्य	3	1		4
LHC5304	आधुनिक काव्य	3	1		4
Elective Paper	वैकल्पिक प्रश्नपत्र	3	1		4
सेमेस्टर-4					12
LHC5401	हिन्दी नाटक एवं रंगमंच	3	1		4
LHC5402	तुलनात्मक साहित्य की प्रविधि	3	1		4
LHC5403	लघु शोध-प्रबंध			4	4
					12
	ऐच्छिक विषय				
LHC5001	पत्रकारिता एवं मीडिया लेखन	3		1	4
LHC5002	प्रयोजनमूलक हिन्दी *	3		1	4
LHC5003	भाषा प्रद्योगिकी एवं हिंदी कंप्यूटिंग	3		1	4
LHC5004	हिन्दी भाषा शिक्षण	3		1	4
LHC5005	दलित साहित्य	3	1		4
LHC5006	स्त्री लेखन	3	1		4
LHC5007	लोक जगारण और भक्तिकाल	3	1		4

LHC5008	आदिवासी साहित्य का अध्ययन	3	1		4
LHC5009	लोक साहित्य	3	1		4
LHC5010	हिंदी साहित्य सिनेमा और समाज	3	1		4
LHC5011	केरल का हिन्दी लेखन	3	1		4
LHC5012	भारतीय संस्कृति	3	1		4
LHC5013	सांस्कृतिक पर्यटन (केरल के संदर्भ में)	3	1		4
LHC5014	हिन्दी नवजागरण	3	1		4
LHC5015	हिन्दी साहित्य में पारिस्थितिक विमर्श	3	1		4
LHC5016	हिन्दी साहित्य और मानवाधिकार	3	1		4
LHC5017	अनुदित विश्व साहित्य	3	1		4
LHC5018	जन संस्कृति	3	1		4

*ऐच्छिक विषय पढ़ाने का अन्तिम निर्णय विभाग द्वारा होगा।

*इनमें से किसी एक विषय के लिए पाठ्यचर्या के दौरान अध्ययन-यात्रा अनिवार्य मानी गई है।

पाठ्यक्रम (Syllabus of the Course)

कोर्स : स्नातकोत्तर हिन्दी एवं तुलनात्मक साहित्य

Course : M.A. Hindi & Comparative Literature

प्रथम सत्र (Semester First)

प्रश्नपत्र का नाम (Title of the Course) : हिन्दी साहित्य का इतिहास (आदिकाल से रीतिकाल)

पाठ्यक्रम कोड (Course Code): LHC 5101

- Session : June-November
- Core Paper
- No. of Credits : 4 (Four)
- Lectures : 4 Session/Week (1 Hour/Session)
- कुल अंक (Total Marks) : 100 (आंतरिक मूल्यांकन- 40 अंक और सत्रांत परीक्षा- 60 अंक)

परिचय :

हिन्दी साहित्य के इतिहास दर्शन और वृहद् परंपरा से छात्रों को परिचित बनाने के साथ साहित्यिक विकास की वैज्ञानिकता, काल विभाजन की तार्किकता के साथ संवेदनात्मक स्तर पर साहित्य की मन:स्थिति से परिचित कराना है। चार खण्डों में बँटा यह प्रश्नपत्र हिन्दी साहित्य के आदिकाल, मध्यकाल, रीतिकाल और आधुनिक काल के विभेदों, प्रमुख प्रवृत्तियों से परिचित कराने के बाद आधुनिक युग में हिन्दी नवजागरण की प्रमुख प्रवृत्तियों पर विचार किया जायेगा।

इकाई- एक

इतिहास दर्शन- इतिहास की अवधारणा, इतिहास लेखन परंपरा, इतिहास लेखन की दृष्टि और विचारधारा, प्रमुख इतिहासकार और उनके ग्रंथ, उनकी प्रामाणिकता, कालविभाजन, नामकरण की समस्या , आदिकाल, आदिकालीन हिन्दी साहित्य की पृष्ठभूमि, प्रमुख साहित्यिक धाराएँ, रासों काव्य परंपरा , सिद्ध, नाथ, जैन साहित्य, खुसरो साहित्य ।

इकाई- दो

मध्यकाल - पूर्व मध्यकाल (भक्तिकाल), निर्गुण भक्ति शाखा, भक्ति आंदोलन के विकास की पृष्ठभूमि, भक्ति आंदोलन और सांस्कृतिक समन्वय, निर्गुण भक्ति काव्य, संत काव्य और उसकी सामान्य प्रवृत्तियाँ, संत काव्य के श्रेष्ठ कवि, प्रमुख संत कवियों का सांस्कृतिक मूल्यांकन, सूफी काव्य की सामान्य विशेषताएँ, श्रेष्ठ सूफी कवियों की परंपरा, सूफी कवियों की समन्वयात्मकता

इकाई- तीन

मध्यकाल- पूर्व मध्यकाल(भक्तिकाल), सगुण भक्ति शाखा, सगुण भक्ति काव्य की सामान्य विशेषताएँ, राम भक्ति धारा की सामान्य प्रवृत्तियाँ, तुलसीदास का राम काव्य, राम काव्य का समाजशास्त्रीय मूल्यांकन,राम भक्ति शाखा के प्रमुख कवि और उनकी श्रेष्ठ रचनाएँ, कृष्ण भक्ति शाखा की विशेषताएँ, सूरदास और उनकी

कृष्ण भक्ति, सूर का वात्सल्य वर्णन, अष्टछाप और उनके प्रमुख कवि, कृष्ण भक्ति शाखा के प्रमुख कवि और उनकी रचनाएँ।

इकाई- चार

उत्तर मध्यकाल (रीतिकाल)- रीतिकालीन साहित्य की सामान्य पृष्ठभूमि, रीतिकाल का शास्त्रीय आधार, रीतिकाल की सामान्य प्रवृत्तियाँ, रीतिकाल की सामान्य प्रवृत्तियाँ और उनका प्रमुख कवि और उनके काव्य, रीतिकालीन साहित्य का मूल्यांकन।

परीक्षा पद्धति (pattern of Examination) :

- आंतरिक मूल्यांकन और सत्रांत परीक्षा का विवरण और मूल्यांकन पद्धति

आंतरिक परीक्षा : कुल अंक 40

- (लिखित परीक्षा-15 अंक, सेमिनार-10 अंक, प्रदत्त कार्य-10 अंक, अन्य गतिविधियाँ (Overall)- उपस्थिति, छात्र व्यवहार, सांस्कृतिक गतिविधियाँ आदि) - 5 अंक

सत्रांत परीक्षा : कुल अंक 60

- खंड 'क' में 1 से 10 बहुविकल्पीय प्रश्न होंगे जिसमें क, ख, ग और घ के रूप में चार विकल्प होंगे। 10x1= 10
- खंड 'ख' में 11 से 16 संक्षिप्त टिप्पणी होंगी जिनमें से चार करने होंगे। 4x5= 20
- खंड 'ग' 17 से 21 दीर्घ उत्तरीय (निबंध स्तरीय) प्रश्न होंगे जिनमें तीन लिखने होंगे। 3x10 = 30

संदर्भ ग्रंथ :

1 आचार्य रामचंद्र शुक्ल : हिन्दी साहित्य का इतिहास, नागरी प्रचारणी सभा

2 डॉ. धीरेन्द्र वर्मा (संपादक) : हिन्दी साहित्य (तीन खण्ड)

3 डॉ. नगेन्द्र : हिन्दी साहित्य का इतिहास, मयूर पेपर बैक्स

4 डॉ. रामकुमार वर्मा : हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद

5 आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी : हिन्दी साहित्य की भूमिका

6 डॉ. रामविलास शर्मा : हिन्दी जाति का इतिहास

7 डॉ. गुलाबराय : हिन्दी साहित्य का सुबोध इतिहास

8	डॉ. हजारीप्रसाद द्विवेदी	:	हिन्दी साहित्य का उद्भव और विकास
9	डॉ. गणपतिचंद्र गुप्त	:	हिन्दी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास
10	डॉ. बच्चन सिंह	:	हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली
11	डॉ. विजयेन्द्र स्नातक	:	हिन्दी साहित्य का इतिहास, साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली
12	डॉ. सूर्यप्रसाद दीक्षित	:	हिन्दी साहित्येतिहास की भूमिका (चार भाग), हिन्दी संस्थान, लखनऊ
13	शिवकुमार शर्मा	:	हिन्दी साहित्य : युग और प्रवृत्तियाँ, अशोक प्रकाशन, नई दिल्ली

पाठ्यक्रम (Syllabus of the Course)

कोर्स : स्नातकोत्तर हिन्दी एवं तुलनात्मक साहित्य

Course : M.A. Hindi & Comparative Literature

प्रश्नपत्र का नाम (Title of the Course) : हिन्दी गद्य साहित्य की अन्य विधाएं

पाठ्यक्रम कोड (Course Code): LHC 5102

- Core Paper
- No. of Credits : 4 (Four)
- Lectures : 4 Session/Week (1 Hour/Session)
- कुल अंक (Total Marks) : 100 (आंतरिक मूल्यांकन- 40 अंक और सत्रांत परीक्षा- 60 अंक)

परिचय :

आधुनिक हिन्दी गद्य साहित्य की विविध विधाओं का पाठ्यधारित परिचय देना इस पाठ्यक्रम का लक्ष्य है। मानव जीवन की व्यापकता, आधुनिक जीवन दृष्टि और सूचना प्रद्योगिकी के विस्फोट से हिन्दी साहित्य में गद्य विधाओं का उत्तरोत्तर विकास हो रहा है। विवरणात्मक, वर्णनात्मक और सुबोधगम्य भाषा-शैली के कारण हिन्दी साहित्य जगत में गद्य विधाओं की अपनी अलग पहचान है। इस पाठ्यक्रम के बल पर विद्यार्थी हिन्दी की गढ़ी विधाओं के प्रवृतिपरक परिचय के साथ-साथ उनकी शिल्प विधि का भी पाठाधारित-ज्ञान प्राप्त कर लेता है। गढ़ी विधाओं के दार्शनिक, सामाजिक, मनोवैज्ञानिक आधारों के ज्ञान के साथ-साथ विद्यार्थी मेन इन गद्य विधाओं की समीक्षा करने की योग्यता को विकसित करना प्रस्तुत पाठ्यक्रम का आशय है।

इकाई- एक

हिन्दी उपन्यास : हिन्दी उपन्यास की अवधारणा और सामान्य पृष्ठभूमि, प्रेमचंद पूर्व उपन्यास, प्रेमचंद और उनका युग, प्रेमचंद युग के श्रेष्ठ उपन्यासकार, प्रेमचंदोत्तर युग और उसकी सामान्च प्रवृत्तियाँ, श्रेष्ठ उपन्यासकार, समकालीन उपन्यास और बदलते शैल्पिक पक्ष और श्रेष्ठ उपन्यासकार ।

इकाई- दो

हिन्दी कहानी : हिन्दी कहानी का सैद्धांतिक पक्ष, हिन्दी कहानी, उद्भव और विकास, 20वीं सदी की हिन्दी कहानी और प्रमुख कहानी आन्दोलन (नई कहानी, समकालीन कहानी, समानांतर कहानी और अकहानी) एवं प्रमुख कहानीकार ।

इकाई- तीन

हिन्दी नाटक : हिन्दी नाटक , आत्मकथा, जीवनी, संस्मरण, रेखाचित्र का परिचय एवं श्रेष्ठ कृतियाँ

इकाई- चार

हिन्दी निबंध, आलोचना, यात्र-साहित्य, डयरी, साक्षात्कार, रिपोतार्ज आदि का परिचय एवं श्रेष्ठ कृतियाँ, हिन्दी का प्रवासी साहित्य- अवधारणा एवं प्रमुख साहित्यकार।

परीक्षा पद्धति (pattern of Examination) :

- आंतरिक मूल्यांकन और सत्रांत परीक्षा का विवरण और मूल्यांकन पद्धति

आंतरिक परीक्षा : कुल अंक 40

- (लिखित परीक्षा-15 अंक, सेमिनार-10 अंक, प्रदत्त कार्य-10 अंक, अन्य गतिविधियाँ (Overall)- उपस्थिति, छात्र व्यवहार, सांस्कृतिक गतिविधियाँ आदि) - 5 अंक

सत्रांत परीक्षा : कुल अंक 60

- खंड 'क' में 1 से 10 बहुविकल्पीय प्रश्न होंगे जिसमें क, ख, ग और घ के रूप में चार विकल्प होंगे। 10x1= 10
- खंड 'ख' में 11 से 16 टिप्पणी होंगी जिनमें से चार करने होंगे। 4x5= 20
- खंड 'ग' 17 से 21 दीर्घ उत्तरीय (निबंध स्तरीय) प्रश्न होंगे जिनमें तीन लिखने होंगे। 3x10 = 30

संदर्भ ग्रंथ :

1	इन्द्रनाथ मदान	:	हिन्दी उपन्यासों की पहचान और परख
2	मधुरेश	:	हिन्दी उपन्यास का विकास, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
3	गोपालराय	:	हिन्दी उपन्यास का इतिहास, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
4	नरेंद्र कोहली	:	हिन्दी उपन्यास : सृजन और सिद्धांत, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
5	गोपाल राय	:	हिन्दी कहानी का इतिहास, राजकमल प्रकाशन, इलाहाबाद
6	शैलजा	:	समकालीन हिन्दी कहानी, बदलते जीवन-संदर्भ, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
7	रामचन्द्र तिवारी	:	हिन्दी का गद्य साहित्य, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
8	माजदा असद	:	गद्य की नयी विधाएँ, ग्रन्थ अकादमी, नयी दिल्ली
9	प्रभाकर मिश्र	:	निबंधकार अज्ञेय, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली
10	विनय कुमार पाठक	:	आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी और समकालीन विमर्श
11	कृष्णदत्त पालीवाल	:	निर्मल वर्मा और उत्तर औपनिवेशिक विमर्श
12	जयंत नलिन	:	हिन्दी निबंधकार
13	द्वारिका प्रसाद सक्सेना	:	हिन्दी के प्रतिनिधि निबंधकार
14	एच.एल.शर्मा	:	हिन्दी रेखाचित्र
15	कैलाशचन्द्र भाटिया	:	हिन्दी की नयी गद्य विधाएँ

पाठ्यक्रम (Syllabus of the Course)

कोर्स : स्नातकोत्तर हिन्दी एवं तुलनात्मक साहित्य

Course : M.A. Hindi & Comparative Literature

प्रथम सत्र (Semester First)

प्रश्नपत्र का नाम (Title of the Course) : प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य

पाठ्यक्रम कोड (Course Code): LHC 5103

- Session : June-November
- Core Paper
- No. of Credits : 4 (Four)
- Lectures : 4 Session/Week (1 Hour/Session)
- कुल अंक (Total Marks) : 100 (आंतरिक मूल्यांकन- 40 अंक और सत्रांत परीक्षा- 60 अंक)

परिचय :

मध्यकालीन हिन्दी साहित्य साहित्येतिहास में बेजोड़ है। यहाँ प्रवृत्तिमार्गी एवं निवृत्तिमार्गी कवियों का संगम और जनता के बीचोंबीच खड़े होकर धार्मिक, सामाजिक समानता के स्वर मुखरित करने वाले, जनता के बोली में कथन शैली में बढ़ाने वाले कवि प्रतिभा पा जाते हैं। उनकी कविताओं का एक सौन्दर्यशास्त्र है, जो दलितों और पीड़ितों के लिए अपना ही सौन्दर्य शास्त्र रचता है। समस्त भारतीय साहित्य में भक्ति आन्दोलन का स्वर मुखरित हुआ। लेकिन भक्ति से रीति तक कुछेक कवि ऐसे पाये जाते हैं जो शास्त्र और सौन्दर्य के कवि के रूप में, दरबारी कवि के रूप में राज्याश्रित भी होते गये। अत: हिन्दी साहित्य का मध्यकाल भक्ति, श्रृंगार और काव्य शास्त्रीय दृष्टि से उल्लेखनीय है। निर्गुण में संत, सूफी और सगुण में राम, कृष्ण की आराधना को केन्द्र में रखकर युगद्रष्टा कवि चुने जाते हैं। कृष्णभक्त कवियत्री मीराबाई का विस्तृत अध्ययन या तो ऐच्छिक रूप से लिया जा सकता है, या प्रत्येक पाठ्यक्रम में छात्रों को यह चयन की छूट दी जा सकती है कि वे सूरदास या मीराबाई में किसी एक का चयन कर सकेंगे। रीतिकाल के दो विशेष प्रतिनिधि कवियों के रूप में बिहारी और घनानंद को भी चुना गया है।

इकाई- एक

आदिकाल का सामान्य परिचय और प्रमुख कवि, विद्यापति की रचनाधर्मिता, विद्यापति की श्रेष्ठ रचनाएँ, विद्यापति की भाषा शैली, विद्यापति की भक्ति भावना , रासो काव्य की विशेषताएँ, आदिकालीन काव्य रुढियाँ

विद्यापति पदावली : रामवृक्ष बेनीपूरी – कुल पांच पद **-** 3,5,7,8,10 (कुल पांच पद)

पद्मावती समय (पृथ्वीराज रासो) – 1,4,12,16,17, 22, 39, 68 (कुल आठ पद)

इकाई- दो

ज्ञानाश्रयी शाखा के श्रेष्ठ कवि कबीर और उनका समाज सुधारक रूप, कबीर का रहस्यवाद, वाणी के डिक्डेटर कबीर, कबीर के दोहों के सामाजिक, धार्मिक और सास्कृतिक पक्ष। प्रेमाश्रयी शाखा के श्रेष्ठ कवि जायसी, जायसी का व्यक्तित्व एवं कृतित्व और उनकी काव्य की विशेषताएँ, विरह वर्णन का स्वरुप, जायसी के काव्य में समासोक्ति अन्योक्ति, विश्व बंधुत्व की भावना, पद्मावत पर हिन्दी विद्वानों के विचार

कबीर : हजारीप्रसाद द्विवेदी- (भक्ति भावना, समाज दर्शन, विद्रोह भावना, प्रासंगिकता) 162, 172, 176, 179, 190, 202 (कुल छह पद) जायसी- पद्मावत : रामचंद्र शुक्ल -नागमती वियोग खंड (प्रेम भावना, लोक तत्व) – 1, 2, 3, 5,10, 13, 17, 19 (कुल आठ पद)

इकाई- तीन

कृष्ण भक्ति शाखा के श्रेष्ठ कवि सूरदास और उनकी भक्ति भावना, सूरदास और उनका भ्रमरगीत, भ्रमरगीत परंपरा, भ्रमरगीत का नवऔपनिवेशिक संदर्भ में विवेचन, राम भक्ति शाखा के श्रेष्ठ कवि तुलसीदास के व्यक्तित्व एवं कृतित्व, तुलसी के काव्य में समन्वयात्मकता और लोक मंगल की कामना, रामचरितमानस की वर्तमान संदर्भ में सार्थकता

सूरदास : मरगीत सार- रामचंद्र शुक्ल - 21, 23, 24, 38, 50, 52, 55, 61, 62 (कुल आठ पद)

रामचरितमानस का उत्तरकांड : संपा-वियोगी हरि – दोहा-चौपाई संख्या- 21 से 30 तक

इकाई- चार

रीतिकाल के श्रेष्ठ कवि बिहारी और उनकी रचनाधर्मिता , गागर में सागर भरने की शैली, रीतिमुक्त कवि घनानंद और उनका प्रेम वर्णन , घनानंद के प्रेम की स्वच्छंदता , कृष्ण भक्ति की गायिका मीरा, मीरा के प्रेम की स्वच्छंदता. स्त्री विमर्श के तहत मीरा

बिहारी सतसई : जगन्नाथ दास रत्नाकर (संपा) (श्रृंगारिक्ता, बहुज्ञता) –प्रारंभिक 15 दोहे

घनानंद कवित्त : विश्वनाथ प्रसाद मिश्र (संपा)- (स्वछंद प्रेम योजना) प्रारंभिक 10 कवित्त

मीरा : विश्वनाथ त्रिपाठी, प्रारंभिक 10 पद

परीक्षा पद्धति (pattern of Examination) :

- आंतरिक मूल्यांकन और सत्रांत परीक्षा का विवरण और मूल्यांकन पद्धति

आंतरिक परीक्षा : कुल अंक 40

- (लिखित परीक्षा-15 अंक, सेमिनार-10 अंक, प्रदत्त कार्य-10 अंक, अन्य गतिविधियाँ (Overall)- उपस्थिति, छात्र व्यवहार, सांस्कृतिक गतिविधियाँ आदि) - 5 अंक

सत्रांत परीक्षा : कुल अंक 60

10x1= 10

- खंड 'क' में 1 से 10 बहुविकल्पीय प्रश्न होंगे जिसमें क, ख, ग और घ के रूप में चार विकल्प

होंगे ।

- खंड 'ख' में 11 से 16 ससंदर्भ व्याख्या (RC) होंगी जिनमें से चार करने होंगे । 4x5= 20
- खंड 'ग' 17 से 21 दीर्घ उत्तरीय (निबंध स्तरीय) प्रश्न होंगे जिनमें तीन लिखने होंगे । 3x10 = 30

संदर्भ ग्रंथ :

1	विजेन्द्र स्नातक (सं)	:	कबीर, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
2	आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी	:	कबीर, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
3	माताप्रसाद गुप्त	:	कबीर ग्रंथावली, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी
4	आचार्य रामचंद्र शुक्ल	:	जायसी ग्रंथावली, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी
5	वासुदेवशरण अग्रवाल	:	पद्मावत, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी
6	रामविलास शर्मा	:	परंपरा का मूल्यांकन, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
7	रामविलास शर्मा	:	भारतीय सौंदर्यबोध और तुलसीदास, साहित्य अकादमी, दिल्ली
8	तुलसीदास	:	रामचरितमानस सटीक, गीता प्रेस, गोरखपुर
9	आचार्य रामचंद्र शुक्ल	:	सूरदास- भ्रमरगीत सार
10	जगन्नाथ दास रत्नाकर	:	बिहारी रत्नाकर, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
11	विश्वनाथ प्रसाद मिश्र	:	घनानंद कवित्त, संजय बुक सेंटर, वाराणसी
12	रामचंद्र शुक्ल	:	सूरदास, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
13	रघुवंश	:	कबीर एक नई दृष्टि, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
14	रामचंद्र तिवारी	:	कबीर मीमांसा, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
15	रमेश कुंतल मेघ	:	तुलसी, आधुनिक वातायन से, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली

16 उदयभानु सिंह : तुलसी काव्य मीमांसा, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली

17 विश्वनाथ त्रिपाठी : लोकवादी तुलसीदास, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद

18 रघुवंश : जायसी : एक नई दृष्टि, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद

19 प्रभाकर श्रोत्रिय : कबीरदास : विविध आयाम, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद

20 नंददुलारे वाजपेयी : महाकवि सूरदास, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद

21 हजारीप्रसाद द्विवेदी : सूर साहित्य, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद

पाठ्यक्रम (Syllabus of the Course)

कोर्स : स्नातकोत्तर हिन्दी एवं तुलनात्मक साहित्य

Course : M.A. Hindi & Comparative Literature

तृतीय सत्र (Semester Third)

प्रश्नपत्र का नाम (Title of the Course) : निबंध और आलोचना

पाठ्यक्रम कोड (Course Code): LHC 5104

- Session : June-November
- Core Paper
- No. of Credits : 4 (Four)
- Lectures : 4 Session/Week (1 Hour/Session)
- कुल अंक (Total Marks) : 100 (आंतरिक मूल्यांकन- 40 अंक और सत्रांत परीक्षा- 60 अंक)

परिचय :

हिन्दी साहित्य की अन्य गद्य विधाओं में निबन्ध और आलेचना का प्रमुख स्थान है। मानव जीवन की व्यापकता, आधुनिक जीवनदृष्टि और सूचना प्रौद्योगिकी के विस्फोट से हिन्दी साहित्य में इन विधाओं का उत्तरोत्र विकास हो रहा है। विशेष भाषा-शैली के कारण हिन्दी साहित्य जगत में निबन्ध और आलोचना विधा की अपनी अलग पहचान है। रचना के वैशिष्ट्य और मूल्यबोध के उद्घाटान के लिए निबन्ध और आलोचना का ज्ञान अपरिहार्य है। इससे साहित्यिक समझ विकसित होती है। वह दृष्टि मिलती है, जिसके आधार पर साहित्य के मर्म और मूल्यवता की वास्तविक परख की जा सके। रचना को उसकी समग्रता में समझने और जाँचने-परखने के लिए निबन्ध तथा हिन्दी के निजी साहित्यालोचन का अध्ययन समीचीन है। निबन्ध और आलोचना की जानकारी रखने वाला छात्र रचनात्मक कार्य में सफल होगा। उसे निबन्ध लिखने और आलोचनात्मक दृष्टि से जानने के लिए वह स्वतः अभ्यस्त होगा।

इकाई- एक

निबंध और आलोचना का सामान्य परिचय, शिवशम्भू के चिट्ठे- बालमुकुन्द गुप्त, आत्मनिर्भरता- बालकृष्ण भट्ट, श्रद्धा और भक्ति – रामचद्र शुक्ल

इकाई- दो

नाखून क्यूँ बढ़ते हैं?- हजारीप्रसाद द्विवेदी, मेरे राम का मुकुट भीग रहा है- विद्यानिवास मिश्र, संस्कृति और सौन्दर्य- नामवर सिंह

इकाई- तीन

हिन्दी आलोचना की पृष्टभूमि : भारतेंदुयुगीन और द्विवेदीयुगीन आलोचना, आचार्य रामचंद्र शुक्ल और हिन्दी आलोचना, शुक्लोत्तर युग, हजारीप्रसाद द्विवेदी की आलोचना दृष्टि

इकाई- चार

नंददुलारे बाजपेयी, नगेन्द्र, रामविलास शर्मा और नामवर सिंह की आलोचना दृष्टि

परीक्षा पद्धति (pattern of Examination) :

- आंतरिक मूल्यांकन और सत्रांत परीक्षा का विवरण और मूल्यांकन पद्धति

आंतरिक परीक्षा : कुल अंक 40

- (लिखित परीक्षा-15 अंक, सेमिनार-10 अंक, प्रदत्त कार्य-10 अंक, अन्य गतिविधियाँ (Overall)- उपस्थिति, छात्र व्यवहार, सांस्कृतिक गतिविधियाँ आदि) - 5 अंक

सत्रांत परीक्षा : कुल अंक 60

- खंड 'क' में 1 से 10 बहुविकल्पीय प्रश्न होंगे जिसमें क, ख, ग और घ के रूप में चार विकल्प होंगे। 10x1= 10
- खंड 'ख' में 11 से 16 संक्षिप्त टिप्पणी होंगी जिनमें से चार करने होंगे। 4x5= 20
- खंड 'ग' 17 से 21 दीर्घ उत्तरीय (निबंध स्तरीय) प्रश्न होंगे जिनमें तीन लिखने होंगे। 3x10 = 30

संदर्भ ग्रंथ :

1	रामचंद्र शुक्ल	:	चिंतामणि भाग-1, 2
2	रवीन्द्रनाथ मिश्र	:	इक्कसवीं सदी का हिन्दी साहित्य : समय और संवेदना, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
3	जवरीमल्ल पारख	:	आधुनिक हिन्दी साहित्य का मूल्यांकन और पुनर्मूल्यांकन, अनामिका प्रकाशन, दिल्ली
4	डॉ. रामकुमार वर्मा	:	हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
5	डॉ. गणपतिचन्द्र गुप्त	:	हिन्दी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास
6	डॉ. बच्चन सिंह	:	हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास, साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली
7	डॉ. मधु धवन	:	भारती गद्य संग्रह, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
8	डॉ. निर्मला जैन	:	पाश्चात्य साहित्य चिंतन, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली
9	डॉ. निर्मला जैन	:	रिचर्ड्स के आलोचना सिद्धांत
10	डॉ. निर्मला जैन	:	नई समीक्षा के प्रतिमान
11	जगदीशचंद्र जैन	:	पाश्चात्य समीक्षा दर्शन, हिन्दी प्रचारक संस्थान, वाराणसी
12	अमृतराय	:	नई समीक्षा, हिन्दुस्तानी पब्लिशिंग हौस, वाराणसी
13	कृष्णदत्त पालीवाल	:	हिन्दी आलोचना के नए वैचारिक सरोकार, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
14	मुक्तिबोध	:	नए साहित्य का सौन्दर्यशास्त्र, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली
15	डॉ. सीतारामदीन	:	साहित्यालोचन : सिद्धांत और अध्ययन, भारती भवन, पटना

16 डॉ. अमरनाथ : हिन्दी आलोचना की पारिभाषिक शब्दावली, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली

पाठ्यक्रम (Syllabus of the Course)

कोर्स : स्नातकोत्तर हिन्दी एवं तुलनात्मक साहित्य

Course : M.A. Hindi & Comparative Literature

द्वितीय सत्र (Semester Second)

प्रश्नपत्र का नाम (Title of the Course) : हिन्दी साहित्य का आधुनिक काल

पाठ्यक्रम कोड (Course Code): LHC 5201

- Session : December-April
- Core Paper
- No. of Credits : 4 (Four)
- Lectures : 4 Session/Week (1 Hour/Session)
- कुल अंक (Total Marks) : 100 (आंतरिक मूल्यांकन- 40 अंक और सत्रांत परीक्षा- 60 अंक)

परिचय :

आधुनिक काल में हिंदी साहित्य का विकास नाना रूपों में हुआ है। यह अपनी काव्य परंपरा से आगे बढ़ाते हुए नाटक, कहानी, उपन्यास, निबंध, आलोचना, संस्मरण,जीवनी रेखाचित्र आदि नवीन विधाओं की ओर उन्मुख हुई । छात्रों को इसकी पृष्ठभूमि और विकास से परिचित करना उक्त प्रश्नपत्र का लक्ष्य है । चार खण्डों में बटन यह प्रश्नपत्र हिंदी साहित्य के आधुनिक नवजागरण की प्रमुख प्रवृतियों से परिचित कराने के बाद आधुनिक युग में हिंदी नवजागरण की प्रमुख प्रवृतियों पर विचार किया जाएगा।

इकाई- एक

हिन्दी गद्य का उद्भव और विकास, भारतीय नवजागरण और हिन्दी नवजागरण, भारतेंदु युग और हिन्दी गद्य, 1857 की क्रांति और सांस्कृतिक पुनर्जागरण, पत्रकारिता का आरंभ और आधुनिक हिन्दी पत्रकारिता, आधुनिक साहित्य की सामाजिक, राजनीतिक तथा सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, भारतेंदु मंडल के कवि, भारतेंदु युग की विशेषताएं।

इकाई- दो

महावीर प्रसाद द्विवेदी और उनका युग, द्विवेदी युग की पृष्ठभूमि, द्विवेदी युग की सामान्य विशेषताएं, द्विवेदी युग के प्रमुख कवि, सरस्वती पत्रिका, खडीबोली काव्य का विकास, मैथीलीशरण गुप्त और राष्ट्रीय काव्यधारा के प्रमुख कवि।

इकाई- तीन

स्वछंदतावाद और उसके प्रमुख कवि, छायावाद, छायावाद की प्रमुख विशेषताएँ, प्रमुख छायावादी कवि, प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, नई कविता, समकालीन कविता, अकविता की प्रमुख प्रवृतियाँ और कवि।

इकाई- चार

आधुनिक गद्य़ विधा का उद्भव और विकास : हिंदी उपन्यास, कहानी, नाटक, निबंध एवं आलोचना

परीक्षा पद्धति (pattern of Examination) :

- आंतरिक मूल्यांकन और सत्रांत परीक्षा का विवरण और मूल्यांकन पद्धति

आंतरिक परीक्षा : कुल अंक 40

- (लिखित परीक्षा-15 अंक, सेमिनार-10 अंक, प्रदत्त कार्य-10 अंक, अन्य गतिविधियाँ (Overall)- उपस्थिति, छात्र व्यवहार, सांस्कृतिक गतिविधियाँ आदि) - 5 अंक

सत्रांत परीक्षा : कुल अंक 60

- खंड 'क' में 1 से 10 बहुविकल्पीय प्रश्न होंगे जिसमें क, ख, ग और घ के रूप में चार विकल्प होंगे। 10x1= 10
- खंड 'ख' में 11 से 16 संक्षिप्त टिप्पणी होंगी जिनमें से चार करने होंगे। 4x5= 20
- खंड 'ग' 17 से 21 दीर्घ उत्तरीय (निबंध स्तरीय) प्रश्न होंगे जिनमें तीन लिखने होंगे। 3x10 = 30

संदर्भ ग्रंथ :

1	आचार्य रामचंद्र शुक्ल	:	हिन्दी साहित्य का इतिहास, नागरी प्रचारणी सभा
3	डॉ. नगेन्द्र	:	हिन्दी साहित्य का इतिहास, मयूर पेपर बैक्स
4	डॉ. रामकुमार वर्मा	:	हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
5	आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी	:	हिन्दी साहित्य की भूमिका
6	डॉ. रामविलास शर्मा	:	हिन्दी जाति का इतिहास
8	डॉ. हजारीप्रसाद द्विवेदी	:	हिन्दी साहित्य का उद्भव और विकास
9	डॉ. गणपतिचंद्र गुप्त	:	हिन्दी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास
10	डॉ. बच्चन सिंह	:	हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली
11	डॉ. विजयेन्द्र स्नातक	:	हिन्दी साहित्य का इतिहास, साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली
12	डॉ. सूर्यप्रसाद दीक्षित	:	हिन्दी साहित्येतिहास की भूमिका (चार भाग), हिन्दी संस्थान, लखनऊ

पाठ्यक्रम (Syllabus of the Course)

कोर्स : स्नातकोत्तर हिन्दी एवं तुलनात्मक साहित्य

Course : M.A. Hindi & Comparative Literature

द्वितीय सत्र (Semester Second)

प्रश्नपत्र का नाम (Title of the Course) : भारतीय साहित्य

पाठ्यक्रम कोड (Course Code): LHC 5202

- Session : December-April
- Core Paper
- No. of Credits : 4 (Four)
- Lectures : 4 Session/Week (1 Hour/Session)
- कुल अंक (Total Marks) : 100 (आंतरिक मूल्यांकन- 40 अंक और सत्रांत परीक्षा- 60 अंक)

परिचय :

भारतीय साहित्य के अंतर्गत भारतवर्ष के विभिन्न क्षेत्रें में विभिन्न कालखण्डों में लिखे गये साहित्य के जारिए भारतीयता की खोज कराना इस खण्ड का उद्देश्य है। भारतीय साहित्य की अंत:चेतना से छात्रों को परिचित करना भी है। जिस प्रकार मध्यकालीन साहित्यिक चेतना से समस्त दुनिया को एक-दो शताब्दियों में अपने दायरे में समेट लिया था, उसी प्रकार भारत के औपनिवेशिक परिवेश में उत्तर से लेकर दक्षिण तक और पूर्व से लेकर पश्चिम तक की जागरण स्थितियाँ पैदा हो गई। भारतीय भाषाओं में जो कालजयी कृतियाँ रची गई, उनके कथ्य और शिल्प भारतीय साहित्य की विविधता में एक होने का निदान है। भारतीय साहित्य की अवधारणा से लेकर उसकी परंपरा, अंत:चेतना जैसे सैद्धांतिक मुद्दों को समझाते हुए भारत की कालजयी कृतियों से छात्रों को अवगत कराया जायेगा ताकि उन्हें कृतियों की राहों से साहित्यास्वादन का मार्ग प्रशस्त हो। इसमें अन्य कृतियों को भी परखने की जिज्ञासा छात्रों में जग सकती है।

इकाई- एक

भारतीय साहित्य : संक्षिप्त परिचय - भारतीय साहित्य का स्वरूप और अवधारणा, भारतीयता, भारतीयता के तत्व, भारतीय साहित्य की परंपरा, भारतीय साहित्य की अंत:चेतना, विविधता में एकता का संकल्प।

इकाई- दो

उपन्यास - रवीन्द्रनाथ टैगोर : गोरा (प्रारंभ के पचास पृष्ठों से व्याख्या तथा आलोचनात्मक अध्ययन)

इकाई- तीन

कहानी – कन्नड़-बिके लोग- देवनूर महादेव (अनु- बी. आर नारायण), तेलगू- छाया और यथार्थ-जलंधरालो (अनु- ज़े.एन.रेड्डी), पंजाबी- लेहा प्रेम – गोरखी (अनु-कीर्ति केसर), बंगला –बेघर का बच्चा –अतीत बंधोपाध्याय (अनु-ननी

शूर), मराठी –साहब,दीदी और गुलाम – दया पावर (अनु-रतिलाल शाहीन)

इकाई- चार

कविता - सुब्रमण्यम भारती की एक प्रमुख कविता

नाटक – विजय तेंदुलकर खामोश अदालत ज़ारि हे

परीक्षा पद्धति (pattern of Examination) :

- आंतरिक मूल्यांकन और सत्रांत परीक्षा का विवरण और मूल्यांकन पद्धति

आंतरिक परीक्षा : कुल अंक 40

- (लिखित परीक्षा-15 अंक, सेमिनार-10 अंक, प्रदत्त कार्य-10 अंक, अन्य गतिविधियाँ (Overall)- उपस्थिति, छात्र व्यवहार, सांस्कृतिक गतिविधियाँ आदि) - 5 अंक

सत्रांत परीक्षा : कुल अंक 60

- खंड 'क' में 1 से 10 बहुविकल्पीय प्रश्न होंगे जिसमें क, ख, ग और घ के रूप में चार विकल्प होंगे। 10x1= 10
- खंड 'ख' में 11 से 16 ससंदर्भ व्याख्या (RC) होंगी जिनमें से चार करने होंगे। 4x5= 20
- खंड 'ग' 17 से 21 दीर्घ उत्तरीय (निबंध स्तरीय) प्रश्न होंगे जिनमें तीन लिखने होंगे। 3x10 = 30

संदर्भ ग्रंथ :

1	नगेन्द्र	:	भारतीय साहित्य, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली
2	के. सच्चिदानंद	:	भारतीय साहित्य : स्थापनाएँ एवं प्रस्तावनाएँ, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
3	तारकनाथ बाली	:	भारतीय साहित्य सिद्धांत, शब्दकार, दिल्ली
4	रामविलास शर्मा	:	भारतीय साहित्य के इतिहास की समस्याएँ, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
5	Sisir Kumar Das	:	History of Indian Literature : 1911-1956, Struggle for Freedom : Trimph and Tragedy, Sahitya Academy
6	Amiya Dev	:	Idea of Comparative Literature
7	रामछबीला त्रिपाठी	:	यू.जी.सी. के नवीनतम पाठ्यक्रम के अनुसार भारतीय साहित्य देश के समस्त विश्वविद्यालयों के स्नातकोत्तर स्तर के संपूर्ण पाठ्यक्रम, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
8	रामविलास शर्मा	:	भारतीय साहित्य की भूमिका, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
9	रविशंकर	:	साहित्य और भारतीय एकता, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली
10	डॉ. आरसु	:	भारतीय साहित्य : आशा और आस्था, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली
11	लक्ष्मीकांत पाण्डेय/ प्रमिला अवस्थी	:	भारतीय साहित्य, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद

पाठ्यक्रम (Syllabus of the Course)

कोर्स : स्नातकोत्तर हिन्दी एवं तुलनात्मक साहित्य

Course : M.A. Hindi & Comparative Literature

द्वितीय सत्र (Semester Second)

प्रश्नपत्र का नाम (Title of the Course) : सामान्य भाषा विज्ञान और हिन्दी भाषा का इतिहास एवं संरचना

पाठ्यक्रम कोड (Course Code): LHC 5203

- Session : December-April
- Core Paper
- No. of Credits : 4 (Four)
- Lectures : 4 Session/Week (1 Hour/Session)
- अंक (Total Marks) : 100 (आंतरिक मूल्यांकन- 40 अंक और सत्रांत परीक्षा- 60 अंक)

परिचय :

इस पाठ्य खण्ड का उद्देश्य हिन्दी भाषा के उद्गम और स्रोत से छात्रों को अवगत कराना है। इसमें हिन्दी भाषा के प्राचीन रूप से आधुनिक हिन्दी के विविध रूपों और शैलियों का परिचय कराना है। डिंगल, पिंगल, प्राकृत, अवहट्ट, ब्रज, अवधी, मैथिली बोलियों-भाषाओं की विशिष्टता व हिन्दी भाषा के विकास में उनकी भूमिका से छात्रों को परिचित कराया जायेगा। उपर्युक्त प्रथम पाठ्यचर्या में जिन रचनाओं का उल्लेख किया जायेगा, उन्हें इस प्रकरण में अनुप्रयुक्त अध्ययन करके साहित्य में भाषा और बोलियों की प्रयुक्तियों को करीब से समझने की भूमिका प्राप्त होगी कि किन-किन सामाजिक, ऐतिहासिक कारणों से हिन्दी साहित्य के आदिकाल से आधुनिक काल तक की भाषा विकसित होती जाती है। आधुनिक युग में हिन्दी के विविध रूप, भौलियाँ व दक्षिण भारत में प्रयुक्त हिन्दी आदि की जानकारी दिला देने से छात्रों को हिन्दी भाषा के इतिहास व समाजशास्त्र तक का परिचय हो जायेगा।

इकाई- एक

भाषा की परिभाषा, भाषा के प्रमुख अंग, भाषा के प्रमुख तत्व, पक्ष एवं संरचना, भाषा के विविध रूप, प्राचीन भारतीय आर्य भाषा का विकास, मध्यकालीन भारतीय आर्य भाषाएँ- पालि, प्राकृत, शौरसेनी, मागधी, अर्ध मागधी और अपभ्रंश की विशेषताएँ, अवहट्ट और प्रारम्भिक हिन्दी, हिन्दी की प्रमुख बोलियाँ, खड़ीबोली, अवधी और ब्रज भाषा की विशेषताएँ और उसका विकास, राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्वरूप।

इकाई- दो

हिन्दी का भाषिक स्वरूप : हिन्दी की स्वनिम व्यवस्था, स्वनि यंत्र की संरचना, स्वनों के वर्गीकरण- खण्ड्य और खण्ड्येतर स्वनिम, शब्द और पद, हिन्दी शब्द रचना, अर्थ तत्व और संबंध तत्व, संबंध तत्व के प्रकार

इकाई- तीन

हिन्दी भाषा का व्याकरणिक पक्ष, लिंग, वचन और कारक व्यवस्था के संदर्भ में संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रिया रूप, हिन्दी वाक्य संरचना, वाक्य के प्रकार, वाक्य रचना के भेद , अर्थ प्रतीति के साधन, अर्थ परिवर्तन के साधन और दिशाएँ

इकाई- चार

हिन्दी भाषा प्रयोग के विविध रूप : बोली, मानक भाषा, राजभाषा, राष्ट्रभाषा और संपर्क भाषा, संचार माध्यम और हिन्दी, कंम्प्यूटर और हिन्दी, हिन्दी की संवैधानिक स्थिति, देवनागरी लिपि : विशेषताएँ मानकीकरण

परीक्षा पद्धति (pattern of Examination) :

- आंतरिक मूल्यांकन और सत्रांत परीक्षा का विवरण और मूल्यांकन पद्धति

आंतरिक परीक्षा : कुल अंक 40

- (लिखित परीक्षा-15 अंक, सेमिनार-10 अंक, प्रदत्त कार्य-10 अंक, अन्य गतिविधियाँ (Overall)- उपस्थिति, छात्र व्यवहार, सांस्कृतिक गतिविधियाँ आदि) - 5 अंक

सत्रांत परीक्षा : कुल अंक 60

- खंड 'क' में 1 से 10 बहुविकल्पीय प्रश्न होंगे जिसमें क, ख, ग और घ के रूप में चार विकल्प होंगे। 10x1= 10
- खंड 'ख' में 11 से 16 संक्षिप्त टिप्पणी होंगी जिनमें से चार करने होंगे। 4x5= 20
- खंड 'ग' 17 से 21 दीर्घ उत्तरीय (निबंध स्तरीय) प्रश्न होंगे जिनमें तीन लिखने होंगे। 3x10 = 30

संदर्भ ग्रंथ :

1 रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव : हिन्दी भाषा संरचना के विविध आयाम, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली

2 राजमणि शर्मा : हिंदी भाषा : इतिहास और स्वरूप, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली

3 डॉ. भोलानाथ तिवारी : हिंदी भाषा, किताब महल

4 डॉ. हरदेव बाहरी : हिंदी भाषा, अभिव्यक्ति प्रकाशन, इलाहाबाद

5 डॉ. धीरेन्द्र वर्मा : हिंदी भाषा का इतिहास

6 कैलाशचंद्र भाटिया : हिंदी भाषा : स्वरूप और विकास

7 डॉ. रामविलास शर्मा : भारत के प्राचीन भाषा परिवार और हिंदी (भाग-1, 2, 3) राजकमल

प्रकाशन, नई दिल्ली

8	देवेन्द्र नाथ शर्मा	:	भाषा विज्ञान की भूमिका
9	डॉ. कृपाशंकर सिंह	:	आधुनिक भाषाविज्ञान
10	उदय नारायण तिवारी	:	हिंदी भाषा का उद्भव और विकास
11	सुनीतिकुमार चटर्जी	:	भारतीय आर्य भाषा और हिंदी

पाठ्यक्रम (Syllabus of the Course)

कोर्स : स्नातकोत्तर हिन्दी एवं तुलनात्मक साहित्य

Course : M.A. Hindi & Comparative Literature

द्वितीय सत्र (Semester Second)

प्रश्नपत्र का नाम (Title of the Course) : आधुनिक कथा साहित्य

पाठ्यक्रम कोड (Course Code): LHC 5204

- Session : December-April
- Core Paper
- No. of Credits : 4 (Four)
- Lectures : 4 Session/Week (1 Hour/Session)
- कुल अंक (Total Marks) : 100 (आंतरिक मूल्यांकन- 40 अंक और सत्रांत परीक्षा- 60 अंक)

परिचय :

भारतीय साहित्य में कथा साहित्य का प्राचीन रूप 'पंचतंत्र' में मौजूद है, लेकिन आधुनिक कथा साहित्य अपने नवीन भावबोध, सामाजिक पृष्ठभूमि, के कारण विशिष्ट अवस्थिति रखता है। कहानी व उपन्यास विधा का उदय आधुनिक युग की बिल्कुल नवीनतम परिघटना है। इस विधा का तार्किकता के विशिष्ट रूप से जुड़ाव है। इस खण्ड में हिन्दी कथा साहित्य के विभिन्न रूप व इन रूपों की विशिष्टता से छात्रों को समग्र रूप से परिचित कराया जायेगा। कहानी व उपन्यास विधा के साथ जुड़ी हुई सैद्धांतिकता के साथ ही इन विधाओं के मूल्यांकन की प्रविधि से भी छात्रों का परिचय कराया जायेगा। इसके अलावा विभिन्न उपन्यासों व कहानियों के माध्यम से छात्रों की विश्लेषण व आलोचनात्मक मेधा का परिष्कार करने का प्रयास किया जायेगा। हिन्दी उपन्यास और कहानी हिंदी साहित्य की महत्वपूर्ण विधा है । इसके अध्ययन भारतीय जनमानस की मनःस्थिति को छात्र सोच और समझ सकेगा । अतः जीवन के बहुमुखी विषयों को पेश करने वाला कथा साहित्य छात्रों को कला की संवेदना की दृष्टि से सोचने-समझने के लिए मजबूर करता है।

इकाई- एक

हिन्दी कथा साहित्य का सैद्धातिंक पक्ष, हिंदी उपन्यास का उद्भव और विकास, स्वच्छंदतावाद और हिंदी उपन्यास, आधुनिकता बोध के विविध उपन्यास,

कृतिपाठ - प्रेमचन्द : गोदान

(व्याख्या- प्रारंभिक दस अनुच्छेद, आदर्श और यथार्थ, वस्तु और शिल्पगत वैशिष्ट, गोदान के मुख्य पात्र)

कृतिपाठ - आपका बंटी – मन्नु भंडारी (व्याख्या प्रारंभिक 35 पृष्ठ, आपका बंटी में निहित पारिवारिक समस्यायें, मन्नु भंडारी की रचनाधर्मिता , महिला लेखन और मन्नु भंडारी

इकाई- दो

हिन्दी कहानी का सैद्धातिंक पक्ष , - चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी' : उसने कहा था, प्रेमचन्द : ईदगाह, जयशंकर प्रसाद :

आकाशदीप, भीष्म साहनी : चीफ की दावत, फणीश्वरनाथ 'रेणु' : लाल पान की बेगम

इकाई- तीन

मोहन राकेश- मलबे का मालिक, अज्ञेय- शरणदाता, ज्ञानरंजन – पिता, उदयप्रकाश – तिरिछ, ओमप्रकाश वाल्मीकि- सलाम

इकाई- चार

कथा साहित्य की भाषा शैली, परिवर्तित भाषा स्वरूप, स्वातंत्र्योत्तर कथा साहित्य का परिवर्तित शिल्प विधान, भाषा और शैली के नए प्रयोग, स्त्री की भाषा और भाषा का यथार्थ, प्रतिरोध की भाषा और भाषा का सौंदर्य, उत्तराधुनिक युग में पुनर्पाठ की विशेषताएँ

परीक्षा पद्धति (pattern of Examination) :

- आंतरिक मूल्यांकन और सत्रांत परीक्षा का विवरण और मूल्यांकन पद्धति

आंतरिक परीक्षा : कुल अंक 40

- (लिखित परीक्षा-15 अंक, सेमिनार-10 अंक, प्रदत्त कार्य-10 अंक, अन्य गतिविधियाँ (Overall)- उपस्थिति, छात्र व्यवहार, सांस्कृतिक गतिविधियाँ आदि) - 5 अंक

सत्रांत परीक्षा : कुल अंक 60

- खंड 'क' में 1 से 10 बहुविकल्पीय प्रश्न होंगे जिसमें क, ख, ग और घ के रूप में चार विकल्प होंगे। 10x1= 10
- खंड 'ख' में 11 से 16 ससंदर्भ व्याख्या (RC) होंगी जिनमें से चार करने होंगे। 4x5= 20
- खंड 'ग' 17 से 21 दीर्घ उत्तरीय (निबंध स्तरीय) प्रश्न होंगे जिनमें तीन लिखने होंगे। 3x10 = 30

संदर्भ ग्रंथ :

1	प्रेमचंद	:	गोदान
2	रामचन्द्र तिवारी	:	हिंदी गद्य साहित्य, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
3	रामचन्द्र तिवारी	:	हिन्दी की नई गद्य विधाएँ
4	अज्ञेय	:	शेखर एक जीवनी (भाग-1)
5	शैलजा	:	समकालीन हिंदी कहानी, बदलते जीवन-सन्दर्भ, वाणी प्रकाशन नयी दिल्ली
6	चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी'	:	उसने कहा था

7	विनयमोहन सिंह	:	आज की हिन्दी कहानी, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली
8	नामवर सिंह	:	कहानी : नई कहानी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
9	इंद्रनाथ मदान	:	हिन्दी उपन्यासों की पहचान और परख
10	मधुरेश	:	हिन्दी उपन्यास का विकास, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
11	गोपालराय	:	हिन्दी उपन्यास का इतिहास, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
12	नरेन्द्र कोहली	:	हिन्दी उपन्यास : सृजन और सिद्धांत, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
13	गोपालराय	:	हिन्दी कहानी का इतिहास, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
14	रामचंद्र तिवारी	:	हिन्दी गद्य : प्रकृति और रचना सन्दर्भ, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
15	विजयमोहन	:	आज की कहानी, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली

पाठ्यक्रम (Syllabus of the Course)

कोर्स : स्नातकोत्तर हिन्दी एवं तुलनात्मक साहित्य

Course : M.A. Hindi & Comparative Literature

तृतीय सत्र (Semester Third)

प्रश्नपत्र का नाम (Title of the Course) : भारतीय एवं पाश्चात्य साहित्य सिद्धांत

पाठ्यक्रम कोड (Course Code): LHC 5301

- Session : June-November
- Core Paper
- No. of Credits : 4 (Four)
- Lectures : 4 Session/Week (1 Hour/Session)
- कुल अंक (Total Marks) : 100 (आंतरिक मूल्यांकन- 40 अंक और सत्रांत परीक्षा- 60 अंक)

परिचय :

साहित्य को समझने के लिए जिन युक्तियों का प्रयोग किया जाता है, उन्हें साहित्यिक सिद्धांत की संज्ञा दी जाती है। इस परिप्रेक्ष्य में प्राचीन समय से ही प्रयास होते रहे हैं, सिद्धांत निरूपण होते गये हैं। यूनान से लेकर भारतीय साहित्य चिंतन का इस मामले में उदाहरण दिया जा सकता है। साहित्यिक सिद्धांत को भारतीय व पाश्चात्य कोटियों में बाँटकर छात्रों को इस खण्ड में अध्ययन कराया जायेगा। इसके अलावा इस खण्ड में विभिन्न राजनीतिक-दार्शनिक वादों के नजरिए से साहित्य अध्ययन व मूल्यांकन की प्रतिविधियों व सिद्धांतों से भी छात्रों का परिचय कराया जायेगा ।

इकाई- एक

भारतीय काव्यशास्त्र : काव्य के लक्षण, काव्य हेतु, काव्य के तत्व, शब्द शक्ति, काव्य प्रयोजन, रस सिद्धांत, रस निष्पत्ति, साधारणीकरण

इकाई- दो

रसेतर सम्प्रदाय : इतिहास और परिचय, अलंकार सम्प्रदाय, रीति सम्प्रदाय, वक्रोक्ति सम्प्रदाय, ध्वनि सम्प्रदाय, औचित्य सम्प्रदाय

इकाई- तीन

पाश्चात्य काव्यशास्त्र –प्लेटो का काव्य सिद्धांत, अरस्तु : अनुकरण सिद्धांत और विरेचन सिद्धांत, वर्ल्डसवर्थ का काव्यभाषा सिद्धांत, कॉलरिज : कल्पना और फैंटेसी

इकाई- चार

टी. एस. इलियट- निर्वैयक्तिकता का सिद्धांत, आई. ए. रिचड्र्स : मूल्य सिद्धांत, सम्प्रेषण सिद्धांत, नई समीक्षा, मिथक, फंतासी, कल्पना, प्रतीक, बिम्ब

परीक्षा पद्धति (pattern of Examination) :

- आंतरिक मूल्यांकन और सत्रांत परीक्षा का विवरण और मूल्यांकन पद्धति

आंतरिक परीक्षा : कुल अंक 40

- (लिखित परीक्षा-15 अंक, सेमिनार-10 अंक, प्रदत्त कार्य-10 अंक, अन्य गतिविधियाँ (Overall)- उपस्थिति, छात्र व्यवहार, सांस्कृतिक गतिविधियाँ आदि) - 5 अंक

सत्रांत परीक्षा : कुल अंक 60

- खंड 'क' में 1 से 10 बहुविकल्पीय प्रश्न होंगे जिसमें क, ख, ग और घ के रूप में चार विकल्प होंगे। 10x1= 10
- खंड 'ख' में 11 से 16 संक्षिप्त टिप्पणी होंगी जिनमें से चार करने होंगे। 4x5= 20
- खंड 'ग' 17 से 21 दीर्घ उत्तरीय (निबंध स्तरीय) प्रश्न होंगे जिनमें तीन लिखने होंगे। 3x10 = 30

संदर्भ ग्रंथ :

1	श्यामसुन्दर दास	:	साहित्यालोचन, इंडियन प्रेस, प्रयाग
2	गुलाबराय	:	काव्य के रूप, आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली
3	रामबहोरी शुक्ल	:	काव्य प्रदीप, हिन्दी भवन, इलाहाबाद
4	कृष्णदेव झारी	:	साहित्यालोचन, पराग प्रकाशन, नई दिल्ली
5	डॉ. नगेन्द्र	:	अरस्तू का काव्य शास्त्र, आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली
6	गणेश त्रयंबक देश पाण्डेय	:	भारतीय साहित्य शास्त्र, पापुलर बुक डिपो, बंबई
7	बलदेव उपाध्याय	:	भारतीय साहित्य शास्त्र, वाराणसी
8	बच्चन सिंह	:	भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र : तुलनात्मक अध्ययन, हरियाणा साहित्य अकादमी, पंचकूला
9	राधाबल्लभ त्रिपाठी	:	भारतीय काव्यशास्त्र की आचार्य परंपरा, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
10	उदयभानु सिंह (संपादक)	:	भारतीय काव्य शास्त्र, राजेश प्रकाशन, नई दिल्ली
11	सत्यदेव चौधरी	:	भारतीय काव्यशास्त्र चिंतन, अलंकार प्रकाशन, वाराणसी
12	राममूर्ति त्रिपाठी	:	भारतीय काव्य विर्मश, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
13	बलदेव उपाध्याय	:	भारतीय साहित्य शास्त्र, वाराणसी
14	सुरेन्द्र एस. बारलिंगे	:	भारतीय सौन्दर्य सिद्धांत की नई परिभाषा, भरतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली
15	नामवर सिंह (संपादक)	:	कार्लमार्क्स : कला एवं साहित्य चिन्तन, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
19	सत्यदेव मिश्र	:	पाश्चात्य सिद्धांत : अधुनातन संदर्भ, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद

20	निर्मला जैन	:	काव्य चिंतन की पश्चिमी परंपरा, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
21	आचार्य देवेन्द्रनाथ शर्मा	:	काव्यालंकार, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद, पटना
22	आचार्य विश्वे वर	:	काव्यप्रकाश, ज्ञानमंडल लिमिटेड, वाराणसी
23	सिंगमन फ्रायड	:	मनोविश्लेषण, राजपाल एण्ड संस, दिल्ली
24	रवि कुमार मिश्र	:	मार्क्सवादी साहित्य चिंतन : इतिहास तथा सिद्धांत, मध्यप्रदेश ग्रंथ अकादमी, भोपाल
25	देवेंद्रनाथ शर्मा	:	पाश्चात्य काव्यशास्त्र, नेशनल पब्लिशिंग, दिल्ली
26	भगीरथ मिश्र	:	पाश्चात्य काव्यशास्त्र : इतिहास, सिद्धांत और वाद, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
27	अशोक केलकर	:	प्राचीन भारतीय साहित्य मीमांसा : एक अध्ययन, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
28	निर्मला जैन	:	रस सिद्धांत और सौंदर्य साहित्य, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
29	पी. वी. काने	:	संस्कृत काव्यशास्त्र का इतिहास, मोतीलाल बनारसीदास, वाराणसी
30	एस. के. डे.	:	संस्कृत काव्यशास्त्र का इतिहास (दो खण्ड), बिहार राष्ट्रभाषा परिषद, पटना
31	निर्मला जैन	:	उदात्तता के विषय में, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
32	W K Wimsatt & Beardsley	:	Literary Criticism – A Short History, Oxford IBH, New Delhi
33	I A Richards	:	Principles of Literary criticisms
34	रामचंद्र तिवारी	:	भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र की रूपरेखा, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
35	शेषेन्द्र शर्मा	:	आधुनिक काव्यशास्त्र, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
36	निशा अग्रवाल	:	भारतीय काव्यशास्त्र, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
37	योगेन्द्र प्रताप सिंह	:	भारतीय काव्यशास्त्र, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
38	गणपति चन्द्र गुप्त	:	रस सिद्धांत का पुनर्विवेचन, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
39	निर्मला जैन	:	पाश्चात्य साहित्य चिंतन, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली
40	करुणाशंकर उपाध्याय	:	पाश्चात्य काव्य चिंतन, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद

पाठ्यक्रम (Syllabus of the Course)

कोर्स : स्नातकोत्तर हिन्दी एवं तुलनात्मक साहित्य

Course : M.A. Hindi & Comparative Literature

तृतीय सत्र (Semester Third)

प्रश्नपत्र का नाम (Title of the Course) : अनुवाद सिद्धांत एवं प्रयोग

पाठ्यक्रम कोड (Course Code): LHC 5302

- Session : June-November
- Core Paper
- No. of Credits : 4 (Four)
- Lectures : 4 Session/Week (1 Hour/Session)
- कुल अंक (Total Marks) : 100 (आंतरिक मूल्यांकन- 40 अंक और सत्रांत परीक्षा- 60 अंक)

परिचय :

विभिन्न भाषिक प्रदेशों के लोगों के बीच संवाद बढ़ाने के साथ भिन्न-भिन्न भाषाओं में मौजूद रचनाओं का अध्ययन करने के लिए अनुवाद की भूमिका अनिवार्य है। अनुवाद सिद्धांतों के क्रमिक अध्ययन और अनुवाद की समस्याओं से अवगत होने से छात्र कोई भी अनुप्रयुक्त अध्ययन करने में सक्षम होंगे। इस पाठ्यक्रम से छात्रों को अनुवाद कार्य की सामाजिक भूमिका के प्रति भी सचेत किया जायेगा।

इकाई- एक

अनुवाद प्रक्रिया - अनुवाद का अर्थ एवं परिभाषा, उपकरण, अनुवाद की प्रक्रिया और अनुवाद के प्रकार, श्रोत भाषा और लक्ष भाषा, तुलना और अर्थांतरण की प्रक्रिया , अनुवाद तथा समतुल्यता का सिद्धांत

इकाई- दो

पारिभाषिक शब्दावली - पारिभाषिक शब्दावली का अर्थ, पारिभाषिक शब्दावली का महत्त्व, पारिभाषिक शब्दावली का प्रयोग व प्रविधि (अनुवाद के संदर्भ में), पारिभाषिक शब्दावली के निर्माण की प्रक्रिया

इकाई- तीन

अनुवाद की समस्याएँ - गद्यानुवाद, पद्यानुवाद, मशीनी अनुवाद, अनुवाद की शैलीगत समस्याएँ (संरचनात्मक दृष्टिकोण), कार्यालयीन अनुवाद की समस्याएँ, वैज्ञानिक एवं तकनीकी अनुवाद की समस्यायें, विधि साहित्य की अनुवाद की समस्यायें

इकाई- चार

अनुवाद : पुनरीक्षण, संपादन और मूल्याकंन, अनुवाद की प्रासंगिकता और व्यावसायिक परिदृश्य

परीक्षा पद्धति (pattern of Examination) :

- आंतरिक मूल्यांकन और सत्रांत परीक्षा का विवरण और मूल्यांकन पद्धति

आंतरिक परीक्षा : कुल अंक 40

- (लिखित परीक्षा-15 अंक, सेमिनार-10 अंक, प्रदत्त कार्य-10 अंक, अन्य गतिविधियाँ (Overall)- उपस्थिति, छात्र व्यवहार, सांस्कृतिक गतिविधियाँ आदि) - 5 अंक

सत्रांत परीक्षा : कुल अंक 60

- खंड 'क' में 1 से 10 बहुविकल्पीय प्रश्न होंगे जिसमें क, ख, ग और घ के रूप में चार विकल्प होंगे। 10x1= 10
- खंड 'ख' में 11 से 16 संक्षिप्त टिप्पणी होंगी जिनमें से चार करने होंगे। 4x5= 20
- खंड 'ग' 17 से 21 दीर्घ उत्तरीय (निबंध स्तरीय) प्रश्न होंगे जिनमें तीन लिखने होंगे। 3x10 = 30

संदर्भ ग्रंथ :

1	भोलानाथ तिवारी एवं किरणवाला	:	भारतीय भाषाओं से अनुवाद की समस्याएँ,शब्दकार, दिल्ली
2	भोलानाथ तिवारी एवं ओमप्रकाश गाबा	:	अनुवाद की व्यवहारिक समस्याएँ, शब्दकार, दिल्ली
3	एन.इ.विश्वनाथ अय्यर	:	अनुवाद-भाषाएँ समस्याएँ, स्वाति प्रकाशन, त्रिवेंद्रम
4	अमर सिंह वधान	:	सं-अनुवाद और संस्कृति, त्रिपाठी एंड संस, अहमदाबाद
5	कुसुम अग्रवाल	:	अनुवाद शिल्प-समकालीन संदर्भ, साहित्य सहकार, दिल्ली
6	के.सी.कुमारन एवं डॉ. प्रमोद कोव्व्रत	:	संपा.इक्कीसवी सदी में अनुवाद –दशाएं दिशाएं, जवाहर पुस्तकालय, मथुरा
7	सुधांशु चतुर्वेदी	:	इन्दुलेखा, एन.बी.टी.नई दिल्ली
8	एन.इ.विश्वनाथ अय्यर	:	रामराज बहादुर, एन.बी.टी.नई दिल्ली
9	भारती विद्यार्थी	:	मछुवारे, साहित्य अकादमी, नई दिल्ली
10	पी.कृष्णन	:	कथा एक प्रान्तर की,भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली
11	राकेश कालिया	:	धान, एन.बी.टी. नई दिल्ली
12	हरिवंशराय बच्चन	:	उमर खय्याम की रुबाईयां, शब्दकार, नई दिल्ली
13	जयशंकर प्रसाद	:	कामायनी, अनु-श्रीधरमेनन, साहित्य अकादमी नई दिल्ली
14	Machwe Prabhakar	:	Kabir, Sahitya Academy, New Delhi
15	Bassenet Sussan	:	Translation studies, Methuen, London

16 Bijoy Kumar Das : The Horizon of Translation Studies, Atlantic Publishers & Distributers, New delhi

17 Usha Nilson : Surdas (Translation), Sahitya Academy, New Delhi

पाठ्यक्रम (Syllabus of the Course)

कोर्स : स्नातकोत्तर हिन्दी एवं तुलनात्मक साहित्य

Course : M.A. Hindi & Comparative Literature

प्रथम सत्र (Semester First)

प्रश्नपत्र का नाम (Title of the Course) : तुलानात्मक साहित्य

पाठ्यक्रम कोड (Course Code): LHC 5303

- Session : June-November
- Core Paper
- No. of Credits : 4 (Four)
- Lectures : 4 Session/Week (1 Hour/Session)
- कुल अंक (Total Marks) : 100 (आंतरिक मूल्यांकन- 40 अंक और सत्रांत परीक्षा- 60 अंक)

परिचय :

साहित्य की तुलनात्मक अवधारणा आज के संदर्भ में प्रासंगिक है। यह पाठ्यक्रम साहित्यानुसंधान को सामयिक सांस्कृतिक गतिविधियों के पूर्ण आस्वादन करने के लिए रास्ता खोल देता है, जबकि बहुमुखी साहित्यकार, कलाकार और आलोचक संस्कृति के विभिन्न अंत:सम्बन्धों को ही पुनर्सृजित करते आ रहे हैं। आज के पाठक इस बात से परिचित हैं कि लेखन में किस प्रकार विभिन्न आशयों का तानाबाना बुना जाता है और विभिन्न अनुशासनों से लेखक को प्रेरणा मिल जाती है। विश्व में और भारत में विशेष कर तुलनात्मक साहित्य को एक विधा या अनुशासन के रूप में पढ़ने-पढ़ाने की माँग को यह पूरा कर पायेगा। तुलनात्मक साहित्य के विभिन्न स्कूलों का यहाँ परिचय हो जायेगा। साहित्यिक इतिहास लेखन, भारत के विशेष संदर्भ में तुलनात्मक साहित्य आदि पर भी विशेष अध्ययन इसमें समाहित है। इसी के अंतर्गत तुलनात्मक भारतीय एवं विश्व साहित्य का संक्षिप्त इतिहास एवं तुलनात्मक साहित्य का अंतरनुशासनिक विवेचन किया जायेगा।

इकाई- एक

तुलनात्मक साहित्य का अर्थ, परिभाषा, स्वरूप और महत्व, साहित्य के परिप्रेक्ष्य में तुलना के घटक, तुलनात्मक साहित्य का विकास , तुलनात्मक साहित्य संबंधी मान्यताएँ, पाशचात्य व भारतीय साहित्य

इकाई- दो

प्रविधि के विविध रूप, तुलनात्मक साहित्य में अनुवाद की भूमिका, तुलनात्मक साहित्य की आवश्यकता, तुलनात्मक साहित्य का शिल्प , वैश्वीकरण के संदर्भ में तुलनात्मक साहित्य

इकाई- तीन

तुलनात्मक साहित्य के विभिन्न सम्प्रदाय, भारतीय साहित्य का सामान्य परिचय, हिन्दी और अंग्रेजी साहित्य के विकास के चरण ।

इकाई- चार

तुलनात्मक साहित्य व अंतरानुशासनिक विवेचन, तुलनात्मक भारतीय साहित्य व विश्व साहित्य का इतिहास, हिन्दी और अंग्रेजी का स्वच्छंदतावादी साहित्य, प्रगतिशील साहित्य, वैश्वीकरण के सन्दर्भ में तुलनात्मक साहित्य

परीक्षा पद्धति (pattern of Examination) :

- आंतरिक मूल्यांकन और सत्रांत परीक्षा का विवरण और मूल्यांकन पद्धति

आंतरिक परीक्षा : कुल अंक 40

- (लिखित परीक्षा-15 अंक, सेमिनार-10 अंक, प्रदत्त कार्य-10 अंक, अन्य गतिविधियाँ (Overall)- उपस्थिति, छात्र व्यवहार, सांस्कृतिक गतिविधियाँ आदि) - 5 अंक

सत्रांत परीक्षा : कुल अंक 60

- खंड 'क' में 1 से 10 बहुविकल्पीय प्रश्न होंगे जिसमें क, ख, ग और घ के रूप में चार विकल्प होंगे। 10x1= 10
- खंड 'ख' में 11 से 16 संक्षिप्त टिप्पणी होंगी जिनमें से चार करने होंगे। 4x5= 20
- खंड 'ग' 17 से 21 दीर्घ उत्तरीय (निबंध स्तरीय) प्रश्न होंगे जिनमें तीन लिखने होंगे। 3x10 = 30

संदर्भ ग्रंथ :

1	इन्द्रनाथ चौधरी	:	तुलनात्मक साहित्य : भारतीय परिप्रेक्ष्य
2	बी.एच. राजुलकर, राजमल बोरा	:	तुलनात्मक अध्ययन : स्वरूप एवं संभावनाएँ, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
3	के. सच्चिदानंद	:	भारतीय साहित्य : स्थापनाएँ और प्रस्तावनाएँ
4	यू. आर. अनंतमूर्ति	:	किस प्रकार की है ये भारतीयता
5	प्रभाकर माचवे	:	आज का भारतीय साहित्य
6	प्रो. बी.वाई ललिताम्बा	:	तुलनात्मक साहित्य और अनुवाद
7	S.K. Das	:	A History of Hindi Literature, Vol-1
8	Susan Bassnet	:	Comparative Literature
9	K. Arvindakshan	:	Comparative Indian Literature
10	Amlya Dev	:	Idea of Comparative Literature
11	Anjala Maharish	:	A Comparative Study of Breethian Classical Indian Theater
12	Spivak Gaytri Chakravorty	:	Death of Discipline

13	Homy K Babha	:	A Location of Culture, London, Routiedge
14	Jonathen Rutheford (Edited)	:	Identity : Community, Culture, Difference, London, Routidge
15	Vasudha Daimia and Damsteegi	:	Narrative Strategies : Essays on South Asian Literature and Film, New Delhi, OUP
16	Chandra Mohan (Edited)	:	Aspects of Comparative Literature in India, India Publishers.
17	हनुमानप्रसाद शुक्ल (सं)		तुलनात्मक साहित्य : सैद्धांतिक परिप्रेक्ष्य, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
18	के. वनजा	:	तुलना तुलना, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
19	डॉ. नगेन्द्र	:	भारतीय साहित्य, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली

पाठ्यक्रम (Syllabus of the Course)

कोर्स : स्नातकोत्तर हिन्दी एवं तुलनात्मक साहित्य

Course : M.A. Hindi & Comparative Literature

तृतीय सत्र (Semester Third)

प्रश्नपत्र का नाम (Title of the Course) : आधुनिक काव्य

पाठ्यक्रम कोड (Course Code): LHC 5304

- Session : June-November
- Core Paper
- No. of Credits : 4 (Four)
- Lectures : 4 Session/Week (1 Hour/Session)
- कुल अंक (Total Marks) : 100 (आंतरिक मूल्यांकन- 40 अंक और सत्रांत परीक्षा- 60 अंक)

परिचय :

आधुनिक काव्य में हिन्दी कविता के नवीन काव्य संस्कार-काव्य बोध के उदय के कारणों के साथ कविता की परंपरा में हुए विकास से छात्रों का परिचय कराया जायेगा। विभिन्न कवियों की प्रतिनिधि कविताओं के माध्यम से कवियों के रचनाकर्म से तो छात्रों का परिचय कराया ही जायेगा, साथ ही छात्रों की विश्लेषणात्मक-आलोचनात्मक क्षमता के परिष्कार हेतु चुनी हुई कविताओं के पाठात्मक विवेचन पर ही ध्यान केन्द्रित किया जायेगा।

इकाई- एक

द्विवेदी युगीन कविता का वैचारिक पक्ष, द्विवेदी युग के प्रमुख कवि मैथिलीशरण गुप्त और उनकी श्रेष्ठ रचनाएँ
मैथिलीशरण गुप्त : साकेत (नवम सर्ग)

इकाई- दो

छायावाद युगीन कविता का वैचारिक पक्ष , छायावाद – अर्थ, स्वरूप एवं विकास, छायावाद और स्वच्छंदतावाद, छायावाद की प्रवृत्तियाँ और प्रमुख कवि
प्रसाद : कामायनी (श्रद्धा और इडा सर्ग)
महादेवी वर्मा- मैं नीर भरी दुःख की बदली
सुमित्रानंदन पंत- परिवर्तन, प्रथम रश्मि
निराला – राम की शक्तिपूजा

इकाई- तीन

राष्ट्र एवं सास्कृतिक काव्यधारा और प्रगतिवादी काव्य की वैचारिक पृष्ठभूमि, प्रगतिवाद की सामान्य परिस्थितियाँ और प्रमुख कवि

नागार्जुन – अकाल और उसके बाद

रामधारी सिंह 'दिनकर'- नीव का हाहाकार

केदारनाथ अग्रवाल – चंद्रगहना से लौटते हुए

इकाई- चार

प्रयोगवाद और नई कविता का वैचारिक पक्ष, अवधारणा, प्रयोगवाद के विकास में सप्तकों का योगदान ,प्रयोगवादी- नई कविता के विकास के विविध चरण, समकालीन कविता और उसकी परिस्थितियाँ , समकालीन कविता के विविध विमर्श

अज्ञेय - कलगी बाजरे की

गजाननमाधव मुक्तिबोध : ब्रह्मराक्षस,

नागार्जुन : अकाल और उसके बाद, कालिदास,

धूमिल- रोटी और संसद

ओमप्रकाश वाल्मीकि – तब तुम क्या करोगे

कात्यायनी – सात भाईयों के बीच चंपा

परीक्षा पद्धति (pattern of Examination) :

- आंतरिक मूल्यांकन और सत्रांत परीक्षा का विवरण और मूल्यांकन पद्धति

आंतरिक परीक्षा : कुल अंक 40

- (लिखित परीक्षा-15 अंक, सेमिनार-10 अंक, प्रदत्त कार्य-10 अंक, अन्य गतिविधियाँ (Overall)- उपस्थिति, छात्र व्यवहार, सांस्कृतिक गतिविधियाँ आदि) - 5 अंक

सत्रांत परीक्षा : कुल अंक 60

- खंड 'क' में 1 से 10 बहुविकल्पीय प्रश्न होंगे जिसमें क, ख, ग और घ के रूप में चार विकल्प होंगे। 10x1= 10
- खंड 'ख' में 11 से 16 ससंदर्भ व्याख्या (RC) होंगी जिनमें से चार करने होंगे। 4x5= 20
- खंड 'ग' 17 से 21 दीर्घ उत्तरीय (निबंध स्तरीय) प्रश्न होंगे जिनमें तीन लिखने होंगे। 3x10 = 30

संदर्भ ग्रंथ :

1 नंद किशोर नवल : समकालीन काव्यधारा

2 विश्वनाथ प्रसाद तिवारी : समकालीन हिन्दी कविता, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद

3	डॉ. हरदयाल	:	हिन्दी कविता का समकालीन परिदृश्य, आलेख प्रकाशन
4	राजेश जोशी	:	समकालीन कविता और समकालीनता
5	ए. अरविंदाक्षन	:	समकालीन कविता की भारतीयता, आनंद प्रकाशन, कलकत्ता
6	मोहन	:	समकालीन कविता की भूमिका,अनंग प्रकाशन, दिल्ली
7	मनीषा झा	:	प्रकृति, पर्यावरण और समकालीन कविता
8	रंजना राजदान	:	समकालीन कविता और दर्शन
9	जगन्नाथ पंडित	:	समकालीन हिन्दी कविता का परिप्रेक्ष्य, नमन प्रकाशन
10	मोहन	:	नहीं होती ख़तम कविता, विमर्श प्रकाशन, वाराणसी
11	ए. अरविंदाक्षन	:	समकालीन हिन्दी कविता
12	रवि श्रीवास्तव	:	परंपरा इतिहासबोध और साहित्य, पोयिन्टर पब्लिकेशन्स
13	प्रो. पुष्पिता अवस्थी	:	अधुनिक हिंदी काव्यालोचन के सौ वर्ष, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली
14	नामवर सिंह	:	आधुनिक साहित्य की प्रवृतियाँ, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
15	करुणाशंकर उपाध्याय	:	आधुनिक कविता का पुनरारम्भ, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली
16	रामस्वरूप चतुर्वेदी	:	आधुनिक कविता यात्रा, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
17	शेषेन्द्र शर्मा	:	आधुनिक काव्य यात्रा, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
18	विश्वनाथ प्रसाद तिवारी	:	आधुनिक हिंदी कविता, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
19	केदारनाथ सिंह	:	आधुनिक हिंदी कविता में बिम्ब विधान, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
20	मालती सिंह	:	आधुनिक हिंदी काव्य और पुराण कथा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
21	ए. अरविन्दाक्षन	:	समकालीन हिन्दी कविता, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
22	पी. रवि (संपादक)	:	समकालीन कविता के आयाम, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
23	विश्वनाथ प्रसाद तिवारी	:	समकालीन हिन्दी कविता, लोकभारती प्रकाशन, नई दिल्ली

पाठ्यक्रम (Syllabus of the Course)

कोर्स : स्नातकोत्तर हिन्दी एवं तुलनात्मक साहित्य

Course : M.A. Hindi & Comparative Literature

चतुर्थ सत्र (Semester Fourth)

प्रश्नपत्र का नाम (Title of the Course) : हिन्दी नाटक एवं रंगमंच

पाठ्यक्रम कोड (Course Code): LHC 5401

- Session : December-April
- Core Paper
- No. of Credits : 4 (Four)
- Lectures : 4 Session/Week (1 Hour/Session)
- कुल अंक (Total Marks) : 100 (आंतरिक मूल्यांकन- 40 अंक और सत्रांत परीक्षा- 60 अंक)

परिचय :

हिन्दी नाटकों की परंपरा प्राचीनकाल से विद्यमान रही है। भरतमुनि का सिद्धांत प्राथमिक रूप से नाटकों को केन्द्र में रखकर है। लेकिन प्राचीन नाटकों की सीमाबद्धता आधुनिक ज्ञान-विज्ञान और तार्किकता से है। हिन्दी नवजागरण के साथ जिस साहित्यिक भावभूमि और सामाजिक यथार्थ का दर्शन हिन्दी के रचनाकारों ने किया, उसकी वजह से नाटकों के कथ्य के साथ नाटकों की शैली-प्रविधि का भी लगातार विकास होता गया है। 'अंधेर नगरी' से आधुनिक हिन्दी नाटकों का आरंभ मानकर समकालीन नाटककारों का नाटकों के कथ्य व रंग-शिल्प तथा रंगमंच प्रविधियों का अध्ययन करके आधुनिक हिन्दी नाटकों के इतिहास का समग्रता से परिचय कराया जायेगा।

इकाई- एक

हिन्दी नाटक उद्भव और विकास, स्वातंत्र्योततर प्रमुख नाटककार, नाटक की वैचारिक पृष्ठभूमि, हिन्दी की विभिन्न नाट्य शैलियाँ, रंगमंच तथा अलग-अलग थियटरों का परिचय, हिन्दी की विभिन्न नाट्य शैलियाँ – (रामलीला, रासलीला, जात्रा, तमाशा, स्वांग, नौटंकी, पारसी रंगमंच, ब्रेख्तियन थियेटर)

इकाई- दो

नाटक का कालक्रम अध्ययन ,

कृतिपाठ -: अंधेर नगरी- भारतेंदु हरिश्चंद्र

आधे अधूरे – मोहन राकेश

इकाई- तीन

नाटक : चन्द्रगुप्त- जयशंकर प्रसाद

इकाई- चार

एकांकी : लक्ष्मी का स्वागत- उपेन्द्रनाथ अश्क, भोर का तारा- जगदीशचन्द्र माथुर, सबसे बड़ा आदमी –भगवतीचरण वर्मा

परीक्षा पद्धति (pattern of Examination) :

- आंतरिक मूल्यांकन और सत्रांत परीक्षा का विवरण और मूल्यांकन पद्धति

आंतरिक परीक्षा : कुल अंक 40

- (लिखित परीक्षा-15 अंक, सेमिनार-10 अंक, प्रदत्त कार्य-10 अंक, अन्य गतिविधियाँ (Overall)- उपस्थिति, छात्र व्यवहार, सांस्कृतिक गतिविधियाँ आदि) - 5 अंक

सत्रांत परीक्षा : कुल अंक 60

- खंड 'क' में 1 से 10 बहुविकल्पीय प्रश्न होंगे जिसमें क, ख, ग और घ के रूप में चार विकल्प होंगे। 10x1= 10
- खंड 'ख' में 11 से 16 ससंदर्भ व्याख्या (RC) होंगी जिनमें से चार करने होंगे। 4x5= 20
- खंड 'ग' 17 से 21 दीर्घ उत्तरीय (निबंध स्तरीय) प्रश्न होंगे जिनमें तीन लिखने होंगे। 3x10 = 30

संदर्भ ग्रंथ :

1 प्रेम सिंह एवं सुषमा आर्य : रंग प्रक्रिया के विविध आयाम, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली

2 डॉ. नीलम राठी : साठोत्तरी हिन्दी नाटक, संजय प्रकाशन, दिल्ली

3 गोविन्द चातक : रंगमंच : कला और दृष्टि, तक्षशिला प्रकाशन, दिल्ली

4 केदार सिंह : हिन्दी नाटक : कल और आज, क्लासिकल पब्लिकेशन हाउस, दिल्ली

5 नेमिचंद्र जैन : दृश्य अदृश्य, वाणी प्रकाशन, दिल्ली

6 बी. बालाचंद्रन : साठोत्तरी हिन्दी नाटक : परंपरा और प्रयोग, अन्नपूर्णा प्रकाशन, कानपुर

7 देवेन्द्र कुमार गुप्ता : हिन्दी नाट्य शिल्प : बदलती रंगदृष्टि, पियूष प्रकाशन, दिल्ली

8	जसवंतभाई पंड्या	:	समाकलीन हिन्दी नाटक, ज्ञान प्रकाशन, कानपुर
9	प्रवीण अख्तर	:	समकालीन हिन्दी नाटक परिदृश्य, विकास प्रकाशन, कानपुर
10	प्रभात शर्मा	:	हिन्दी नाटक : इतिहास, दृष्टि और समकालीन बोध, संजय प्रकाशन, दिल्ली
11	दमयंती श्रीवास्तव	:	हिन्दी नाटक में आधुनिक प्रवृत्तियाँ, राजा प्रकाशन, इलाहाबाद
12	गोविंद चातक	:	आधुनिक हिन्दी नाटक : भाशिक और संवादिक संरचना, तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली
13	भारतेन्दु हरिश्चंद्र	:	अंधेर नगरी
14	जगदीशचन्द्र माथुर	:	कोणार्क
15	नरेश मेहता	:	संशय की एक रात
16	डॉ. सोमनाथ गुप्ता	:	पारसी थियेटर, उद्भव और विकास, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
17	देवेन्द्रराज अंकुर	:	रंगमंच का सौन्दर्यबोध, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
18	मोहन राकेश	:	नाट्रय दर्पण, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
19	जगदीशचंद्र माथुर	:	परंपराशील नाट्य, लोकभारती प्रकाशन, नई दिल्ली
20	महेश आनंद	:	रंगमंच के सिद्धांत, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
21	रमेश राजहंस	:	नाट्रय प्रस्तुति, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली

पाठ्यक्रम (Syllabus of the Course)

कोर्स : स्नातकोत्तर हिन्दी एवं तुलनात्मक साहित्य

Course : M.A. Hindi & Comparative Literature

चतुर्थ सत्र (Semester Fourth)

प्रश्नपत्र का नाम (Title of the Course) : तुलनात्मक साहित्य प्रविधि

पाठ्यक्रम कोड (Course Code): LHC 5402

- Session : December-April
- Elective Paper
- No. of Credits : 4 (Four)
- Lectures : 4 Session/Week (1 Hour/Session)
- कुल अंक (Total Marks) : 100 (आंतरिक मूल्यांकन- 40 अंक और सत्रांत परीक्षा- 60 अंक)

परिचय :

प्रस्तुत खंड में तुलनात्मक साहित्य के प्रमुख उपादानों और मूलाधारों को समझाने का प्रयास किया जाएगा, साथ-साथ साहित्य इतिहास की रचना, साहित्यिक सांस्कृतिक अन्तःसंबंधों आदि से छात्रों को अवगत करने का प्रयास भी। अनुप्रयुक्त अध्ययन का रास्ता खोले रखने के लिए नमूने के तौर पर हिंदी साहित्यिक विद्या को छायावाद को लिया जाता है और रोमांटिसिज्म जैसे सामान वैश्विक विधान से तालमेल बिठाने का अवसर दिया जा सकता है। बहुमुखी साहित्यकार के रचना कौशल को जानने के लिए हिंदी के कवि, उपन्यासकार को जानने का अवसर दिया जा सकता है। संस्कृत साहित्य के विरासत में,विश्व भाषा में रचना होती है तो हिंदी साहित्य में भी उनका अनुसरण देखने को मिलाता है और प्रविधि में इन संबंधों का सिलसिला समझाया जा सकता है। उत्तर-उपनिवेशवादी रंगमंच और शतरंज के ख़िलाड़ी (प्रेमचंद) का रचना समय जानने से तुलनात्मक साहित्य का साहित्येतर विधाओं से संबंध स्थापित करते दिखये जा सकते है।

इकाई- एक

तुलनात्मक साहित्य –प्रमुख उपादान, तुलनात्मक साहित्य के मूलाधार, तुलनात्मक साहित्य में अनुवाद की भूमिका, तुलनात्मक साहित्यिक क्षेत्र

इकाई- दो

छायावाद और रोमांटिसिज्म

इकाई- तीन

कालिदास के मेघदूतम् और मोहन राकेश का आषाढ़ का एक दिन

इकाई- चार

उत्तर-उपनिवेशवादी रंगमंच और शतरंज के ख़िलाड़ी (प्रेमचंद) का रचना समय वर्मा

परीक्षा पद्धति (pattern of Examination) :

- आंतरिक मूल्यांकन और सत्रांत परीक्षा का विवरण और मूल्यांकन पद्धति

आंतरिक परीक्षा : कुल अंक 40

- (लिखित परीक्षा-15 अंक, सेमिनार-10 अंक, प्रदत्त कार्य-10 अंक, अन्य गतिविधियाँ (Overall)- उपस्थिति, छात्र व्यवहार, सांस्कृतिक गतिविधियाँ आदि) - 5 अंक

सत्रांत परीक्षा : कुल अंक 60

- खंड 'क' में 1 से 10 बहुविकल्पीय प्रश्न होंगे जिसमें क, ख, ग और घ के रूप में चार विकल्प होंगे। 10x1= 10
- खंड 'ख' में 11 से 16 टिप्पणी होंगी जिनमें से चार करने होंगे। 4x5= 20
- खंड 'ग' 17 से 21 दीर्घ उत्तरीय (निबंध स्तरीय) प्रश्न होंगे जिनमें तीन लिखने होंगे। 3x10 = 30

संदर्भ ग्रंथ :

1	इन्द्रनाथ चौधरी	:	तुलनात्मक साहित्य : भारतीय परिप्रेक्ष्य
2	बी.एच. राजुलकर, राजमल बोरा	:	तुलनात्मक अध्ययन : स्वरूप एवं संभावनाएँ, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
3	के. सच्चिदानंद	:	भारतीय साहित्य : स्थापनाएँ और प्रस्तावनाएँ
4	यू. आर. अनंतमूर्ति	:	किस प्रकार की है ये भारतीयता
5	प्रभाकर माचवे	:	आज का भारतीय साहित्य
6	प्रो. बी.वाई ललिताम्बा	:	तुलनात्मक साहित्य और अनुवाद
7	S.K. Das	:	A History of Hindi Literature, Vol-1
8	Susan Bassnet	:	Comparative Literature
9	K. Arvindakshan	:	Comparative Indian Literature
10	Amlya Dev	:	Idea of Comparative Literature

11	Anjala Maharish	:	A Comparative Study of Breethian Classical Indian Theater
12	Spivak Gaytri Chakravorty	:	Death of Discipline

पाठ्यक्रम (Syllabus of the Course)

कोर्स : स्नातकोत्तर हिन्दी एवं तुलनात्मक साहित्य

Course : M.A. Hindi & Comparative Literature

प्रश्नपत्र का नाम (Title of the Course) : लघु शोध प्रबंध

पाठ्यक्रम कोड (Course Code): LHC 5403

- Core Paper
- No. of Credits : 4 (Four)
- कुल अंक (Total Marks) : 100 (लघु शोध प्रबंध मूल्यांकन- 60 अंक और मौखिकी- 40 अंक)

पाठ्यक्रम (Syllabus of the Course)

कोर्स : स्नातकोत्तर हिन्दी एवं तुलनात्मक साहित्य

Course : M.A. Hindi & Comparative Literature

प्रश्नपत्र का नाम (Title of the Course) : पत्रकारिता एवं मीडिया लेखन

पाठ्यक्रम कोड (Course Code): LHC 5001

- Elective Paper
- No. of Credits : 4 (Four)
- Lectures : 4 Session/Week (1 Hour/Session)
- कुल अंक (Total Marks) : 100 (आंतरिक मूल्यांकन- 40 अंक और सत्रांत परीक्षा- 60 अंक)

परिचय :

छापेखाने के आविष्कार की सबसे बड़ी यह भूमिका रही कि इससे सामाजिक स्तर पर संवाद करने की सुविधा प्राप्त हो पाई। सामाजिक स्तर पर संवाद विभिन्न विचारों, सूचनाओं को विस्तृत जनता तक पहुँचाने के लिए किया जाता है। इसी दृष्टिकोण से छात्रों को इस प्रश्नपत्र में संचार माध्यम लेखन से परिचित कराया जायेगा। इससे छात्रों को समाचार पत्र्, टेलीविजन, रेडियो, इंटरनेट आदि विशिष्ट संचार माध्यमों में सामाजिक संवाद लेखन में सक्षमकरने के लिए प्रविधियों से परिचित कराने के साथ व्यवहारिक रूप से इस संचार लेखन में सक्षमकरने का प्रयास किया जायेगा। इससे हिन्दी साहित्य का अध्ययन करने वाले छात्रों के लिए रोजगार की संभावनाएँ भी प्रशस्त होंगी।

इकाई- एक

पत्रकारिता : स्वरूप और प्रकार, अर्थ, समाचार संकलन व स्रोत, भारत में पत्रकारिता, समाचार के प्रकार, जनसंचार का अर्थ व् स्वरूप, संचार और जनसंचार के माध्यम और अंतर

इकाई- दो

मुद्रित माध्यमों में पत्रकारिता, समाचार लेखन, संपादकीय लेखन, फीचर लेखन, नाट्य लेखन, विज्ञापन लेखन, समाचार प्रस्तुति, रिपोर्ट लेखन

इकाई- तीन

इलेक्ट्रानिक माध्यम के विविध रूप, रेडियो, टेलीविजन, सिनेमा, सोशल मीडिया, वेब पेज, ई-पत्रिका, रेडियो समाचार लेखन, रेडियो वार्ता लेखन, रेडियो साक्षात्कार, रेडियो विज्ञापन, रेडियो कमेंट्री, टेलीविजन समाचार लेखन, टेलीविजन विज्ञापन धारावाहिक लेखन

इकाई- चार

फोटो पत्रकारिता, जनसंचार माध्यमों की भाषा, समाचार की भाषा, संपादकीय पृष्ट की भाषा, न्यू-मीडिया की भाषा, प्रेस कानून और आचार संहिता, सूचना अधिकार, प्रसार भारती अधिनियम

परीक्षा पद्धति (pattern of Examination) :

- आंतरिक मूल्यांकन और सत्रांत परीक्षा का विवरण और मूल्यांकन पद्धति

आंतरिक परीक्षा : कुल अंक 40

- (लिखित परीक्षा-15 अंक, सेमिनार-10 अंक, प्रदत्त कार्य-10 अंक, अन्य गतिविधियाँ (Overall)- उपस्थिति, छात्र व्यवहार, सांस्कृतिक गतिविधियाँ आदि) - 5 अंक

सत्रांत परीक्षा : कुल अंक 60

- खंड 'क' में 1 से 10 बहुविकल्पीय प्रश्न होंगे जिसमें क, ख, ग और घ के रूप में चार विकल्प होंगे। 10x1= 10
- खंड 'ख' में 11 से 16 टिप्पणी होंगी जिनमें से चार करने होंगे। 4x5= 20
- खंड 'ग' 17 से 21 दीर्घ उत्तरीय (निबंध स्तरीय) प्रश्न होंगे जिनमें तीन लिखने होंगे। 3x10 = 30

संदर्भ ग्रंथ :

1	के.एन. गोस्वामी, सरोजमणि मार्कण्डेय	:	आकाशवाणी वार्ताएँ, तीन खण्ड
2	डॉ. रवीन्द्र मिश्रा	:	दृश्य श्रव्य माध्यम लेखन, तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली
3	देवेन्द्र इस्सर	:	जनमाध्यम सम्प्रेषण और विकास
4	सूर्यप्रसाद दीक्षित	:	जनसंचार : प्रकृति और परंपरा
5	एन.सी. पंत	:	मीडिया लेखन सिद्धांत, तक्षशिला प्रकाशन, दिल्ली
6	रमेशचन्द्र त्रिपाठी	:	मीडिया लेखन
7	रामचंद्र जोशी	:	मीडिया विर्मश
8	नरेश मिश्रा	:	मीडिया लेखन : भारतीय चिंतन, दर्शन और साहित्य
9	सूर्यप्रसाद दीक्षित	:	पत्रकारिता, जनसंचार और जनसम्पर्क
10	नीरजा माधव	:	रेडियो का कला पक्ष
11	उषा सक्सेना	:	रेडियो नाटक लेखन

12	पी. के. आर्य	:	समाचार लेखन, विद्याविहार, दिल्ली
13	नारायण दवाले	:	संवाद संकलन विज्ञान
14	गौरी शंकर रैना	:	संचार माध्यम लेखन, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
15	नंद किशोर त्रिखा	:	संवाद संकलन और लेखन
16	हरिमोहन	:	संपादन कला और प्रूफ संपादन
17	प्रभु जिंगरन	:	टेलीविजन की दुनिया
18	सुधीश पचौरी और अचला शर्मा	:	नये संचार माध्यम और हिन्दी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
19	मोहन	:	स्वाधीनता आन्दोलन की पत्रकारिता और हिंदी, अनंग प्रकाशन, दिल्ली
20	Ravindra vajpai	:	Communication through the Ages, Publication Society of India, Communication Today, Jaipur
21	Prabhu Jingaran	:	Film Cinematography
22	Angela Philips	:	Good Writing for Journalism, Sage, New Delhi
23	Sajitha jayaprakash	:	Technical Writing, Himalaya Publication, Delhi
24	Edward S Herman	:	The Global Media
25	Esta de Fossad	:	Writing and producing for television and film, Saga Publications Delhi
26	विष्णु राजगढ़िया	:	जनसंचार सिद्धांत और अनुप्रयोग, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली
27	संतोष भारतीय	:	पत्रकारिता : नया दौर नये प्रतिमान, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली
28	डॉ. अर्जुन चौहान	:	मीडिया कालीन हिन्दी स्वरूप और संभवानाएँ, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली

29 शालिनी जोशी : वेब पत्रकारिता : नया मीडिया नए रुझान, राजकमल प्रकाशन, न दिल्ली

30 अखिलेश मिश्र : पत्रकारिता मिशन से मीडिया तक, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली

31 डॉ. महासिंह पूनिया : पत्रकारिता का बदलता स्वरूप, हरियाणा साहित्य अकादेर्म पंचमूला

32 डॉ. मुकेश मानस : मीडिया लेखन : सिद्धांत और प्रयोग, स्वराज प्रकाशन

पाठ्यक्रम (Syllabus of the Course)

कोर्स : स्नातकोत्तर हिन्दी एवं तुलनात्मक साहित्य

Course : M.A. Hindi & Comparative Literature

प्रश्नपत्र का नाम (Title of the Course) : प्रयोजनमूलक हिन्दी

पाठ्यक्रम कोड (Course Code): LHC 5002

- Elective Paper
- No. of Credits : 4 (Four)
- Lectures : 4 Session/Week (1 Hour/Session)
- कुल अंक (Total Marks) : 100 (आंतरिक मूल्यांकन- 40 अंक और सत्रांत परीक्षा- 60 अंक)

परिचय :

वर्तमान युग कम्प्यूटर का है। ज्ञान-विज्ञान से लेकर समाज के किसी भी अंग में कम्प्यूटर का अनुप्रयोग अब बहुत स्पष्ट रूप से हमारे सामने है। हिन्दी साहित्य का अध्ययन करने वाले छात्रों को भी ज्ञान-विज्ञान की नवीनतम् उपलब्धियों से परिचित कराने के लिए हिन्दी कम्प्यूटिंग के प्रश्नपत्र को वैकल्पिक रूप में रखा गया है। छात्रों को कम्प्यूटर अनुप्रयोग से परिचित कराने के साथ उन्हें कम्प्यूटर में हिन्दी प्रयोग परक्षमता बढ़ाने की प्रेरणा दिलाना पाठ्यक्रम का उद्देश्य है।

इकाई- एक

हिन्दी भाषा व क्रियान्वयन - व्यावहारिक हिन्दी : राजभाषा, राष्ट्रभाषा, विभाषा व सम्पर्क भाषा कार्यालयी भाषा हिन्दी : विज्ञप्ति, संक्षेपण, टिप्पण, प्रारूपण, आवेदन

इकाई- दो

हिन्दी पत्रकारिता - पत्रकारिता की परिभाषा, पत्रकारिता का स्वरूप और प्रकार, राष्ट्रीय स्वाधीनता संग्राम में हिन्दी पत्रकारिता का महत्त्व जनसंचार लेखन : संपादकीय लेख, रेडियो, टेलीविजन और समाचार पत्र (विज्ञापन लेखन और समाचार लेखन)

इकाई- तीन

हिंदी कंप्यूटिंग : संक्षिप्त परिचय – प्रयोग, पब्लिशिंग, इन्टरनेट

इकाई- चार

मीडिया व जनसंचार लेखन - न्यू मीडिया की भाषा

परीक्षा पद्धति (pattern of Examination) :

- आंतरिक मूल्यांकन और सत्रांत परीक्षा का विवरण और मूल्यांकन पद्धति

आंतरिक परीक्षा : कुल अंक 40

- (लिखित परीक्षा-15 अंक, सेमिनार-10 अंक, प्रदत्त कार्य-10 अंक, अन्य गतिविधियाँ (Overall)- उपस्थिति, छात्र व्यवहार, सांस्कृतिक गतिविधियाँ आदि) - 5 अंक

सत्रांत परीक्षा : कुल अंक 60

- खंड 'क' में 1 से 10 बहुविकल्पीय प्रश्न होंगे जिसमें क, ख, ग और घ के रूप में चार विकल्प होंगे। 10x1= 10
- खंड 'ख' में 11 से 16 टिप्पणी होंगी जिनमें से चार करने होंगे। 4x5= 20
- खंड 'ग' 17 से 21 दीर्घ उत्तरीय (निबंध स्तरीय) प्रश्न होंगे जिनमें तीन लिखने होंगे। 3x10 = 30

संदर्भ ग्रंथ :

1	विनीता सहगल	:	आज का युग : इंटरनेट युग
2	मनोज सिंह	:	आओ कम्प्यूटर सीखें
3	विनोद कुमार मिश्रा	:	आधुनिक कम्प्यूटर विज्ञान
4	गुंजन शर्मा	:	कम्प्यूटर : बेसिक शिक्षा
5	विष्णुप्रिया सिंह	:	कम्प्यूटर का परिचय
6	राजेश कुमार	:	कम्प्यूटर एक अद्रभुत आविष्कार
7	शादाब मलिक	:	कम्प्यूटर और इसके अनुप्रयोग
8	नीति मेहता	:	कम्प्यूटर इंटरनेट शब्दकोश
9	राजगोपाल सिंह जादिन	:	कम्प्यूटर के विविध आयाम
10	विष्णुप्रिया सिंह	:	कम्प्यूटर नेटवर्किंग कोर्स
11	पी. के. शर्मा	:	कम्प्यूटर परिपालन की पद्धतियाँ
12	गुणाकर मुले	:	कम्प्यूटर क्या है?, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
13	विनोद कुमार मिश्र	:	कम्प्यूटर व सूचना प्रौद्योगिकी शब्दकोश, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली

14 बालेन्दुशेखर तिवारी : प्रयोजनमूलक हिन्दी, संजय बुक डिपो, वाराणसी

15 विजयपाल सिंह : कार्यालय हिन्दी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी

16 डॉ. भोलानाथ तिवारी : राजभाषा हिन्दी, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली

17 डॉ. रामगोपाल सिंह : हिन्दी मीडिया लेखन और अनुवाद, पार्शव, अहमदाबाद

18 डॉ. सुनागलक्ष्मी : प्रयोजनमूलक हिन्दी : प्रासंगिकता एवं परिदृश्य, जवाह पुस्तकालय, मथुरा

19 डॉ. षिबा मनोज : पत्रकारिता का जनसंचार और हिन्दी उपन्यास, जवाहर पुस्तकालय मथुरा

20 अमी आधार निडर : समाचार संकल्पना और अनुवाद, जवाहर पुस्तकालय, मथुरा

21 डॉ. हरिमोहन : सूचनाक्रांति और विश्वभाषा हिन्दी, जवाहर पुस्तकालय, मथुरा

22 डॉ. हरिमोहन : आधुनिक संचार और हिन्दी, जवाहर पुस्तकालय, मथुरा

23 एन. सी. पंत : मीडिया लेखन के सिद्धांत, जवाहर पुस्तकालय, मथुरा

24 डॉ. माधव सोनटके : प्रयोजनमूलक हिन्दी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद

25 डॉ. रामप्रकाश : प्रयोजनमूलक हिन्दी : संरचना और प्रयोग, राधाकृष्ण प्रकाशन, न दिल्ली

26 डॉ. कैलाशनाथ पाण्डेय : प्रयोजनमूलक हिन्दी की नई भूमिका

27 पी. लता : प्रयोजनमूलक हिन्दी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद

पाठ्यक्रम (Syllabus of the Course)

कोर्स : स्नातकोत्तर हिन्दी एवं तुलनात्मक साहित्य

Course : M.A. Hindi & Comparative Literature

प्रश्नपत्र का नाम (Title of the Course) : भाषा प्रोद्योगिकी एवं हिंदी कंप्यूटिंग

पाठ्यक्रम कोड (Course Code): LHC 5003

- Elective Paper
- No. of Credits : 4 (Four)
- Lectures : 4 Session/Week (1 Hour/Session)
- कुल अंक (Total Marks) : 100 (आंतरिक मूल्यांकन- 40 अंक और सत्रांत परीक्षा- 60 अंक)

परिचय :

वर्तमान युग कम्प्यूटर का है। ज्ञान-विज्ञान से लेकर समाज के किसी भी अंग में कम्प्यूटर का अनुप्रयोग अब बहुत स्पष्ट रूप से हमारे सामने है। हिन्दी साहित्य का अध्ययन करने वाले छात्रों को भी ज्ञान-विज्ञान की नवीनतम् उपलब्धियों से परिचित कराने के लिए हिन्दी कम्प्यूटिंग के प्रश्नपत्र को वैकल्पिक रूप में रखा गया है। छात्रों को कम्प्यूटर अनुप्रयोग से परिचित कराने के साथ उन्हें कम्प्यूटर में हिन्दी प्रयोग परक्षमता बढ़ाने की प्रेरणा दिलाना पाठ्यक्रम का उद्देश्य है।

इकाई- एक

कंप्यूटिंग का परिचय, कंप्यूटर का इतिहास,कंप्यूटर के विभिन भाग

इकाई- दो

प्रमुख प्राविधि : ओपन सोर्स, सोर्स, हिंदी कंप्यूटिंग के विभिन धरातल

इकाई- तीन

कंप्यूटर का तकनीकी उपयोग, हिंदी कंप्यूटिंग व् तकनीकि हिंदी

इकाई- चार

कंप्यूटर का उपयोग –इन्टरनेट, वेब पब्लिशिंग व हिंदी कंप्यूटिंग, ईमेल, ब्लॉग लेखन

परीक्षा पद्धति (pattern of Examination) :

- आंतरिक मूल्यांकन और सत्रांत परीक्षा का विवरण और मूल्यांकन पद्धति

आंतरिक परीक्षा : कुल अंक 40

- (लिखित परीक्षा-15 अंक, सेमिनार-10 अंक, प्रदत्त कार्य-10 अंक, अन्य गतिविधियाँ (Overall)- उपस्थिति,

छात्र व्यवहार, सांस्कृतिक गतिविधियाँ आदि) - 5 अंक

सत्रांत परीक्षा : कुल अंक 60

- खंड 'क' में 1 से 10 बहुविकल्पीय प्रश्न होंगे जिसमें क, ख, ग और घ के रूप में चार विकल्प होंगे। 10x1= 10
- खंड 'ख' में 11 से 16 टिप्पणी होंगी जिनमें से चार करने होंगे। 4x5= 20
- खंड 'ग' 17 से 21 दीर्घ उत्तरीय (निबंध स्तरीय) प्रश्न होंगे जिनमें तीन लिखने होंगे। 3x10 = 30

संदर्भ ग्रंथ :

1	विनीता सहगल	:	आज का युग : इंटरनेट युग
2	मनोज सिंह	:	आओ कम्प्यूटर सीखें
3	विनोद कुमार मिश्रा	:	आधुनिक कम्प्यूटर विज्ञान
4	गुंजन शर्मा	:	कम्प्यूटर : बेसिक शिक्षा
5	विष्णुप्रिया सिंह	:	कम्प्यूटर का परिचय
6	राजेश कुमार	:	कम्प्यूटर एक अद्रभुत आविष्कार
7	शादाब मलिक	:	कम्प्यूटर और इसके अनुप्रयोग
8	नीति मेहता	:	कम्प्यूटर इंटरनेट शब्दकोश
9	राजगोपाल सिंह जादिन	:	कम्प्यूटर के विविध आयाम
10	विष्णुप्रिया सिंह	:	कम्प्यूटर नेटवर्किंग कोर्स

पाठ्यक्रम (Syllabus of the Course)

कोर्स : स्नातकोत्तर हिन्दी एवं तुलनात्मक साहित्य

Course : M.A. Hindi & Comparative Literature

प्रश्नपत्र का नाम (Title of the Course) : हिन्दी भाषा शिक्षण

पाठ्यक्रम कोड (Course Code): LHC 5004

- Elective Paper
- No. of Credits : 4 (Four)
- Lectures : 4 Session/Week (1 Hour/Session)
- कुल अंक (Total Marks) : 100 (आंतरिक मूल्यांकन- 40 अंक और सत्रांत परीक्षा- 60 अंक)

परिचय :

हिन्दी भाषा के वैज्ञानिक शिक्षण के छात्रों को सक्षम करने का प्रयास किया जायेगा। हिन्दी शिक्षण की विधियाँ समझना पहला उद्देश्य है, फिर शिक्षण का इतिहास भी वे जानें। भाषाई शिक्षण की बारीकियों को समझाते हुए प्रथम, द्वितीय और तृतीय भाषा के तौर पर हिन्दी भाषा को पढ़ाने का तरीका, शिक्षा के चारों कौशलों को हिन्दी शिक्षण में भी प्रयोग में लाने की आवश्यकता आदि से छात्र अवगत होगा। छात्रों को हिन्दी शिक्षण के साथ जुड़ी हुई रोजगार संभावनाओं की जानकारी मिलेगी। हिन्दी शिक्षण, हिन्दी शिक्षण की विभिन्न विधियाँ - निगमनात्मक व आगमनात्मक, संश्लेष णात्मक व विश्लेषणात्मक, वस्तुविधि, दृष्टान्त विधि, कथनविधि एवं व्याख्यान विधि प्रश्नोत्तर विधि (सुकराती विधि), शोध विधि, प्रोजेक्ट विधि, डाल्टन योजना एवं वर्धा योजना शैक्षिक विधियों के विकास का इतिहास : हिन्दी शिक्षण में द्वितीय भाषा और प्रथम भाषाई शिक्षण आदिकालीन शिक्षण एवं मध्यकालीन शिक्षण उन्नीसवीं भाताब्दी का शिक्षण - अनिवार्य शिक्षण बीसवीं शताब्दी का शिक्षण

इकाई- एक

हिंदी भाषाशिक्षण : सिद्धांत और उद्देश्य, भाषा शिक्षण : प्रकृति और प्रयोजन, सैद्धांतिक भाषा विज्ञान और अनुप्रयुक्त भाषा विज्ञान, अनुप्रयुक्त भाषाविज्ञान में भाषा का स्थान, शैक्षिक व्याकरण की प्रकृति।

इकाई- दो

भाषा अर्जन और अधिगम : भाषा अधिगम के सिद्धांत और भाषा-शिक्षण, व्यवहारवाद एवं बुद्धिवाद तथा भाषा शिक्षण में इनका योगदान।

इकाई- तीन

भाषा शिक्षण सन्दर्भ : मातृभाषा, द्वितीय भाषा और विदेशी भाषा, मातृभाषा, द्वितीय भाषा और विदेशी भाषा के रूप में हिंदी, मातृभाषा, द्वितीय भाषा में अधिगम – समानता और विभिन्नता।

इकाई- चार

भाषा शिक्षण प्रणाली : भाषा शिक्षण प्रणाली के मुख्य प्रकार- व्याकरण अनुवाद विधि, सम्प्रेषणपरक विधि और संकलन विधि।

परीक्षा पद्धति (pattern of Examination) :

- आंतरिक मूल्यांकन और सत्रांत परीक्षा का विवरण और मूल्यांकन पद्धति

आंतरिक परीक्षा : कुल अंक 40

- (लिखित परीक्षा-15 अंक, सेमिनार-10 अंक, प्रदत्त कार्य-10 अंक, अन्य गतिविधियाँ (Overall)- उपस्थिति, छात्र व्यवहार, सांस्कृतिक गतिविधियाँ आदि) - 5 अंक

सत्रांत परीक्षा : कुल अंक 60

- खंड 'क' में 1 से 10 बहुविकल्पीय प्रश्न होंगे जिसमें क, ख, ग और घ के रूप में चार विकल्प होंगे। 10x1= 10
- खंड 'ख' में 11 से 16 टिप्पणी होंगी जिनमें से चार करने होंगे। 4x5= 20
- खंड 'ग' 17 से 21 दीर्घ उत्तरीय (निबंध स्तरीय) प्रश्न होंगे जिनमें तीन लिखने होंगे। 3x10 = 30

संदर्भ ग्रंथ :

1 रामचन्द्र वर्मा : अच्छी हिन्दी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली

2 किशोरीलाल शर्मा : भाषा माध्यम तथा प्रकाशन

3 एन.पी. कट्टन पिल्लै : भाषा प्रयोग

4 रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव : भाषा शिक्षण, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली

5 मनोरमा गुप्ता : भाषा शिक्षण : सिद्धांत और प्रयोग, केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा

6 के. वी. वी. वी. एल. नरसिंहराव : भाषा शिक्षण : परीक्षण तथा मूल्यांकन, कलिंगा, दिल्ली

7 वाई. वेंकेटे वर राव : भाषा विज्ञान और भाषा शिक्षण, अन्नपूर्णा प्रकाशन, कानपुर

8 दिलीप सिंह : भाषा, साहित्य और संस्कृति शिक्षण, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली

9 ओमकार सिंह देवाल : दूरस्थ शिक्षण में भाषा शिक्षण

10 कैलाशचंद्र भाटिया : हिन्दी भाषा शिक्षण

11 वी. एन. तिवारी : हिन्दी भाषा

12	हरदेव बाहरी	:	हिन्दी का सामान्य प्रयोग
13	वी. वी. हेगड़े	:	हिन्दी के लिंग प्रयोग
14	एल. एन. शर्मा	:	हिन्दी संरचना
15	किशोरीलाल बाजपेई	:	हिन्दी शब्दानुशासन
16	सूर्यप्रसाद दीक्षित	:	प्रयोजनमूलक हिन्दी, भारत बुक सेंटर, लखनऊ
17	हरदेव बाहरी	:	शुद्ध हिन्दी
18	के. के. गोस्वामी	:	व्याकरणिक हिन्दी और रचना
19	के. के. रत्तू	:	व्याकरणिक हिन्दी
20	पूरनचद टण्डन	:	व्याकरणिक हिन्दी
21	सुभाष चन्द्र गुप्त	:	हिन्दी शिक्षण, खेल साहित्य केन्द्र
22	भोलानाथ तिवारी	:	भाषा शिक्षण, लिपि प्रकाशन, नई दिल्ली
23	ब्रजेश्वर वर्मा	:	भाषा शिक्षण और भाषा विज्ञान, केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा
24	रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव	:	भाषा शिक्षण, मैकमिलन, दिल्ली
25	Jack C Richards & Theodore S Rodgers	:	Approaches and Methods of language teaching
26	Little Wood		Communicative Language Teaching, Longmar London
27	Richard C Jack	:	(Ed.), Error Anlysis, Longman
28	Robert Lado	:	Language Teaching
29	C-DAC, Pune	:	Leela (Set of Com. Web/Cassetes)

पाठ्यक्रम (Syllabus of the Course)

कोर्स : स्नातकोत्तर हिन्दी एवं तुलनात्मक साहित्य

Course : M.A. Hindi & Comparative Literature

प्रश्नपत्र का नाम (Title of the Course) : दलित साहित्य

पाठ्यक्रम कोड (Course Code): LHC 5005

- Elective Paper
- No. of Credits : 4 (Four)
- Lectures : 4 Session/Week (1 Hour/Session)
- कुल अंक (Total Marks) : 100 (आंतरिक मूल्यांकन- 40 अंक और सत्रांत परीक्षा- 60 अंक)

परिचय :

उक्त प्रश्नपत्र में दलित साहित्य के इतिहास-विकास के साथ-साथ दलित साहित्य की अवधारणा से छात्रों का परिचय कराया। दलित साहित्य की विशिष्ट कृतियों जूठन- ओमप्रकाश बाल्मीकि, परिशिष्ट- गिरिराज किशोर, उठाईगीर- लक्ष्मण गायकवाड़ का सामाजिक, रजनीतिक और आर्थिक परिवेश में अध्ययन कराया जायेगा।

इकाई- एक

दलित : अवधारणा - (भारत की विशिष्ट जातिगत व वर्गगत अवस्था-ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य) दलित साहित्य की अवधारणा, परिभाषा व दलित साहित्य का सामाजिक-राजनीतिक आयाम, भारतीय दलित साहित्य का उद्भव व विकास (इतिहास- विशेष संदर्भ मराठी दलित साहित्य) हिन्दी दलित साहित्य का इतिहास

इकाई- दो

ओमप्रकाश बाल्मीकि – जूठन (व्याख्या प्रारंभिक 50 पृष्ठ)

इकाई- तीन

गिरिराज किशोर – परिशिष्ट (व्याख्या प्रारंभिक 50 पृष्ठ)

इकाई- चार

सुशीला टाकभौरे- रंग और व्यंग्य

परीक्षा पद्धति (pattern of Examination) :

- आंतरिक मूल्यांकन और सत्रांत परीक्षा का विवरण और मूल्यांकन पद्धति

आंतरिक परीक्षा : कुल अंक 40

- (लिखित परीक्षा-15 अंक, सेमिनार-10 अंक, प्रदत्त कार्य-10 अंक, अन्य गतिविधियाँ (Overall)- उपस्थिति,

छात्र व्यवहार, सांस्कृतिक गतिविधियाँ आदि) - 5 अंक

सत्रांत परीक्षा : कुल अंक 60 10x1= 10

- खंड 'क' में 1 से 10 बहुविकल्पीय प्रश्न होंगे जिसमें क, ख, ग और घ के रूप में चार विकल्प होंगे।
- खंड 'ख' में 11 से 16 ससंदर्भ व्याख्या (RC) होंगी जिनमें से चार करने होंगे। 4x5= 20
- खंड 'ग' 17 से 21 दीर्घ उत्तरीय (निबंध स्तरीय) प्रश्न होंगे जिनमें तीन लिखने होंगे। 3x10 = 30

संदर्भ ग्रंथ :

1	Eleanor Zelliot	:	from Untouchable to Dalit, Mnohar
2	Ghanashyam Sha	:	Dalit AIdentity and Politics, Saga Delhi
3	Harold R Issac	:	Indias Ex-Untouchables, Harper & Row
4	S M Micheal	:	Dalit in Modern India: Vision & Values, Vistar
5	Y Chinna Rao	:	Writing Dalit History and other Essays, Manohar
6	V.K. Krishna Iyer	:	Dr. Ambedkar & Dalit Future, B.R. Publication
7	Nandu Ram	:	Ambedkar, Dalit a& Buddism, Mankak
8	Narayan Das	:	Abmbedkar, Ghandhi and Empowerment of Dalits, ABD Publication
9	Gail Omvet	:	Dalit Vision, Orient Blackswan
10	S.K. Thorat	:	Dalit in India, Search for a common destiny, Saga
11	Kanch Ilaiah	:	Post – Hindu India: A discourse in Dalit-Bahujan,Socio-spiritual and Scientific revolution, Saga
12	Tamo, Nibang & MC Behera	:	Nadeem HasnainTribal India, Harnam
13	Govindachandra Rath	:	Tribal Development in India: The contemporary

debate, Saga

14	Sunil Janah	:	The Tribals of India, Oxford
15	Priyaram M Chaco	:	Tribal Communities and Social Change, Oxford
16	G Stanley & Jay Kumar	:	Tribals from tradition to transition, M D Publications
17	L P Vidhyardhi &B K Ray	:	Tribal culture in India, Concept
18	Devi K Uma	:	Tribal Rights in India, Eastern Corporation
19	K Mann		Tribal Women: on the threshold of 21st century, M D Publication
20	Munni Lakara	:	Tribal India, Communities, Custom & Cultures and Dominant
21	ओमप्रकाश बाल्मीकि	:	दलित साहित्य का सौन्दर्यशास्त्र, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली
22	मोहनदास नेमिशराय	:	भारतीय दलित आन्दोलन का इतिहास (चार खण्डों में), राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली
23	डॉ. एल. जी. मेश्राम	:	और बाबा साहेब आंबेडकर ने कहा (पाँच खण्डों में), राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली
24	ओम प्रकाश बाल्मीकि	:	दलित साहित्य : अनुभव, संघर्ष एवं यथार्थ, राधाकृष्ण प्रकाशन, न दिल्ली
25	ओमप्रकाश बाल्मीकि	:	जूठन (दो भागों में), राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली
26	गिरिराज किशोर	:	परिशिष्ट, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली
27	सुशीला टाकभौरे	:	रंग में भंग

पाठ्यक्रम (Syllabus of the Course)

कोर्स : स्नातकोत्तर हिन्दी एवं तुलनात्मक साहित्य

Course : M.A. Hindi & Comparative Literature

प्रश्नपत्र का नाम (Title of the Course) : स्त्री लेखन

पाठ्यक्रम कोड (Course Code): LHC 5006

- Elective Paper
- No. of Credits : 4 (Four)
- Lectures : 4 Session/Week (1 Hour/Session)
- कुल अंक (Total Marks) : 100 (आंतरिक मूल्यांकन- 40 अंक और सत्रांत परीक्षा- 60 अंक)

परिचय :

महिला लेखन समग्र रूप में महिला आंदोलन की इकाई के रूप में है। महिला आंदोलन की मूल धारणा पुरुषों और स्त्रियों के समान सामाजिक, राजनीतिक व आर्थिक अधिकार होने के रूप में है। इस विचारसरणी में स्त्री को पुरुष के बराबर समझने पर ज़ोर दिया गया है। दोयम दर्जे की नागरिकता से असहमति के साथ महिला आंदोलन इस बात की भी माँग करता है कि जिन सामाजिक आचार-विचारों की बुनियाद इस स्त्री-पुरुष भेद के आधार पर है, उन्हें समाप्त किया जाए। इन महिला अधिकारों की पक्षधरता करता हुआ साहित्य महिला लेखन के दायरे में आता है। विभिन्न पुरुषों व महिलाओं द्वारा लिखे गए साहित्य का मूल्यांकन स्त्रीवादी विचारों के आधार पर करना स्त्रीवादी आंदोलन के दायरे में आता है। इस वैकल्पिक पत्र में छात्रों को महिला लेखन की सैद्धांतिक व दार्शनिक आधारभूमि से परिचित कराने के साथ स्त्रीवादी आलोचना के मूल्यों को निर्धारित करने में सक्षम करने का प्रयास किया जाएगा।

इकाई- एक

महिला लेखन और उसका सैद्धांतिक पक्ष –स्त्री विमर्श का इतिहास, स्त्रीवादी आन्दोलन का परिचय,स्त्रीवादी लेखन की पृष्टभूमि, स्त्रीवादी आन्दोलन और हिंदी साहित्य

इकाई- दो

उपन्यास – पोस्ट बॉक्स नं. 203 नाला सोपारा – चित्रा मुद्गल (व्याख्या प्रारंभिक 50 पृष्ठ)

इकाई- तीन

कहानियाँ- यही सच है – मन्नू भण्डारी, अंतर्यात्रा – क्षमा शर्मा, मेर्सी किल्लिंग – कमल कुमार

इकाई- चार

कविताएँ- कात्यायनी – इस स्त्री से डरो, सात भाइयों के बीच चम्पा

निर्मला पुतुल – अगर तुम मेरी जगह होते, इतनी दूर मत ब्याहना बाबा

अनामिका – बेजगह, पतिव्रता, एक औरत का पहला राजकीय प्रवास

परीक्षा पद्धति (pattern of Examination) :

- आंतरिक मूल्यांकन और सत्रांत परीक्षा का विवरण और मूल्यांकन पद्धति

आंतरिक परीक्षा : कुल अंक 40

- (लिखित परीक्षा-15 अंक, सेमिनार-10 अंक, प्रदत्त कार्य-10 अंक, अन्य गतिविधियाँ (Overall)- उपस्थिति, छात्र व्यवहार, सांस्कृतिक गतिविधियाँ आदि) - 5 अंक

सत्रांत परीक्षा : कुल अंक 60

- खंड 'क' में 1 से 10 बहुविकल्पीय प्रश्न होंगे जिसमें क, ख, ग और घ के रूप में चार विकल्प होंगे। 10x1= 10
- खंड 'ख' में 11 से 16 ससंदर्भ व्याख्या (RC) होंगी जिनमें से चार करने होंगे। 4x5= 20
- खंड 'ग' 17 से 21 दीर्घ उत्तरीय (निबंध स्तरीय) प्रश्न होंगे जिनमें तीन लिखने होंगे। 3x10 = 30

संदर्भ ग्रंथ :

1	जगदीश चतुर्वेदी	:	स्त्रीवादी साहित्य विमर्श, अनामिका प्रकाशन, दिल्ली
2	राजेंद्र यादव	:	पितृसत्ता के नए रूप, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
3	प्रकाश सरोज(संपा.	:	स्त्री पुरुष संबंधों के आइने में मोहन राकेश, स्वराज प्रकाशन, दिल्ली
4	मन्मथनाथ गुप्ता	:	स्त्री पुरुष संबंधों का रोमांचकारी इतिहास, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
5	राजकिशोर	:	स्त्री और पुरुष पुनर्विचार, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
6	लियो तॉलस्टाय	:	स्त्री और पुरुष, सस्ता साहित्य मंडल
7	Kamala Ganesh & Usha Thakkar	:	Culture and Making Identity in Contemporary India
8	Vandana Shiva	:	Staying Alive: Women, Ecology and Development
9	Tankia Sankar	:	Hindi Wife, Hindu Nation: Community, Religion and Nationalism
10	Lata Singh (Ed.)	:	Play House of Power Theatre in Colonial India
11	Sula Myth Rane Harch	:	Feminist Research Methodology in Social Science
12	Gerda Lerner	:	The Creation of feminist Consciousness: From the Middle Ages to Eighteen Seventy
13	Gerda Lerner	:	The Creation of Patriarchy

पाठ्यक्रम (Syllabus of the Course)

कोर्स : स्नातकोत्तर हिन्दी एवं तुलनात्मक साहित्य

Course : M.A. Hindi & Comparative Literature

प्रश्नपत्र का नाम (Title of the Course) : लोक जागरण और भक्तिकाल

पाठ्यक्रम कोड (Course Code): LHC 5007

- Elective Paper
- No. of Credits : 4 (Four)
- Lectures : 4 Session/Week (1 Hour/Session)
- कुल अंक (Total Marks) : 100 (आंतरिक मूल्यांकन- 40 अंक और सत्रांत परीक्षा- 60 अंक)

परिचय :

भारत के सांस्कृतिक परिवेश को विशिष्ट बनाने में भक्तिकालीन रचनाओं का अभूतपूर्व योगदान रहा है। भारतीय सांस्कृतिक परिवेश को समग्रता से समझने के लिए भक्तिकाल की रचनाओं का अध्ययन छात्रों के लिए अनिवार्य है। इस अनिवार्यता का कारण यह है कि यह अध्ययन अलग-अलग भाषाओं के विभिन्न भावबोध एवं विचारों के अजस्र स्रोत का तार्किक निर्धारण 'भारतीयता' का सृजन करता है । मध्यकालीन हिन्दी साहित्य साहित्येतिहास में बेजोड़ है। यहाँ प्रवृत्तिमार्गी एवं निवृत्तिमार्गी कवियों का संगम और जनता के बीचोंबीच खड़े होकर धार्मिक, सामाजिक समानता के स्वर मुखरित करने वाले, जनता के बोली में कथन शैली में बढ़ाने वाले कवि की प्रतिभा पा जाते हैं। उनकी कविताओं का एक सौन्दर्यशास्त्र है । समस्त भारतीय साहित्य में भक्ति आन्दोलन का स्वर मुखरित हुआ। लेकिन भक्ति से रीति तक कुछेक कवि ऐसे पाये जाते हैं जो शास्त्र और सौन्दर्य के कवि के रूप में, दरबारी कवि के रूप में राज्याश्रित भी होते गये। अत: हिन्दी साहित्य का मध्यकाल भक्ति, श्रृंगार और काव्य शास्त्रीय दृष्टि से उल्लेखनीय है। निर्गुण में संत, सूफी और सगुण में राम, कृष्ण की आराधना को केन्द्र में रखकर युगद्रष्टा कवि चुने जाते हैं। भक्तिकालीन कवियों की रचनाओं का विस्तृत अध्ययन या तो ऐच्छिक रूप से लिया जा सकता है, या प्रत्येक पाठ्यक्रम में छात्रों को यह चयन की छूट दी जा सकती है।

इकाई- एक

लोकजागरण की अवधारणा, 'लोक' शब्द का अर्थ और प्रयोग, 'लोक' शब्द की परिभाषा, भारतीय साधना का क्रमिक विकास

इकाई- दो

लोक जागरण : सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक और आर्थिक परिस्थिति, ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य

इकाई- तीन

हिंदी भक्तिकाव्य और लोकजागरण, भक्तिकाल की पृष्टभूमि, प्रेममार्गी धारा और जायसी के काव्य में लोकोन्मुखता, हिंदी की सगुण भक्तिकाव्य धारा और लोकजागरण, कृष्णभक्ति काव्य धारा और सूरदास, रामभक्ति शाखा और तुलसीदास

इकाई- चार

हिंदी संतकाव्य में लोकजागरण की अभिव्यक्ति – नामदेव, कबीरदास, गुरुनानक देव, दादू

परीक्षा पद्धति (pattern of Examination) :

- आंतरिक मूल्यांकन और सत्रांत परीक्षा का विवरण और मूल्यांकन पद्धति

आंतरिक परीक्षा : कुल अंक 40

- (लिखित परीक्षा-15 अंक, सेमिनार-10 अंक, प्रदत्त कार्य-10 अंक, अन्य गतिविधियाँ (Overall)- उपस्थिति, छात्र व्यवहार, सांस्कृतिक गतिविधियाँ आदि) - 5 अंक

सत्रांत परीक्षा : कुल अंक 60

- खंड 'क' में 1 से 10 बहुविकल्पीय प्रश्न होंगे जिसमें क, ख, ग और घ के रूप में चार विकल्प होंगे। 10x1= 10
- खंड 'ख' में 11 से 16 टिप्पणी होंगी जिनमें से चार करने होंगे। 4x5= 20
- खंड 'ग' 17 से 21 दीर्घ उत्तरीय (निबंध स्तरीय) प्रश्न होंगे जिनमें तीन लिखने होंगे। 3x10 = 30

संदर्भ ग्रंथ :

1 आचार्य रामचंद्र शुक्ल : हिन्दी साहित्य का इतिहास, नागरी प्रचारणी सभा, वाराणसी

2 आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी : हिन्दी साहित्य की भूमिका

3 रामविलास शर्मा : लोकजागरण और हिंदी साहित्य, वाणी प्रकाशन, दिल्ली

4 रामविलास शर्मा : लोकजीवन और साहित्य, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा

5 प्रेमशंकर : भक्तिकाव्य का समाजदर्शन, वाणी प्रकाशन, दिल्ली

6 राजमणि शर्मा : भारतीय प्राणधारा का स्वाभाविक विकास, हिंदी कविता, वाणी प्रकाशन, दिल्ली

7 शिवकुमार मिश्र : भक्तिकाव्य और लोकजीवन
8 आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी : कबीर, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
9 रामचंद्र शुक्ल : सूरदास, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
10 विश्वनाथ त्रिपाठी : लोकवादी तुलसीदास, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद

पाठ्यक्रम (Syllabus of the Course)

कोर्स : स्नातकोत्तर हिन्दी एवं तुलनात्मक साहित्य

Course : M.A. Hindi & Comparative Literature

प्रश्नपत्र का नाम (Title of the Course) : आदिवासी साहित्य का अध्ययन

पाठ्यक्रम कोड (Course Code): LHC 5008

- Elective Paper
- No. of Credits : 4 (Four)
- Lectures : 4 Session/Week (1 Hour/Session)
- कुल अंक (Total Marks) : 100 (आंतरिक मूल्यांकन- 40 अंक और सत्रांत परीक्षा- 60 अंक)

परिचय :

आदिवासी साहित्य में विभिन जन-जातीय समुदायों द्वारा, लिखित या वाचिक, जिस तरह के भी साहित्य का सृजन हुआ है, प्रस्तुत प्रकरण में उसका अध्ययन किया जाता है। इस अध्ययन में आदिवासी के जीवन पर लिखे गए साहित्य को भी शामिल करा सकते है। आदिवासी साहित्य अध्ययन में आदिवासी साहित्य अध्यन में आदिवासी साहित्य के विभिन आयामों व् पक्षों पर विचार करना आवश्यक है।

इकाई- एक

आदिवासी साहित्य की अवधारणा, आदिवासी साहित्य की परम्परा

इकाई- दो

आदिवासी साहित्य के स्रोत, परम्परा और भाषिक संरचना, आदिवासी साहित्य का सामाजिक आधार

इकाई- तीन

मुख्यधारा के साहित्य से आदिवासी साहित्य का अंतर व विशिष्टता, आदिवासी साहित्य के मूल्यांकन की प्रविधि

इकाई- चार

संजीव की दुनिया की सबसे हसीन औरत, रामदयाल मुंडा की उस दिन रास्ते में, विनोद कुमार की एक दुनिया अलग सी, मंगल सिंह मुंडा की महुआ का फूल

परीक्षा पद्धति (pattern of Examination) :

- आंतरिक मूल्यांकन और सत्रांत परीक्षा का विवरण और मूल्यांकन पद्धति

आंतरिक परीक्षा : कुल अंक 40

- (लिखित परीक्षा-15 अंक, सेमिनार-10 अंक, प्रदत्त कार्य-10 अंक, अन्य गतिविधियाँ (Overall)- उपस्थिति, छात्र व्यवहार, सांस्कृतिक गतिविधियाँ आदि) - 5 अंक

सत्रांत परीक्षा : कुल अंक 60 10x1= 10

- खंड 'क' में 1 से 10 बहुविकल्पीय प्रश्न होंगे जिसमें क, ख, ग और घ के रूप में चार विकल्प होंगे।

- खंड 'ख' में 11 से 16 टिप्पणी होंगी जिनमें से चार करने होंगे। 4x5= 20
- खंड 'ग' 17 से 21 दीर्घ उत्तरीय (निबंध स्तरीय) प्रश्न होंगे जिनमें तीन लिखने होंगे। 3x10 = 30

संदर्भ ग्रंथ :

1	महाश्वेता देवी	:	जंगल के दावेदार, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
2	शानी	:	शाल बने के दीप, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
3	रामशरण जोशी	:	आदिवासी समाज और शिक्षा, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
4	रामशरण जोशी	:	आदमी बैल और सपने, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
5	गोपीनाथ महान्ती	:	माटी मदाल,साहित्य अकादमी, दिल्ली
6	केदार प्रसाद मीणा	:	आदिवासी कहानियाँ, अलख प्रकाशन, जयपुर
7	विनोद कुमार	:	आदिवासी जीवन - जगत की बारह कहानियाँ- एक नाटक, अनुज्ञ बुक्स, दिल्ली
8	हीराराम मीणा	:	आदिवासी दुनिया, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, दिल्ली
9	जनार्दन	:	आदिवासी समाज, साहित्य और संस्कृति , अनंग प्रकाशन, दिल्ली
10	शरद सिंह	:	भारत के आदिवासी क्षेत्रों की लोककथाएं, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास दिल्ली
11	निर्मल कुमार बोस	:	भारतीय आदिवासी जीवन, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, दिल्ली
12	हाँसदा सौभेन्द्र शेखर	:	आदिवासी नहीं नाचेंगे, राजपाल एण्ड सन्ज, दिल्ली
13	डा. रूबी एलसा जेकब	:	समकालीन हिन्दी उपन्यासों में विस्थापन, विद्या प्रकाशन, कानपुर

पाठ्यक्रम (Syllabus of the Course)

कोर्स : स्नातकोत्तर हिन्दी एवं तुलनात्मक साहित्य

Course : M.A. Hindi & Comparative Literature

प्रश्नपत्र का नाम (Title of the Course) : लोक साहित्य

पाठ्यक्रम कोड (Course Code): LHC 5009

- Elective Paper
- No. of Credits : 4 (Four)
- Lectures : 4 Session/Week (1 Hour/Session)
- कुल अंक (Total Marks) : 100 (आंतरिक मूल्यांकन- 40 अंक और सत्रांत परीक्षा- 60 अंक)

परिचय :

लोक से आशय समाज के उस वर्ग से है, जिसका अपना ही रीति-रिवाज, संस्कार व साहित्य होता है और मुख्य धारा से जो दूर रहते हैं। उनका साहित्य वाचिक ज्यादा होता है और उन्हें पढ़ना-लिखना कम ही आता है। देश भाषाओं की व्यक्ति बोलियाँ उनके आचारानुष्ठानों व साहित्यिक गतिविधियों में समाहित हैं। उन्हें संकलित करना तो दूर कहीं आचरण के तौर पर वह साहित्य देश की अमूल्य सम्पत्ति होता है। साहित्य के विद्यार्थी ऐसे लोक एवं उनके द्वारा सृजित साहित्य का अध्ययन अवश्य कर सकें और मुख्यधारा साहित्य से उसका ताल-मेल बिठायें। इस पाठ्य-विषय में लोक साहित्य के विभिन्न पक्षों से छात्रों को परिचित कराया जायेगा। लोक साहित्य का मुख्यधारा के साहित्य के साथ क्या रिश्ता है? इस प्रश्न पर भी विचार किया जायेगा। लोक साहित्य के मूल्यांकन के क्या आधार हों, छात्रों को उनसे भी परिचित कराया जायेगा।

इकाई- एक

लोक साहित्य : सामान्य परिचय - लोक साहित्य के अध्ययन का इतिहास, लोक साहित्य : परिभाषा, प्रकृति, क्षेत्र और महत्व, लोकसंस्कृति, लोकमानस, लोकसंगीत, लोकविश्वास, लौकिक रीति-रिवाज एवं परम्पराएं, लोकसाहित्य का अन्य विषयों से सम्बन्ध, लोक और लोकवार्ता, लोकवार्ता : परिभाषा, प्रकृति, क्षेत्र और महत्व

इकाई- दो

लोक साहित्य के विभिन्न रूप - लोकसाहित्य के विभिन्न रूपों का वर्गीकरण- लोकगाथा (परिभाषा, वर्गीकरण, उत्पत्ति तथा विशेषताएँ), लोकगीत- (परिभाषा, वर्गीकरण तथा विशेषताएँ), श्रम-लोकगीत, संस्कार-लोकगीत, ऋतु-लोकगीत, जाति-गीत तथा देवी-देवताओं से सम्बन्धित लोकगीत। लोककथा- (परिभाषा, वर्गीकरण तथा विशेषताएँ) लोक-कथा, व्रत-कथा, परी-कथा, बोध-कथा तथा कथानक रूढ़ियाँ।

इकाई- तीन

भारतीय संस्कृति और लोकगीत - संस्कार- लोकगीत, श्रम-लोकगीत, ऋतु-लोकगीत तथा देवी-देवीताओं से सम्बन्धित लोकगीत। लोक साहित्य के संकलन में आने वाली कठिनाइयाँ एवं निवारण के उपाय, लोकनाट्य- (परिभाषा, वर्गीकरण, उत्पत्ति, परम्परा तथा विशेषताएं), नौटंकी, विदेसिया, रामलीला, रासलीला, भवाई, भांड, तमाशा, जात्रा तथा कथककलि।

इकाई- चार

लोक साहित्य का प्रदेय - हिन्दी साहित्य और भाषा के विकास में लोक साहित्य का योगदान, लोक साहित्य का स्रोत परंपरा व भाषिक संरचना (वाचिक/लिखित), लोक साहित्य का सामाजिक आधार, लोक साहित्य का मुख्यधारा के साहित्य पर प्रभाव व मुख्यधारा के साहित्य का लोक साहित्य पर प्रभाव, लोक साहित्य के मूल्यांकन की प्रविधि।

परीक्षा पद्धति (pattern of Examination) :

- आंतरिक मूल्यांकन और सत्रांत परीक्षा का विवरण और मूल्यांकन पद्धति

आंतरिक परीक्षा : कुल अंक 40

- (लिखित परीक्षा-15 अंक, सेमिनार-10 अंक, प्रदत्त कार्य-10 अंक, अन्य गतिविधियाँ (Overall)- उपस्थिति, छात्र व्यवहार, सांस्कृतिक गतिविधियाँ आदि) - 5 अंक

सत्रांत परीक्षा : कुल अंक 60

- खंड 'क' में 1 से 10 बहुविकल्पीय प्रश्न होंगे जिसमें क, ख, ग और घ के रूप में चार विकल्प होंगे । 10x1= 10
- खंड 'ख' में 11 से 16 टिप्पणी होंगी जिनमें से चार करने होंगे । 4x5= 20
- खंड 'ग' 17 से 21 दीर्घ उत्तरीय (निबंध स्तरीय) प्रश्न होंगे जिनमें तीन लिखने होंगे । 3x10 = 30

संदर्भ ग्रंथ :

1	हरीराम यादव	:	लोक साहित्य, बोहरा प्रकाशन, जयपुर
2	डॉ अल्पना सिंह/डॉ. अशोक मर्डे	:	लोक साहित्य और संस्कृति का वर्तमान स्वरूप, वांग्मय बुक्स, अलीगढ़
3	डॉ. दिनेश्वर प्रसाद	:	लोक साहित्य और संस्कृति
4	विष्णु रानडिलिया	:	जनशक्ति का लोक साहित्य, आर्य प्रकाशन मण्डल, दिल्ली
5	कृष्णदेव उपाध्याय	:	लोक साहित्य की भूमिका, साहित्य भवन, इलाहाबाद
6	मधु उपोटिस	:	ब्रज लोक साहित्य, इंदु प्रकाशन, अलीगढ़
7	मनोहर शर्मा	:	लोक साहित्य की सांस्कृतिक परंपरा
8	शांताराम देशमुख विमल	:	लोकमंच के पुरोधा

9 हरिदूर भट्टटा शैलेश : भाषा और उसका साहित्य, हिन्दी संस्थान, लखनऊ

10 वापचरणा महंत : असम के बारगीत, कमलकुमारी फाउंडेशन, असम

पाठ्यक्रम (Syllabus of the Course)

कोर्स : स्नातकोत्तर हिन्दी एवं तुलनात्मक साहित्य

Course : M.A. Hindi & Comparative Literature

प्रश्नपत्र का नाम (Title of the Course) : हिंदी साहित्य, सिनेमा और समाज

पाठ्यक्रम कोड (Course Code): LHC 5010

- Elective Paper
- No. of Credits : 4 (Four)
- Lectures : 4 Session/Week (1 Hour/Session)
- कुल अंक (Total Marks) : 100 (आंतरिक मूल्यांकन- 40 अंक और सत्रांत परीक्षा- 60 अंक)

परिचय :

आदमी की सृजनात्मक विधा के रूप में सिनेमा का महत्व असंदिग्ध है। सिनेमा और साहित्य का आपस में बहुत गहरा अंत:संबंध है। दोनों ही सृजनात्मक विधाएं मनुष्य जीवन को संवेदना क्या स्तर पर समझने का प्रयास करती हैं। इन दोनों के अंत:संबंधों को स्पष्ट करना और परस्पर प्रभाव के अध्ययन के बल पर बेहतर समाज के निर्माण की दिशा में बढ़ना आज की आवश्यकता है। यह पाठ्यक्रम हिंदी साहित्य के छात्रों को सिनेमा माध्यम की विशेषताएं और आधुनिक विधा से विभिन्न स्तर पर परिचय कराया जाएगा। सिनेमा और साहित्य किस तरह से संवेदनात्मक स्तर पर समाज की अभिव्यक्ति करता है, यही प्रस्तुत अध्ययन का विशिष्ट बिंदु है।

इकाई- एक

सिनेमा का उद्भव व विकास एवं स्वरूप, साहित्य का व्यवसायिक पक्ष, प्रभाव, भूमिका स्वरूप।

इकाई- दो

सिनेमा और समाज : विविध आयाम, कला सिनेमा बनाम लोकप्रिय सिनेमा, सिनेमा : व्यवसाय उद्योग।

इकाई- तीन

सिनेमा में साहित्य गीत और संवाद, पटकथा, कथा-सिने, पत्रकारिता और सिने समीक्षा, साहित्य आधारित सिनेमा : भारत और विश्व, हिंदी सिनेमा और हिंदी साहित्य।

इकाई- चार

साहित्य, सिनेमा और समाज : अन्तःसंबंध और अंत:प्रभाव, भविष्य का सिनेमा हॉल सिनेमा का भविष्य।

परीक्षा पद्धति (pattern of Examination) :

- आंतरिक मूल्यांकन और सत्रांत परीक्षा का विवरण और मूल्यांकन पद्धति

आंतरिक परीक्षा : कुल अंक 40

- (लिखित परीक्षा-15 अंक, सेमिनार-10 अंक, प्रदत्त कार्य-10 अंक, अन्य गतिविधियाँ (Overall)- उपस्थिति, छात्र व्यवहार, सांस्कृतिक गतिविधियाँ आदि) - 5 अंक

सत्रांत परीक्षा : कुल अंक 60

- खंड 'क' में 1 से 10 बहुविकल्पीय प्रश्न होंगे जिसमें क, ख, ग और घ के रूप में चार विकल्प होंगे। 10x1= 10
- खंड 'ख' में 11 से 16 टिप्पणी होंगी जिनमें से चार करने होंगे। 4x5= 20
- खंड 'ग' 17 से 21 दीर्घ उत्तरीय (निबंध स्तरीय) प्रश्न होंगे जिनमें तीन लिखने होंगे। 3x10 = 30

संदर्भ ग्रंथ :

1	फिरोज रंगूलवाला	:	भारतीय चलचित्र का इतिहास, राजपाल एंड संस, दिल्ली
2	श्री बच्चा	:	भारतीय फिल्मों की कहानी, राजपाल एंड संस दिल्ली, दिल्ली
3	जवरीमल्ल पारख	:	हिंदी सिनेमा का समाजशास्त्र, ग्रन्थ शिल्पी, दिल्ली
4	विष्णु रानडिलिया	:	जनशक्ति का लोक साहित्य, आर्य प्रकाशन मण्डल, दिल्ली
5	राही मासूम रजा	:	सिनेमा और संस्कृति, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
6	विश्वनाथ वाराणसी	:	हिंदी चलचित्रों के साहित्यिक उपादान, हिंदी प्रचारक संस्थान
7	विनोद भारद्वाज	:	सिनेमा एक समझ, सं.म. न. वि. फि. प्र.
8	सिनेमा की संवेदना	:	दिल्ली प्रतिभा प्रतिष्ठान
9	सत्यजित राय	:	चलचित्र : कल और आज, राजपाल एंड संस, दिल्ली
10	अनुपम ओझा	:	भारतीय सिने सिद्धांत, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली
11	जवरीमल्ल पारख	:	लोकप्रिय सिनेमा और सामाजिक यथार्थ, ग्रन्थ शिल्पी, दिल्ली
12	Nirmal Kumar Chaudhary	:	How to write films screen plays
13	Nirmal Kumar Chaudhary	:	Satyajeet Ray Gastyon Roberge
14	Rhitwik Ghatak	:	Cinema & I, Roop Publication, Kolkata

15	Monaco James	:	How to Read a film, Oxford University Press, Newyo
16	Jasbir Jain	:	Films, Literature and Culture
17	Thomas Elsoessar	:	Films Theory
18	Gracme Turner	:	Films as Social Practice
19	Shivkumar Vasudae	:	Reflection of Indian Cinema, ICCR, Delhi
20	Madhav Prasad	:	Ideology of Tndian Cinema, Oxpord University Pres Newyork

पाठ्यक्रम (Syllabus of the Course)

कोर्स : स्नातकोत्तर हिन्दी एवं तुलनात्मक साहित्य

Course : M.A. Hindi & Comparative Literature

प्रश्नपत्र का नाम (Title of the Course) : केरल का हिन्दी लेखन

पाठ्यक्रम कोड (Course Code): LHC 5011

- Elective Paper
- No. of Credits : 4 (Four)
- Lectures : 4 Session/Week (1 Hour/Session)
- कुल अंक (Total Marks) : 100 (आंतरिक मूल्यांकन- 40 अंक और सत्रांत परीक्षा- 60 अंक)

परिचय :

हिन्दी साहित्य को समृद्ध करने में केरल के रचनाकारों की भूमिका महत्वपूर्ण है। इस अध्ययन का लक्ष्य केरल के हिन्दी लेखकों की देन पर छात्रों का ध्यान आकार्षित करना है।

इकाई- एक

दक्षिण भारत में राष्ट्रीय आन्दोलन के रूप में हिन्दी का प्रचार- दक्षिणी क्षेत्रों में हिन्दी भाषा का विकास : केरल के संदर्भ में- दक्षिण की विविध हिन्दी प्रचार संस्थाएं- केरल की हिन्दी पत्रिकाएं- केरल का हिन्दी साहित्य- शुरूआती दौर- आजादी के पहले- महराजा स्वाति तिरुनाल और उनके समकालीन रचनाकार।

इकाई- दो

केरल की हिन्दी कविताएँ- केरल की हिन्दी कविता का इतिहास एवं प्रमुख कवि ।

कविताएँ-

1. जीने की ललकार – पी.नारायण देव
2. नर – डॉ. एन. रामन नायर
3. मौन – डॉ. पी. वी. विजयन
4. प्रकृति रहस्यमयी माँ – डॉ. एन. चंद्रशेखरन नायर
5. नकाब – डॉ. एन. रवीन्द्रनाथ
6. राग लीलावती – डॉ.ए. अरविंदाक्षन ।

इकाई- तीन

केरल का हिन्दी कथा साहित्य : उपन्यास- सागर की गलियां – डॉ.एन. रामन नायर (वस्तुगत एवं शिल्पगत अध्ययन) । (व्याख्या प्रारंभिक 50 पृष्ठ)

इकाई- चार

कहानियाँ :

1. आगे कौन हवाल – डॉ.गोविन्द शेणाय
2. तखमीर – डॉ. जे. बाबू

निबंध :

1. आ जा रे परदेशी (फूल और कांटे) – डॉ. एन. विश्वनाथ अय्यर
2. पारिस्थितिकी सौन्दर्य शास्त्र (साहित्य का पारिस्थितिकी दर्शन)– डॉ. के. वनजा

परीक्षा पद्धति (pattern of Examination) :

- आंतरिक मूल्यांकन और सत्रांत परीक्षा का विवरण और मूल्यांकन पद्धति

आंतरिक परीक्षा : कुल अंक 40

- (लिखित परीक्षा-15 अंक, सेमिनार-10 अंक, प्रदत्त कार्य-10 अंक, अन्य गतिविधियाँ (Overall)- उपस्थिति, छात्र व्यवहार, सांस्कृतिक गतिविधियाँ आदि) - 5 अंक

सत्रांत परीक्षा : कुल अंक 60

- खंड 'क' में 1 से 10 बहुविकल्पीय प्रश्न होंगे जिसमें क, ख, ग और घ के रूप में चार विकल्प होंगे। 10x1= 10
- खंड 'ख' में 11 से 16 ससंदर्भ व्याख्या (RC) होंगी जिनमें से चार करने होंगे। 4x5= 20
- खंड 'ग' 17 से 21 दीर्घ उत्तरीय (निबंध स्तरीय) प्रश्न होंगे जिनमें तीन लिखने होंगे। 3x10 = 30

संदर्भ ग्रंथ :

1	डॉ.एन चंद्रशेखर नायर	:	केरल के हिन्दी साहित्य का वृहत इतिहास, केरल हिन्दी साहित्य अकादमी, तिरुवंतपुरम, वर्ष-1989
2	डॉ. मालिक मोहम्मद	:	हिन्दी साहित्य को हिन्दीतर प्रदेशों की देन
3	डॉ. जी.गोपीनाथन	:	केरलीयों की हिन्दी को देन, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, वर्ष-1973
4	.एन.ई.विश्वनाथ अय्यर	:	केरल में हिन्दी भाषा और साहित्य का विकास, वर्ष-1996
5	डॉ. पी. के केशव नायर	:	दक्षिण के हिन्दी प्रचार का समीक्षात्मक इतिहास
6	डॉ.एन. ई. विश्वनाथ अय्यर	:	दक्षिण हिन्दी प्रचार आन्दोलन दक्षिण हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास
7	डॉ.एन.ई.विश्वनाथ अय्यर	:	केरल के प्रथम हिन्दी गीतकार
8	डॉ. विलास गुप्ता	:	आधुनिक हिन्दी साहित्य को अहिन्दी भाषी साहित्यकारों की देन
9	डॉ.एन.चंद्रशेखर नायर (सं)	:	केरल की हिन्दी कविताएँ, केरल हिन्दी साहित्य अकादमी,

तिरुवंतपुरम

10 डॉ.आर,शशिधरन (सं) : दक्षिण में हिन्दी भाषा एवं साहित्य : दशा और दिशा, जवा पुस्तकालय, मधुरा, वर्ष-2013

पाठ्यक्रम (Syllabus of the Course)

कोर्स : स्नातकोत्तर हिन्दी एवं तुलनात्मक साहित्य

Course : M.A. Hindi & Comparative Literature

प्रश्नपत्र का नाम (Title of the Course) : भारतीय संस्कृति

पाठ्यक्रम कोड (Course Code): LHC 5012

- Elective Paper
- No. of Credits : 4 (Four)
- Lectures : 4 Session/Week (1 Hour/Session)
- कुल अंक (Total Marks) : 100 (आंतरिक मूल्यांकन- 40 अंक और सत्रांत परीक्षा- 60 अंक)

परिचय :

भारतीय संस्कृति की एक सामान्य जानकारी प्रत्येक भारतीय नागरिक के लिए अपेक्षित है। अत: भारतीय संस्कृति की अवधारणा और उसके विभिन्न पहलुओं का परिचय देना इस पाठ्यक्रम का लक्ष्य है जो इस देश को समझने में उपयोगी होगा।

इकाई- एक

आदिकाल, मध्यकाल एवं आधुनिककाली संस्कृति का सामान्य परिचय, आदिकाल : संस्कृति क्या है – अर्थ एवं परिभाषा, संस्कृति और सभ्यता का परिचय एवं दोनों के बीच का अंतर।

इकाई- दो

संस्कृति के विकास : एक ऐतिहासिक सर्वेक्षण, भारतीय संस्कृति, भारतीय संस्कृति के विविध पहलु, वैदिक काल, वेड, पुराण, आरण्यक, उपनिषद – जैन धर्म, बौद्ध धर्म, भक्ति आन्दोलन – दर्शन, वैष्णव धर्म, शैव धर्म, रामायण – महाभारत।

इकाई- तीन

मध्यकाल : भरता में मुसलमानों का आगमन, मुस्लिम संस्कृति, सूफीवाद, पाश्चत्य संस्कृति, पुर्तगाली, फ्रेंच, डच, ब्रिटिश, औपनिवेशिक काल।

इकाई- चार

भारतीय जनता का नवजागरण, नवजागरण कालीन विभिन्न आन्दोलन, गाँधी विचारधारा – पाश्चात्य विचारधाराओं का प्रभाव, औपनिवेशिक संस्कृति, नव औपनिवेशिक संस्कृति।

परीक्षा पद्धति (pattern of Examination) :

- आंतरिक मूल्यांकन और सत्रांत परीक्षा का विवरण और मूल्यांकन पद्धति

आंतरिक परीक्षा : कुल अंक 40

- (लिखित परीक्षा-15 अंक, सेमिनार-10 अंक, प्रदत्त कार्य-10 अंक, अन्य गतिविधियाँ (Overall)- उपस्थिति, छात्र व्यवहार, सांस्कृतिक गतिविधियाँ आदि) - 5 अंक

सत्रांत परीक्षा : कुल अंक 60

- खंड 'क' में 1 से 10 बहुविकल्पीय प्रश्न होंगे जिसमें क, ख, ग और घ के रूप में चार विकल्प होंगे। 10x1= 10
- खंड 'ख' में 11 से 16 टिप्पणी होंगी जिनमें से चार करने होंगे। 4x5= 20
- खंड 'ग' 17 से 21 दीर्घ उत्तरीय (निबंध स्तरीय) प्रश्न होंगे जिनमें तीन लिखने होंगे। 3x10 = 30

संदर्भ ग्रंथ :

1	रामधारी सिंह दिनकर	:	संस्कृति के चार अध्याय, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद, सं 19
2	डॉ.एस.राधाकृष्णन	:	भारतीय संस्कृति : कुछ विचार, राजपाल एंड संस्, सं. 1996
3	रायमेण्ड विल्यम्स	:	कल्चर एंड सोसाईटी, chatto and windus, 20 vauxh bridge road, London -1958
4	राममूर्ति शर्मा	:	भारतीय दर्शन की चिंतनधारा, मणिदीप प्रकाशन, दिल्ली, 2001
5	डॉ. गोविन्द चन्द्र पाण्डेय	:	भारतीय परम्परा के मूल स्वर, नेशनल पब्लिकेशन हॉउस
6	ए.एल भाषाम	:	ए कल्चर हिस्टरी ऑफ़ इंडिया. ऑक्सफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी- 12 2008
7	देवदत्त रामकृष्ण बेनी माधव वाष्या विमला चून	:	इंडियन कल्चर, ऐ.बी.कोरपरेटी, सं.1984
8	वि.के गोकक	:	इंडिया एंड वेल्ड कल्चर, साहित्य अकादमी, सं.1994
9	नरेंद्र मोहन	:	भारतीय संस्कृति, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, सं 1997
10	बाल्मीकि प्रसाद सिंह	:	संस्कृति रमी कलाएं और उनसे प्रे, राजकमल प्रकाशन, सं. 1999
11	लता शर्मा एंड डॉ. प्रकाश व्यास	:	भारतीय संस्कृति का विकास, पंचशील प्रकाशन, जयपुर
12	शम्भुनाथ	:	संस्कृति की उत्तरकथा, वाणी प्रकाशन, सं. 2000
13	कृष्णमोहन श्रीमलि	:	धर्म, समाज और संस्कृति, ग्रन्थ शिल्पी, सं.2005

पाठ्यक्रम (Syllabus of the Course)

कोर्स : स्नातकोत्तर हिन्दी एवं तुलनात्मक साहित्य

Course : M.A. Hindi & Comparative Literature

प्रश्नपत्र का नाम (Title of the Course) : सांस्कृतिक पर्यटन (केरल के संदर्भ में)

पाठ्यक्रम कोड (Course Code): LHC 5013

- Elective Paper
- No. of Credits : 4 (Four)
- Lectures : 4 Session/Week (1 Hour/Session)
- कुल अंक (Total Marks) : 100 (आंतरिक मूल्यांकन- 40 अंक और सत्रांत परीक्षा- 60 अंक)

परिचय :

इकाई- एक

सांस्कृतिक पर्यटन का सामान्य परिचय, अर्थ, परिभाषा एवं संकल्पना, भारत की संस्कृति और सांस्कृतिक पर्यटन ।

इकाई- दो

भारत में सांस्कृतिक पर्यटन का महत्व, संस्कृति विरासत के अलग-अलग पहलु – संगीत, नृत्य, नाटक , कला और कुशलता, भाषा जाति और धर्म, पर्व-उत्सव आदि।

इकाई- तीन

केरल में सांस्कृतिक पर्यटन – केरल में सांस्कृतिक केरल भौगोलिक क्षेत्र जनता एवं आबादी में सांस्कृतिक पर्यटन का महत्व, महत्वपूर्ण संस्कृति और धार्मिक संस्थाएँ, केरल के लोकधर्मी, नाट्यधर्मी सम्प्रदाय, केरल का वस्तुकला विरासत, आयुर्वैदिक संस्थाएँ, केरल के हिन्दी यात्रा दिग्दर्शन, केरल के महत्वपूर्ण पर्व या उत्सव ।

इकाई- चार

शैक्षिक यात्रा और प्रदत्त कार्य

प्रदत्त कार्य का रिपोर्ट केरल के महत्वपूर्ण सांस्कृतिक संस्थाओं की यात्रा के आधार पर होगा । प्रत्येक विद्यार्थी अपने मार्गदर्शक की सहायता लेकर इस रिपोर्ट को प्रस्तुत करेगा।

परीक्षा पद्धति (pattern of Examination) :

- आंतरिक मूल्यांकन और सत्रांत परीक्षा का विवरण और मूल्यांकन पद्धति

आंतरिक परीक्षा : कुल अंक 40

- (लिखित परीक्षा-15 अंक, सेमिनार-10 अंक, प्रदत्त कार्य-10 अंक, अन्य गतिविधियाँ (Overall)- उपस्थिति, छात्र व्यवहार, सांस्कृतिक गतिविधियाँ आदि) - 5 अंक

सत्रांत परीक्षा : कुल अंक 60

- खंड 'क' में 1 से 10 बहुविकल्पीय प्रश्न होंगे जिसमें क, ख, ग और घ के रूप में चार विकल्प होंगे। 10x1= 10
- खंड 'ख' में 11 से 16 टिप्पणी होंगी जिनमें से चार करने होंगे। 4x5= 20
- खंड 'ग' 17 से 21 दीर्घ उत्तरीय (निबंध स्तरीय) प्रश्न होंगे जिनमें तीन लिखने होंगे। 3x10 = 30

संदर्भ ग्रंथ :

1	Kichna Chaithanya	:	Kerala
2	A Sreedhara Menon	:	Social and cultural History of Kerala
3		:	Kerala through aged –Department of Publication Govt. of Kerala
4	P.K.S Raja	:	Medieval Kerala
5	C.Rojek and J. Urry (Eds)	:	Touring Cultural (Routledge 1997)
6	D. Mac Cannell	:	The tourist (Schloars Books-1989)
7	Loknatya AM Sanskriti	:	Dr. A. Dehutar Rashtravani Prakashan, Delhi
8	Dr. N.E. Viswanath Iyer	:	Abhaya Kumar Ki Atmakahani
9	Dr. S. Thanamony Amma	:	Sanskriti Ke Swar
10	Dr. G. Gopinathan	:	Kehul Ki Virasat, Vani Prakashan, Delhi
11	Dr. M.G.S Narayanan	:	Calicut the city of Truth, Publications Division, Calicu University

पाठ्यक्रम (Syllabus of the Course)

कोर्स : स्नातकोत्तर हिन्दी एवं तुलनात्मक साहित्य

Course : M.A. Hindi & Comparative Literature

प्रश्नपत्र का नाम (Title of the Course) : हिन्दी नवजागरण

पाठ्यक्रम कोड (Course Code): LHC 5014

- Elective Paper
- No. of Credits : 4 (Four)
- Lectures : 4 Session/Week (1 Hour/Session)
- कुल अंक (Total Marks) : 100 (आंतरिक मूल्यांकन- 40 अंक और सत्रांत परीक्षा- 60 अंक)

परिचय :

भारतीय नवजागरण राष्ट्रीय पराधीनता की उपज है। उसको तीव्रतर करने में देश की सुधारवादी संस्थाओं, आधुनिक शिक्षा और ज्ञान-विज्ञान की नूतन समाग्रियों की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। नवजागरणकालीन भाषा एवं साहित्य का अध्ययन पराधीन भारत की वास्तविकता को जानने के लिए और बाज़ार के अधिशत्व पर अधिष्ठित वर्तमान समय की विभीषिका को समझने के लिए बहुत ही आवश्यक है। इस उद्द्देश्य से उसको एक वैकल्पिक पर्चे के रूप में प्रस्तुत कर रहा है।

इकाई- एक

भारतीय नवजागरण – 1857 की स्वतंत्रता की प्रथम लड़ाई – सुधारवादी संस्थाएँ, आधुनिक शिक्षा, ज्ञान-विज्ञान के नवीन क्षेत्रों का विकास- भारतीय समाज का आधुनिकीकरण- स्वभाषा चिंतन, राष्ट्रीय, हिन्दी नवजागरण– नवजागरणकालीन साहित्य ।

इकाई- दो

नवजागरणकालीन नाटक एवं कथा साहित्य – गद्य का विकास, प्रारम्भिक गद्य कृतियों का लक्ष्य और रूप, भारतीय रंगमच

नाटक : भारत दुर्दशा – भारतेन्दु हरिश्चंद्र, **आत्मकथा :** सरला एक विधवा की आत्मजीवनी- दुखिनिबाला

इकाई- तीन

कहानियाँ : ग्यारह वर्ष का समय – आचार्य रामचंद्र शुक्ल, दुलाईवाली – बंगमहिला, एक टोकरी भर मिट्टी- माधवराव सप्रे, उसने कहा था – चंद्रधर शर्मा गुलेरी

इकाई- चार

हिन्दी नवजागरण और पत्र-पत्रिकाएँ – कविवचन सुधा, हरिश्चंद्र मैगज़ीन, हिन्दी प्रदीप, आनंद कादम्बिनी, नगरी नीरद, ब्राहमण सरस्वती

निबंध : सच्ची समालोचना – बालकृष्ण भट्ट, देश की बात – आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी, हिन्दी की उन्नति – बालमुकुन्द गुप्त

परीक्षा पद्धति (pattern of Examination) :

- आंतरिक मूल्यांकन और सत्रांत परीक्षा का विवरण और मूल्यांकन पद्धति

आंतरिक परीक्षा : कुल अंक 40

- (लिखित परीक्षा-15 अंक, सेमिनार-10 अंक, प्रदत्त कार्य-10 अंक, अन्य गतिविधियाँ (Overall)- उपस्थिति, छात्र व्यवहार, सांस्कृतिक गतिविधियाँ आदि) - 5 अंक

सत्रांत परीक्षा : कुल अंक 60

- खंड 'क' में 1 से 10 बहुविकल्पीय प्रश्न होंगे जिसमें क, ख, ग और घ के रूप में चार विकल्प होंगे। 10x1= 10
- खंड 'ख' में 11 से 16 ससंदर्भ व्याख्या (RC) होंगी जिनमें से चार करने होंगे। 4x5= 20
- खंड 'ग' 17 से 21 दीर्घ उत्तरीय (निबंध स्तरीय) प्रश्न होंगे जिनमें तीन लिखने होंगे। 3x10 = 30

संदर्भ ग्रंथ :

1	शम्भुनाथ	:	दुस्समय में साहित्य, वाणी प्रकाशन, दिल्ली, सं. 2002
2	कर्मेन्दु शिशिर	:	नवजागरण और संस्कृति , आधार प्रकाशन, हरियाणा, सं. 2000
3	रामविलाश शर्मा	:	महावीर प्रसाद द्वेद्वी और हिन्दी नवजागरण, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, सं.1997
4	रामविलाश शर्मा	:	भारतेंदु हरिश्चंद्र और हिन्दी नवजागरण की समस्याएँ, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, 1999
5	शम्भुनाथ	:	हिन्दी नवजागरण और संस्कृति, आनंद प्रकाशन, कोलकाता, सं.2004
6	कर्मेन्दु शिशिर	:	भारतीय नवजागरण और समकालीन संदर्भ, राज प्रकाशन सं. 2013
7	दशरथ ओझा	:	हिन्दी नाटक और विकास, राजपाल एंड साँस, दिल्ली, सं. 1984
8	डॉ.बच्चन सिंह	:	हिन्दी नाटक, राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली, सं. 1989
9	गोपालराय	:	हिन्दी उपन्यास का विकास, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, सं.2005

10 नंदकिशोर नवल : हिन्दी आलोचना का विकास, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, सं.198'

11 गोपालराय : हिन्दी कहानी का इतिहास, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली, सं. 2016

पाठ्यक्रम (Syllabus of the Course)

कोर्स : स्नातकोत्तर हिन्दी एवं तुलनात्मक साहित्य

Course : M.A. Hindi & Comparative Literature

प्रश्नपत्र का नाम (Title of the Course) : हिन्दी साहित्य में पारिस्थितिक विमर्श

पाठ्यक्रम कोड (Course Code): LHC 5015

- Elective Paper
- No. of Credits : 4 (Four)
- Lectures : 4 Session/Week (1 Hour/Session)
- कुल अंक (Total Marks) : 100 (आंतरिक मूल्यांकन- 40 अंक और सत्रांत परीक्षा- 60 अंक)

परिचय :

आधुनिक संदर्भ में पारिस्थितिक विमर्श अध्ययन का नया क्षेत्र है। प्रकृति और मनुष्य के बीच के अटूट संबंध का बोध कराने वाला यह विमर्श इस पर बल देता है कि सुनहरे भविष्य के लिए प्रकृति का शोषण नहीं पोषण अनिवार्य है। इस समझदारी के फलस्वरुप दुनिया भर में एक नया आंदोलन शुरू हुआ, यह पर्यावरण बोध साहित्य में भी झलकने लगा इसलिए इस साहित्य विमर्श का अध्ययन आज के वातावरण में बहुत अनिवार्य है।

इकाई- एक

पारिस्थितिक सौंदर्यशास्त्र- पारिस्थितिक चिंतन एवं उसकी आधारशिला, विभिन्न शाखाएं-गहन-सामाजिक-मार्क्सवादी और इको फेमिनिसम, पारिस्थितिक विमर्श- आरंभ-प्रतिमान, पर्यावरण शोषण के विभिन्न कारण, भूमंडलीकरण एवं विकास की योजनाएं- उपभोग संस्कार, पश्चात्य देश में पर्यावरण संरक्षण आंदोलन, भारत में आंदोलन-साहित्य में पर्यावरण विमर्श, हिंदी साहित्य में पर्यावरण विमर्श।

इकाई- दो

समकालीन हिंदी कविता में पारिस्थितिक विमर्श- विषय एवं भाषा, कविता : एकांत श्रीवास्तव- अब मैं घर लौटूंगा, अरुण कमल-दुस्वप्न, स्वप्निल श्रीवास्तव- मुझे दूसरी पृथ्वी चाहिए, ज्ञानेंद्रपति- नदी और साबुन

इकाई- तीन

हिंदी उपन्यास साहित्य में पारिस्थितिक विमर्श- विषय एवं भाषा, संजीव कृत उपन्यास- रह गई दिशायें इसी पार (प्रारंभिक 50 पृष्ठ व्याख्या हेतु)

इकाई- चार

हिंदी कहानी साहित्य में पारिस्थितिक विमर्श- विषय एवं भाषा, कहानियां- स्वयं प्रकाश- बलि, बटरोही- कहीं दूर जब दिन ढल जाए, राजेश जोशी- कपिल का पेड़

परीक्षा पद्धति (pattern of Examination) :

- आंतरिक मूल्यांकन और सत्रांत परीक्षा का विवरण और मूल्यांकन पद्धति

आंतरिक परीक्षा : कुल अंक 40

- (लिखित परीक्षा-15 अंक, सेमिनार-10 अंक, प्रदत्त कार्य-10 अंक, अन्य गतिविधियाँ (Overall)- उपस्थिति, छात्र व्यवहार, सांस्कृतिक गतिविधियाँ आदि) - 5 अंक

सत्रांत परीक्षा : कुल अंक 60

- खंड 'क' में 1 से 10 बहुविकल्पीय प्रश्न होंगे जिसमें क, ख, ग और घ के रूप में चार विकल्प होंगे। 10x1= 10
- खंड 'ख' में 11 से 16 ससंदर्भ व्याख्या (RC) होंगी जिनमें से चार करने होंगे। 4x5= 20
- खंड 'ग' 17 से 21 दीर्घ उत्तरीय (निबंध स्तरीय) प्रश्न होंगे जिनमें तीन लिखने होंगे। 3x10 = 30

संदर्भ ग्रंथ :

1	सुंदरलाल बहुगुणा	:	धरती की पुकार, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
2	डॉ. के वनजा	:	इकोफेमिनिज्म, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
3	डॉ. के वनजा	:	साहित्य का पारिस्थितिक दर्शन, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
4	डॉ. के वनजा	:	हरित भाषा वैज्ञानिक विमर्श, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
5	Raichel Carson	:	Silent Spoing, Houglatn Miflin, Year 1962
6	Edt. by Cheryil	:	The Eco Criticism Reader, Glotfely & Hanold from Publised by The University of Gergin Press in 1996
7	Etd. Alwin Fill & Peter Mahlahausler	:	The Ecolinguistics Read, Laungage, Ecology & Environment in 2001
8	Maria Mics & Vanduna Shiva	:	Introduction to Eco-Femism
9	L. Josepn Russerf	:	Literature and Ecology : An Experint in Eco-Criticism
10	G. Maadhusudhanan	:	Kathaaayam Paristhiyam D.C. Books, Kollam-2006
11	Anand	:	Jaiva Manishyan, D.C. Books, Kottayam

12 John Belly Foster : Maxs Ecoloy, International Publishies, New Yor 2000

पाठ्यक्रम (Syllabus of the Course)

कोर्स : स्नातकोत्तर हिन्दी एवं तुलनात्मक साहित्य

Course : M.A. Hindi & Comparative Literature

प्रश्नपत्र का नाम (Title of the Course) : हिन्दी साहित्य और मानवाधिकार

पाठ्यक्रम कोड (Course Code): LHC 5016

- Elective Paper
- No. of Credits : 4 (Four)
- Lectures : 4 Session/Week (1 Hour/Session)
- कुल अंक (Total Marks) : 100 (आंतरिक मूल्यांकन- 40 अंक और सत्रांत परीक्षा- 60 अंक)

परिचय :

मनुष्य के जीवन, स्वतंत्रता, समानता और गरिमा संबंधी अधिकार ही मानवाधिकार है। व्यक्ति के अधिकारों को सत्ता के अतिक्रमण से बचाने की चिंताओं से मानवाधिकार की अवधारणा का प्रादुर्भाव हुआ। मनुष्य होने के नाते बिना किसी शर्त के उपलब्ध यह अधिकार सार्वभौम अपरिवर्तनीय विभाग माने जाते हैं। 1948 में संयुक्त राष्ट्र संघ के द्वारा जारी मानवाधिकारों की सार्वभौमिक घोषणा एक बुनियादी दस्तावेज है। इसके अंतर्गत यह अधिकार सुरक्षित हैं। मानवाधिकार आज हिंदी साहित्य में भी बहस का विषय बन रहा है। दरअसल साहित्य मनुष्य के अधिकारों पर होने वाले रोक थाम के खिलाफ प्रतिरोध दर्ज करता है।

इकाई- एक

मानवाधिकार अवधारणा, मानवाधिकार : अर्थ एवं स्वरूप, इतिहास-व्यक्ति-समाज-सत्ता संविधान एवं मानवाधिकार।

इकाई- दो

उपन्यास : परिशिष्ट- गिरिराज किशोर (प्रारंभिक 50 पृष्ठ व्याख्या हेतु) ।

इकाई- तीन

कहानियाँ : पार्टीशन- स्वयं प्रकाश, ग्लोबलाइजेशन- जितेंद्र भाटिया, सिलिया- सुशीला टाकभौरे- भीख नहीं अधिकार चाहिए- मृदुला सिन्हा।

इकाई- चार

कविता : गूंगा मत समझो- सूरजपाल चौहान, मुझे नहीं चाहिए- निलय उपाध्याय, सबसे बड़ा खतरा- महादेव टोप्पो।

परीक्षा पद्धति (pattern of Examination) :

- आंतरिक मूल्यांकन और सत्रांत परीक्षा का विवरण और मूल्यांकन पद्धति

आंतरिक परीक्षा : कुल अंक 40

- (लिखित परीक्षा-15 अंक, सेमिनार-10 अंक, प्रदत्त कार्य-10 अंक, अन्य गतिविधियाँ (Overall)- उपस्थिति, छात्र व्यवहार, सांस्कृतिक गतिविधियाँ आदि) - 5 अंक

सत्रांत परीक्षा : कुल अंक 60

- खंड 'क' में 1 से 10 बहुविकल्पीय प्रश्न होंगे जिसमें क, ख, ग और घ के रूप में चार विकल्प होंगे। 10x1= 10
- खंड 'ख' में 11 से 16 ससंदर्भ व्याख्या (RC) होंगी जिनमें से चार करने होंगे। 4x5= 20
- खंड 'ग' 17 से 21 दीर्घ उत्तरीय (निबंध स्तरीय) प्रश्न होंगे जिनमें तीन लिखने होंगे। 3x10 = 30

संदर्भ ग्रंथ :

1	ग्रेनविल ओंस्ट्रिन अनुवाद- नरेश गोस्वामी	:	भारतीय संविधान : राष्ट्र की आधारशिला, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
2	एन. एम. सभि अन्ना साली	:	भारत में मानवाधिकार, नेशनल बुक ट्रस्ट, दिल्ली
3	शशिप्रभा महिला	:	मजदूरों की मानवाधिकार, नीरज पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली
4	राजकिशोर	:	मानवाधिकारों का शोषण, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
5	सी. एस. बाजवा	:	ह्यूमन राइट्स इन इंडिया, अनमोल पब्लिकेशन
6	नंदकिशोर आचार्य	:	मानवाधिकार के तकाजे, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
7	मोहिनी चटर्जी	:	फैमिली एंड ह्यूमन राइट्स, बी पी पब्लिकेशन
8	देवेंद्र चौबे	:	समकालीन हिंदी कहानी का समाजशास्त्र, प्रकाशन संस्थान, नई दिल्ली
9	हेतु भारद्वाज	:	हिंदी कथा साहित्य का विकास, पंचशील प्रकाशन
10	पुष्पपाल सिंह	:	वैश्विक गांव बनाम आम आदमी, भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली
11	सूरज पालीवाल	:	21वीं सदी का पहला दशक और हिंदी कहानी, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
12	पुष्पपाल सिंह	:	समकालीन नया परिप्रेक्ष्य, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली
13	शंभूनाथ	:	कहानी : यथार्थवाद से मुक्ति, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली
14	भीष्म साहनी	:	आधुनिक हिंदी उपन्यास (दो खंड), राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
15	नामवर सिंह	:	आधुनिक हिंदी उपन्यास (दो खंड), राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
16	एन. मोहनन	:	समकालीन हिंदी उपन्यास, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली

17 मोहिनी चैटर्जी : फेमिनिज्म एंड ह्यूमन राइट्स इन इंडिया, विपियर पब्लिकेशन

18 सुभाष शर्मा : भारत में मानवाधिकार, नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली

पाठ्यक्रम (Syllabus of the Course)

कोर्स : स्नातकोत्तर हिन्दी एवं तुलनात्मक साहित्य

Course : M.A. Hindi & Comparative Literature

प्रश्नपत्र का नाम (Title of the Course) : अनुदित विश्व साहित्य

पाठ्यक्रम कोड (Course Code): LHC 5017

- Elective Paper
- No. of Credits : 4 (Four)
- Lectures : 4 Session/Week (1 Hour/Session)
- कुल अंक (Total Marks) : 100 (आंतरिक मूल्यांकन- 40 अंक और सत्रांत परीक्षा- 60 अंक)

परिचय :

हिन्दी साहित्य के अध्ययन के साथ छात्रों को इस तथ्य से परिचित कराना है कि हिन्दी साहित्य में व्यक्त सम्वेदना किसी ख़ास या अलग-थलग पड़े मानवीय समुदाय की न होकर समग्र मनुष्यता की सम्वेदना का एक हिस्सा है। इस तथ्य से परिचित कराने के लिए विश्व साहित्य के हिन्दी मेन अनुदित कृतियों को अध्ययन का माध्यम बनायेंगे। इस खंड में विश्व भाषाओँ की विभिन्न अनुदित कृतियों के माध्यम से छात्रों को मानवीय समुदाय की संवेदना से परिचित कराया जाएगा।

इकाई- एक

विश्व साहित्य परिचय, विश्व साहित्य की अवधारणा एवं महत्व, अनुदित विश्व साहित्य का संक्षिप्त इतिहास ।

इकाई- दो

चुनी हुई अनुदित रचनाओं का अध्ययन :

उपन्यास : माँ – गोर्की (व्याख्या प्रारंभिक 50 पृष्ठ), अफीम का समुंद्र – अमिताभ घोष (व्याख्या प्रारंभिक 50 पृष्ठ)

इकाई- तीन

कहानियाँ : आखिरी पत्ता – ओ. हेनरी, गुलाबी आईसक्रीम – मर्से रुदुरेदा

कविताएँ : निजीम हिकमत, पाब्लो नेरुदा- दोनों की अनुदित दो-दो कविताएँ ।

इकाई- चार

नाटक : शाकुन्तलम् – कालिदास, मैकबेथ – शेक्सपियर (अनुवाद-बच्चन)

परीक्षा पद्धति (pattern of Examination) :

- आंतरिक मूल्यांकन और सत्रांत परीक्षा का विवरण और मूल्यांकन पद्धति

आंतरिक परीक्षा : कुल अंक 40

- (लिखित परीक्षा-15 अंक, सेमिनार-10 अंक, प्रदत्त कार्य-10 अंक, अन्य गतिविधियाँ (Overall)- उपस्थिति, छात्र व्यवहार, सांस्कृतिक गतिविधियाँ आदि) - 5 अंक

सत्रांत परीक्षा : कुल अंक 60

- खंड 'क' में 1 से 10 बहुविकल्पीय प्रश्न होंगे जिसमें क, ख, ग और घ के रूप में चार विकल्प होंगे। 10x1= 10
- खंड 'ख' में 11 से 16 ससंदर्भ व्याख्या (RC) होंगी जिनमें से चार करने होंगे। 4x5= 20
- खंड 'ग' 17 से 21 दीर्घ उत्तरीय (निबंध स्तरीय) प्रश्न होंगे जिनमें तीन लिखने होंगे। 3x10 = 30

संदर्भ ग्रंथ :

1	ऋषभदेव शर्मा	:	विश्व साहित्य एवं अनुवाद : हिन्दी का संदर्भ
2	होमर	:	ओडिसी, अनु. रमेशचन्द्र सिन्हा, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2012
3	कन्हैयालाल ओझा	:	भारतीय श्रेष्ठ कहानियाँ– दो खंड, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
4	अभय कुमार	:	विश्व की श्रेष्ठ कहानियाँ, अनुकर प्रकाशन
5	विकास खत्री	:	विश्व प्रसिद्ध लोक-कथाएँ, राजभाषा पुस्तक प्रतिष्ठान, 2010
6	शेक्सपियर	:	जुलियस सीसर, अनु.रांगेय राघव, राजपाल, नयी दिल्ली
7	शेक्सपियर	:	तूफ़ान, अनु. रांगेय राघव, राजपाल, नयी दिल्ली
8	शेक्सपियर	:	वेनिस का सौदागर, अनु.रांगेय राघव, राजपाल, नयी दिल्ली
9	शेक्सपियर	:	जैसा तुम कहो, अनु.रांगेय राघव, राजपाल, नयी दिल्ली
10	अरुंधती रॉय	:	मामूली चीजों का देवता, राजपाल, नयी दिल्ली
11	पॉलो को झुल्हो	:	ब्रीड़ा, हापरकोलिम्स (हिन्दी)
12	E.Chaitfitz	:	The Poetics Of Imperialism "Translation and Colonozation From the Tempest to Tarzan, OUP, London
13	E.A.Gutt	:	Translation and Relevance : Cognition and Context, OUP, London
14	B.Hating and I Masion	:	Discourse and the Translation, London, Longman

15 Frank J. Lechneer and Bali John ED : The Globlization Reader, Blackwll, Oxford

17 मोहनकृष्ण बोहरा : इलियट और हिन्दी साहित्य चिंतन, वाणी प्रकाशन, नयी दिल्ली

पाठ्यक्रम (Syllabus of the Course)

कोर्स : स्नातकोत्तर हिन्दी एवं तुलनात्मक साहित्य

Course : M.A. Hindi & Comparative Literature

प्रश्नपत्र का नाम (Title of the Course) : जन संस्कृति

पाठ्यक्रम कोड (Course Code): LHC 5018

- Elective Paper
- No. of Credits : 4 (Four)
- Lectures : 4 Session/Week (1 Hour/Session)
- कुल अंक (Total Marks) : 100 (आंतरिक मूल्यांकन- 40 अंक और सत्रांत परीक्षा- 60 अंक)

परिचय :

जन संस्कृति का अध्ययन छात्रों को नोर्धरित संस्कृति से अलग एक नयी दृष्टि देता है। जन संस्कृति साधारण जनता की रोजमर्रा जिंदगी की है। आज जीवन के तौर तरीके का जो रूप है वह फिल्म, टेलीविजन, समाचार पत्र, न्यूमिडिया आदि में प्राप्त है।

इकाई- एक

जन-संस्कृति : अर्थ, परिभाषा, उद्भव और विकास, लोक-संस्कृति और जन संस्कृति।

इकाई- दो

वैश्वीकरण और मिडिया के दौर मेन संस्कृति, उपभोग संस्कृति और बाज़ार संस्कृति।

इकाई- तीन

फिल्म, नाटक आदि मेन चित्रित जन-संस्कृति-टेलीविजन, मोबाइल और न्यूमिडिया मेन अभिव्यक्त संस्कृति।

इकाई- चार

अस्मिताबोध- लिंग, जाति, धर्म, प्रदेश, वर्ण, वंश, स्थानीयता, लोकबोध, साहित्य विमर्श का रूपायन, खण्ड संस्कृति, प्रतिरोध की नीति।

परीक्षा पद्धति (pattern of Examination) :

- आंतरिक मूल्यांकन और सत्रांत परीक्षा का विवरण और मूल्यांकन पद्धति

आंतरिक परीक्षा : कुल अंक 40

- (लिखित परीक्षा-15 अंक, सेमिनार-10 अंक, प्रदत्त कार्य-10 अंक, अन्य गतिविधियाँ (Overall)- उपस्थिति,

छात्र व्यवहार, सांस्कृतिक गतिविधियाँ आदि) - 5 अंक

सत्रांत परीक्षा : कुल अंक 60

- खंड 'क' में 1 से 10 बहुविकल्पीय प्रश्न होंगे जिसमें क, ख, ग और घ के रूप में चार विकल्प होंगे। 10x1= 10
- खंड 'ख' में 11 से 16 टिप्पणी होंगी जिनमें से चार करने होंगे। 4x5= 20
- खंड 'ग' 17 से 21 दीर्घ उत्तरीय (निबंध स्तरीय) प्रश्न होंगे जिनमें तीन लिखने होंगे। 3x10 = 30

संदर्भ ग्रंथ :

1 नितिन सिंघानिया : भारतीय कला एवं संस्कृति, प्रभात प्रकाशन, 2012

2 गोपीनाथ कविराज : भारतीय संस्कृति और साधन खण्ड- 2

: जर्नल ऑफ़ पोपुलर कल्चर, ऑनलाइन पोपुलर कल्चर

3 Jhon Story : Culture Theory and Popular Culture, Pengine- 2001

: Journal of Consumer Culture – On-line

4 सुधीश पचौरी : पोपुलर कल्चर, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली, 2009

service in a scale of pay is required for counting for promotions to next higher stage.

The Deans' Committee Meeting (18.07.2017) has also expressed their views favoring PDF experience only for Direct Recruitment.

Finally, it was decided to write to UGC for clarification on counting PDF experience equivalent to that of teaching experience with regard to CAS promotions.

The Academic Council members congratulated the IQAC for their commendable work on CAS & Direct Recruitment aspect finalization in tune with the UGC regulations. The AC has approved the formats and all guidelines and recommended for further approval of Executive Council.

The IQAC team requested for an Administrative approval for publishing the CAS & Direct Recruitment formats.

The Vice Chancellor informed that, the administrative approval will be given after obtaining approval from the Executive Council.

3:02:04	***Starting of Open and Distance Learning (ODL) at Central University of Kerala-reg:-***

The Academic Council appreciated the initiative of the University for starting Open Distance Learning Programmes (ODL) at the Central University of Kerala and offered its best wishes to Dr. Mohamedunni Alias Musthafa, the designated Nodal Officer to launch the ODL Programmes.

A crucial decision in launching of ODL may be required with regard to fund position. Even though, ODL Programmes are entitled for loan and grant facility, some amount of initial investment is required from the part of University. The Vice Chancellor requested the co-operation of all faculty in designing Courses in this regard.

It was also decided by the Academic Council to start Diploma and Certificate Courses for the ongoing students to begin with the ODL Programmes. The Proposal to setup ODL will be submitted to Executive Council for approval.

3:02:05	***Approval of BoS Meeting Minutes and Syllabus for the Academic year 2017- 18 - reg:-***

The Academic Council approved the BoS and Minutes concerning of the following Departments:

- *Dept. of Linguistics:* The BoS of the Department met on 13th October 2016 and revised the syllabus of PG programme in Linguistics and Language Technology. This has the effect from June 2017-18 admissions.
- *Dept. of Education* The BoS met on 2nd June 2017and resolved to approve;
  - The Scheme, Regulations and Syllabi for the three year Integrated B.Ed.-M.Ed. and four year Integrated BSc-B.Ed. programmes.
  - To start a Centre for Life Skill Education under the School of Education.
  - Approve the Scheme, Regulations and Syllabi for the Certificate Course in Life Skills and Post Graduate Diploma programme in Life Skill Education.
- Master of Public Health: The first BoS met on 16th and 17th of May 2017 has recommended for some modifications in the eligibility criteria for MPH admissions. A sub-committee for reviewing the added qualifications of Master of Public Health (MPH) has been constituted with Director of Research (DoR) , Dean, School of Medicine and Public Health (SMPH) and the Dean School of Biological Sciences (SBS). Other members will be chosen soon by the Vice Chancellor.
- Dept. of Geology: The first meeting of BoS met on 27th July 2017 has approved and ratified the MSc Geology curriculum prepared by the Consultative committee.
- Hindi and Comparative Literature: The first meeting of BoS met on 8th July 2017 and streamlined syllabus with additional courses. The total credits for successful completion of 4 Semester Course have been modified from 64 to 72 credits as per CBCS regulations.
- *Dept. of Environmental Science:* The BoS which met on 7th July 2017 has approved the modified Syllabus of MSc Environmental Science after a thorough discussions on the contents of the Core and Elective papers.

केरल केंद्रीय विश्वविद्यालय
CENTRAL UNIVERSITY OF KERALA

School of Languages and Comparative Literature
Department of Hindi and Comparative Literature

भाषा एवं तुलनात्मक साहित्य विद्यापीठ
हिंदी एवं तुलनात्मक साहित्य विभाग

पाठ्यक्रम एम० ए०
हिंदी एवं तुलनात्मक साहित्य विभाग
प्रवेश वर्ष 2017 से प्रारंभ

Syllabus
M.A. Hindi & Comparative Literature
Admission 2017 Onwards

पाठ्यक्रम समिति

एम0ए0 (हिन्दी एवं तुलनात्मक साहित्य)

पाठ्यक्रम समिति :

1	प्रो.सुधा बालकृष्णन	आचार्य एवं अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, केरल केंद्रीय विश्वविद्यालय.केरल	अध्यक्ष
2	डॉ. तारु एस. पवार	उपाचार्य, हिन्दी विभाग, केरल केंद्रीय विश्वविद्यालय , केरल	सदस्य
3	डॉ.विजयकुमारन सी.पी.वी.	उपाचार्य, हिन्दी विभाग, केरल केंद्रीय विश्वविद्यालय , केरल	सदस्य
4	डॉ. सीमा चन्द्रन	सहायक आचार्य, हिन्दी विभाग, केरल केंद्रीय विश्वविद्यालय.केरल	सदस्य
5	डॉ. थेन्नारासु एस	सहायक आचार्य, भाषा विज्ञान विभाग, केरल केंद्रीय विश्वविद्यालय	सदस्य
6	प्रो. (डॉ.) मोहन	आचार्य एवं अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली	सदस्य
7	प्रो. (डॉ.) जयचन्द्रन	आचार्य एवं अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, केरल विश्वविद्यालय, केरल	सदस्य
8	प्रो. (डॉ.) के. वनजा	आचार्य एवं अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, सी.यू.एस.ए.टी., केरल	सदस्य
9	प्रो. (डॉ.) गणेश पवार	आचार्य एवं अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, कर्नाटक केंद्रीय विश्वविद्यालय, कर्नाटक	सदस्य
10	डॉ. आर. सेतुनाथ	उपाचार्य, हिन्दी विभाग, कालीकट विश्वविद्यालय,कालीकट.केरल	विशेष आमंत्रित
11	डॉ. राम बिनोद रे	सहायक आचार्य, हिन्दी विभाग, केरल केंद्रीय विश्वविद्यालय .केरल	विशेष आमंत्रित

Syllabus Committee

M A (Hindi and Comprative Literature)

Syllabus Committee :

1	Prof. Sudha Balakrishnan	Professor & Head, Deaprtment of Hindi, CUK	Chairperson
2	Dr. Taru S Pawar	Associate Professor, Department of Hindi, CUK	Member
3	Dr. Vijayakumaran C P V	Associate Professor, Department of Hindi, CUK	Member
4	Dr. Seema Chandran	Assistant Professor, Deaprtment of Hindi, CUK	Member
5	Dr. Thennarasu S	Assistant Professor & Deaprtment of Linguistic	Member
6	Prof. (Dr.) Mohan	Professor &Head, Deaprtment of Hindi, Delhi University, Delhi	Member
7	Prof. (Dr.) Jayachandran	Professor &Head, Department of Hindi, Kerala University, Kerala	Member
8	Prof. (Dr.) K. Vanaja	Professor &Head, Deaprtment of Hindi, CUSAT, Kerala	Member
9	Prof. (Dr.) Ganesh Pawar	Professor &Head, Department of Hindi, CUKaranataka , Karanataka	Member
10	Dr. R. Sethunath	Associate Professor, department of Hindi,Calicut university	Special Invitee
11	Dr.Ram Binod Ray	Assistant Professor, Deaprtment of Hindi, CUK	Special Invitee

M.A. Hindi and Comparative Literature

Syllabus Design

MA (Hindi & Comparative Literature) programme is included in the Post Graduate programme of the Department of Hindi of the University. This programme is intended to acquire the Masters degree in Hindi & Comparative Literature. The curriculum is designed by Eminent professors, scholars and critics of Hindi in India.

In the MA Programme, there are three types of courses: Hard core Course(HC), Soft core Course (SC), and Elective Course (EC). Hard core course cannot be substituted by any other course. Soft core course is offered from within the Department and elective course are from other departments. There is also a project/Dissertation carrying 6 Credits.

The programme lasts for 4 Semesters. The students get the degree after successfully completing 72 credits in the programme. Of these, 60 credits must be from the core course offered in the Department. The other credits can be obtained from the elective courses. The total number of core credits including that of Hard core Course, soft core course and project shall not exceed 60 credits and shall not be lessthan 48 credits under the guidance of the faculty advisor who shall consider the relevance of the courses to the program and also the student's ability, a student may choose any course offered in the University as elective course. However, no students may register for elective exceeding 8 credits in a semester.

This degree is equivalent to MA in Hindi and MA in Comparative Literature. Its design enables those who complete this course successfully with 55 percentage marks to appear for UGC's JRF/ NET examinations in Hindi as well as in Comparative Literature.

Depending on the availability of expertise the elective course may vary from semester to semester. Some elective courses offered by the Department are open for students from other department also. The broad areas of the electives offered by the Department are given below. The specific title of the course to be offered and its prerequisites will be made available in the beginning of each academic year after the approval of the Board of Studies. An elective course could be either a basic course or an advanced course. Basic course is offered in the odd semesters and advanced course is offered in the even semesters. The title of the course may be suffixed 'I' for basic course and 'II' for advanced course. Successful completion of a basic course is mandatory in order to take up its advanced level.

Course Code:

The 7 characters code comprises of 3 letters and 4 digits: (E.g. LHC 5101). The letters represents the name of School and Department / Centers. E.g. LHC = (School of) Languages, (Department of) Hindi and Comparative Literature. The digits are arranged differently for hard core and soft core courses. In Hard Core Course, the first digit represents the level of the program. E.g. '5' represents post graduate program, where one graduates in the 5th year of joining the college/ university. The second digits shows the semester in which the core courses is offered. The third and fourth digit represents the number of the course. Elective courses may be offered at basic level in the odd semesters and at advanced levels in the even semesters. The title of these courses should be suffixed with 'I' for basic level courses and with 'II' or advanced level courses

पाठ्यक्रम एम0ए0 (हिन्दी एवं तुलनात्मक साहित्य)

Code	पाठ्यक्रम व विषयवस्तु	L	T	P	C
सेमेस्टर-1	आधारभूत पाठ्यक्रम				16
LHC5101	हिन्दी साहित्य का इतिहास (आदिकाल से रीतिकाल)	3	1		4
LHC5102	सामान्य भाषा विज्ञान	3	1		4
LHC5103	प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य	3	1		4
LHC5104	तुलनात्मक साहित्य	3	1		4
LHC5105	भारतीय साहित्य	3	1		4
सेमेस्टर-2					16
LHC5201	हिन्दी साहित्य का इतिहास (आधुनिक काल)	3	1		4
LHC5202	हिन्दी भाषा का इतिहास एवं संरचना	3	1		4
LHC5203	आधुनिक कथा साहित्य	3	1		4
LHC5204	भारतीय एवं पाश्चात्य साहित्य सिद्धांत	3	1		4
LHC5205	अनुवाद सिद्धांत एवं प्रयोग	3	1		4
सेमेस्टर-3					16
LHC5301	आधुनिक काव्य	3	1		4
LHC5302	निबंध एवं अन्य गद्य विधाएं	3	1		4
LHC5303	हिन्दी नाटक एवं रंगमंच	3	1		4
	ऐच्छिक विषय -1 (अ वर्ग से)	3	1		4
	ऐच्छिक विषय -2 (ब वर्ग से)	3	1		4
सेमेस्टर-4					16
LHC5401	तुलनात्मक साहित्य प्रविधि	3	1		4
LHC5402	लघु शोध-प्रबंध			4	4
	ऐच्छिक विषय -3 (अ वर्ग या ब वर्ग में से कोई एक)	3	1		4
वर्ग अ	**ऐच्छिक विषय**				
LHC5001	पत्रकारिता और मीडिया लेखन	3		1	4
LHC5002	प्रयोजनमूलक हिन्दी *	3		1	4
LHC5003	भाषा प्रद्योगिकी एवं हिंदी कंप्यूटिंग	3		1	4
LHC5004	हिंदी सिनेमा और साहित्य	3		1	4
LHC5005	राजभाषा प्रबंधन	3		1	4
LHC5006	हिन्दी भाषा शिक्षण	3		1	4
वर्ग ब					
LHC5007	दलित साहित्य	3	1		4
LHC5008	स्त्री लेखन	3	1		4
LHC5009	लोक साहित्य	3	1		4

LHC5010	पारिस्थिति विमर्श	3	1		4
LHC5011	साहित्य और मानवाधिकार	3	1		4
LHC5012	हिंदी विज्ञापन	3	1		4
LHC5013	लोक जगारण और भक्तिकाल	3	1		4
LHC5014	आदिवासी साहित्य का अध्ययन	3	1		4

*ऐच्छिक विषय पढ़ाने का अन्तिम निर्णय विभाग द्वारा होगा।

*इनमें से किसी एक विषय के लिए पाठ्यचर्या के दौरान अध्ययन-यात्रा अनिवार्य मानी गई है।

पाठ्यक्रम एम०ए० (हिन्दी एवं तुलनात्मक साहित्य)

LHC5101

हिन्दी साहित्य का इतिहास (आदिकाल से रीतिकाल)

हिन्दी साहित्य के इतिहास दर्शन और वृहद् परंपरा से छात्रों को परिचित बनाने के साथ साहित्यिक विकास की वैज्ञानिकता, काल विभाजन की तार्किकता के साथ संवेदनात्मक स्तर पर साहित्य की मन:स्थिति से परिचित कराना है। चार खण्डों में बँटा यह प्रश्नपत्र हिन्दी साहित्य के आदिकाल, मध्यकाल, रीतिकाल और आधुनिक काल के विभेदों, प्रमुख प्रवृत्तियों से परिचित कराने के बाद आधुनिक युग में हिन्दी नवजागरण की प्रमुख प्रवृत्तियों पर विचार किया जायेगा।

इकाई- एक

इतिहास दर्शन - इतिहास और आलोचना, इतिहास और अनुसंधान, काल-विभाजन की समस्या, हिन्दी साहित्य के इतिहासों का इतिहास प्रमुख अवधारणाएँ- मध्ययुगीनता, पुनर्जागरण और आधुनिकता, इतिहास के पुनर्लेखन की संभावनाएँ।

इकाई- दो

आदिकाल - नामकरण की समस्या, पृष्ठभूमि- विभिन्न परिस्थितियाँ, रासो काव्य-परंपरा, प्रमुख प्रवृत्तियाँ, प्रमुख कवि ।

इकाई- तीन

मध्यकाल - पूर्व मध्यकाल (भक्तिकाल) : पृष्ठभूमि तथा प्रवृत्तियाँ, प्रमुख कवि तथा उनका काव्य, निर्गुण तथा सगुण काव्यधाराएँ, सामान्य और विशिष्ट विशेषताएँ।

इकाई- चार

उत्तर मध्यकाल (रीतिकाल) : पृष्ठभूमि और प्रवृत्तियाँ, प्रमुख कवि तथा उनका काव्य, रीतिबद्ध और रीतिमुक्त काव्यधाराओं की विभेदक विशेषताएँ।

संदर्भ ग्रंथ

1	आचार्य रामचंद्र शुक्ल	:	हिन्दी साहित्य का इतिहास, नागरी प्रचारणी सभा
2	डॉ. धीरेन्द्र वर्मा (संपादक)	:	हिन्दी साहित्य (तीन खण्ड)
3	डॉ. नगेन्द्र	:	हिन्दी साहित्य का इतिहास, मयूर पेपर बैक्स
4	डॉ. रामकुमार वर्मा	:	हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
5	आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी	:	हिन्दी साहित्य की भूमिका
6	डॉ. रामविलास शर्मा	:	हिन्दी जाति का इतिहास
7	डॉ. गुलाबराय	:	हिन्दी साहित्य का सुबोध इतिहास
8	डॉ. हजारीप्रसाद द्विवेदी	:	हिन्दी साहित्य का उद्भव और विकास
9	डॉ. गणपतिचंद्र गुप्त	:	हिन्दी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास
10	डॉ. बच्चन सिंह	:	हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली
11	डॉ. विजयेन्द्र स्नातक	:	हिन्दी साहित्य का इतिहास, साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली
12	डॉ. सूर्यप्रसाद दीक्षित	:	हिन्दी साहित्येतिहास की भूमिका (चार भाग), हिन्दी संस्थान, लखनऊ

LHC5102

सामान्य भाषा विज्ञान

भाषा विज्ञान का मूल भाषा का वैज्ञानिक अध्ययन है जिसमें भाषाई कार्य, प्रकृति और महत्त्व आदि का व्यवस्थागत और व्यवहारगत अध्ययन हेतु भाषा विज्ञान का अध्ययन करना अत्यन्त आवश्यक है। वर्तमान समय में वैज्ञानिक प्रणाली के अंतर्गत आगमनात्मक और निगमनात्मक प्रणाली का महत्त्व अनिवार्य है। भाषा विज्ञान के इतिहास वर्णनात्मक भाषाविज्ञान, तुलनात्मक भाषाविज्ञान, ऐतिहासिक भाषा विज्ञान, समाज भाषा विज्ञान आदि विभिन्न पड़ावों के माध्यम से हम भाषा की संरचनात्मक व्यवस्था, उसकी गति, अर्थ, संवेदना और स्वरूप को वैज्ञानिक धरातल में रखकर समझ व परख सकते हैं।

इकाई- एक

भाषा की परिभाषा, भाषा के प्रमुख अंग, भाषा के तत्त्व तथा पक्ष एवं संरचना, भाषा के विविध रूप, भाषा विज्ञान का स्वरूप, भाषा विज्ञान का इतिहास, अध्ययन पद्धतियाँ, भाषा विज्ञान का अन्य शास्त्रों से सम्बन्ध।

इकाई- दो

स्वन यंत्र की संरचना, स्वनों का वर्गीकरण, स्वन परिवर्तन के कारण, स्वन, स्वनिम और संस्वन, स्वनिम और संस्वन का निर्धारण, स्वनिम के भेद- खण्डीय तथा खण्डेतर।

इकाई-तीन

रूप, रूपिम, संरूप, रूपिम विज्ञान, रूपिम के भेद, शब्द और पद, अर्थ तत्त्व और सम्बन्ध तत्त्व, सम्बन्ध तत्त्व के प्रकार ।

इकाई-चार

वाक्य संरचना के आधार, वाक्य के प्रकार, वाक्य रचना के भेद, वाक्य के निकटतम अवयव, शब्द और अर्थ का सम्बन्ध, अर्थ प्रतीति के साधन, अर्थ परिवर्तन के कारण और दिशाएँ।

संदर्भ ग्रंथ

1	धीरेन्द्र वर्मा	:	हिन्दी भाषा का इतिहास, हिन्दुस्तानी अकादमी, प्रयाग
2	हरदेव बाहरी	:	हिन्दी भाषा का उद्भव और विकास, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
3	उदय नारायण तिवारी	:	हिन्दी भाषा का उद्भव और विकास, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
4	सुनीत कुमार चटर्जी	:	भारतीय आर्य भाषा और हिन्दी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
5	रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव	:	हिन्दी भाषा : संरचना के विविध आयाम, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली
6	रामविलास शर्मा	:	भाषा और समाज, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
7	डॉ. कृपाशंकर सिंह	:	आधुनिक भाषाविज्ञान, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
8	डॉ. राजमणि शर्मा	:	आधुनिक भाषाविज्ञान, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
9	देवेन्द्रनाथ शर्मा	:	भाषा विज्ञान की भूमिका

LHC5103

प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य

मध्यकालीन हिन्दी साहित्य साहित्येतिहास में बेजोड़ है। यहाँ प्रवृत्तिमार्गी एवं निवृत्तिमार्गी कवियों का संगम और जनता के बीचोंबीच खड़े होकर धार्मिक, सामाजिक समानता के स्वर मुखरित करने वाले, जनता के बोली में कथन शैली में बढ़ाने वाले कवि प्रतिभा पा जाते हैं। उनकी कविताओं का एक सौन्दर्यशास्त्र है, जो दलितों और पीड़ितों के लिए अपना ही सौन्दर्य शास्त्र रचता है। समस्त भारतीय साहित्य में भक्ति आन्दोलन का स्वर मुखरित हुआ। लेकिन भक्ति से रीति तक कुछेक कवि ऐसे पाये जाते हैं जो शास्त्र और सौन्दर्य के कवि के रूप में, दरबारी कवि के रूप में राज्याश्रित भी होते गये। अत: हिन्दी साहित्य का मध्यकाल भक्ति, श्रृंगार और काव्य शास्त्रीय दृष्टि से उल्लेखनीय है। निर्गुण में संत, सूफी और सगुण में राम, कृष्ण की आराधना को केन्द्र में रखकर युगद्रष्टा कवि चुने जाते हैं। कृष्णभक्त कवियत्री मीराबाई का विस्तृत अध्ययन या तो ऐच्छिक रूप से लिया जा सकता है, या प्रत्येक पाठ्यक्रम में छात्रों को यह चयन की छूट दी जा सकती है कि वे सूरदास या मीराबाई में किसी एक का चयन कर सकेंगे। रीतिकाल के दो विशेष प्रतिनिधि कवियों के रूप में बिहारी और घनानंद को भी चुना गया है।

इकाई – एक

विद्यापति पदावली : शिवराज – पद संख्या- 3,5,7,8,10 (कुल पांच पद)

पद्मावती समय – रामवृक्ष बेनीपूरी – पद संख्या – 1,4,5,12,16,17, 22, 39, 68, 69 (कुल दस पद)

इकाई – दो

कबीर : हजारीप्रसाद द्विवेदी-पद संख्या- 35, 108, 112, 126, 134, 153, 168, 181, 250 (कुल नौ पद) साखी संख्या- 103, 113, 139, 157, 190, 191, 200, 201, 231, 237 (कुल दस साखी) जायसी ग्रंथावली : रामचंद्र शुक्ल - नागमती वियोग खंड

इकाई -तीन

भ्रमरगीत सार : रामचंद्र शुक्ल (संपा)-पद संख्या- 21, 23, 24, 61, 62, 105, 138, 154, 157, 171, 197, 201 (कुल बारह पद)

विनयपत्रिका : वियोगी हरि (संपा)-पद संख्या-90, 101, 102, 105, 111, 112, 115, 116, 117, 121, 124, 162 (कुल बारह पद)

संत मीराबाई : जसबीर जस्सी (संपा.)-पद संख्या-7,23,26,48,103, 139 (कुल छह पद)

इकाई – चार

बिहारीरत्नाकर : जगन्नाथ दास रत्नाकर (संपा)-दोहा संख्या-1, 7, 11, 20, 32, 42, 52, 55, 103, 171, 190, 251, 300, 317, 340(कुल पंद्रह दोहे)

घनानंद ग्रंथावली : विश्वनाथ प्रसाद मिश्र (संपा)-कवित्त संख्या-6, 8, 10, 15, 16, 18, 28, 29, 63, 69 (कुल दस कवित्त)

भूषण :आचार्य विश्वनाथ प्रसाद मिश्र(संपा.) 25,52, 109,111, 147, 153, 198, 222, 285, 328 (कुल दस दोहें)

संदर्भ ग्रंथ

1	विजेन्द्र स्नातक (सं)	:	कबीर, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
2	आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी	:	कबीर, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
3	माताप्रसाद गुप्त	:	कबीर ग्रंथावली, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी

4	आचार्य रामचंद्र शुक्ल	:	जायसी ग्रंथावली, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी
5	वासुदेवशरण अग्रवाल	:	पद्मावत, नागरी प्रचारिणी सभा, वाराणसी
6	रामविलास शर्मा	:	परंपरा का मूल्यांकन, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
7	रामविलास शर्मा	:	भारतीय सौंदर्यबोध और तुलसीदास, साहित्य अकादमी, दिल्ली
8	तुलसीदास	:	रामचरितमानस सटीक, गीता प्रेस, गोरखपुर
9	आचार्य रामचंद्र शुक्ल	:	सूरदास- भ्रमरगीत सार
10	जगन्नाथ दास रत्नाकर	:	बिहारी रत्नाकर, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
11	विश्वनाथ प्रसाद मिश्र	:	घनानंद कवित्त, संजय बुक सेंटर, वाराणसी
12	रामचंद्र शुक्ल	:	सूरदास, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
13	रघुवंश	:	कबीर एक नई दृष्टि, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
14	रामचंद्र तिवारी	:	कबीर मीमांसा, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
15	रमेश कुंतल मेघ	:	तुलसी, आधुनिक वातायन से, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली
16	उदयभानु सिंह	:	तुलसी काव्य मीमांसा, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली
17	विश्वनाथ त्रिपाठी	:	लोकवादी तुलसीदास, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
18	रघुवंश	:	जायसी : एक नई दृष्टि, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
19	प्रभाकर श्रोत्रिय	:	कबीरदास : विविध आयाम, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
20	नंददुलारे वाजपेयी	:	महाकवि सूरदास, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
21	हजारीप्रसाद द्विवेदी	:	सूर साहित्य, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद

LHC5104

तुलानात्मक साहित्य

साहित्य की तुलनात्मक अवधारणा आज के संदर्भ में प्रासंगिक है। यह पाठ्यक्रम साहित्यानुसंधान को सामयिक सांस्कृतिक गतिविधियों के पूर्ण आस्वादन करने के लिए रास्ता खोल देता है, जबकि बहुमुखी साहित्यकार, कलाकार और आलोचक संस्कृति के विभिन्न अंत:सम्बन्धों को ही पुनर्सृजित करते आ रहे हैं। आज के पाठक इस बात से परिचित हैं कि लेखन में किस प्रकार विभिन्न आशयों का तानाबाना बुना जाता है और विभिन्न अनुशासनों से लेखक को प्रेरणा मिल जाती है। विश्व में और भारत में विशेष कर तुलनात्मक साहित्य को एक विधा या अनुशासन के रूप में पढ़ने-पढ़ाने की माँग को यह पूरा कर पायेगा। तुलनात्मक साहित्य के विभिन्न स्कूलों का यहाँ परिचय हो जायेगा। साहित्यिक इतिहास लेखन, भारत के विशेष संदर्भ में तुलनात्मक साहित्य आदि पर भी विशेष अध्ययन इसमें समाहित है। इसी के अंतर्गत तुलनात्मक भारतीय एवं विश्व साहित्य का संक्षिप्त इतिहास एवं तुलनात्मक साहित्य का अंतरनुशासनिक विवेचन किया जायेगा।

इकाई - एक

तुलना का अर्थ और महत्व, साहित्य के परिप्रेक्ष्य में तुलना के घटक, तुलनात्मक साहित्य का विकास

इकाई – दो

प्रविधि के विविध रूप, तुलनात्मक साहित्य में अनुवाद, तुलनात्मक साहित्य की आवश्यकता

इकाई - तीन

तुलनात्मक साहित्य के विभिन्न सम्प्रदाय, भारतीय साहित्य का सामान्य परिचय

इकाई – चार

तुलनात्मक साहित्य व अंतरानुशासनिक विवेचन, तुलनात्मक भारतीय साहित्य व विश्व साहित्य का इतिहास

संदर्भ ग्रंथ :

1	इन्द्रनाथ चौधरी	:	तुलनात्मक साहित्य : भारतीय परिप्रेक्ष्य
2	बी.एच. राजुलकर, राजमल बोरा	:	तुलनात्मक अध्ययन : स्वरूप एवं संभावनाएँ, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
3	के. सच्चिदानंद	:	भारतीय साहित्य : स्थापनाएँ और प्रस्तावनाएँ
4	यू. आर. अनंतमूर्ति	:	किस प्रकार की है ये भारतीयता
5	प्रभाकर माचवे	:	आज का भारतीय साहित्य
6	प्रो. बी.वाई ललिताम्बा	:	तुलनात्मक साहित्य और अनुवाद
7	S.K. Das	:	A History of Hindi Literature, Vol-1
8	Susan Bassnet	:	Comparative Literature
9	K. Arvindakshan	:	Comparative Indian Literature
10	Amlya Dev	:	Idea of Comparative Literature
11	Anjala Maharish	:	A Comparative Study of Breethian Classical Indian Theater
12	Spivak Gaytri Chakravorty	:	Death of Discipline

13	Homy K Babha	:	A Location of Culture, London, Routiedge
14	Jonathen Rutheford (Edited)	:	Identity : Community, Culture, Difference, London, Routidge
15	Vasudha Daimia and Damsteegi	:	Narrative Strategies : Essays on South Asian Literature and Film, New Delhi, OUP
16	Chandra Mohan (Edited)	:	Aspects of Comparative Literature in India, India Publishers.
17	हनुमानप्रसाद शुक्ल (सं)		तुलनात्मक साहित्य : सैद्धांतिक परिप्रेक्ष्य, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
18	के. वनजा	:	तुलना तुलना, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
19	डॉ. नगेन्द्र	:	भारतीय साहित्य, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली

LHC 5105

भारतीय साहित्य

भारतीय साहित्य के अंतर्गत भारतवर्ष के विभिन्न क्षेत्रें में विभिन्न कालखण्डों में लिखे गये साहित्य के जारिए भारतीयता की खोज कराना इस खण्ड का उद्देश्य है। भारतीय साहित्य की अंत:चेतना से छात्रों को परिचित करना भी है। जिस प्रकार मध्यकालीन साहित्यिक चेतना से समस्त दुनिया को एक-दो शताब्दियों में अपने दायरे में समेट लिया था, उसी प्रकार भारत के औपनिवेशिक परिवेश में उत्तर से लेकर दक्षिण तक और पूर्व से लेकर पश्चिम तक की जागरण स्थितियाँ पैदा हो गई। भारतीय भाषाओं में जो कालजयी कृतियाँ रची गई, उनके कथ्य और शिल्प भारतीय साहित्य की विविधता में एक होने का निदान है। भारतीय साहित्य की अवधारणा से लेकर उसकी परंपरा, अंत:चेतना जैसे सैद्धांतिक मुद्दों को समझाते हुए भारत की कालजयी कृतियों से छात्रों को अवगत कराया जायेगा ताकि उन्हें कृतियों की राहों से साहित्यास्वादन का मार्ग प्रशस्त हो। इसमें अन्य कृतियों को भी परखने की जिज्ञासा छात्रों में जग सकती है।

इकाई- एक

भारतीय साहित्य : संक्षिप्त परिचय - भारतीय साहित्य का स्वरूप और अवधारणा, भारतीय साहित्य की परंपरा, भारतीय साहित्य की अंत:चेतना।

इकाई- दो

उपन्यास - रवीन्द्रनाथ टैगोर : गोरा (व्याख्यात्मक तथा आलोचनात्मक अध्ययन)

इकाई- तीन

कहानी –कन्नड़-बिके लोग-'देवनूर महादेव'(अनु-बी.आर.नारायण),**तेलगू**- छाया और यथार्थ-जलंधरालो(अनु-जे.एन.रेड्डी), **पंजाबी**-लेहा प्रेम –गोरखी (अनु-कीर्ति केसर), **बंगला**-बेघर का बच्चा-अतीत बंधोपाध्याय(अनु-ननी शूर),**मराठी**-साहब,दीदी और गुलाम –दया पवार (अनु-रतीलाल शाहीन)

इकाई- चार

कविता - सुब्रमण्यम भारती की तीन प्रमुख कविताएं

संदर्भ ग्रंथ

1	नगेन्द्र	:	भारतीय साहित्य, प्रभात प्रकाशन, नई दिल्ली
2	के. सच्चिदानंद	:	भारतीय साहित्य : स्थापनाएँ एवं प्रस्तावनाएँ, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
3	तारकनाथ बाली	:	भारतीय साहित्य सिद्धांत, शब्दकार, दिल्ली
4	रामविलास शर्मा	:	भारतीय साहित्य के इतिहास की समस्याएँ, वाणी प्रकाशन, दिल्ली

5	Sisir Kumar Das	:	History of Indian Literature : 1911-1956, Struggle for Freedom : Trimph and Tragedy, Sahitya Academy
6	Amiya Dev	:	Idea of Comparative Literature
7	रामछबीला त्रिपाठी	:	यू.जी.सी. के नवीनतम पाठ्यक्रम के अनुसार भारतीय साहित्य देश के समस्त विश्वविद्यालयों के स्नातकोत्तर स्तर के संपूर्ण पाठ्यक्रम, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
8	रामविलास शर्मा	:	भारतीय साहित्य की भूमिका, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
9	रविशंकर	:	साहित्य और भारतीय एकता, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली
10	डॉ. आरसु	:	भारतीय साहित्य : आशा और आस्था, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली
11	लक्ष्मीकांत पाण्डेय/ प्रमिला अवस्थी	:	भारतीय साहित्य, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद

LHC5201
हिन्दी साहित्य का इतिहास (आधुनिक काल)
आधुनिक काल में हिंदी साहित्य का विकास नाना रूपों में हुआ है। यह अपनी काव्य परंपरा से आगे बढ़ाते हुए नाटक, कहानी, उपन्यास,निबंध, आलोचना, संस्मरण,जीवनी रेखाचित्र आदि नवीन विधाओं की ओर उन्मुख हुई। छात्रों को इसकी पृष्ठभूमि और विकास से परिचित करना उक्त प्रश्नपत्र का लक्ष्य है। चार खण्डों में बटन यह प्रश्नपत्र हिंदी साहित्य के आधुनिक

नवजागरण की प्रमुख प्रवृतियों से परिचित कराने के बाद आधुनिक युग में हिंदी नवजागरण की प्रमुख प्रवृतियों पर विचार किया जाएगा
इकाई- एक
हिंदी नवजागरण, आधुनिक कालीन कविता की प्रमुख विशेषता, भारतेंदु मंडल के कवि, भारतेंदु युग की विशेषता , आधुनिक साहित्य की सामाजिक,राजनीतिक तथा सांस्कृतिक पृष्टभूमि, आधुनिक काव्य की प्रमुख विशेषताएं
इकाई- दो
द्विवेदी युग की पृष्ठभूमि, द्विवेदी युग कीविशेषताएं, द्विवेदी युग कीप्रमुख कवि , छायावाद की पृष्ठभूमि, छायावाद की पारिस्थितयां , छायावाद की प्रमुख प्रवृतियाँ , प्रमुख छायावादी कवि ,भारतेंदु एवं द्विवेदी काव्य ।
इकाई- तीन
हालावाद, रास्ट्रीय सांस्कृतिक काव्य प्रगतिवाद, प्रयोगवाद, नई कविता, समकालीन कविता , अकविता , नाकेनवाद की प्रमुख प्रवृतियाँ और कवि
इकाई- चार
उद्भव और विकास : हिंदी उपन्यास ,कहानी नाटक,निबंध,आलोचना एवं हिंदी की अन्य गद्य विधाओं में आत्मकथा,रिपोतार्ज, रेखाचित्र,संस्मरण,जीवनी का उद्भव और विकास
संदर्भ ग्रंथ

1	आचार्य रामचंद्र शुक्ल	:	हिन्दी साहित्य का इतिहास, नागरी प्रचारणी सभा
2	डॉ. धीरेन्द्र वर्मा (संपादक)	:	हिन्दी साहित्य (तीन खण्ड)
3	डॉ. नगेन्द्र	:	हिन्दी साहित्य का इतिहास, मयूर पेपर बैक्स
4	डॉ. रामकुमार वर्मा	:	हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
5	आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी	:	हिन्दी साहित्य की भूमिका
6	डॉ. रामविलास शर्मा	:	हिन्दी जाति का इतिहास
7	डॉ. गुलाबराय	:	हिन्दी साहित्य का सुबोध इतिहास
8	डॉ. हजारीप्रसाद द्विवेदी	:	हिन्दी साहित्य का उद्भव और विकास
9	डॉ. गणपतिचंद्र गुप्त	:	हिन्दी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास
10	डॉ. बच्चन सिंह	:	हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली
11	डॉ. विजयेन्द्र स्नातक	:	हिन्दी साहित्य का इतिहास, साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली
12	डॉ. सूर्यप्रसाद दीक्षित	:	हिन्दी साहित्येतिहास की भूमिका (चार भाग), हिन्दी संस्थान, लखनऊ

LHC 5202

हिन्दी भाषा का इतिहास एवं संरचना

इस पाठ्य खण्ड का उद्देश्य हिन्दी भाषा के उद्गम और स्रोत से छात्रों को अवगत कराना है। इसमें हिन्दी भाषा के प्राचीन रूप से आधुनिक हिन्दी के विविध रूपों और शैलियों का परिचय कराना है। डिंगल, पिंगल, प्राकृत, अवहट्ट, ब्रज, अवधी, मैथिली बोलियों-भाषाओं की विशिष्टता व हिन्दी भाषा के विकास में उनकी भूमिका से छात्रों को परिचित कराया जायेगा। उपर्युक्त प्रथम पाठ्यचर्या में जिन रचनाओं का उल्लेख किया जायेगा, उन्हें इस प्रकरण में अनुप्रयुक्त अध्ययन करके साहित्य

में भाषा और बोलियों की प्रयुक्तियों को करीब से समझने की भूमिका प्राप्त होगी कि किन-किन सामाजिक, ऐतिहासिक कारणों से हिन्दी साहित्य के आदिकाल से आधुनिक काल तक की भाषा विकसित होती जाती है। आधुनिक युग में हिन्दी के विविध रूप, भौलियाँ व दक्षिण भारत में प्रयुक्त हिन्दी आदि की जानकारी दिला देने से छात्रों को हिन्दी भाषा के इतिहास व समाजशास्त्र तक का परिचय हो जायेगा।
इकाई- एक
प्राचीन भारतीय आर्य भाषा का विकास, अपभ्रंश, अवहट्ट और प्रारम्भिक हिन्दी, हिन्दी की प्रमुख बोलियाँ, मध्यकाल में अवधी और व्रज भाषा का साहित्यिक भाषा के रूप में विकास, हिन्दी की जनपदीय बोलियाँ, राष्ट्रीय और अंतर राष्ट्रीय स्वरूप
इकाई- दो
हिंदी भाषा की संरचना : ध्वनि संरचना, रूप संरचना, वाक्य संरचना, अर्थ संरचना
इकाई-तीन
उन्नीसवीं सदी के अंतर्गत खड़ीबोली का साहित्यिक भाषा के रूप में विकास, स्वाधीनता संघर्ष के दौरान हिन्दी का राष्ट्रभाषा के रूप में विकास, स्वाधीनता के बाद से हिन्दी का भारत संघ की राजभाषा के रूप में विकास।
इकाई-चार
भाषा और लिपि का परस्पर सम्बन्ध, देवनागरी लिपि : उद्भव, विकास और विशेषताएँ, हिन्दी भाषा का मानकीकरण।

संदर्भ ग्रंथ

1	रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव	:	हिन्दी भाषा संरचना के विविध आयाम, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली
2	राजमणि शर्मा	:	हिंदी भाषा : इतिहास और स्वरूप, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
3	डॉ. भोलानाथ तिवारी	:	हिंदी भाषा, किताब महल
4	डॉ. हरदेव बाहरी	:	हिंदी भाषा, अभिव्यक्ति प्रकाशन, इलाहाबाद
5	डॉ. धीरेन्द्र वर्मा	:	हिंदी भाषा का इतिहास
6	कैलाशचंद्र भाटिया	:	हिंदी भाषा : स्वरूप और विकास
7	डॉ. रामविलास शर्मा	:	भारत के प्राचीन भाषा परिवार और हिंदी (भाग-1, 2, 3) राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
8	देवेन्द्र नाथ शर्मा	:	भाषा विज्ञान की भूमिका
9	डॉ. कृपाशंकर सिंह	:	आधुनिक भाषाविज्ञान
10	उदय नारायण तिवारी	:	हिंदी भाषा का उद्भव और विकास
11	सुनीतिकुमार चटर्जी	:	भारतीय आर्य भाषा और हिंदी

LHC 5203

आधुनिक कथा साहित्य

हिन्दी की अन्य गद्य विधाओं की जानकारी प्राप्त करने वाला छात्र रचनात्मक कार्य में सफल होगा कि उसे निबंध लेखन, रेखाचित्र, संस्मरण, डायरी, जीवनी, आत्मकथा, रिपोर्ताज आदि लिखने के लिए वह स्वत: अभ्यस्त होगा। इन विधाओं का अध्ययन हिन्दी साहित्य के अद्यतन रूपों का संरचनात्मक ज्ञान प्रदान करेगा। छात्र समान साहित्यिक विधाओं को खोज सकेगा और स्वयं ही अभ्यास करने के लायक होगा।

इकाई एक

उपन्यास - प्रेमचन्द : गोदान

इकाई दो

उपन्यास – कृष्णा सोबती : समय सरगम

इकाई तीन

कहानी - चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी' : उसने कहा था, प्रेमचन्द : कफ़न, जयशंकर प्रसाद : मधुआ, भीष्म साहनी : चीफ की दावत, फणीश्वरनाथ 'रेणु' : तीसरी कसम

इकाई चार -

उषा प्रियंवदा : वापसी, निर्मल वर्मा : परिन्दे, ज्ञानरंजन : पिता, जगदीशचंद्र माथुर : भोर का तारा, विश्वंभरनाथ शर्मा 'कौशिक' : ताई

संदर्भ ग्रंथ

1	रविशंकर प्रसाद वर्मा	:	रेखाएँ स्मृतियाँ, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
2	रामचन्द्र तिवारी	:	हिंदी गद्य साहित्य, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
3	इलाचंद जोशी	:	डायरी के फटे पन्ने
4	राहुल सांकृत्यायन	:	वोल्गा से गंगा
5	राहुल सांकृत्यायन	:	अथातो घुमक्कड़ जिज्ञासा
6	रामचन्द्र तिवारी	:	हिन्दी की नई गद्य विधाएँ
7	अज्ञेय	:	बीसवीं सदी का गोलोक
8	रामविलास शर्मा	:	आचार्य रामचंद्र शुक्ल और हिंदी आलोचना, राजकमल प्रकाशन, नयी दिल्ली
9	शैलजा	:	समकालीन हिंदी कहानी, बदलते जीवन-सन्दर्भ, वाणी प्रकाशन नयी दिल्ली
10	जवरीमल्ल पारख	:	आधुनिक हिन्दी साहित्य का मूल्यांकन और पुनर्मूल्यांकन अनामिका प्रकाशन, दिल्ली

LHC5204

भारतीय एवं पाश्चात्य साहित्य सिद्धांत

साहित्य को समझने के लिए जिन युक्तियों का प्रयोग किया जाता है, उन्हें साहित्यिक सिद्धांत की संज्ञा दी जाती है। इस परिप्रेक्ष्य में प्राचीन समय से ही प्रयास होते रहे हैं, सिद्धांत निरूपण होते गये हैं। यूनान से लेकर भारतीय साहित्य चिंतन का इस मामले में उदाहरण दिया जा सकता है। साहित्यिक सिद्धांत को भारतीय व पाश्चात्य कोटियों में बाँटकर छात्रों को इस खण्ड में अध्ययन कराया जायेगा। इसके अलावा इस खण्ड में विभिन्न राजनीतिक-दार्शनिक वादों के नजरिए से साहित्य अध्ययन व मूल्यांकन की प्रतिविधियों व सिद्धांतों से भी छात्रों का परिचय कराया जायेगा।

इकाई- एक

भारतीय काव्यशास्त्र : काव्य के लक्षण, काव्य हेतु, काव्य के तत्व, काव्य भेद, काव्य की आत्मा, काव्य प्रयोजन

रस सिद्धांत - रसानुभूति की प्रक्रिया, रसानुभूति का स्वरूप,

इकाई- दो

साधारणीकरण, सहृदय की अवधारणा, करुण रस का आस्वाद, रसेतर सम्प्रदाय : इतिहास और परिचय, अलंकार सम्प्रदाय, रीति सम्प्रदाय, वक्रोक्ति सम्प्रदाय, ध्वनि सम्प्रदाय **और** औचित्य सम्प्रदाय

इकाई- तीन

पाश्चात्य काव्यशास्त्र –प्लेटो, अरस्तु : अनुकरण सिद्धांत और विरेचन सिद्धांत, लोंजाइनस : उदात्त तत्त्व, क्रोचे : अभिव्यंजनावाद, सैमुअल टेलर कॉलरिज : कल्पना सिद्धांत, आई. ए. रिचर्ड्स : मूल्य सिद्धांत, सम्प्रेषण सिद्धांत तथा व्यावहारिक समीक्षा सिद्धांत

इकाई- चार

हिंदी आलोचना -1 हिन्दी आलोचना की पृष्टभूमि : भारतेंदुयुगीन और द्विवेदीयुगीन आलोचना , रामचंद्र शुक्ल और हजारीप्रसाद द्विवेदी की आलोचना दृष्टि

हिन्दी आलोचना-2 नंददुलारे बाजपेयी , नगेन्द्र, रामविलास शर्मा और नामवर सिंह की आलोचना दृष्टि

संदर्भ ग्रंथ

1	श्यामसुन्दर दास	:	साहित्यालोचन, इंडियन प्रेस, प्रयाग
2	गुलाबराय	:	काव्य के रूप, आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली
3	रामबहोरी शुक्ल	:	काव्य प्रदीप, हिन्दी भवन, इलाहाबाद
4	कृष्णदेव झारी	:	साहित्यालोचन, पराग प्रकाशन, नई दिल्ली
5	डॉ. नगेन्द्र	:	अरस्तू का काव्य शास्त्र, आत्माराम एण्ड संस, दिल्ली
6	गणेश त्रयंबक देश पाण्डेय	:	भारतीय साहित्य शास्त्र, पापुलर बुक डिपो, बंबई
7	बलदेव उपाध्याय	:	भारतीय साहित्य शास्त्र, वाराणसी
8	बच्चन सिंह	:	भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र : तुलनात्मक अध्ययन, हरियाणा साहित्य अकादमी, पंचकूला
9	राधाबल्लभ त्रिपाठी	:	भारतीय काव्यशास्त्र की आचार्य परंपरा, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
10	उदयभानु सिंह (संपादक)	:	भारतीय काव्य शास्त्र, राजेश प्रकाशन, नई दिल्ली
11	सत्यदेव चौधरी	:	भारतीय काव्यशास्त्र चिंतन, अलंकार प्रकाशन, वाराणसी

12	राममूर्ति त्रिपाठी	:	भारतीय काव्य विर्मश, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
13	बलदेव उपाध्याय	:	भारतीय साहित्य शास्त्र, वाराणसी
14	सुरेन्द्र एस. बारलिंगे	:	भारतीय सौन्दर्य सिद्धांत की नई परिभाषा, भरतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली
15	नामवर सिंह (संपादक)	:	कार्लमार्क्स : कला एवं साहित्य चिन्तन, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
19	सत्यदेव मिश्र	:	पाश्चात्य सिद्धांत : अधुनातन संदर्भ, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
20	निर्मला जैन	:	काव्य चिंतन की पश्चिमी परंपरा, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
21	आचार्य देवेन्द्रनाथ शर्मा	:	काव्यालंकार, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद, पटना
22	आचार्य विश्वे वर	:	काव्यप्रकाश, ज्ञानमंडल लिमिटेड, वाराणसी
23	सिंगमन फ्रायड	:	मनोविश्लेषण, राजपाल एण्ड संस, दिल्ली
24	रवि कुमार मिश्र	:	मार्क्सवादी साहित्य चिंतन : इतिहास तथा सिद्धांत, मध्यप्रदेश ग्रंथ अकादमी, भोपाल
25	देवेंद्रनाथ शर्मा	:	पाश्चात्य काव्यशास्त्र, नेशनल पब्लिशिंग, दिल्ली
26	भगीरथ मिश्र	:	पाश्चात्य काव्यशास्त्र : इतिहास, सिद्धांत और वाद, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
27	अशोक केलकर	:	प्राचीन भारतीय साहित्य मीमांसा : एक अध्ययन, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
28	निर्मला जैन	:	रस सिद्धांत और सौंदर्य साहित्य, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
29	पी. वी. काने	:	संस्कृत काव्यशास्त्र का इतिहास, मोतीलाल बनारसीदास, वाराणसी
30	एस. के. डे.	:	संस्कृत काव्यशास्त्र का इतिहास (दो खण्ड), बिहार राष्ट्रभाषा परिषद, पटना
31	निर्मला जैन	:	उदात्तता के विषय में, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
32	W K Wimsatt & Beardsley	:	Literary Criticism – A Short History, Oxford IBH, New Delhi
33	I A Richards	:	Principles of Literary criticisms
34	रामचंद्र तिवारी	:	भारतीय एवं पाश्चात्य काव्यशास्त्र की रूपरेखा, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
35	शेषेन्द्र शर्मा	:	आधुनिक काव्यशास्त्र, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
36	निशा अग्रवाल	:	भारतीय काव्यशास्त्र, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
37	योगेन्द्र प्रताप सिंह	:	भारतीय काव्यशास्त्र, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद

38	गणपति चन्द्र गुप्त	:	रस सिद्धांत का पुनर्विवेचन, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
39	निर्मला जैन	:	पाश्चात्य साहित्य चिंतन, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली
40	करुणाशंकर उपाध्याय	:	पाश्चात्य काव्य चिंतन, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद

LHC 5205

अनुवाद सिद्धांत एवं प्रयोग

विभिन्न भाषिक प्रदेशों के लोगों के बीच संवाद बढ़ाने के साथ भिन्न-भिन्न भाषाओं में मौजूद रचनाओं का अध्ययन करने के लिए अनुवाद की भूमिका अनिवार्य है। अनुवाद सिद्धांतों के क्रमिक अध्ययन और अनुवाद की समस्याओं से अवगत होने से छात्र कोई भी अनुप्रयुक्त अध्ययन करने में सक्षम होंगे। इस पाठ्यक्रम से छात्रों को अनुवाद कार्य की सामाजिक भूमिका के प्रति भी सचेत किया जायेगा।

इकाई- एक

अनुवाद प्रक्रिया - अनुवाद की परिभाषा, उपकरण, अनुवाद की प्रक्रिया और अनुवाद के प्रकार

इकाई- दो

पारिभाषिक शब्दावली - पारिभाषिक शब्दावली का अर्थ, पारिभाषिक शब्दावली का महत्त्व, पारिभाषिक शब्दावली का प्रयोग व प्रविधि (अनुवाद के संदर्भ में), पारिभाषिक शब्दावली के निर्माण की प्रक्रिया

इकाई- तीन

अनुवाद की समस्याएँ - गद्यानुवाद, पद्यानुवाद, मशीनी अनुवाद, अनुवाद की शैलीगत समस्याएँ (संरचनात्मक दृष्टिकोण)

इकाई- चार

अनुवाद का मूल्यांकन - स्रोत भाषा और लक्ष्य भाषा की समतुल्यता व मूल्यांकन

संदर्भ ग्रंथ

1	भोलानाथ तिवारी एवं किरणवाला	:	भारतीय भाषाओं से अनुवाद की समस्याएँ,शब्दकार, दिल्ली
2	भोलानाथ तिवारी एवं ओमप्रकाश गाबा	:	अनुवाद की व्यवहारिक समस्याएँ, शब्दकार, दिल्ली
3	एन.इ.विश्वनाथ अय्यर	:	अनुवाद-भाषाएँ समस्याएँ , स्वाति प्रकाशन, त्रिवेंद्रम
4	अमर सिंह वधान	:	सं-अनुवाद और संस्कृति , त्रिपाठी एंड संस , अहमदाबाद
5	कुसुम अग्रवाल	:	अनुवाद शिल्प-समकालीन संदर्भ, साहित्य सहकार , दिल्ली
6	के.सी.कुमारन एवं डॉ. प्रमोद कोव्व्रत	:	संपा.इक्कीसवी सदी में अनुवाद –दशाएं दिशाएं, जवाहर पुस्तकालय, मथुरा
7	सुधांशु चतुर्वेदी	:	इन्दुलेखा, एन.बी.टी.नई दिल्ली
8	एन.इ.विश्वनाथ अय्यर	:	रामराज बहादुर, एन.बी.टी.नई दिल्ली
9	भारती विद्यार्थी	:	मछुवारे, साहित्य अकादमी, नई दिल्ली
10	पी.कृष्णन	:	कथा एक प्रान्तर की,भारतीय ज्ञानपीठ , नई दिल्ली
11	राकेश कालिया	:	धान, एन.बी.टी. नई दिल्ली

12	हरिवंशराय बच्चन	:	उमर खय्याम की रुबाईयां, शब्दकार , नई दिल्ली
13	जयशंकर प्रसाद	:	कामायनी, अनु-श्रीधरमेनन, साहित्य अकादमी नई दिल्ली
14	Machwe Prabhakar	:	Kabir, Sahitya Academy, New Delhi
15	Bassenet sussan	:	Translation studies, Methuen, London
16	Bijoy kumar das	:	The horizon of translation studies, atlantic publishers & distributers, New delhi
17	Usha nilson	:	Surdas (Translation), sahitya Academy, New Delhi

LHC5301

आधुनिक काव्य

आधुनिक काव्य में हिन्दी कविता के नवीन काव्य संस्कार-काव्य बोध के उदय के कारणों के साथ कविता की परंपरा में हुए विकास से छात्रों का परिचय कराया जायेगा। विभिन्न कवियों की प्रतिनिधि कविताओं के माध्यम से कवियों के रचनाकर्म से तो छात्रों का परिचय कराया ही जायेगा, साथ ही छात्रों की विश्लेषणात्मक-आलोचनात्मक क्षमता के परिष्कार हेतु चुनी हुई कविताओं के पाठात्मक विवेचन पर ही ध्यान केन्द्रित किया जायेगा।

इकाई- एक

प्रसाद : कामायनी (श्रध्दा सर्ग)

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' : अपरा (राम की शक्तिपूजा)

इकाई- दो

मैथिलीशरण गुप्त : साकेत (नवम सर्ग)

इकाई- तीन

सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय' : नदी के द्वीप,

गजाननमाधव मुक्तिबोध : ब्रह्मराक्षस

इकाई- चार

सर्वेश्वरदयाल दयाल सक्सेना –काठ की घंटिया, रघुवीर सहाय – सायंकाल ,श्रीकांत वर्मा –बुढा पुल, धूमिल- संसद से सड़क तक गिरिजाकुमार माथुर – नाश और निर्माण

संदर्भ ग्रंथ

1	नंद किशोर नवल	:	समकालीन काव्यधारा
2	विश्वनाथ प्रसाद तिवारी	:	समकालीन हिन्दी कविता, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
3	डॉ. हरदयाल	:	हिन्दी कविता का समकालीन परिदृश्य, आलेख प्रकाशन
4	राजेश जोशी	:	समकालीन कविता और समकालीनता
5	ए. अरविंदाक्षन	:	समकालीन कविता की भारतीयता, आनंद प्रकाशन, कलकत्ता
6	मोहन	:	समकालीन कविता की भूमिका,अनंग प्रकाशन, दिल्ली
7	मनीषा झा	:	प्रकृति, पर्यावरण और समकालीन कविता
8	रंजना राजदान	:	समकालीन कविता और दर्शन
9	जगन्नाथ पंडित	:	समकालीन हिन्दी कविता का परिप्रेक्ष्य, नमन प्रकाशन
10	मोहन	:	नहीं होती ख़तम कविता,विमर्श प्रकाशन , वाराणसी
11	ए. अरविंदाक्षन	:	समकालीन हिन्दी कविता
12	रवि श्रीवास्तव	:	परंपरा इतिहासबोध और साहित्य, पोयिन्टर पब्लिकेशन्स
13	प्रो. पुष्पिता अवस्थी	:	अधुनिक हिंदी काव्यालोचन के सौ वर्ष, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली
14	नामवर सिंह	:	आधुनिक साहित्य की प्रवृतियाँ, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद

15	करुणाशंकर उपाध्याय	:	आधुनिक कविता का पुनरारम्भ, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली
16	रामस्वरूप चतुर्वेदी	:	आधुनिक कविता यात्रा, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
17	शेषेन्द्र शर्मा	:	आधुनिक काव्य यात्रा, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
18	विश्वनाथ प्रसाद तिवारी	:	आधुनिक हिंदी कविता, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
19	केदारनाथ सिंह	:	आधुनिक हिंदी कविता में बिम्ब विधान, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
20	मालती सिंह	:	आधुनिक हिंदी काव्य और पुराण कथा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
21	ए. अरविन्दाक्षन	:	समकालीन हिन्दी कविता, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
22	पी. रवि (संपादक)	:	समकालीन कविता के आयाम, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
23	विश्वनाथ प्रसाद तिवारी	:	समकालीन हिन्दी कविता, लोकभारती प्रकाशन, नई दिल्ली

LHC 5302

निबंध एवं अन्य गद्य विधाएं

हिंदी की अन्य गद्य विधाओं की जानकारी प्राप्त करनेवाला छात्र रचनात्मक कार्य में सफल होगा कि उसे निबंध लेखन, रेखाचित्र, संस्मरण, डायरी, जीवनी,आत्मकथा, रिपोर्ताज आदि लिखने के लिए बहस्वत: अभ्यस्त होगा। इन विधाओं का अध्ययन हिंदी साहित्य के अद्यतन रूपों का संरचनात्मक ज्ञान प्रदान करेगा। छात्र समान साहित्यिक विधाओं को खोज सकेगा,और आप ही अभ्यास करने के लायक होगा।

इकाई- एक

निबंध,रेखाचित्र, संस्मरण , डायरी, जीवनी,आत्मकथा, रिपोर्ताज, संलाप,यात्रा साहित्य का सामान्य परिचय

निबंध : श्रध्दा-भक्ति – रामचंद्र शुक्ल , कुटज – आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी

ललित निबंध : संस्कृति है क्या ? – रामधारी सिंह दिनकर

इकाई- दो

संस्मरणात्मक रेखाचित्र : वह चीनी भाई – महादेवी वर्मा

संस्मरण : नीलकंठ – महादेवी वर्मा

रेखाचित्र : बीस बरस का साथी :रामविलास शर्मा- अमृतलाल नागर

इकाई- तीन

आत्मकथा : घर लौटते हुए – हरिवंशराय बच्चन, **जीवनी :** श्रीनिवास रामानुज – बाल शौरि रेड्डी

संलाप : श्मशान- मन्नू भंडारी, **प्रदुषण :**बढ़ते शोर का गहराता संकट-राजेंद्र कुमार राय

इकाई- चार

पत्र :विकिरण प्रयोग :फसलें – मनमोहन चोपड़ा

रिपोर्ताज : युद्धयात्रा –धर्मवीर भारती, ऋण जल धन जल – फनीश्वरनाथ रेणु

यात्रा-साहित्य : कितना अकेला आकाश – नरेश मेहता

संदर्भ ग्रंथ

1	आचार्य रामचंद्र शुक्ल	:	हिन्दी साहित्य का इतिहास, नागरी प्रचारणी सभा
2	डॉ. धीरेन्द्र वर्मा (संपादक)	:	हिन्दी साहित्य (तीन खण्ड)
3	डॉ. नगेन्द्र	:	हिन्दी साहित्य का इतिहास, मयूर पेपर बैक्स
4	डॉ. रामकुमार वर्मा	:	हिन्दी साहित्य का आलोचनात्मक इतिहास, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
5	आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी	:	हिन्दी साहित्य की भूमिका
6	डॉ. रामविलास शर्मा	:	हिन्दी जाति का इतिहास
7	डॉ. गुलाबराय	:	हिन्दी साहित्य का सुबोध इतिहास
8	डॉ. हजारीप्रसाद द्विवेदी	:	हिन्दी साहित्य का उद्भव और विकास
9	डॉ. गणपतिचंद्र गुप्त	:	हिन्दी साहित्य का वैज्ञानिक इतिहास
10	डॉ. बच्चन सिंह	:	हिन्दी साहित्य का दूसरा इतिहास, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली
11	डॉ. विजयेन्द्र स्नातक	:	हिन्दी साहित्य का इतिहास, साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली

12	डॉ. सूर्यप्रसाद दीक्षित	:	हिन्दी साहित्येतिहास की भूमिका (चार भाग), हिन्दी संस्थान, लखनऊ
13	आचार्य रामचंद्र शुक्ल	:	हिन्दी साहित्य का इतिहास, नागरी प्रचारणी सभा
14	डॉ.मधु धवन	:	भारती गद्य-संग्रह
15	महादेवी वर्मा	:	मेरा परिवार
16	अमृतलाल नागर	:	जिनके साथ जिय
17	डॉ.हिरण्मय	:	हिंदी गद्य प्रभाकर

LHC5303

हिन्दी नाटक एवं रंगमंच

हिन्दी नाटकों की परंपरा प्राचीनकाल से विद्यमान रही है। भरतमुनि का सिद्धांत प्राथमिक रूप से नाटकों को केन्द्र में रखकर है। लेकिन प्राचीन नाटकों की सीमाबद्धता आधुनिक ज्ञान-विज्ञान और तार्किकता से है। हिन्दी नवजागरण के साथ जिस साहित्यिक भावभूमि और सामाजिक यथार्थ का दर्शन हिन्दी के रचनाकारों ने किया, उसकी वजह से नाटकों के कथ्य के साथ नाटकों की शैली-प्रविधि का भी लगातार विकास होता गया है। 'अंधेर नगरी' से आधुनिक हिन्दी नाटकों का आरंभ मानकर समकालीन नाटककारों का नाटकों के कथ्य व रंग-शिल्प तथा रंगमंच प्रविधियों का अध्ययन करके आधुनिक हिन्दी नाटकों के इतिहास का समग्रता से परिचय कराया जायेगा।

इकाई- एक

रंगमंच तथा अलग-अलग थियटरों का परिचय, हिन्दी की विभिन्न नाट्य शैलियाँ – (रामलीला, रासलीला, जात्रा, तमाशा, स्वांग, नौटंकी, पारसी रंगमंच, ब्रेख्तियन थियेटर) रंगमंच की दृष्टी से भारतेंदु हरिश्चंद्र काअंधेर नगरी

इकाई- दो

नाटक : आधे अधूरे – मोहन राकेश
चन्द्रगुप्त- जयशंकर प्रसाद

इकाई- तीन

नाटक : कोणार्क- जगदीशचन्द्र माथुर
एकांकी : पतित-भुवनेश्वर

इकाई- चार

एकांकी : लक्ष्मी का स्वागत- उपेन्द्रनाथ अश्क, भोर का तारा- जगदीशचन्द्र माथुर, सबसे बड़ा आदमी –भगवतीचरण वर्मा

संदर्भ ग्रंथ

1	प्रेम सिंह एवं सुषमा आर्य	:	रंग प्रक्रिया के विविध आयाम, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली
2	डॉ. नीलम राठी	:	साठोत्तरी हिन्दी नाटक, संजय प्रकाशन, दिल्ली
3	गोविन्द चातक	:	रंगमंच : कला और दृष्टि, तक्षशिला प्रकाशन, दिल्ली
4	केदार सिंह	:	हिन्दी नाटक : कल और आज, क्लासिकल पब्लिकेशन हाउस, दिल्ली
5	नेमिचंद्र जैन	:	दृश्य अदृश्य, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
6	बी. बालाचंद्रन	:	साठोत्तरी हिन्दी नाटक : परंपरा और प्रयोग, अन्नपूर्णा प्रकाशन, कानपुर

7	देवेन्द्र कुमार गुप्ता	:	हिन्दी नाट्य शिल्प : बदलती रंगदृष्टि पियूष प्रकाशन, दिल्ली
8	जसवंतभाई पंड्या	:	समाकलीन हिन्दी नाटक, ज्ञान प्रकाशन, कानपुर
9	प्रवीण अख्तर	:	समकालीन हिन्दी नाटक परिदृश्य, विकास प्रकाशन, कानपुर
10	प्रभात शर्मा	:	हिन्दी नाटक : इतिहास, दृष्टि और समकालीन बोध, संजय प्रकाशन, दिल्ली
11	दमयंती श्रीवास्तव	:	हिन्दी नाटक में आधुनिक प्रवृत्तियाँ, राजा प्रकाशन, इलाहाबाद
12	गोविंद चातक	:	आधुनिक हिन्दी नाटक : भाशिक और संवादिक संरचना, तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली
13	भारतेन्दु हरिश्चंद्र	:	अंधेर नगरी
14	जगदीशचन्द्र माथुर	:	कोणार्क
15	नरेश मेहता	:	संशय की एक रात
16	डॉ. सोमनाथ गुप्ता	:	पारसी थियेटर, उद्भव और विकास, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
17	देवेन्द्रराज अंकुर	:	रंगमंच का सौन्दर्यबोध, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
18	मोहन राकेश	:	नाट्य दर्पण, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
19	जगदीशचंद्र माथुर	:	परंपराशील नाट्य, लोकभारती प्रकाशन, नई दिल्ली
20	महेश आनंद	:	रंगमंच के सिद्धांत, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
21	रमेश राजहंस	:	नाट्य प्रस्तुति, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली

LHC 5401

तुलनात्मक साहित्य प्रविधि

प्रस्तुत खंड में तुलनात्मक साहित्य के प्रमुख उपादानों और मूलाधारों को समझाने का प्रयास किया जाएगा, साथ-साथ साहित्य इतिहास की रचना, साहित्यिक सांस्कृतिक अन्तःसंबंधों आदि से छात्रों को अवगत करने का प्रयास भी। अनुप्रयुक्त अध्ययन का रास्ता खोले रखने के लिए नमूने के तौर पर हिंदी साहित्यिक विद्या को छायावाद को लिया जाता है और रोमांटिसिज्म जैसे सामान वैश्विक विधान से तालमेल बिठाने का अवसर दिया जा सकता है। बहुमुखी साहित्यकार के रचना कौशल को जानने के लिए हिंदी के कवि ,उपन्यासकार को जानने का अवसर दिया जा सकता है। संस्कृत साहित्य के विरासत में,विश्व भाषा में रचना होती है तो हिंदी साहित्य में भी उनका अनुसरण देखने को मिलाता है और प्रविधि में इन संबंधों का सिलसिला समझाया जा सकता है। उत्तर-उपनिवेशवादी रंगमंच और शतरंज के ख़िलाड़ी (प्रेमचंद) का रचना समय जानने से तुलनात्मक साहित्य का साहित्येतर विधाओं से संबंध स्थापित करते दिखये जा सकते है।

इकाई- एक

तुलनात्मक साहित्य –प्रमुख उपादान

तुलनात्मक साहित्य के मूलाधार

इकाई- दो

छायावाद और रोमांटिसिज्म, हिंदी के कवि उपन्यासकार –रचना के स्तम्भ

इकाई- तीन

कालिदास के मेघदूतम् से मोहन राकेश का आषाढ़ का एक दिन:तुलनात्मक अध्ययन

इकाई- चार

उत्तर-उपनिवेशवादी रंगमंच और शतरंज के ख़िलाड़ी (प्रेमचंद) का रचना समय

संदर्भ ग्रंथ :

1	इन्द्रनाथ चौधरी	:	तुलनात्मक साहित्य : भारतीय परिप्रेक्ष्य
2	बी.एच. राजुलकर, राजमल बोरा	:	तुलनात्मक अध्ययन : स्वरूप एवं संभावनाएँ, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
3	के. सच्चिदानंद	:	भारतीय साहित्य : स्थापनाएँ और प्रस्तावनाएँ
4	यू. आर. अनंतमूर्ति	:	किस प्रकार की है ये भारतीयता
5	प्रभाकर माचवे	:	आज का भारतीय साहित्य
6	प्रो. बी.वाई ललिताम्बा	:	तुलनात्मक साहित्य और अनुवाद
7	S.K. Das	:	A History of Hindi Literature, Vol-1
8	Susan Bassnet	:	Comparative Literature
9	K. Arvindakshan	:	Comparative Indian Literature
10	Amlya Dev	:	Idea of Comparative Literature
11	Anjala Maharish	:	A Comparative Study of Breethian Classical Indian Theater
12	Spivak Gaytri Chakravorty	:	Death of Discipline

ऐच्छिक विषय(Elective subject)

'अ' वर्ग

LHC5001

पत्रकारिता एवं मीडिया लेखन (ऐच्छिक)

छापेखाने के आविष्कार की सबसे बड़ी यह भूमिका रही कि इससे सामाजिक स्तर पर संवाद करने की सुविधा प्राप्त हो पाई। सामाजिक स्तर पर संवाद विभिन्न विचारों, सूचनाओं को विस्तृत जनता तक पहुँचाने के लिए किया जाता है। इसी दृष्टिकोण से छात्रों को इस प्रश्नपत्र में संचार माध्यम लेखन से परिचित कराया जायेगा॥ इससे छात्रों को समाचार पत्र, टेलीविजन, रेडियो, इंटरनेट आदि विशिष्ट संचार माध्यमों में सामाजिक संवाद लेखन में सक्षमकरने के लिए प्रविधियों से परिचित कराने के साथ व्यवहारिक रूप से इस संचार लेखन में सक्षमकरने का प्रयास किया जायेगा॥ इससे हिन्दी साहित्य का अध्ययन करने वाले छात्रों के लिए रोजगार की संभावनाएँ भी प्रशस्त होंगी।

इकाई- एक

पत्रकारिता : स्वरूप और प्रकार, अर्थ, समाचार संकलन व स्रोत, भारत में पत्रकारिता, समाचार के प्रकार,
जनसंचार का अर्थ व् स्वरूप , संचार और जनसंचार के माध्यम और अंतर

इकाई- दो

मुद्रित माध्यमों में पत्रकारिता, समाचार लेखन, संपादकीय लेखन, फीचर लेखन, नाट्य लेखन , विज्ञापन लेखन,
समाचार प्रस्तुति, रिपोर्ट लेखन

इकाई- तीन

इलेक्ट्रानिक माध्यम के विविध रूप, रेडियो, टेलीविजन, सिनेमा, सोशल मीडिया, वेब पेज, ई-पत्रिका
रेडियो समाचार लेखन, रेडियो वार्ता लेखन, रेडियो साक्षात्कार, रेडियो विज्ञापन, रेडियो कमेंट्री
टेलीविजन समाचार लेखन, टेलीविजन विज्ञापन धारावाहिक लेखन

इकाई- चार

फोटो पत्रकारिता, जनसंचार माध्यमों की भाषा, समाचार की भाषा, संपादकीय पृष्ट की भाषा, न्यू-मीडिया की भाषा,
प्रेस कानून और आचार संहिता, सूचना अधिकार, प्रसार भारती अधिनियम

संदर्भ ग्रंथ

1	के.एन. गोस्वामी, सरोजमणि मार्कण्डेय	:	आकाशवाणी वार्ताएँ, तीन खण्ड
2	डॉ. रवीन्द्र मिश्रा	:	दृश्य श्रव्य माध्यम लेखन, तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली
3	देवेन्द्र इस्सर	:	जनमाध्यम सम्प्रेषण और विकास
4	सूर्यप्रसाद दीक्षित	:	जनसंचार : प्रकृति और परंपरा
5	एन.सी. पंत	:	मीडिया लेखन सिद्धांत, तक्षशिला प्रकाशन, दिल्ली
6	रमेशचन्द्र त्रिपाठी	:	मीडिया लेखन
7	रामचंद्र जोशी	:	मीडिया विर्मश
8	नरेश मिश्रा	:	मीडिया लेखन : भारतीय चिंतन, दर्शन और साहित्य
9	सूर्यप्रसाद दीक्षित	:	पत्रकारिता, जनसंचार और जनसम्पर्क

10	नीरजा माधव	:	रेडियो का कला पक्ष
11	उषा सक्सेना	:	रेडियो नाटक लेखन
12	पी. के. आर्य	:	समाचार लेखन, विद्याविहार, दिल्ली
13	नारायण दवाले	:	संवाद संकलन विज्ञान
14	गौरी शंकर रैना	:	संचार माध्यम लेखन, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
15	नंद किशोर त्रिखा	:	संवाद संकलन और लेखन
16	हरिमोहन	:	संपादन कला और प्रूफ संपादन
17	प्रभु जिंगरन	:	टेलीविजन की दुनिया
18	सुधीश पचौरी और अचला शर्मा	:	नये संचार माध्यम और हिन्दी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
19	मोहन	:	स्वाधीनता आन्दोलन की पत्रकारिता और हिंदी, अनंग प्रकाशन, दिल्ली
20	Ravindra vajpai	:	Communication through the Ages, Publication Society of India, Communication Today, Jaipur
21	Prabhu Jingaran	:	Film Cinematography
22	Angela Philips	:	Good Writing for Journalism, Sage, New Delhi
23	Sajitha jayaprakash	:	Technical Writing, Himalaya Publication, Delhi
24	Edward S Herman	:	The Global Media
25	Esta de Fossad	:	Writing and producing for television and film, Saga Publications Delhi
26	विष्णु राजगढ़िया	:	जनसंचार सिद्धांत और अनुप्रयोग, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली
27	संतोष भारतीय	:	पत्रकारिता : नया दौर नये प्रतिमान, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली
28	डॉ. अर्जुन चौहान	:	मीडिया कालीन हिन्दी स्वरूप और संभवानाएँ, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
29	शालिनी जोशी	:	वेब पत्रकारिता : नया मीडिया नए रुझान, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
30	अखिलेश मिश्र	:	पत्रकारिता मिशन से मीडिया तक, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
31	डॉ. महासिंह पूनिया	:	पत्रकारिता का बदलता स्वरूप, हरियाणा साहित्य अकादेमी, पंचमूला
32	डॉ. मुकेश मानस	:	मीडिया लेखन : सिद्धांत और प्रयोग, स्वराज प्रकाशन

LHC5002

प्रयोजनमूलक हिन्दी (ऐच्छिक)

वर्तमान युग कम्प्यूटर का है। ज्ञान-विज्ञान से लेकर समाज के किसी भी अंग में कम्प्यूटर का अनुप्रयोग अब बहुत स्पष्ट रूप से हमारे सामने है। हिन्दी साहित्य का अध्ययन करने वाले छात्रों को भी ज्ञान-विज्ञान की नवीनतम् उपलब्धियों से परिचित कराने के लिए हिन्दी कम्प्यूटिंग के प्रश्नपत्र को वैकल्पिक रूप में रखा गया है। छात्रों को कम्प्यूटर अनुप्रयोग से परिचित कराने के साथ उन्हें कम्प्यूटर में हिन्दी प्रयोग परक्षमता बढ़ाने की प्रेरणा दिलाना पाठ्यक्रम का उद्देश्य है।

इकाई- एक

हिन्दी भाषा व क्रियान्वयन - व्यावहारिक हिन्दी : राजभाषा, राष्ट्रभाषा, विभाषा व सम्पर्क भाषा कार्यालयी भाषा हिन्दी : विज्ञप्ति, संक्षेपण, टिप्पण, प्रारूपण, आवेदन

इकाई- दो

हिन्दी पत्रकारिता - पत्रकारिता की परिभाषा, पत्रकारिता का स्वरूप और प्रकार, राष्ट्रीय स्वाधीनता संग्राम में हिन्दी पत्रकारिता का महत्त्व जनसंचार लेखन : संपादकीय लेख, रेडियो, टेलीविजन और समाचार पत्र (विज्ञापन लेखन और समाचार लेखन)

इकाई- तीन

हिंदी कंप्यूटिंग : संक्षिप्त परिचय – प्रयोग, पब्लिशिंग, इन्टरनेट

इकाई- चार

मीडिया व् जनसंचार लेखन - न्यू मीडिया की भाषा

संदर्भ ग्रंथ

1	विनीता सहगल	:	आज का युग : इंटरनेट युग
2	मनोज सिंह	:	आओ कम्प्यूटर सीखें
3	विनोद कुमार मिश्रा	:	आधुनिक कम्प्यूटर विज्ञान
4	गुंजन शर्मा	:	कम्प्यूटर : बेसिक शिक्षा
5	विष्णुप्रिया सिंह	:	कम्प्यूटर का परिचय
6	राजेश कुमार	:	कम्प्यूटर एक अद्रभुत आविष्कार
7	शादाब मलिक	:	कम्प्यूटर और इसके अनुप्रयोग
8	नीति मेहता	:	कम्प्यूटर इंटरनेट शब्दकोश
9	राजगोपाल सिंह जादिन	:	कम्प्यूटर के विविध आयाम
10	विष्णुप्रिया सिंह	:	कम्प्यूटर नेटवर्किंग कोर्स
11	पी. के. शर्मा	:	कम्प्यूटर परिपालन की पद्धतियाँ

12	गुणाकर मुले	:	कम्प्यूटर क्या है?, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
13	विनोद कुमार मिश्र	:	कम्प्यूटर व सूचना प्रौद्योगिकी शब्दकोश, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
14	बालेन्दुशेखर तिवारी	:	प्रयोजनमूलक हिन्दी, संजय बुक डिपो, वाराणसी
15	विजयपाल सिंह	:	कार्यालय हिन्दी, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी
16	डॉ. भोलानाथ तिवारी	:	राजभाषा हिन्दी, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली
17	डॉ. रामगोपाल सिंह	:	हिन्दी मीडिया लेखन और अनुवाद, पार्श्व, अहमदाबाद
18	डॉ. सुनागलक्ष्मी	:	प्रयोजनमूलक हिन्दी : प्रासंगिकता एवं परिदृश्य, जवाहर पुस्तकालय, मथुरा
19	डॉ. षिबा मनोज	:	पत्रकारिता का जनसंचार और हिन्दी उपन्यास, जवाहर पुस्तकालय, मथुरा
20	अमी आधार निडर	:	समाचार संकल्पना और अनुवाद, जवाहर पुस्तकालय, मथुरा
21	डॉ. हरिमोहन	:	सूचनाक्रांति और विश्वभाषा हिन्दी, जवाहर पुस्तकालय, मथुरा
22	डॉ. हरिमोहन	:	आधुनिक संचार और हिन्दी, जवाहर पुस्तकालय, मथुरा
23	एन. सी. पंत	:	मीडिया लेखन के सिद्धांत, जवाहर पुस्तकालय, मथुरा
24	डॉ. माधव सोनटके	:	प्रयोजनमूलक हिन्दी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
25	डॉ. रामप्रकाश	:	प्रयोजनमूलक हिन्दी : संरचना और प्रयोग, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली
26	डॉ. कैलाशनाथ पाण्डेय	:	प्रयोजनमूलक हिन्दी की नई भूमिका
27	पी. लता	:	प्रयोजनमूलक हिन्दी, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद

LHC5003

भाषा प्रद्योगिकी एवं हिंदी कंप्यूटिंग (ऐच्छिक)

वर्तमान युग कम्प्यूटर का है। ज्ञान-विज्ञान से लेकर समाज के किसी भी अंग में कम्प्यूटर का अनुप्रयोग अब बहुत स्पष्ट रूप से हमारे सामने है। हिन्दी साहित्य का अध्ययन करने वाले छात्रों को भी ज्ञान-विज्ञान की नवीनतम् उपलब्धियों से परिचित कराने के लिए हिन्दी कम्प्यूटिंग के प्रश्नपत्र को वैकल्पिक रूप में रखा गया है। छात्रों को कम्प्यूटर अनुप्रयोग से परिचित कराने के साथ उन्हें कम्प्यूटर में हिन्दी प्रयोग परक्षमता बढ़ाने की प्रेरणा दिलाना पाठ्यक्रम का उद्देश्य है।

इकाई- एक

कंप्यूटिंग का परिचय, कंप्यूटर का इतिहास,कंप्यूटर के विभिन भाग,भाषा का प्रयोग एवं उपयोग कंप्यूटर में भाषा प्रयोग एवं हिंदी प्रयोग

इकाई- दो

प्रमुख प्राविधि:ओपन सोर्स, सोर्स, हिंदी कंप्यूटिंग के विभिन धरातल, भाषा प्रयुक्ति एवं प्रयुक्ति के विविध आयाम

इकाई-तीन

कंप्यूटर का तकनीकी उपयोग, हिंदी कंप्यूटिंग व् तकनीकि हिंदी, कार्यालयी हिंदी, कामकाजी भाषाएँ अवं हिंदी का प्रयोग

इकाई-चार

कंप्यूटर का उपयोग –इन्टरनेट, वेब पब्लिशिंग व् हिंदी कंप्यूटिंग, ईमेल, ब्लॉग लेखन, कंप्यूटर में हिंदी का उपयोग एवं महत्व

संदर्भ ग्रंथ

1	विनीता सहगल	:	आज का युग : इंटरनेट युग
2	मनोज सिंह	:	आओ कम्प्यूटर सीखें
3	विनोद कुमार मिश्रा	:	आधुनिक कम्प्यूटर विज्ञान
4	गुंजन शर्मा	:	कम्प्यूटर : बेसिक शिक्षा
5	विष्णुप्रिया सिंह	:	कम्प्यूटर का परिचय
6	राजेश कुमार	:	कम्प्यूटर एक अद्रभुत आविष्कार
7	शादाब मलिक	:	कम्प्यूटर और इसके अनुप्रयोग
8	नीति मेहता	:	कम्प्यूटर इंटरनेट शब्दकोश
9	राजगोपाल सिंह जादिन	:	कम्प्यूटर के विविध आयाम
10	विष्णुप्रिया सिंह	:	कम्प्यूटर नेटवर्किंग कोर्स

LHC5004

हिन्दी भाषा शिक्षण (ऐच्छिक)

हिन्दी भाषा के वैज्ञानिक शिक्षण के छात्रों को सक्षम करने का प्रयास किया जायेगा। हिन्दी शिक्षण की विधियाँ समझना पहला उद्देश्य है, फिर शिक्षण का इतिहास भी वे जानें। भाषाई शिक्षण की बारीकियों को समझाते हुए प्रथम, द्वितीय और तृतीय भाषा के तौर पर हिन्दी भाषा को पढ़ाने का तरीका, शिक्षा के चारों कौशलों को हिन्दी शिक्षण में भी प्रयोग में लाने की आवश्यकता आदि से छात्र अवगत होगा। छात्रों को हिन्दी शिक्षण के साथ जुड़ी हुई रोजगार संभावनाओं की जानकारी मिलेगी। हिन्दी शिक्षण, हिन्दी शिक्षण की विभिन्न विधियाँ - निगमनात्मक व आगमनात्मक, संश्लेष णात्मक व विश्लेषणात्मक, वस्तुविधि, दृष्टान्त विधि, कथनविधि एवं व्याख्यान विधि प्रश्नोत्तर विधि (सुकराती विधि), शोध विधि, प्रोजेक्ट विधि, डाल्टन योजना एवं वर्धा योजना शैक्षिक विधियों के विकास का इतिहास : हिन्दी शिक्षण में द्वितीय भाषा और प्रथम भाषाई शिक्षण आदिकालीन शिक्षण एवं मध्यकालीन शिक्षण उन्नीसवीं भाताब्दी का शिक्षण - अनिवार्य शिक्षण बीसवीं शताब्दी का शिक्षण

इकाई- एक

हिंदी भाषाशिक्षण : सिद्धांत और उद्देश्य, भाषा शिक्षण : प्रकृति और प्रयोजन, सैद्धांतिक भाषा विज्ञान और अनुप्रयुक्त भाषा विज्ञान, अनुप्रयुक्त भाषाविज्ञान में भाषा का स्थान, शैक्षिक व्याकरण की प्रकृति।

इकाई- दो

भाषा अर्जन और अधिगम : भाषा अधिगम के सिद्धांत और भाषा-शिक्षण, व्यवहारवाद एवं बुद्धिवाद तथा भाषा शिक्षण में इनका योगदान।

इकाई- तीन

भाषा शिक्षण सन्दर्भ : मातृभाषा, द्वितीय भाषा और विदेशी भाषा, मातृभाषा, द्वितीय भाषा और विदेशी भाषा के रूप में हिंदी, मातृभाषा, द्वितीय भाषा में अधिगम – समानता और विभिन्नता।

इकाई- चार

भाषा शिक्षण प्रणाली : भाषा शिक्षण प्रणाली के मुख्य प्रकार- व्याकरण अनुवाद विधि, सम्प्रेषणपरक विधि और संकलन विधि।

संदर्भ ग्रंथ

1	रामचन्द्र वर्मा	:	अच्छी हिन्दी, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
2	किशोरीलाल शर्मा	:	भाषा माध्यम तथा प्रकाशन
3	एन.पी. कट्टन पिल्लै	:	भाषा प्रयोग
4	रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव	:	भाषा शिक्षण, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
5	मनोरमा गुप्ता	:	भाषा शिक्षण : सिद्धांत और प्रयोग, केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा
6	के. वी. वी. वी. एल. नरसिंहराव	:	भाषा शिक्षण : परीक्षण तथा मूल्यांकन, कलिंगा, दिल्ली
7	वाई. वेंकेटे वर राव	:	भाषा विज्ञान और भाषा शिक्षण, अन्नपूर्णा प्रकाशन, कानपुर

8	दिलीप सिंह	:	भाषा, साहित्य और संस्कृति शिक्षण, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली
9	ओमकार सिंह देवाल	:	दूरस्थ शिक्षण में भाषा शिक्षण
10	कैलाशचंद्र भाटिया	:	हिन्दी भाषा शिक्षण
11	वी. एन. तिवारी	:	हिन्दी भाषा
12	हरदेव बाहरी	:	हिन्दी का सामान्य प्रयोग
13	वी. वी. हेगड़े	:	हिन्दी के लिंग प्रयोग
14	एल. एन. शर्मा	:	हिन्दी संरचना
15	किशोरीलाल बाजपेई	:	हिन्दी शब्दानुशासन
16	सूर्यप्रसाद दीक्षित	:	प्रयोजनमूलक हिन्दी, भारत बुक सेंटर, लखनऊ
17	हरदेव बाहरी	:	शुद्ध हिन्दी
18	के. के. गोस्वामी	:	व्याकरणिक हिन्दी और रचना
19	के. के. रत्तू	:	व्याकरणिक हिन्दी
20	पूरनचद टण्डन	:	व्याकरणिक हिन्दी
21	सुभाष चन्द्र गुप्त	:	हिन्दी शिक्षण, खेल साहित्य केन्द्र
22	भोलानाथ तिवारी	:	भाषा शिक्षण, लिपि प्रकाशन, नई दिल्ली
23	ब्रजेश्वर वर्मा	:	भाषा शिक्षण और भाषा विज्ञान, केंद्रीय हिंदी संस्थान, आगरा
24	रवीन्द्रनाथ श्रीवास्तव	:	भाषा शिक्षण, मैकमिलन, दिल्ली
25	Jack C Richards & Theodore S Rodgers	:	Approaches and Methods of language teaching
26	Little Wood		Communicative Language Teaching, Longman, London
27	Richard C Jack	:	(Ed.), Error Anlysis, Longman
28	Robert Lado	:	Language Teaching
29	C-DAC, Pune	:	Leela (Set of Com. Web/Cassetes)

LHC5005

दलित साहित्य (ऐच्छिक)

उक्त प्रश्नपत्र में दलित साहित्य के इतिहास-विकास के साथ-साथ दलित साहित्य की अवधारणा से छात्रों का परिचय कराया। दलित साहित्य की विशिष्ट कृतियों जूठन- ओमप्रकाश बाल्मीकि, परिशिष्ट- गिरिराज किशोर, उठाईगीर- लक्ष्मण गायकवाड़ का सामाजिक, रजनीतिक और आर्थिक परिवेश में अध्ययन कराया जायेगा।

इकाई- एक

दलित : अवधारणा - (भारत की विशिष्ट जातिगत व वर्गगत अवस्था-ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य) दलित साहित्य की अवधारणा, परिभाषा व दलित साहित्य का सामाजिक-राजनीतिक आयाम, भारतीय दलित साहित्य का उद्भव व विकास (इतिहास-विशेष संदर्भ मराठी दलित साहित्य) हिन्दी दलित साहित्य का इतिहास

इकाई- दो

ओमप्रकाश बाल्मीकि – जूठन

इकाई- तीन

गिरिराज किशोर – परिशिष्ट

इकाई- चार

लक्ष्मण गायकवाड – उठाईगीर

1	Eleanor Zelliot	:	from Untouchable to Dalit, Mnohar
2	Ghanashyam Sha	:	Dalit Aldentity and Politics, Saga Delhi
3	Harold R Issac	:	Indias Ex-Untouchables, Harper & Row
4	S M Micheal	:	Dalit in Modern India: Vision & Values, Vistar
5	Y Chinna Rao	:	Writing Dalit History and other Essays, Manohar
6	V.K. Krishna Iyer	:	Dr. Ambedkar & Dalit Future, B.R. Publication
7	Nandu Ram	:	Ambedkar, Dalit a& Buddism, Mankak
8	Narayan Das	:	Abmbedkar, Ghandhi and Empowerment of Dalits, ABD Publication
9	Gail Omvet	:	Dalit Vision, Orient Blackswan
10	S.K. Thorat	:	Dalit in India, Search for a common destiny, Saga
11	Kanch Ilaiah	:	Post – Hindu India: A discourse in Dalit-Bahujan,Socio-spiritual and Scientific revolution, Saga
12	Tamo, Nibang & MC Behera	:	Nadeem HasnainTribal India, Harnam
13	Govindachandra Rath	:	Tribal Development in India: The contemporary debate, Saga
14	Sunil Janah	:	The Tribals of India, Oxford

15	Priyaram M Chaco	:	Tribal Communities and Social Change, Oxford
16	G Stanley & Jay Kumar	:	Tribals from tradition to transition, M D Publications
17	L P Vidhyardhi &B K Ray	:	Tribal culture in India, Concept
18	Devi K Uma	:	Tribal Rights in India, Eastern Corporation
19	K Mann		Tribal Women: on the threshold of 21st century, M D Publication
20	Munni Lakara	:	Tribal India, Communities, Custom & Cultures and Dominant
21	ओमप्रकाश बाल्मीकि	:	दलित साहित्य का सौन्दर्यशास्त्र, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली
22	मोहनदास नेमिशराय	:	भारतीय दलित आन्दोलन का इतिहास (चार खण्डों में), राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली
23	डॉ. एल. जी. मेश्राम	:	और बाबा साहेब आंबेडकर ने कहा (पाँच खण्डों में), राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली
24	ओम प्रकाश बाल्मीकि	:	दलित साहित्य : अनुभव, संघर्ष एवं यथार्थ, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली
25	ओमप्रकाश बाल्मीकि	:	जूठन (दो भागों में), राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली
26	गिरिराज किशोर	:	परिशिष्ट, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली

LHC5006

स्त्री लेखन

महिला लेखन समग्र रूप में महिला आंदोलन की इकाई के रूप में है। महिला आंदोलन की मूल धारणा पुरुषों और स्त्रियों के समान सामाजिक, राजनीतिक व आर्थिक अधिकार होने के रूप में है। इस विचारसरणी में स्त्री को पुरुष के बराबर समझने पर ज़ोर दिया गया है। दोयम दर्जे की नागरिकता से असहमति के साथ महिला आंदोलन इस बात की भी माँग करता है कि जिन सामाजिक आचार-विचारों की बुनियाद इस स्त्री-पुरुष भेद के आधार पर है, उन्हें समाप्त किया जाए। इन महिला अधिकारों की पक्षधरता करता हुआ साहित्य महिला लेखन के दायरे में आता है। विभिन्न पुरुषों व महिलाओं द्वारा लिखे गए साहित्य का मूल्यांकन स्त्रीवादी विचारों के आधार पर करना स्त्रीवादी आंदोलन के दायरे में आता है। इस वैकल्पिक पत्र में छात्रों को महिला लेखन की सैद्धांतिक व दार्शनिक आधारभूमि से परिचित कराने के साथ स्त्रीवादी आलोचना के मूल्यों को निर्धारित करने में सक्षम करने का प्रयास किया जाएगा।

इकाई- एक

महिला लेखन और उसका सैद्धांतिक पक्ष –स्त्री विमर्श का इतिहास, स्त्रीवादी आन्दोलन का परिचय,स्त्रीवादी लेखन की पृष्टभूमि, स्त्रीवादी आन्दोलन और हिंदी साहित्य

इकाई- दो

उपन्यास – पोस्ट बॉक्स नं. 203 नाला सोपारा – चित्रा मुद्गल

इकाई- तीन

कहानियाँ- यही सच है - मन्नू भण्डारी, अंतर्यात्रा - क्षमा शर्मा, मेर्सी किल्लिंग - कमल कुमार

इकाई- चार

कविताएँ- कात्यायनी - इस स्त्री से डरो, सात भाइयों के बीच चम्पा
निर्मला पुतुल – अगर तुम मेरी जगह होते, इतनी दूर मत ब्याहना बाबा
अनामिका – बेजगह, पतिव्रता, एक औरत का पहला राजकीय प्रवास

1	जगदीश चतुर्वेदी	:	स्त्रीवादी साहित्य विमर्श, अनामिका प्रकाशन, दिल्ली
2	राजेंद्र यादव	:	पितृसत्ता के नए रूप, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
3	प्रकाश सरोज(संपा.	:	स्त्री पुरुष संबंधों के आइने में मोहन राकेश, स्वराज प्रकाशन, दिल्ली
4	मन्मथनाथ गुप्ता	:	स्त्री पुरुष संबंधों का रोमांचकारी इतिहास, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
5	राजकिशोर	:	स्त्री और पुरुष पुनर्विचार, वाणी प्रकाशन, दिल्ली
6	लियो तॉलस्टाय	:	स्त्री और पुरुष, सस्ता साहित्य मंडल
7	Kamala Ganesh & Usha Thakkar	:	Culture and Making Identity in Contemporary India
8	Vandana Shiva	:	Staying Alive: Women, Ecology and Development
9	Tankia Sankar	:	Hindi Wife, Hindu Nation: Community, Religion and Nationalism
10	Lata Singh (Ed.)	:	Play House of Power Theatre in Colonial India

11	Sula Myth Rane Harch	:	Feminist Research Methodology in Social Science
12	Gerda Lerner	:	The Creation of feminist Consciousness: From the Middle Ages to Eighteen Seventy
13	Gerda Lerner	:	The Creation of Patriarchy

LHC5007

लोक जागरण और भक्तिकाल

भारत के सांस्कृतिक परिवेश को विशिष्ट बनाने में भक्तिकालीन रचनाओं का अभूतपूर्व योगदान रहा है। भारतीय सांस्कृतिक

परिवेश को समग्रता से समझने के लिए भक्तिकाल की रचनाओं का अध्ययन छात्रों के लिए अनिवार्य है। इस अनिवार्यता का कारण यह है कि यह अध्ययन अलग-अलग भाषाओं के विभिन्न भावबोध एवं विचारों के अजस्र स्रोत का तार्किक निर्धारण 'भारतीयता' का सृजन करता है । मध्यकालीन हिन्दी साहित्य साहित्येतिहास में बेजोड़ है। यहाँ प्रवृत्तिमार्गी एवं निवृत्तिमार्गी कवियों का संगम और जनता के बीचोंबीच खड़े होकर धार्मिक, सामाजिक समानता के स्वर मुखरित करने वाले, जनता के बोली में कथन शैली में बढ़ाने वाले कवि की प्रतिभा पा जाते हैं। उनकी कविताओं का एक सौन्दर्यशास्त्र है । समस्त भारतीय साहित्य में भक्ति आन्दोलन का स्वर मुखरित हुआ। लेकिन भक्ति से रीति तक कुछेक कवि ऐसे पाये जाते हैं जो शास्त्र और सौन्दर्य के कवि के रूप में, दरबारी कवि के रूप में राज्याश्रित भी होते गये। अत: हिन्दी साहित्य का मध्यकाल भक्ति, श्रृंगार और काव्य शास्त्रीय दृष्टि से उल्लेखनीय है। निर्गुण में संत, सूफी और सगुण में राम, कृष्ण की आराधना को केन्द्र में रखकर युगद्रष्टा कवि चुने जाते हैं। भक्तिकालीन कवियों की रचनाओं का विस्तृत अध्ययन या तो ऐच्छिक रूप से लिया जा सकता है, या प्रत्येक पाठ्यक्रम में छात्रों को यह चयन की छूट दी जा सकती है

यूनिट- एक

लोकजागरण की अवधारणा , 'लोक' शब्द का अर्थ और प्रयोग , 'लोक' शब्द की परिभाषा, भारतीय साधना का क्रमिक विकास

यूनिट- दो

लोक जागरण: सामाजिक, सांस्कृतिक, राजनीतिक और आर्थिक परिस्थिति । ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य

यूनिट- तीन

हिंदी भक्तिकाव्य और लोकजागरण , भक्तिकाल की पृष्टभूमि, प्रेममार्गी धारा और जायसी के काव्य में लोकोन्मुखता, हिंदी की सगुण भक्तिकाव्य धारा और लोकजागरण, कृष्णभक्ति काव्य धारा और सूरदास, रामभक्ति शाखा और तुलसीदास

यूनिट- चार

हिंदी संतकाव्य में लोकजागरण की अभिव्यक्ति – नामदेव, कबीरदास, गुरुनानक देव, दादू

संदर्भ ग्रंथ

1	आचार्य रामचंद्र शुक्ल	:	हिन्दी साहित्य का इतिहास, नागरी प्रचारणी सभा, वाराणसी
2	आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी	:	हिन्दी साहित्य की भूमिका
3	रामविलास शर्मा	:	लोकजागरण और हिंदी साहित्य, वाणी प्रकाशन , दिल्ली
4	रामविलास शर्मा	:	लोकजीवन और साहित्य , विनोद पुस्तक मंदिर , आगरा
5	प्रेमशंकर	:	भक्तिकाव्य का समाजदर्शन , वाणी प्रकाशन , दिल्ली
6	राजमणि शर्मा	:	भारतीय प्राणधारा का स्वाभाविक विकास, हिंदी कविता , वाणी प्रकाशन , दिल्ली
7	शिवकुमार मिश्र	:	भक्तिकाव्य और लोकजीवन
8	आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी	:	कबीर, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली
9	रामचंद्र शुक्ल	:	सूरदास, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद
10	विश्वनाथ त्रिपाठी	:	लोकवादी तुलसीदास, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद

LHC5008

आदिवासी साहित्य का अध्ययन

आदिवासी साहित्य में विभिन जन-जातीय समुदायों द्वारा, लिखित या वाचिक, जिस तरह के भी साहित्य का सृजन हुआ है, प्रस्तुत प्रकरण में उसका अध्ययन किया जाता है । इस अध्ययन में आदिवासी के जीवन पर लिखे गए साहित्य को भी

शामिल करा सकते है। आदिवासी साहित्य अध्ययन में आदिवासी साहित्य अध्यन में आदिवासी साहित्य के विभिन आयामों व् पक्षों पर विचार करना आवश्यक है।

यूनिट- एक

आदिवासी साहित्य की परम्परा
आदिवासी साहित्य की अवधारणा व् परम्परा

यूनिट- दो

आदिवासी साहित्य के स्रोत, परम्परा और भाषिक संरचना
आदिवासी साहित्य का सामाजिक आधार

यूनिट- तीन

मुख्यधारा के साहित्य से आदिवासी साहित्य का अंतर व् विशिष्टता
आदिवासी साहित्य के मूल्यांकन की प्राविधि

यूनिट- चार

संजीव की दुनिया की सबसे हसीन औरत, रामदयाल मुंडा की उस दिन रास्ते में, विनोद कुमार की एक दुनिया अलग सी, मंगल सिंह मुंडा की महुआ का फूल

संदर्भ ग्रंथ

1	महाश्वेता देवी	:	जंगल के दावेदार , राजकमल प्रकाशन , दिल्ली
2	शानी	:	शाल बने के दीप , राजकमल प्रकाशन, दिल्ली
3	रामशरण जोशी	:	आदिवासी समाज और शिक्षा , राजकमल प्रकाशन , दिल्ली
4	रामशरण जोशी	:	आदमी बैल और सपने , राजकमल प्रकाशन , दिल्ली
5	गोपीनाथ महान्ती	:	माटी मदाल,साहित्य अकादमी, दिल्ली
6	केदार प्रसाद मीणा	:	आदिवासी कहानियाँ , अलख प्रकाशन, जयपुर
7	विनोद कुमार	:	आदिवासी जीवन - जगत की बारह कहानियाँ- एक नाटक, अनुज्ञा बुक्स, दिल्ली
8	हीराराम मीणा	:	आदिवासी दुनिया, राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, दिल्ली
9	जनार्दन	:	आदिवासी समाज, साहित्य और संस्कृति , अनंग प्रकाशन, दिल्ली
10	शरद सिंह	:	भारत के आदिवासी क्षेत्रों की लोककथाएं , राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, दिल्ली
11	निर्मल कुमार बोस	:	भारतीय आदिवासी जीवन , राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, दिल्ली
12	हाँसदा सौभेन्द्र शेखर	:	आदिवासी नहीं नाचेंगे , राजपाल एण्ड सन्ज , दिल्ली
13	डा. रूबी एलसा जेकब	:	समकालीन हिन्दी उपन्यासों में विस्थापन , विद्या प्रकाशन , कानपुर

LHC5009

लोक साहित्य (ऐच्छिक)

लोक से आशय समाज के उस वर्ग से है, जिसका अपना ही रीति-रिवाज, संस्कार व साहित्य होता है और मुख्य धारा से जो दूर रहते हैं। उनका साहित्य वाचिक ज्यादा होता है और उन्हें पढ़ना-लिखना कम ही आता है। देश भाषाओं की व्यक्ति बोलियाँ उनके आचारानुष्ठानों व साहित्यिक गतिविधियों में समाहित हैं। उन्हें संकलित करना तो दूर कहीं आचरण के तौर पर वह साहित्य देश की अमूल्य सम्पत्ति होता है। साहित्य के विद्यार्थी ऐसे लोक एवं उनके द्वारा सृजित साहित्य का अध्ययन अवश्य कर सकें और मुख्यधारा साहित्य से उसका ताल-मेल बिठायें। इस पाठ्य-विषय में लोक साहित्य के विभिन्न

पक्षों से छात्रों को परिचित कराया जायेगा। लोक साहित्य का मुख्यधारा के साहित्य के साथ क्या रिश्ता है? इस प्र न पर भी विचार किया जायेगा। लोक साहित्य के मूल्यांकन के क्या आधार हों, छात्रों को उनसे भी परिचित कराया जायेगा।

इकाई- एक

लोक साहित्य : सामान्य परिचय - लोक साहित्य के अध्ययन का इतिहास, लोक साहित्य : परिभाषा, प्रकृति, क्षेत्र और महत्व, लोकसंस्कृति, लोकमानस, लोकसंगीत, लोकविश्वास, लौकिक रीति-रिवाज एवं परम्पराएं, लोकसाहित्य का अन्य विषयों से सम्बन्ध, लोक और लोकवार्ता, लोकवार्ता : परिभाषा, प्रकृति, क्षेत्र और महत्व

इकाई- दो

लोक साहित्य के विभिन्न रूप - लोकसाहित्य के विभिन्न रूपों का वर्गीकरण- लोकगाथा (परिभाषा, वर्गीकरण, उत्पत्ति तथा विशेषताएँ), लोकगीत- (परिभाषा, वर्गीकरण तथा विशेषताएँ), श्रम-लोकगीत, संस्कार-लोकगीत, ऋतु-लोकगीत, जाति-गीत तथा देवी-देवताओं से सम्बन्धित लोकगीत। लोककथा- (परिभाषा, वर्गीकरण तथा विशेषताएँ) लोक-कथा, व्रत-कथा, परी-कथा, बोध-कथा तथा कथानक रूढियाँ।

इकाई-तीन

भारतीय संस्कृति और लोकगीत - संस्कार- लोकगीत, श्रम-लोकगीत, ऋतु-लोकगीत तथा देवी-देवीताओं से सम्बन्धित लोकगीत। लोक साहित्य के संकलन में आने वाली कठिनाइयाँ एवं निवारण के उपाय, लोकनाट्य- (परिभाषा, वर्गीकरण, उत्पत्ति, परम्परा तथा विशेषताएं), नौटंकी, विदेसिया, रामलीला, रासलीला, भवाई, भांड, तमाशा, जात्रा तथा कथककलि।

इकाई-चार

लोक साहित्य का प्रदेय - हिन्दी साहित्य और भाषा के विकास में लोक साहित्य का योगदान, लोक साहित्य का स्रोत परंपरा व भाषिक संरचना (वाचिक/लिखित), लोक साहित्य का सामाजिक आधार, लोक साहित्य का मुख्यधारा के साहित्य पर प्रभाव व मुख्यधारा के साहित्य का लोक साहित्य पर प्रभाव, लोक साहित्य के मूल्यांकन की प्रविधि

संदर्भ ग्रंथ

1	हरीराम यादव	:	लोक साहित्य, बोहरा प्रकाशन, जयपुर
2	डॉ अल्पना सिंह/डॉ. अशोक मर्डे	:	लोक साहित्य और संस्कृति का वर्तमान स्वरूप, वांग्मय बुक्स, अलीगढ़
3	डॉ. दिनेश्वर प्रसाद	:	लोक साहित्य और संस्कृति
4	विष्णु रानडिलिया	:	जनशक्ति का लोक साहित्य, आर्य प्रकाशन मण्डल, दिल्ली
5	कृष्णदेव उपाध्याय	:	लोक साहित्य की भूमिका, साहित्य भवन, इलाहाबाद
6	मधु उपोटिस	:	ब्रज लोक साहित्य, इंदु प्रकाशन, अलीगढ़
7	मनोहर शर्मा	:	लोक साहित्य की सांस्कृतिक परंपरा
8	शांताराम देशमुख विमल	:	लोकमंच के पुरोधा
9	हरिदूर भट्टटा शैलेश	:	भाषा और उसका साहित्य, हिन्दी संस्थान, लखनऊ
10	वापचरणा महंत	:	असम के बारगीत, कमलकुमारी फाउंडेशन, असम

LHC5010
इकाई- एक
ल
इकाई- दो
ल
इकाई-तीन
भ
इकाई-चार
ल
संदर्भ ग्रंथ

1		:	
2		:	
3		:	
4		:	
5		:	
6		:	
7		:	
8		:	
9		:	
10		:	

BOS 20-8-16

BOS

DEPARTMENT OF HINDI
विद्यानगर, कासरगोड-671123
VIDYANAGAR, KASARAGOD-671123

Department of Hindi Council Meeting held on 20th August 2016 at 5:00 pm.

Venue: Office cabin of the Head of the Department.

Chair: Dr. Seema Chandran, Head of the Department, Hindi.

1. PhD Course Work Syllabus was framed by the One Day National Workshop conducted on 19th August 2016 and was approved by the Board members on 20th August 2016 along with P.G BoS. The meeting was successfully conducted on 20th August (A.F) 2016. The following members were present:-

Dr. Seema Chandran, Asst.Prof., Head, Dept. of Hindi, CUKerala :Chairperson

Dr. Dharmendra Pratap Singh- Asst. Prof., CUKerala : Member

Dr.Thennarasu S– Asso. Prof., Head,Department of Linguistics : Member

Prof.(Dr.) Mohan – Professor, Head, Delhi University : Member

Dr. Taru S Pawar- Asso. Prof, CUKerala : Special Invitee

20.08.2016

2. Premchand Jayanti Program was successfully conducted on 29 July 2016. In conncetion with Bhashan Pratiyogita was also conducted and Vaishnav P, Kavyashree T.V and Athira K was awarded first, second and Third Prize respectively. Dr.Rajendra Upadhyaay was the Guest of Honour and Special invitee for the programme.
3. Special Invited lecture on Drama and Special Scenario was conducted successfully on 25th August 2016. Dr. T.A Anand was the Special Invitee for the same.

The Meeting came to an end at 5:30pm.

Head of the Department

विभागाध्यक्ष / Head of the Dept.
हिन्दी विभाग / Dept. of Hindi
केरल केन्द्रीय विश्वविद्यालय / Central University of Kerala

dsjy dsUnzh; fo”ofo|ky;
CENTRAL UNIVERSITY OF KERALA

School of Languages and Comparative Literature
Department of Hindi

HkkÔk ,oa rqyukRed lkfgR; fo|kihB
fgUnh foHkkx

ikB~;Øe

,e0,0 ¼fgUnh vkSj rqyukRed lkfgR;½

izos’k o’kZ 2016 i”pkr~

Syllabus
M.A. (Hindi & Comprative Literature)
Addmission 2016 Onwards

ikB~;Øe lfefr

,e0,0 ¼fgUnh vkSj rqyukRed lkfgR;½

ikB~;Øe lfefr %

1	MkW lhek pUnzu	lgk;d vkpk;Z,oa v/;{k] fgUnh foHkkx] dsjy dsanzh; fo"ofo|ky;	v/;{k
2	MkW /kesZanz izrki flag	lgk;d vkpk;Z] fgUnh foHkkx] dsjy dsanzh; fo"ofo|ky;	lnL;
3	MkW FksUukjklq ,l	lgk;d vkpk;Z] HkkÔkk foKku foHkkx] dsjy dsanzh; fo"ofo|ky;	lnL;
4	izks ¼MkW½ eksgu	v/;{k] fgUnh foHkkx] fnYyh fo"ofo|ky;] fnYyh	lnL;
5	izks ¼MkW½ t;pUnzu	v/;{k] fgUnh foHkkx] dsjy fo"ofo|ky;] dsjy	lnL;
6	izks ¼MkW½ d- outk	v/;{k] fgUnh foHkkx] lh0;w0,l0,0Vh0] dsjy	lnL;
7	izks ¼MkW½ x.ks"k iokj	v/;{k] fgUnh foHkkx] dukZVd fo"ofo|ky;] dukZVd	lnL;
8	MkW r# ,l0 iokj	mikpk;Z] fgUnh foHkkx] dsjy dsanzh; fo"ofo|ky;] dsjy	fo"ks"k vkea=r

Syllabus Committee
M A (Hindi and Comprative Literature)

Syllabus Committee :

1	Dr. Seema Chandran	Assistant Professor & Head, Deaprtment of Hindi, CUK	Chairperson
2	Dr. Dharmendra Pratap Singh	Assistant Professor, Depatment of Hindi, Cuk	Member
3	Dr. Thennarasu S	Assistant Professor & Head, Deaprtment of Linguistic	Member
4	Prof. (Dr.) Mohan	Head, Deaprtment of Hindi, Delhi University, Delhi	Member
5	Prof. (Dr.) Jayachandran	Head, Department of Hindi, Kerala University, Kerala	Member
6	Prof. (Dr.) K. Vanaja	Head, Deaprtment of Hindi, CUSAT, Kerala	Member
7	Prof. (Dr.) Ganesh Pawar	Head, Department of Hindi, Karanataka University, Karanataka	Member
8	Dr. Taru S Pawar	Associate Professor, Department of Hindi, CUK	Special Invity

M.A. Hindi and Comparative Literature

Syllabus Design

MA (Hindi & Comparative Literature) programme is included in the Post Graduate programme of the Department of Hindi of the University. This programme is intended to acquire the Masters degree in Hindi & Comparative Literature. The curriculum is designed by Eminent professors, scholars and critics of Hindi in India.

In the MA Programme, there are three types of courses: Hard core Course (HC), Soft core Course (SC), and Elective Course (EC). Hard core course cannot be substituted by any other course. Soft core course is offered from within the Department and elective course are from other departments. There is also a project/Dissertation carrying 6 Credits.

The programme lasts for 4 Semesters. The students get the degree after successfully completing 72 credits in the programme. Of these, 60 credits must be from the core course offered in the Department. The other credits can be obtained from the elective courses. The total number of core credits including that of Hard core Course, soft core course and project shall not exceed 60 credits and shall not be lessthan 48 credits under the guidance of the faculty advisor who shall consider the relevance of the courses to the program and also the student's ability, a student may choose any course offered in the University as elective course. However, no students may register for elective exceeding 8 credits in a semester.

This degree is equivalent to MA in Hindi and MA in Comparative Literature. Its design enables those who complete this course successfully with 55 percentage marks to appear for UGC's JRF/ NET examinations in Hindi as well as in Comparative Literature.

Depending on the availability of expertise the elective course may vary from semester to semester. Some elective courses offered by the Department are open for students from other department also. The broad areas of the electives offered by the Department are given below. The specific title of the course to be offered and its prerequisites will be made available in the beginning of each academic year after the approval of the Board of Studies. An elective course could be either a basic course or an advanced course. Basic course is offered in the odd semesters and advanced course is offered in the even semesters. The title of the course may be suffixed 'I' for basic course and 'II' for advanced course. Successful completion of a basic course is mandatory in order to take up its advanced level.

Course Code:

The 7 characters code comprises of 3 letters and 4 digits: (E.g. LHC 5101). The letters represents the name of School and Department / Centers. E.g. LHC = (School of) Languages, (Department of) Hindi and Comparative Literature. The digits are arranged differently for hard core and soft core courses. In Hard Core Course, the first digit represents the level of the program. E.g. '5' represents post graduate program, where one graduates in the 5th year of joining the college/ university. The second digits shows the semester in which the core courses is offered. The third and fourth digit represents the number of the course. Elective courses may be offered at basic level in the odd semesters and at advanced levels in the even semesters. The title of these courses should be suffixed with 'I' for basic level courses and with 'II' or advanced level courses

ikB~Øe ,e0,0 ¼fgUnh vkSj rqyukRed lkfgR;½

Code	ikB~Øe o fo'k;oLrq	L	T	P	C
lsesLVj 1	vk/kkjHkwr ikB~Øe				20
LHC5101	fgUnh lkfgR; dk bfrgkl ¼19oha "krkCnh rd½	3	1		4
LHC5102	fgUnh Hkk'kk dk mn~Hko vkSj fodkl	3	1		4
LHC5103	e/;dkyhu lkfgR;	3	1		4
LHC5104	rqyukRed lkfgR; % vo/kkj.kk vkSj bfrgkl	3	1		4
LHC5105	Hkkjrh; lkfgR;	3	1		4
lsesLVj 2					20
LHC5201	vk/kqfud fgUnh lkfgR; dk fodkl ¼19oha "krkCnh ds ckn½	3	1		4
LHC5202	fgUnh dh vU; x| fo/kk,¡	3	1		4
LHC5203	vuqfnr fo"o lkfgR;	3	1		4
LHC5204	Hkkjrh; ,oa ik'pkR; lkfgR; fl)kar	3	1		4
LHC5205	rqyukRed lkfgR; izfof/k	3	1		4
lsesLVj 3					12
LHC5301	ledkyhu fgUnh dfork	3	1		4
LHC5302	ledkyhu fgUnh dFkk lkfgR;	3	1		4
LHC5303	ledkyhu fgUnh ukVd ,oa jaxeap	3	1		4
	,sfPNd fo'k; & 1 ¼v oxZ ls½	3	1		4
	,sfPNd fo'k; & 2 ¼c oxZ ls½	3	1		4
lsesLVj 4					8
LHC5401	vuqokn fl)kar	3	1		4
LHC5402	y?kq "kks/k&izca/k			4	4
	,sfPNd fo'k; & 3 ¼fo"ks'k v/;;u½	3	1		4
	,sfPNd fo'k; oxZ v vkSj c esa foHkkftr				
oxZ v					
LHC5001	lapkj ek/;e ys[ku*	3		1	4
LHC5002	fgUnh dEI;wfVax	3		1	4
LHC5003	iz;kstuewyd fgUnh*	3		1	4
LHC5004	fgUnh f"k{k.k	3		1	4
oxZ c					
LHC5005	nfyr v/;;u	3	1		4
LHC5006	efgyk ys[ku	3	1		4
LHC5007	fo"ks'k lkfgR;dkj	3	1		4
LHC5008	vuqfnr Hkkjrh; lkfgR;	3	1		4
LHC5009	lkfgR; vkSj lekt	3	1		4
LHC5010	fQYe v/;;u	3	1		4
LHC5011	Mk;LiksjkA v/;;u	3	1		4
LHC5012	vkfnoklh lkfgR; v/;;u	3	1		4
LHC5013	yksd lkfgR;	3	1		4

*buesa ls fdlh ,d fo'k; dk p;u ikB~;p;kZ dsa nkSjku v/;;u&{ks=k vFkok O;kogkfjd v/;;u ds :i esa gksxkA

ikB~;Øe ,e0,0 ¼fgUnh o rqyukRed lkfgR;½

LHC5101

fgUnh lkfgR; dk bfrgkl ¼19oha "krkCnh rd½

fgUnh lkfgR; dh o`gr~ ijaijk lsNk=ksa dks ifjfpr djkusds mís'; ls bl i= esa fgUnh lkfgR; dh ifjfLFkfr;ksa ,oa lkfgR; ds fodkl dh okLrfodrk dks lkFk lkfgR; dk fodkl dh oSKkfud rkj dky foHkktu dh rkfdZdrk ds lkFk lesaukRed Lrj ij lkfgR; dh eu%LFkfr ls ifjfpr djkuk gSA bl [k.M esa fgUnh lkfgR; ds vkfndky] e/;dky vkSj jhfrdky ds dky foHkktu ls izeq[k izo`fRr;ksa ls ifjfpr djkus ds lkFk vk/kqfud ;qx esa fgUnh uotkxj.k dh izeq[k izo`fRr;ksa ij fopkj fd;k tk;sxk vkSj mUuhloha "krkCnh rd dh lkekftd jktuhfrd [kksa h tk;sxhA

fgUnh lkfgR; dk bfrgkl ¼19oha "krkCnh rd½

- fgUnh lkfgR; ds bfrgkl ys[ku dh ijEijk
- fgUnh lkfgR; dk dky foHkktu vkSj ukedj.k
- vkfndky dh i`"BHkwfe
- vkfndky dh izeq[k fo"ks"krk,¡
- vkfndkyhu lkfgR;& ukFk lkfgR;] tSu lkfgR;] fl) lkfgR;] jkl ks lkfgR;] ykSfdd lkfgR;
- HkfDr vkUnksyu % vf[ky Hkkjrh; Lo:i vkSj izo`fRr;k¡
- fgUnh HkfDr lkfgR; ds Hksn& l xq.k dkO;/kkjk vkSj fuxqZ.k dkO;/kkjk
- jhfrdky dh i`"BHkwfe
- jhfrdkyhu dkO; dh izeq[k izo`fRr;k¡
- jhfrdkyhu dkO;/kkjk,¡& jhfrc)] jhfrfl) vkSj jhfreqDr

lanHkZ xzUFk %

1	vkpk;Z jkepUnz "kqDy	%	fgUnh lkfgR; dk bfrgkl
2	MkW/kkjsUnz oekZ ¼ laik½	%	fgUnh lkfgR; ¼r hu [k.M½
3	MkW uxsUnz	%	fgUnh lkfgR; dk bfrgkl
4	MkW jkedqekj oekZ	%	fgUnh lkfgR; dk vkykspukRed bfrgkl
5	vkpk;Z gtkjhizlkn f}osnh	%	fgUnh lkfgR; dh Hkwfedk
6	MkW jkefoykl "kekZ	%	fgUnh tkfr dk bfrgkl
7	MkW xqykcjk;	%	fgUnh lkfgR; dk lqcks/k bfrgkl
8	MkW gtkjhizlkn f}osnh	%	fgUnh lkfgR; dk mn~Hko vkSj fodkl
9	MkW x.kifrpUnz xqIr	%	fgUnh lkfgR; dk oSKkfud bfrgkl
10	MkW cPpu flag	%	fgUnh lkfgR; dk nwljk bfrgkl] jk/kkd`".k izdk'ku] ubZ fnYyh
11	MkW fot;sUnz Lukrd	%	fgUnh lkfgR; dk bfrgkl
12	MkW lqjsUnz nhf{kr	%	fgUnh lkfgR; dh Hkwfedk
13	MkW lqeu dqekj tSu	%	fgUnh lkfgR; dk bfrgkl %u;s fopkj ubZ n`f"V ok.kh izdk'ku] ubZ fnYyh
14	ukxjh izpkfj.kh lHkk	%	fgUnh lkfgR; dk o`gn~ bfrgkl ¼lksyg [k.M½
15	,u0lh0bZ0vkj0Vh0	%	fgUnh lkfgR; dk bfrgkl
16	fgUnh lkfgR; dk lef{kr bfrof̀Rr	%	f"ko dqekj feJ] ok.kh izdk'ku] ubZ fnYyh
17	lR;nso feJ	%	fgUnh lkfgR; dk mRrjh[kaM dky] yksdHkkjrh izdk'ku] bykgkckn
18	MkW y{eh lkxj okk.ksZ;	%	fgUnh lkfgR; dk bfrgkl] yksdHkkjrh izdk'ku] bykgkckn
19	MkW y{eh lkxj okk.ksZ;	%	fgans lkfgR; dk ekud bfrgkl] yksdHkkjrh izdk'ku] bykgkckn
20	MkW jkedqekj oekZ	%	fgans lkfgR; dk vkykspukRed bfrgkl] yksdHkkjrh çdk'ku] bykgkckn
21	MkW lehj.k BkdZj	%	vkpk;Z jkepæ 'kqDy ds bfrgkl dh jpuk çfØ;k] yksdHkkjrh çdk'ku]

			by kgkckn
22	MkW jkeLo:i prqosZnh	%	bfrgkl v kSj v kykspuk –f"V] ykdHkkjrh çdk'ku] by kgkckn
23	MkW x.kifr pUæ 'kqDy		fgUnh lkfgR; dk oSKkfud bfrgkl ½2 Hkkx kaes½ ykdHkkjrh çdk'ku] by kgkckn
24	fueZy k tSu	%	bfrgkl v kSj v kykspuk d soLrqfu"B l jksdkj] jkt dey çdk'ku] ubZ fnYyh
25	ukeoj fl g	%	bfrgkl v kSj v kykspuk] jkt dey çdk'ku] ubZ fnYyh

LHC5102

fgUnh Hkk"kk dk mnHko vkSj fodkl

bl ikB~; [k.M dk mn~ns'; fgUnh Hkk"kk ds mn~xe vkSj lHkh lsNk=ksa dks voxr djkuk gSA blesa fgUnh Hkk"kk ds iwoZ:i ls vko'kn~d fgUnh ds fofo/k :iksa vkSj "kSyh;ksa dk ifjp; djkuk gSA fMxhy] fiaxy] izkd`r] vogV~V] cz] vo/kh] eSfFkyh cksyh;ksa&Hkk"kkvksa dh fof"k"Vrk o fgUnh Hkk"kk ds fodkl esa mudh Hkwfedk ls Nk=ksa dks ifjfpr djk;k tk;sxkA mi;qZDr iBu ikB~;p;kZ esa fu jpukvksa dk mYys[k fd;k tk;sxk] mUgsa bl idkj.k esa vuqiz;qDr v/;;u djds lkfgR; esa Hkk"kk vkSj cksyh;ksa dh iz;qDr;ksa dks djhc ls le>us dh Hkwfedk iznku gksxh fd fdu&fdu lkekftd] ,sfrgkfld dkj.kksa ls fgUnh lkfgR; ds vkfndky ls vk/kqfud dky rd dh Hkk"kk fodfl r gksrh tkrh gSA vk/kqfud ;qx esa fgUnh ds fofo/k :i] "kSyh;ka o nf{k.k Hkkjr esa iz;qDr fgUnh vkfn dh tkudkjh fnyk ns ls Nk=ksa ds fgUnh Hkk"kk ds bfrgkl o lekt"kkL= rd dk ifjp; gks tk;sxkA

fgUnh Hkk"kk dk mnHko vkSj fodkl

- fgUnh dh lHkh Hkk"kk,¡ o iqjkuh fgUnh ds fof"k"V :i %vogV~V] fMxy] fiaxy
- fgUnh dh mi Hkk"kk,¡ vkSj cksyh;k¡
- ekud Hkk"kk vkSj cksyh;k¡
- fgUnh rFkk mnwZ] nfD[kuh] cz cksyh
- jkt Hkk"kk fgUnh vkSj ikfjHkkf"kd "kCnkoyh

lanHkZ xzUFk %

1	/khjsUnz oekZ	%	fgUnh Hkk"kk dk bfrgkl] fgUnqLrkuh vdkneh] iz;kx
2	jkefoykl "kekZ	%	fgUnh ea lajdkjh dkedkt] fgUnh ipkj ifCyd'ku i<0 fyfeVsM] okjk.klh
3	ckyeqdqUn frokjh	%	iz;kstueyd fgUnh] lk; cd lVj] okjk.klh
4	Hkksyk ukFk frokjh	%	jkt Hkk"kk fgUnh] iHkkr izdk"ku] fnYyh
5	gjnso cgjh	%	fgUnh Hkk"kk dk mnHko vkSj fodkl] yksdHkkjrh izdk"ku] bykgkckn
6	mn; ukjk;.k frokjh	%	fgUnh Hkk"kk dk mnHko vkSj fodkl] yksdHkkjrh izdk"ku] bykgkckn
7	MkW jke izdk"k	%	ekud fgUnh vkSj nsoukxjh %Lo:i ,oa laipuk] jktdey izdk"ku] ubZ fnYyh
8	dSyk"k ukFk "kkL=h	%	ekud fgUnh dk Lo:i] jk/kkd`".k izdk"ku] ubZ fnYyh
9	gtkjhiz kn f}osnh		fgUnh Hkk"kk dk o`gn ,sfrgkfld Q:dj.k] jktdey izdk"ku] ubZ fnYyh
10	lquhr dqekj pVthZ	%	Hkkjrh; vk;ZHkk"kk vkSj fgUnh] jktdey izdk"ku] ubZ fnYyh
11	johUnzukFk JhokLro	%	fgUnh Hkk"kk %lajpuk ds fofo/k vk;ke] jk/kkd`".k izdk"ku] ubZ fnYyh
12	johUnzukFk JhokLro	%	fgUnh Hkk"kk dk lekt "kkL=] jk/kkd`".k izdk"ku] ubZ fnYyh
13	Jhukjk;.k lehj	%	fgUnh vkdk{kk vkSj ;FkkFkZ yksdHkkjrh izdk"ku bykgkckn
14	Hkksyk ukFk frokjh	%	fgUnh Hkk"kk] fdrkc egy] fnYyh
15	jktsUnziz kn flag	%	Hkk"kk dk lekt "kkL=] yksdHkkjrh izdk"ku] bykgkckn
16	MkW jkefd"kksj "kekZ	%	Hkk"kk fpUru ds fofo/k vk;ke vk;ke] jk/kkd`".k izdk"ku] ubZ fnYyh
17	jkefoykl "kekZ	%	Hkk"kk vkSj lekt] jktdey izdk"ku] ubZ fnYyh
18	MkW jke izdk"k	%	Hkk"kk %lajpuk vkSj iz;ksx] jk/kkd`".k izdk"ku] ubZ fnYyh

LHC5103

e/;dkyhu lkfgR;

e/;dkyhu fgUnh lkfgR; lkfgR;sfrgkl eas cSkM+gA ;gk; iz;kRrekxhZ ,oa fuoZfRrekxhZ dfo;ksa dk laxe vkSj turk dsa chp ksahp [kMs gksdj /kkfeZd] lkekftd] lekurk ds Loj eq[kfjr djus okys turk ds chp ls ;gh eac<kus okys dfo i fr Hkk ik t krs gSa mudh dforkv ksa dk ,d lkFkh;ZkkL= gS tks nfyrksa vkSj ihfM+rksa ds fy, viuk gh lkFkh;ZkkL= jprk gSA leLr HkkSjrh; lkfgR; ea HkfDr vkUnksyu dk Loj eq[kfjr gqvkA ysfdu HkfDr lsjhfr rd dh dfo ,ssih ;s t krs gSa tks "kkL= vkSj lkFkh;Z dsdfo ds :i ea njckjh dfo ds :i eajkT;kJr Hkh gksrs x;sA vr% fgUnh lkfgR; dk e/;dky HkfDr] Üka`kj vkSj dkO;'kkL=h; nf"V ls mYys[kuh; gSA fuxqZk eal a] lQh vkSj lxq.k easjke] d`".k dh vkjk/kuk dks dsUnzeaj[kdj ;qxhu`Vk dfo pqus tkrs gSa d`".kHkDr dfo; =h ehjkckbZ dk foLr`r v/;;u ;k rks, sPNd :i ls fy;k tk ldrk gS ;k iB~d iB~;Øe ea Nk=ksa dks ;g p;u dh NwV nh tk ldrh gSfd os lwjnkl ;k ehjkckbZ ea fdlh ,d dk p;u dj ldsaA jhfrdky ds nks fo"k"k i fr fuf/k dfo;ksa ds :i ea fcgkjh vkSj ?kukuan dks Hkh pquk x;k gSA

e/;dkyhu lkfgR;

- dchj & gtkjhizlkn f}osnh }kjk lEikfnr dchj lsi kjfEHkd 20 nksgs vkSj ikjfEHkd 5 in
- tk;lh& inekor] ukxerh fo;ksx [k.M] okl qns"kj.k vxzoky }kjk lEikfnr
- lwjnkl & vkpk;Z jkepanz "kqDy }kjk lEikfnr Hkzejxhr lkj lsi kjfEHkd 20 in ;k ehjk dk dkO;& lEiknd fo"oukFk feJ lsi kjfEHkd 20 in
- rqylhnkl & jkepfjrekul ¼mRrjdk.M ikjfEHkd cht in½
- fcgkjh jRukdj& txUukFk nkl }kjk lEikfnr ikjfEHkd 20 nksgs
- ?kukuan dfoRr & fo"oukFk izlkn feJ }kjk lEikfnr ikjfEHkd 15 dfoRr

lanHkZ xzUFk %

1	fot;sUnz Lukrd	%	dchj] jkt dey izdk'ku] ubZ fnYyh
2	vkpk;Z gtkjhizlkn f}osnh	%	dchj] jkt dey izdk'ku] ubZ fnYyh
3	ekrkizlkn xqIr	%	dchj xzUFkkoyh] ukxjh izpkfj.kh lHkk] okjk.klh
4	jkt fd"kksj ¼lEiknd½	%	dchj dh [kkst] ok.kh izdk"ku] ubZ fnYyh
5	MkW "kqdnso flag	%	la dchj vkSj HkfDr izfØ] fo"ofo|ky; izdk'ku] okjk.klh
6	iq:'kksRre vxzoky	%	vdFk dgkuh izse dh % dchj dh dfork vkSj mudk le;] jkt dey izdk'ku] ubZ fnYyh
7	vkpk;Z jkepanz "kqDy	%	tk;lh xzUFkkoyh] ukxjh izpkfj.kh lHkk] okjk.klh
8	okl qns"kj.k vxzoky	%	inekor] ukxjh izpkfj.kh lHkk] okjk.klh
9	jkefoykl "kekZ	%	ijajk dk ewY;kadu] jkt dey izdk'ku] ubZ fnYyh
10	jkefoykl "kekZ	%	ijajk dk ewY;kadu] jkt dey izdk'ku] ubZ fnYyh
11	jkefoykl "kekZ	%	rqylhnkl vkSj Hkkjrh; lkaLd`frd lkfgR; vdkneh] fnYyh
12	rqylhnkl	%	jkepfjrekul lVhd] xhrk izsl] xksj[kiqj
13	fo"oukFkizlkn f=ikBh	%	ehjk dk dkO;
14	vkpk;Z jkepanz "kqDy	%	lwjnkl & Hkzejxhr lkj
15	txUukFk nkl jRukdj	%	fcgkjh jRukdj
16	fo"oukFk izlkn feJ	%	?kukuan dfoRr
17	okl qns"kj.k vxzoky	%	inekor] yksd Hkkjrh izdk'ku] bykgkckn
18	jkepanz "kqDy	%	lwjnkl] yksd Hkkjrh izdk'ku] bykgkckn
19	j?kqaoä	%	dchj ,d ubZ n`f"V] yksd Hkkjrh izdk'ku] bykgkckn
20	";kelqanj nkl	%	dchj xzUFkkoyh] yksd Hkkjrh izdk'ku] bykgkckn
21	;ksUnz izrki flag	%	dchj dh dfork] yksd Hkkjrh izdk'ku] bykgkckn

22	jkepanz frokjh	%	dchj ehekalk] yksd Hkkjrh izdk'ku] bykgkckn
23	;ksxsUnz izrki flag	%	dchj] lqw] rqylh] yksd Hkkjrh izdk'ku] bykgkckn
24	mn; Hkkuq flag	%	rqylh] yksd Hkkjrh izdk'ku] bykgkckn
25	ješk dqry eš k	%	rqylh] vk/kqfud okrk;u lš jk/kkd'.k izdk'ku] ubZ fnYyh
26	mn; Hkkuq flag	%	rqylh dkO; ehekalk] jk/kkd'.k izdk'ku] ubZ fnYyh
27	uanfd"kkš uoy	%	rqylhnkl] jkt dey izdk'ku] ubZ fnYyh
28	fo"oukFk f=ikBh	%	yksdoknh rqylhnkl] yksd Hkkjrh izdk'ku] bykgkckn
29	cPpu flag oekZ	%	lwjnkl] yksd Hkkjrh izdk'ku] bykgkckn
30	j?kqoa'k	%	tk;lh %,d ubZ n`f"V] yksd Hkkjrh izdk'ku] bykgkckn
31	izHkkdj Jksf=;	%	dchjnkl %fofo/k vk;ke] yksd Hkkjrh izdk'ku] bykgkckn
32	baæukFk ukjax	%	inekor dk vuq'khyu] yksd Hkkjrh izdk'ku] bykgkckn
33	uanqykjs ckti s;Z	%	egkdfo lwjnkl] yksd Hkkjrh izdk'ku] bykgkckn
34	gtkjh izlkn f}osnh	%	lwj lkfgR;] yksd Hkkjrh izdk'ku] bykgkckn
35	txUukFknkl jRukdj	%	fcgkjh jRukdj] yksd Hkkjrh izdk'ku] bykgkckn

LHC5104

rqyukRed lkfgR; % vo/kkj.kk vkSj bfrgkl

lkfgR; dh rqyukRed vo/kkj.kk vkt ds lanHkZ esa iklafxd gA ;g ikB~;Øe lkfgR;kuqjkxh dks lkef;d lkaLd`frd xfrfof/k;ksa ds iwkZ vkLoknu djus ds fy, jkLrk [kksy nsrk gSA tcfd cgqHkk"kh lkfgR; dk] dykdkj vkSj vkykspd laLd`fr ds fofHkUu va%EcU/kksa dks gh iqu% l`ftr djrs vkSj gsarA vkt ds ikB~d bl ckr ls ifjfpr gSa fd ys[ku esa fdl izdkj fofHkUu vk"k;ksa dk rkukckuk cquk tkrk gS vkSj fofHkUu vuqHkoksa ls ys[kd dks izsj.kk feyrh gSA fo"o esa vkSj Hkkjr esa fo"ks"kdj rqyukRed lkfgR; dks ,d fo/kk ;k vuq'kklu ds :i esa i<+us&i<+kus dh ekax dks ;g iwjk djsxkA rqyukRed lkfgR; ds fofHkUu Ldwyksa dk ;gka ifjp; gksxkA lkfgR; bfrgkl ys[ku] Hkkjr ds fo"ks"k lanHkZ esa rqyukRed lkfgR; vkfn ij Hkh fo"ks"k v/;;u bles lekfgr gSA blh ds vaxZr rqyukRed Hkkjrh; ,oa fo"o lkfgR; dk laf{kIr bfrgkl ,oa rqyukRed lkfgR; dk vuqokn fud foospu fd;k tk,sxkA

rqyukRed lkfgR; % vo/kkj.kk vkSj bfrgkl

- rqyukRed lkfgR; % vo/kkj.kkRed ifjizs{;
- rqyukRed lkfgR; dk fodkl
- rqyukRed lkfgR; ds fofHkUu lEiznk;
- rqyukRed lkfgR; o vuqokn fud foospu
- rqyukRed Hkkjrh; lkfgR; o fo"o lkfgR; % laf{kIr bfrgkl

lanHkZ xzUFk %

1	bUnzukFk pkS/kjh	%	rqyukRed lkfgR; % Hkkjrh; ifjizs{;
2	ch0,p0 jktwjdj] jkt ey cksjk	%	rqyukRed v/;;u % Lo:i ,oa leL;k,a] ok.kh izdk"ku] ubZ fnYyh
3	d0 lfPpnkuan	%	Hkkjrh; lkfgR; % LFkkiuk,¡ vkSj izLrkouk,¡
4	;0vkj0 vuarewfrZ	%	fdl izdkj dh gS ;s Hkkjrh;rk
5	iBkdj ekpos	%	vkt dk Hkkjrh; lkfgR;
6	izks ch0oh0yyrkEck	%	rqyukRed lkfgR; vkSj vuqokn
7	S.K. Das	%	A History of Hindi Literature, Vol-1
8	Susan Bassnet	%	Comparative Literature
9	K. Arvindakshan	%	Comparative Indian Literature
10	Amlya Dev	%	Idea of Comparative Literature
11	Anjala Maharish	%	A Comparative Study of Breethian Classical Indian Theater
12	Spivak Gaytri Chakravorty	%	Death of Discipline
13	Homy K Babha	%	A Location of Culture, London, Routiedge
14	Jonathen Rutheford (Edited)	%	Identity : Community, Culture, Difference, London, Routidge
15	Vasudha Daimia and Damsteegi	%	Narrative Strategies : Essays on South Asian Literature and Film, New Delhi, OUP
16	Chandra Mohan (Edited)	%	Aspects of Comparative Literature in India, India Publishers.
17	guqekuizlkn "kqDy ¼la½		rqyukRed lkfgR; % lS)kafrd ifjizs{;] jkt dey izdk"ku] ubZ fnYyh
18	d0 outk	%	rqyuk rqyuk] ok.kh izdk"ku] ubZ fnYyh

LHC5105

Hkkjrh; lkfgR;

Hkkjrh; lkfgR; ds varxZr Hkkjro'kZ ds fofHkUu {ks=ksa esa fofHkUu Hkk"kkvksa esa fy[ks x;s lkfgR; ds tfj, Hkkjrh;rk dh [kkst djuk bl [k.M dk mn~ns"; gSA Hkkjrh; lkfgR; dh vo/kkj.kk ds rgr Hkkjrh; lkfgR; dh vfHkO;fDr dh ,drk ds lkFk ml lanHkZ esa cgqHkk"kk fo"ks"krk ds ckotwn ,d lekurk dks ns[kuk gSA bl ikB~;Øe esa Hkkjrh; lkfgR; ds fofHkUu Lo:iksa dk ifjp; nsus ds lkFk gh Hkkjrh; lkfgR; ds bfrgkl dh le> fodflr djus dk iz;kl fd;k tk,xkA

Hkkjrh; lkfgR;

- Hkkjrh; lkfgR; dh vo/kkj.kk
- Hkkjrh; lkfgR; dh ijaijk
- Hkkjrh; lkfgR; dh vuq"khyu
- Hkkjrh; lkfgR; dh dkyt;h d`fr;k¡ % ifjp; & ,d ¼jkek;.k] egkHkkjr] xhrk] 'kkdqUrye~] es?knwre~ bR;kfn½

Hkkjrh; lkfgR; dh dkyt;h d`fr;k¡ % ifjp; & nks ¼dqN izeq[k d`fr;k¡ rFkk vuqokn½

vkpk;Z jkepanz 'kqDy] jkefoykl 'kekZ & MkW- uxsanz

lanHkZ xzaFk %

1	uxsUnz	%	Hkkjrh; lkfgR;] izHkkr izdk'ku] ubZ fnYyh
2	dsoy l fPpnkuan	%	Hkkjrh; lkfgR; % LFkkiuk,¡ ,oa izLrkouk,¡] jktdey izdk'ku] ubZ fnYyh
3	rkjdukFk ckyh	%	Hkkjrh; lkfgR; fl)kar] "kCndkj] fnYyh
4	jkefoykl "kekZ	%	Hkkjrh; lkfgR; dsbfrgkl dh leL;k,¡] ok.kh izdk'ku] fnYyh
5	Sisir Kumar Das	%	History of Indian Literature : 1911-1956, Struggle for Freedom : Trimph and Tragedy, Sahitya Academy
6	Amiya Dev	%	Idea of Comparative Literature
7	jkeNchyk f=ikBh	%	;wth0lh0 dsuohure ikB~;Øe ds vuqlkj Hkkjrh; lkfgR; nsk ds leLr fo"ofo|ky;ksa ds Lukrdksrj Lrj ds lanHkZ ikB~;Øe] ok.kh izdk'ku] ubZ fnYyh
8	jkefoykl "kekZ	%	Hkkjrh; lkfgR; dh Hkwfedk] jktdey izdk'ku] ubZ fnYyh
9	f"ko"kadj jh	%	lkfgR; vkSj Hkkjrh; ,drk] jk/kkd`".k izdk'ku] ubZ fnYyh
10	MkW- vkjlq	%	Hkkjrh; lkfgR; % vk'kk vkSj vkLFkk] jk/kkd`".k izdk'ku] ubZ fnYyh
11	y{ehdkar ik.Ms; @ izeyk voLFkh	%	Hkkjrh; lkfgR;] yksd Hkkjrh izdk'ku] bykgkckn

LHC5201

v/kqfud fgUnh lkfgR; dk fodkl ¼19oha "krkCnh d sckn½

v/kqfud fgUnh lkfgR; esa uotkxj.k dh izo`fRr;k¡ HkkjrsUnq ;qx ls izkjaHk gksrh gSa bl dk Jh x.ks'k v Bkjgoha "krkCnh ds vka rd gqvk] exj uotkxj.k ds ckn fgUnh lkfgR; esa mUuhloha "krh ls lkfgR; esa v/kqfud Hkkoc ks/k ,oa [kM+h cksyh dh u;h iz;ksx`Dr;k¡ fn[kkbZ nsus yxhA fgUnh lkfgR; esa ;qxhu rRo lkfgR; dk Hkkjrsanq v kSj egkohj izlkn f}osnh v orfjr gqA Hkkjrsanq ;qx esa uotkxj.k v kSj jk"Vªh; psruk dh v fHkO;fDr dks iz eq[k iz; feyk rks egkohj izlkn f}osnh ds ;qx rd lkfgR; esa bfroRrkRed rk dks iz eq[k x.kuk nh xbZ v kSj "kkL=okn dk izkcY; gksus yxkA v kxs pydj Nk;kokn jgL;okn ds v uqdi fgUnh lkfgR; esa Nk;kokn dk cht oiu o iYyou gks x;kA /khjs&/khjs v/kqfud fgUnh lkfgR; dk leksft d ifjorZu dh v kSj v xzlj gq v kSj mudsleus mifuos"kh o`fRr ls fonzksg v kSj v kReh;r dh eka;d nf"V;k ls gVusdk ekg txkA izxfrokn] iz;ksxokn] ubZ dfork lsydj v/kqfud rel-kfgR; dh fofo/k eq[kh lkfgfR;d v kUnksyu o izo`fRr;k¡ mHkjdj v k;hA fgUnh x| dsfodkl esa Hkh mYys[kuh; ifjorZu tksusdsv uqi gksus yxsA Nk=ksadksv/kqfud lsv/kqfud dkRr j ;qx rd dk lkfgfR;d fooj.k ;gk¡ ij gks tkrk gS v r% iz eq[k l= dsfgUnh lkfgR;k;;u dh ifjorZu ikB~;Øe lsgks tkrk gS fd Nk=ksadksfgUnh lkfgR; dsbfrgkl lsiwjkZ: i lsv oxr gksuk v kl ku gks tkrk gSA

v/kqfud fgUnh lkfgR; dk fodkl ¼19oha "krkCnh d sckn½

- v kfndky dh i`"BHkwfe
- fgUnh uotkxj.k v kSj v kfndkyhu dfork dh izeq[k fo"ks"krk,¡
- Hkkjrsanq ;qx dh i`"BHkwfe v kSj izeq[k izo`fRr;k¡
- Hkkjrsanqe.My dsdfo;ksadk ifjp;
- f}osnh ;qx dh i`"BHkwfe v kSj izeq[k fo"ks"krk,¡
- f}osnh ;qx dsizeq[k dfo;ksadk ifjp;
- Nk;kokn dh i`"BHkwfe v kSj izeq[k fo"ks"krk,¡
- izeq[k Nk;kokhdfo;ksadk ifjp;
- Nk;kokksRrj dkO;kUnksyu& izxfrokn] iz;ksxokn] ubZ dfork] ledkyhu dfork] v dfork] gkykokn] udsaokn
- v/kqfud lkfgR; %fof"k"V miyfC/k;k¡

lanHkZ xzUFk %

1	uansnqykjsckt i;sh	%	v/kqfud lkfgR;] jkt dey izdk"ku] ubZ fnYyh
2	MkW jko izlkn feJ	%	fgUnh lkfgR; dk bfrgkl
3	MkW uxsUnz	%	v/kqfud dkO; dh izo`fRr;k¡
4	MkW jkefoykl "kekZ	%	yksd tkxj.k v kSj fgUnh lkfgR;
5	MkW jkepanz frokjh	%	fgUnh x| lkfgR;] fo"ofo|ky; izdk"ku okjk.kl h
6	uansnqykjsckt ibZ	%	cHloha "krkCnh dk fgUnh lkfgR;
7	y{eh lkxj ok".kZ;	%	Lokra=;ksRrj fgUnh lkfgR; dk bfrgkl
8	cPpu fl g	%	fgUnh lkfgR; dk nwljk bfrgkl
9	ukeoj fl g	%	nwljh ijEijk dh [kkst
10	MkW xqykc jk;	%	fgUnh lkfgR; dk lqcks/k bfrgkl
11	MkW gtkjh izlkn f}osnh	%	fgUnh lkfgR; % mn~Hko v kSj fodkl
12	MkW x.kifr panz xqIr	%	fgUnh lkfgR; dk oSKkfud bfrgkl
13	f"kodqekj feJ	%	lkfgR; bfrgkl v kSj laLd`fr
14	MkW lq;sk"k dqekj tSu	%	fgUnh lkfgR; dk bfrgkl % u;s fopkj&ubZ nf"V] okk.kh izdk"ku] ubZ fnYyh
15	ukeoj fl g	%	v/kqfud lkfgR; dh çoRr;k] yksd Hkkjrh çdk'ku] bykgkckn

LHC5202

fgUnh dh vU; x| fo/kk,¡ ¼ßPNd½

fgUnh dh vU; x| fo/kkvksa dh tkudkjh iznku djus okyk Nk= jpukRed dk;Z esa lQy gksxk fd mlsfucak y{ku] js[kkfp=] laLej.k] Mk;jh] thouh] vkRedFkk] fjiksrkZ vkfn fy[kus dsfy, og Lor% vH;Lr gksxkA bu fo/kkvksa dk v/;;u fgUnh lkfgR; dsv|ru :iksa dk l`tpukRed Kku iznku djsxkA Nk= leku lkfgfR;d fo/kkvksa dks[kksa lds xk vkSj Lo;agh vH;kl djusds yk;d gksxkA

vk/kqfud fgUnh vU; x| fo/kk,¡

- fgUnh fucak dk mnHko vkSj fodkl
- fo"ks'k fucakdkj o pqusgq fucU/k ¼Hkkjrsanq] egkohj izlkn f}osnh] jkepanz "kqDy] gtkjh izlkn f}osnh o fo|kfuokl feJ½
- fgUnh vkykspuk dk mnHko vkSj fodkl
- fgUnh ,dkadh % mnHko vkSj fodkl
- Mk;jh & bykpan tks'kh] eqfDrcks/k] vKs;
- js[kkfp= & egknsoh oekZ] jkeo`{k csuhiqjh
- fjiksrkZ & jkgqy lkad`R;k;u] fueZy oekZ] egsu jkdš'k
- laLej.k] thou o vkRedFkk & johUnz dkfy;k] tkudhcYyHk "kkL=h] egknsoh xkaskh] tokgjyky usg: vkfn dk lai{kr foospu

I aHkZ xzUFk %

1	f"ko "kadj iz lkn oekZ	%	j[kk,¡ Lefr;k] jk dey izdk"ku] ubZ fnYyh
2	jkeo`{k csuhiqjh	%	cwaks dk ØUrk
3	bykpan tks'kh	%	Mk;jh dsQVsiUus
4	jkgqy lkad`R;k;u	%	okYxk lsxaxk
5	jkgqy lkad`R;k;u	%	vFkkrks ?kqDdM+ ft Kklk
6	jkepUnz frokjh	%	fgUnh dh ubZ x| fo/kk,¡
7	vKs;	%	cHk ohal nh dk xkaso
8	jkepanz "kqDy	%	fpUrkef.k Hkkx & ,d r Fkk Hkkx & nk
9	johUnzukFk feJ	%	bDdhl oha lnh dk fgUnh lkfgR; % le; vkSj losnuk] ykdHkkjrh izdk"ku] byk gkckn
10	tojheYy ikj[k	%	vk/kqfud fgUnh lkfgR; dk ewY;kadu vkSj iqueZwY;kadu] vukfedk izdk"ku] fnYyh
11	Sri. Aurobindo	:	on translating Kalidasa: Collected works, Vol. 1 & 2, Pondichery
12	Prabhakar Machwe	:	Kabir (translation), Sahithya Academy, New Delhi
13	Sussen Bassnet	:	Mc. Guire, translation Studies, London, Methuen
14	Sussen Bassnet	:	Mc. Guire, Post Colonial translation, New York, Routledge
15	Usha Nilson	:	Surdas (translation), Sahithya Academhy, New Delhi
16	Rita Kotari	:	Translating India, Foundation Books Pvt. Ltd, Delhi
17	Dr. Manu Mittal	:	Ed. 2008, Culture and Societis in transition : India, Russia and other CIS countries, New Delhi, Shipra
18	Sasi Thiwari	:	Ed. 2008, Ancient Indian Literary heritage – I, Contemporary world order: A Vedic perspective, New Delhi, Prathibha Prakashan
19	Lawrence Venuti	:	Ed. 2000, The Translation Studies Reader, New York, Routledge
20	Bijoy Kumar Das	:	The Horizon of Translation studies, New Delhi, Atlantic Publishers & distributers, 1998
21	Rukmini Bhaya Nair	:	Translation Text and Theory of the Paradigm of India, New

			Delhi, Sage Publishers, 2002
22	Sussen Bassnet & Harish Trivedi	:	Post Colonial Translation, New York, Routledge, 2000
23	Sussen Bassnet & Harish Trivedi	:	Problem of translation, Ndew York Routledge, 2000
24	Peter Barry	:	Beginning Theory: An introduction to Literary and Culture theory, Manchester University press
25	Terry Eagleton	:	Translation "Across Cultures"
26	Edward Sapir	:	Culture thought and Personality & University of California, Berkele

LHC5203

vuqfnr fo”o lkfgR;

fgUnh lkfgR; ds v/;;u ds lkFk Nk=ksa dks bl rF; ls ifjfpr djkuk gS fd fgUnh lkfgR; esa Q Dr lalkuk fdlh [kkl ;k vyx&Fkyx iM+s ekuoh; lenkq; dh u gksdj lexzeud;rk dh lalkuk dk ,d fgLlk gSA bl rF; ls ifjfpr djkus ds fy, fo”o lkfgR; ds fgUnh esa vuqfnr dÙr;ksa dk v/;;u dk ek/;e cuk;k x;k gSA bl [k.M esa fo”o HkkÔkkvksa dh fofHkUu vuqfnr dÙr;ksa ds ek/;e ls Nk=ksa dks ekuoh; lenkq; dh lalkuk ls ifjfpr djk;k tk;sxkA

vuqfnr fo”o lkfgR;

- vuqfnr fo”o lkfgR; dk lafÔkIr bfrgkl
- pquh gqbZ vuqfnr jpukvksa dk v/;;u& miU;kl %ek; ¼xksdhZ½ vtuch ¼vYcsj dkew½ vHkkxs ¼foDVj º;wxks½ ,dka ds lSo’kZ ¼ekD[kZ½ v Qhe dk leqnz ¼v ferkHk ?kks’k½
- dgkuh %vk[kjh iRrk ¼vks gsujh½ xqykch vkbl Øhe ¼el Z: nqjsk½
- ukVd % “kkdqUry e~ ¼dkfynkl½ eSdcsFk ¼”ksDlfi;j½ vuqkn& cPpu½ [kfM+k dk ?ksjk ¼czsDr½ vuqkn& deys”oj½ xqfM+k dk ?kj ¼bClu½
- dfork % QSS vgen QSS] ukft e fgder] ikCyks usnk

lanHkZ xzUFk %

1	_’kHkns o “kekZ	%	fo”o lkfgR; ,oa vuqkn % fgUnh dk lanHkZ
2	gksej	%	vksMsl h ¼vuq½ jes”kpUnz flUgk] jktdey izdk”ku] ubZ fnYyh
3	gksej	%	bfy;M] ¼vuq½ jes”kpUnz flUgk] jktdey izdk”ku] ubZ fnYyh
4	dUgS;kyky vks>k	%	Hkkjrh; J\`sB dgkfu;k¡ ¼nks [k.M½ yksdHkkjrh izdk”ku] bykgkckn
5	vHk; dqekj	%	fo”o dh J\`sB dgkfu;k¡ v#.kk izdk”ku
6	fodkl [k=h	%	fo”o izfl) ysk[kd] jktHkkÔkk iqLrd izfr’Bku
7	“ksDlfi;j	%	tqfy;V lhtj] ¼vuq½ jkes; jk?ko] jktiky izdk”ku] ubZ fnYyh
8	“ksDlfi;j	%	rwQku] ¼vuq½ jkes; jk?ko] jktiky izdk”ku] ubZ fnYyh
9	“ksDlfi;j	%	cfuZl dk lkSnkxj] ¼vuq½ jkes; jk?ko] jktiky izdk”ku] ubZ fnYyh
10	“ksDlfi;j	%	tSls rqe pkgks ¼vuq½ jkes; jk?ko] jktiky izdk”ku] ubZ fnYyh
11	v#.kk rhjk;	%	ekewyh pht ksa dk nsork] jktiky izdk”ku] ubZ fnYyh
12	ikyVks dksYgk	%	cMkZ] gkijdkWfyUl] ¼fgUnh½
13	ekgud’.k cktjk	%	bfy;V vkSj fgUnh lkfgR; fpUru] okf.kh izdk”ku] ubZ fnYyh
14	E. Chayfitz	:	The Poetics of Imperialism “Translation and Colonization form the tempest toTarzan, UP, London
15	E. A. Gutt	:	Translation and relevance: Cognition and Context, UP, London
16	B. Hation and I Massion	:	Discourses and the translation, London, Longman
17	Frank. J Lechneer and Bali John	:	Ed. The Globalization Reader, Blackwill, Oxford
18	xksdhZ	%	ek; ¼vuqfnr½
19	vYcsj dkew	%	vtuch ¼vuqfnr½
20	ekD[kZ	%	,dka ds lSo’kZ
21	czsr	%	[kfM+k dk ?ksjk ¼vuqfnr½

LHC5204

Hkkjrh; ,oa ik'pkR; dkO;"kkL=

lkfgR; dks le>us ds fy, ftu ;qDr;ksa dk iz;ksx fd;k tkrk gS mUgsa lkfgfR;d fl)kar dh laKk nh tkrh gSA bl ifjis{; esa iwoZ rFkk ikf"pe ds fo}kuksa us dqN ekU;rk,a fu/kkZfjr dh gSaA ;wku l s ysdj Hkkjr; lkfgR; fparu dk bl ekeys esa mnkgj.k fn;k tk ldrk gSA lkfgfR;d fl)kar dks Hkkjrh; o ik'pkR; dkO;kaxksa ds ek/;e ls Nk=ksa dks bl [k.M esa v/;;u djk;k tk;sxkA bl ds v;kok bl [k.M esa ofHkUu jktuhfrd &nk'kZfud okn ds lkFk fj, l s lkfgR; v/;;u o eW;kadu dh izfr fof/k;ka o fl)kar ls Hkh Nk=ksa dk ifjp; djk;k tk;sxkA

Hkkjrh; ,oa ik'pkR; lkfgR; fl)kar

- Hkkjrh; lkfgR; fpUru dh ijaijk ,oa ofHkUu lEiznk;& dkO; iz;kstu] dkO; gsrq] dkO; y{k.k] dkO; izdkj.k
- jl fl)kar] vyadkj fl)kar] jhfr fl)kar
- /ofu fl)kar] oØksfDr fl)kar] vkSfpR; fl)kar o dkO; fl)kar ds va'% EcU/k
- ik'pkR; dkO; fparu dh if"peh ijaijk vkSj izeq[k fl)kar& IysVks dk vuqdj.k fl)kar] vjLrw dk vuqdj.k vkSj fojspu fl)kar] ykatkbul dk mnkRr fl)kar] oMZloFkZ dk dkO;Hkk"kk fl)kar] dkWfjt dk dYiuk fl)kar] Øksps dk vfHkO;atukokn] vkbZ ,0 fjpMZ dk eW; vkSj HkkÔkk fl)kar] bfy;V dk fuoSZfDrdrk fl)kar
- dyk dyk ds fy,] LoPNanrkokn] ekDlZoknh vkykspuk] vfLrRookn] lajpukokn] mRrj lajpukokn] ubZ lehZ{kk

laHkZ xzUFk %

1	";kel qUnj nkl	%	lkfgR;kykspu] bafM;u izsl] iz;kx
2	xqykcjk;	%	dkO; ds :i] vkRekjke ,.M lal] fnYyh
3	jkepUnz "kqDy	%	dkO; izfr] fgUnh Hkou] bykgkckn
4	d'.knso >kjh	%	lkfgR;kykspu] ijkx izdk'ku] ubZ fnYyh
5	MkW uxsUnz	%	vjLrw dk dkO;"kkL=] vkRekjke ,.M lal] fnYyh
6	x.ks'k =;ad ns'ikaMs	%	Hkkjrh; lkfgR;"kkL=] ikiqyj cqd fMiks cacbZ
7	cyno mik/;k;	%	Hkkjrh; lkfgR;"kkL=] okjk.klh
8	cPpu flag	%	Hkkjrh; ,oa ik'pkR; dkO;"kkL= % rqyukRed v/;;u] gfj;k.kk lkfgR; vdknehZ] ipdwyk
9	jk/kkcYyHk f=ikBh	%	Hkkjrh; dkO;"kkL= dh vkpk;Z ijaijk] fo"ofo|ky; izdk'ku] okjk.klh
10	mn;Hkkuq flag ¼laiknd½	%	Hkkjrh; dkO;"kkL=] jkt'k izdk'ku] ubZ fnYyh
11	lR;nso pkSkjh	%	Hkkjrh; dkO;"kkL= fparu] vyadkj izdk'ku] okjk.klh
12	jkeewfrZ f=ikBh	%	Hkkjrh; dkO; foe"kZ okk.kh izdk'ku] ubZ fnYyh
13	cyno mik/;k;	%	Hkkjrh; lkfgR;"kkL=] okjk.klh
14	lqjsUnz ,l0 ckjfyaxs	%	Hkkjrh; lkSan;Z fl)kar dh ubZ ifjHkk'kk] Hkkjrh; Kkuihb] ubZ fnYyh
15	ukeoj flag ¼laiknd½	%	dkyZekDlZ % dyk ,oa lkfgR; fpUru] jkt dey izdk'ku] ubZ fnYyh
19	lR;nso feJ	%	ik'pkR; fl)kar % v/kqkru laHkZ ykd Hkkjrh izdk'ku] bykgkckn
20	fuekZyk tSu	%	dkO; fparu dh if"peh ijaijk] ok.kh izdk'ku] ubZ fnYyh
21	vkpk;Z nsosUnzukFk "kekZ	%	dkO; ykdj] fcgkj jk'Vªhk"kk ifj'kn] iVuk
22	vkpk;Z fo"oškj	%	dkO; izd'kk] KkueaMy fyfeVsM] okjk.klh
23	fl;kjke Ýk;M	%	euksfo"ys'k.k] jktiky ,.M lal] fnYyh
24	f"ko dqekj feJ	%	ekDlZoknh lkfgR; fparu % bfrgkl rFkk fl)kar] e/;izns'k xzaFk vdknehZ] Hkksiky
25	nsosUnzukFk "kekZ	%	ik'pkR; dkO;"kkL=] uškuy ifCyf"kax gkml] fnYyh
26	HkxhjFk feJ	%	ik'pkR; dkO;"kkL= % bfrgkl] fl)kar vkSj okn] fo"ofo|ky; izdk'ku] okjk.klh

27	v "kskd dsydj	%	izkphu Hkkjrh; lkfgR; ehekalk %,d v/;;u] jkt dey izdk'ku] ubZ fnYyh
28	fuez; k tSu	%	jl fl) kar vkS l kS; Zl kfgR;] ok.kh izdk'ku] fnYyh
29	ih0oh0dk.ks	%	l ad`r dkO; "kkL= dk bfrgkl] eksrhyky cukjl hnkl] okjk.kl h
30	,l 0d s0M s	%	l ad`r dkO; "kkL= dk bfrgkl ¼nks [k.M½ fcgkj jk'VªHkk'kk ifj'kn] iVuk
31	fuez; k tSu	%	mnkÙkrk dsfo'k; eas ok.kh izdk'ku] ubZ fnYyh
32	W K Wimsatt & Beardsley	:	Literary Criticism – A Short History, Oxford IBH, New Delhi
33	I A Richards	:	Principles of Literary criticisms
34	jkepanz frokjh	%	Hkkjrh; ,oa ik'pkR; dkO; "kkL= dh :ij{kk] yksd Hkkjrh izdk'ku] bykgkckn
35	"kksHkkuhz "kekZ	%	v k/kqfud dkO; "kkL=] yksd Hkkjrh izdk'ku] bykgkckn
36	fu"kk v xzoky	%	Hkkjrh; dkO; "kkL=] yksd Hkkjrh izdk'ku] bykgkckn
37	;ksxsUnz izrki fl ag	%	Hkkjrh; dkO; "kkL=] yksd Hkkjrh izdk'ku] bykgkckn
38	x.kifr pUnz xqIr	%	jl fl) kar dk iqufoZospu] yksd Hkkjrh izdk'ku] bykgkckn
39	fuez; k tSu	%	ik'pkR; l kfgR; fparu] jk/kkd`'.k izdk'ku] ubZ fnYyh
40	d #.kk'kadj mik/;k;	%	ik'pkR; dkO; fparu] yksd Hkkjrh izdk'ku] bykgkckn

LHC5205

rqyukRed lkfgR; iz”of/k

iłrqr [k.M esa rqyukRed lkfgR; ds iz;kstu miknkuksa vkSj ewyk/kkjksa dks le>us dk iz;kl fd;k tk;sxk] lkFk&lkFk lkfgR;sfrgkl dh jpuk] lkfgfR;d lkaLd`frd vkSj ,sfrgkfld vk;keksa ds lanHkZ esa rqyukRed lkfgR; ds vUrZxr fofo/k izfØ;kvksa dh vksj Hkh /;ku vkdf"kZr fd;k tk;sxk] ftlls Nk=ksa dks vkoxr djkus dk iz;kl HkhA vuqøe v/;;u dk jkLrk [kksy j[kus ds fy, ueuw ds rkSj ij fgUnh lkfgfR;d fo/kk esa Nk;kokn dks fy;k tkrk gS vkSj jkeo`{k csuhiqjh ds O;fäRo] fo/kk ls lsrq ca/kus ds dk;Z dks vkxs c<+kus ds fy;s fn;k tk ldrk gSA cgqla[;k lkfgR; dk dsjpuk dkSky dks tkuus ds fy, fgUnh ds dfo&miU;kl dkj dks djhc ls tkuus dk volj fn;k tk ldrk gSA lkaLd`fr lkfgR; dh fojkl r esa fo”oHkkÔkk esa jpuk gksh gSrks fgUnh lkfgR; esa Hkh ml dk vuqokn.k n`f"Vkus dks feyrk gS vkSj iz”of/k esa bl laca/kksa dk flyflyk le>k;k tk ldrk gSA mRrj miU;kl dh jpuk vkSj “kjr dsf[kykMh ¼ijaijk½ dk jpukl e; tkuus ls rqyukRed lkfgR; dk lfgR;sj fo/kkvksa ls lEcU/k LFkkfir djrs fn[kk;s tk ldrs gSA Nk= bl ubZ fo/kk ls ifjfpr gh ugha gksa cfYd ijaijk ls eqDr gksdj rqyukRed lkfgR; ds u;s ik;nkuksa ij pyus yxsaA vuqøer v/;;u ls Nk=ksa dks lexz lkfgR; ds fujh{k.k vkSj vkLoknu dk u;k rjhdk ekywe gks ldsxkA

rqyukRed lkfgR; iz”of/k

- rqyukRed lkfgR; % iz;kstu miknku
- rqyukRed lkfgR; ds ewyk/kkj
- Nk;kokn vkSj jkeo`{k csuhiqjh
- fgUnh ds jpukdkj mudh jpuk ds lLrjHks
- fgUnh x| fo/kkvksa dk rqyukRed v/;;u
- fgUnh o fgUnhrj HkkÔkk dh jpukvksa dk rqyukRed v/;;u
- fgUnh o fgUnhrj HkkÔkk ds jpukdkjksa dk rqyukRed v/;;u
- dkfynkl ds ^es?knwr* lekuq jkd"k ds ^vk'kk<+ dk ,d fnu* rd
- mRrj miU;kl dh jpuk vkSj “kjr dsf[kykMh ¼ijaijk½ dk jpuk le;

lanHkZ xzaFk %

1	banzukFk pkS/kjh	%	rqyukRed lkfgR; % Hkkjrh; ifjis{;
2	Q.kh”k flag	%	miU;kl dk ijaijk vkSj xkaf/kZ ixfr i<+k'ku] fnYyh
3	enuyky e/kq	%	ijaijk vkSj xka/kh
4	lfjrk jk;	%	dchj vkSj rqylh dh lkekftd n`f"V] ok.kh i<+k'ku] ubZ fnYyh
5	lh0,l0 ;kaUuku	%	dgkuh lkfgR; dk rqyukRed v/;;u] ok.kh i<+k'ku] ubZ fnYyh
6	“kdhyk [kkuue	9	vk/kqfud fgUnh vkSj rsyxw lkfgR; esa vkyksspuk] fefyUn i<+k'ku
7	fot; ,oa lksh=k	9	ljwnkl ,oa rqylhnkl dk jkeHkfDr dkO;
8	t;šk ,l0 Q.kh	9	jfëjFkh ,oa pw<+q esa d.kZ dk nfyr foe”kZ] i[kMkbl ifCy”kl
9	jkt šk t8 jkoy	9	Jh vjfoUn n”kZu dsvkyksd esa lq(e=kuUnu ia vkSj lqHknzk dk dkO;] i[kMkbl ifCy”kl Z
10	f”ko dqekj feJ	9	lkfgR; dk bfrgkl vkSj laLd`fr] ok.kh i<+k'ku] ubZ fnYyh
11	fot; ekgu flag	9	le; vkSj lkfgR;] jk/kkd`".k i<+k'ku] ubZ fnYyh
12	johUnzukFk JhokLro	9	lkfgR; dk Hkfo’; fpUru] jk/kkd`".k i<+k'ku] ubZ fnYyh
13	vehv vk/kkj fuMj	9	lekpkj lalYiuk vkSj vuqokn] tokgj iqLrd ky;] eFkqjk
14	Susan Bassnett		Comparatrive Literature: A Critical introduction, 1993
15	Sandra Bermann & Micheal wood	:	EDS Nation, Language and the Ethics of the translation
16	Charles Berheiner	:	Ed. Comparative Literature in the age of Multi Culturalism
17	Robert J Clements	:	Comparative Literature as an Academic Discipline
18	Claudio Guillen	:	The Challenge of Comparative Literature
19	Margaret Higonnet	:	Border Work: Feminist engagements with Comparative

			Literature
20	Francois Jost	:	Introduction to Comparative Literature
21	Earl Miner	:	Comparative Poetics
22	S. S. Pawar	:	Comparative Literature Studies: An introduction
23	Huan Saussy	:	Ed. Comparative Literature In the Age of Globalization
24	Hans-joachim Schultz and Philip H Rein	:	Comparative Literature: Early years
25	Ulrich Weisstein	:	Comparative Literature & Literary theory
26	E. Chayfitz	:	The poetics of Imperializm " translation & Colonization form the tempest to Tarzan, UP, London

LHC5301

##ledkyhu fgUnh dfork

ledkyhu fgUnh dfork [kaM esa fgUnh dfork ds uohu dkO; lanHkks&dkO; cks/k ds mn; ds dkj.kksa ds lkFk dfork dh ijaijk esa gq, fodkl ls Nk=ksa dk ifjp; djk;k tk;sxkA fofHkUu dfo;ksa dh izfrfuf/k dforkvksa ds ek/;e ls dfo;ksa ds jpukdeZ ls rks Nk=ksa dk ifjp; djk;k gh tk;sxk] lkFk gh Nk=ksa dh fo"ys'k.kkRed &vkykspukRed {kerk ds ifj'dkj gsrq pquh gqbZ dforkvksa ds ikBkRed foospu ij gh /;ku dsfUnzr fd;k tk;sxkA

ledkyhu fgUnh dfork

ledkyhu fgUnh ds 15 izfrfuf/k dfo vkSj mudh pquh gqbZ dfork,¡

- eSfFkyh"kj.k xqIr ¼ikSa uoe lxZ½
- t;"kadj izlkn ¼dkek;uh& J)k vkSj bMk lxZ½
- lw;ZdkUr f=ikBh ^fujkyk* ¼jke dh "kfDr iwtk½
- lfPpnkuan ghjkuan okRL;k;u ^vKs;* ¼vlk/; oh.kk½
- jke/kkjh flag ^fnudj* ¼dq#{ks= & 'k'B lxZ½
- dsnkjukFk vxzoky ¼pan xguk ls ykSVrh csj½
- vKs; ¼unh ds }hi] vlk/; ohk½
- eqfDrcks/k ¼Hkwy xyrh] czãjk{kl½
- "ke"ksj cgknqj flag ¼ydj lh/kk ukjk] VwVh gqbZ fc[kjh gqbZ½
- j?kqohj lgk; ¼gWalks gWlks tYnh gWlks] yksx Hkwy x,½
- lqnkek ik.Ms; ^/kwfey* ¼uDly ckM+h] iVdFkk½
- dsnkjukFk flag ¼cK?k½
- jktš"k tks"kh ¼ d vkfnoklh yM+dh dh bPNk½
- v#.k deky ¼d uotkr cPph dks l;kj½
- mn; izdk"k ¼fr Ccr] cpkvks ,d Hkk'kk gq, dj rh gS½

l aHkZ xzaFk %

1	ua fd"kksj uoy	%	ledkyhu dkO; /kkjk
2	fo"oukFk izlkn frokjh	%	ledkyhu fgUnh dfork] ykd HkkjrhizdkÔku] bykgkckn
3	MkW gjn;ky	%	fgUnh dfork dk ledkyhu ifjn";] vkys'k izdkÔku
4	jktš"k tks"kh	%	ledkyhu dfork vkSj ledkyhurk
5	,0 vjfoank{ku	%	ledkyhu dfork dh Hkkjrh;rk] vkuan izdkÔku] dydRrk
6	ckyh flag	%	dfork dh ledkyhurk
7	euhÔkk >k	%	izdfr] i;kZoj.k vkSj ledkyhu dfork
8	jatuk jktnku	%	ledkyhu dfork vkSj n"kZu
9	txUukFk iaMr	%	ledkyhu fgUnh dfork dk ifjis{;] ueu izdkÔku
10	MkW jk/kk "kekZ	%	O;fDrijd ledkyhu fgUnh dfork] izdkÔku laLFkku
11	,0 vjfoank{ku	%	ledkyhu fgUnh dfork
12	jfo JhokLro	%	ijaijk bfrgkl cks/k vkSj lkfgR;] iks;UVj ifCyd"kUl
13	çk- iq'irk volLFkh	%	v/kqfud fganh dkO;kykspu ds lkS o"kZ] jk/kk—".k çdkÔku] ubZ fnYyh
14	ukeoj flag	%	vk/kqfud lkfgR; dh çòfr;k] ykd Hkkjrh çdkÔku] bykgkckn
15	d#.kk"kadj mik/;k;	%	vk/kqfud dfork dk iqufjk[kk] jk/kk—".k çdkÔku] ubZ fnYyh
16	jkeLo:i prqosZnh	%	vk/kqfud dfork ;k=k] ykd Hkkjrh çdkÔku] bykgkckn
17	'kaHkqukFk 'kekZ	%	vk/kqfud dkO; ;k=k] ykd Hkkjrh çdkÔku] bykgkckn
18	fo'oukFk çlkn frokjh	%	vk/kqfud fganh dfork] ykd Hkkjrh çdkÔku] bykgkckn

19	dsakjukFk flag	%	vk/kqfud fganh dforka easfcEcfo/kku] jkt dey izdk"ku] ubZ fnYyh
20	ekyrh flag	%	vk/kqfud fganh dkO; vkSj iqjk.k dFkk] jkt dey çdk'ku] ubZ fnYyh
21	,0 v v foÜnkFku	%	ledkyhu fgUnh dfork] jkt dey çdk'ku] ubZ fnYyh
22	ih0 jfo ¼laikn½	%	ledkyhu dfork dsvk;ke] yksdHkkjrh çdk'ku] bykgkckn
23	fo"oukFk izlkn frokjh	%	ledkyhu fgUnh dfork] yksdHkkjrh çdk'ku] ubZ fnYyh

LHC5302

ledkyhu fgUnh dFkk lkfgR;

Hkkjrh; lkfgR; esa dFkk lkfgR; dk izkphu :i ^iapra=* esa ekStwn gS ysfdu vk/kqfud dFkk lkfgR; viuh usHkkoc¨ksk] lkekftd i`'BHkwfe dsdkj.k fof"k'V vofLFkfr j[krk gSA dgkuh o miU;kl fo/kk dk mn~; vk/kqfud ;qx dh fcYdqy uohure ifj?kVuk gSA bl fo/kk dk rkfdZd rkdsfof"k'V :i lst Mqfko gSA bl [k.M esa fgUnh dFkk lkfgR; dsfofHkUu :i o bu :iksa dh fof"k'Vrk ls Nk=ksa dks lexz :i lsifjfpr djk;k tk;sxkA dgkuh o miU;kl fo/kk dslkFk tMha gqbZ lS)kfUrd rk dslkFk gh bu fo/kkvksa ds eW;kadu dh izfof/k lsHkh Nk=ksa dksifjfpr djk;k tk;sxkA bldsvykok fofHkUu miU;klksa o dgkfu;ksa dsek/;e lsNk=ksa dh fo"ys'k.kkRed vkykspukRed e'kkk dk ifj'dkj djusdk iz;kl fd;k tk;sxkA

ledkyhu fgUnh dFkk lkfgR;

ledkyhu fgUnh dh izfrfuf/k nl dgkfu;ksa vkSj ikap miU;klksa dk v/;;u

dgkuh

- pUnz/kj "kekZ ^xqysjh* & mlusdgk Fkk
- t;"kadj izlkn & xqaMk
- izsepan & dQu
- Hkh"e lkguh & phQ dh nkor
- Q.kh"oj ukFk ^js.kq* & rhljh dle
- eUuwHk.Mkjh & f=”kadq
- fueZy oekZ & ifjans
- Kkujatu & fi{k

miU;kl

- izsepan & xksnku
- Jhyky "kqDy & jkx njckjh
- euksgj ";ke tks'kh & dlj
- ukfljk "kekZ & ftUnk eqgkojs

lanHkZ xzUFk %

1	deys"oj	%	ubZ dgkuh dh Hkwfedk
2	jkenj"k feJ	%	fgUnh dgkuh % varjax ifjn";
3	e/kqjs"k	%	fl yfl yk
4	fou; ekgu fl g	%	vkt dh fgUnh dgkuh] Hkkjrh; Kkuih B] ubZ fnYyh
5	ukeoj fl g	%	dgkuh % ubZ dgkuh] jkt dey izdk"ku] ubZ fnYyh
6	bUnzukFk enku	%	fgUnh miU;kl ksa dh igpku vkSj ij[k
7	xksiky jk;	%	fgUnh miU;kl dk bfrgkl] jkt dey izdk"ku] ubZ fnYyh
8	jkeLo :i prqosZnh	%	miU;kl vkSj ykd thou] ixfr izdk"ku] ubZ fnYyh
9	fot; ekgu fl g	%	le; vkSj lkfgR;] jk/kkd`".k izdk"ku] ubZ fnYyh
10	ehjk xkSe	%	vfLrRo nks'n"kk dk fgUnh lkfgR;] ok.kh izdk"ku] ubZ fnYyh
11	jkefoykl "kek	%	izsepan vkSj mudk ;qx] jkt dey izdk"ku] ubZ fnYyh
12	tkQj jtk	%	dFkkdkj izsepan] ykd Hkkjrh izdk"ku] bykgkckn
13	f"ko dqekj feJ	%	izsepan % fojklr dk lokyj ok.kh izdk"ku] ubZ fnYyh
14	bUnzukFk enku	%	izsepan %,d foospu] bUnzukFk enku] jk/kkd`".k izdk"ku] ubZ fnYyh
15	MkW0 lh0,e0 ;kgUuku	%	ledkyhu fgUnh dgkuh % varjax igpku] ykd Hkkjrh çdk"ku] ubZ fnYyh

16	MkW fot; y{eh	%	led kyhu fgUnh miU;kl %le; lslk{kkRdkj] jk/kkd'.k çdk'ku] ubZ fnYyh
17	lR; dsaql kdar	%	fgUnh dFkk lkfgR; %,d nf'V] jk/kkd'.k çdk'ku] ubZ fnYyh
18	y{eh xkSe	%	mRrj vk/kqfudrk vkS ledkyhu fgUnh lkfgR;] jk/kkd'.k çdk'ku] ubZ fnYyh

LHC5303

ledkyhu fgUnh ukVd ,oa jaxeap

fgUnh ukVd ds bfrgkl dh ijaijk iwoZ Hkkjrsanq dky ls foS|eku jgh gS Hkkjrsanq dk fl) kar i'pkrd :i lsukVd kadksdsUnzea j[kdj gS ysdu iwoZ hu ukVdkadh lheka) rk v/kqfud Kku&foKku vkSj rkfdZdrk lsgS fgUnh uotkxj.k dslkFk ftl lkfgfR;d HkkoHkwfe vkSj lkekftd ;FkkFkZ dk n"kZu fgUnh dsjpukdkj ksus fd;k] ml dh otg lsukVdksadsdF; dslkFk ukVd kadh "kSyh&iz; fo/k dk Hkh yxkrkj fodkl gksk x;k gS ^va/ks;qx* lsv/kqfud fgUnh ukVd kadk v/kjrkk ekudj lekdkyhu ukVddkjksadk ukVd kadsdF; o jax&f"kYi rFkk jaxeap iz fo/k;ksadk v/;;u djdsv/kqfud fgUnh ukVd kadsbfrgkl dk lexzrk lsifjp; djk;k tk;sxkA

lekdkyhu fgUnh ukVd ,oa jaxeap

lekdkyhu fgUnh dsifrfuf/k iap ukVd kadk jaxeap dh nf"V lsv/;;u

- v/ks;qx & HkkjrHkw"k.k "kqDy
- v'kk<+ dk ,d fnu & eksgu jkd"k
- dksVZ & txnh'k pUnz ekFkqj
- vU/ks; qx & /keZohj Hkkjrh
- lä; dh ,d jkr & ujs"k esgrk
- fgUnh dh fofHkUu ukV; "kSfy;k; & jkeyhyk] jkl yhyk] tk=k] rek'kk] Lokax] uqDdM+] ikjlh jaxeap] cSyr;u fFk;sVj

lanHkZ xzUFk %

1	iz fl g ,oal qekek vk;Z	%	jax iz Ø;k dsfofo/k vk;ke] jk/kkd`".k izdk'ku] ubZ fnYyh
2	MkW uhye jkBh	%	lkBksÙkj jh fgUnh ukVd] lka; izdk'ku] fnYyh
3	xksoUn pkrd	%	jaxeap % dyk vkSj nf"V] r{kf"kyk izdk'ku] fnYyh
4	dsoy fl g	%	fgUnh ukVd % dyk vkSj vkt] DyfLld ifCyd"ku gkml] fnYyh
5	uses pUnz tSu	%	n"; v n";] ok.kh izdk'ku] fnYyh
6	ch0 ckykpan	%	lkBksÙkj jh fgUnh ukVd % ijaijk vkSj iz;ksx] vUuiwwkkZ izdk'ku] dkuiqj
7	nsohzdqekj xqIrk	%	fgUnh ukV; f"kYi % cnyrh jax nf"V] fi;wk izdk'ku] fnYyh
8	tlok HkkbZ ikaM;k	%	lekdyhu fgUnh ukVd] Kku izdk'ku] dkuiqj
9	iwuh.k v[rj	%	lekdyhu fgUnh ukVd ifjn";] fodkl izdk'ku] dkuiqj
10	iwFkkr "kekZ	%	fgUnh ukVd % bfrgkl] nf"V vkSj lekdyhu ckskj] lka; izdk'ku] fnYyh
11	ne;arh JhokLro	%	fgUnh ukVd eas v/kqfud iz ofÙk;kj jkt k izdk'ku] byrgkckn
12	xksoa pkrd	%	v/kqfud fgUnh ukVd % Hkkf'kd vkSj lokfnd laapuk] r{kf"kyk izdk'ku] ubZ fnYyh
13	HkkjrHkw"k.k "kqDy	%	vU/ks; uxjh
14	txnh'k pUnz ekFkqj	%	dksVZ
15	ujs"k esgrk	%	lä; dh ,d jkr
16	MkW lkeukFk xqIrk	%	ikjlh fFk;sVj mnHko vkSj fodkl] yksd Hkkjrh izdk'ku] byrgkckn
17	nsohzkt vaqj	%	jaxeap dk lkSan;Z"kkL=] jkt dey izdk'ku] ubZ fnYyh
18	eksgu jkd"k	%	ukV; niZ.k] jkt dey izdk'ku] ubZ fnYyh
19	txnh'kpUnz ekFkqj	%	ijaijk'khy ukV;] yksd Hkkjrh izdk'ku] ubZ fnYyh
20	egs"k vkuan	%	jaxeap dsfl) kar] jkt dey izdk'ku] ubZ fnYyh
21	ješk jkt gal	%	ukV; izLrqfr] jkt dey izdk'ku] ubZ fnYyh

LHC5401

vuqokn fl)kar

fofHkUu HkkÔkkvksa ds chp lEcU/k LFkkfir djus rFkk lkekftd ,oa lkaLd`frd vknku&iznku esa vuqokn dh vge Hkwfedk dks js[kkafdr djuk bl ikB~;Øe dk mís”; gSA vuqokn dh izfØ;k ,oa fl)karksa ds lkFk&lkFk fofHkUu HkkÔkkvksa ds lanHkZ esa vuqokn dh leL;kvksa dk v/;;u djus ds fy, Hkh bl ikB~;Øe dks rS;kj fd;k x;k gSA

vuqokn fl)kar

- vuqokn dh ifjHkkÔkk ,oa izdkj.k
- vuqokn izfØ;k o vuqokn ds izdkj
- ikfjHkkf"kd “kCnkoyh
- e”khuh vuqokn
- vuqokn dh leL;k,¡
- vuqokn dk ewY;kadu
- vuqokn dh lerqY;rk

lanHkZ xzaFk %

1	Hkksyk ukFk frokjh	%	vuqokn fl)kar] “kCndkj izdk”ku] fnYyh
2	MkW- th0 xksihukFku	%	vuqokn fl)kar vkSj iz;ksx] yksd Hkkjrh izdk”ku] bykgkckn
3	MkW- jke xksiky flag	%	vuqokn foKku %Lo:i vkSj leL;k,¡] ik”oZ izdk”ku] vgenkckn
4	jhrk jkuh ikyhoky	%	vuqokn izfØ;k vkSj ifjn`”;
5	lqjs”k dqekj	%	vuqokn fl)kar dh :ijs[kk
6	dSyk”kpanz HkkfV;k	%	vuqokn dyk % fl)kar vkSj iz;ksx] r{kf”kyk izdk”ku] ubZ fnYyh
7	johUnzukFk JhokLro ,oa d`".k dqekj xksLokeh	%	vuqokn fl)kar ,oa leL;k,¡] vkys[k izdk”ku] fnYyh
8	MkW- xksihukFku ,oa daLokeh	%	vuqokn dh leL;k,¡] yksd Hkkjrh izdk”ku] bykgkckn
9	MkW- lqjs”k flagy	%	ltukRed lkfgR; ds vuqokn %Lo:i vkSj leL;k,¡] vkys[k izdk”ku] fnYyh
10	jktef.k “kekZ	%	vuqokn foKku % fl)kar vkSj iz;kstu] lapkj lkfgR; izdk”ku] ubZ fnYyh
11	iwju panz V.Mu ,oa gjh”k dqekj lsBh	%	vuqokn ds fofo/k vk;ke] lkfgR; izdk”ku] ubZ fnYyh
12	MkW- vkjlq	%	lkfgR; vuqokn] lokn vkSj laosnuk] lkfgR; izdk”ku] ubZ fnYyh
13	E Chayfitz	:	The poetics of Imperialism “Translation & Colonization form the tempest to Tarzan, UP, London
14	E A Gutt	:	Translation and relevance: Cognition and Context, UP, London
15	B Hation & I Masion	:	Discourses and the translation, London, Longman
16	Franc J Lechneer & Bali John	:	Ed. The Globalization Reader, Black will, Oxford
17	A . Neubers G. Shreve	:	translation as Text, Kent, Ohio: Kent University Press
18	T Niranjana	:	Sitting Translation: History, Post Structuralism and Colonial Context, Berkeley and Los Angels University and California Press
19	Gayatri Spivak		The Politics of translation outside in the teaching Machine routledge, London
20	Susan Bassnet		Mc. Guire, Translation studies, London, Methuen
21	Usha Nilson		Kabir (Translation), Sahithya Academy, New Delhi

22	Lawrence Venuti		Ed. 2000, the Translation studies Reader, New York, Routledge
23	Bijoy Kumar Das	:	The Horizon of Translational Studies, New Delhi, Atlantic Publishers & Distributers, 1998
24	Rukmini Bhaya Nair	:	Translation Text and Theory the Paradigm of India, New Delhi, Sage Publishers, 2002
25	Susan Bassnet & Harish Trivedi	:	Post Colonial Translation, new York, Routledge, 2000
26	Susan Bassnet & Harish Trivedi	:	Problem of translation, New York, Routledge, 2000
27	Peter Barry	:	Beginning Theory, Chennai, T R Publishers
28	Torry Gideon	:	Translation " Across Cultures
29	Edward Sapir	:	Language, Culture and Personality, University of California & Berkeley
30	MkW ukjk;.k lehj	%	vuqokn %vo/kj.kk vkSj foe"kZ ykd Hkkjrh izdk'ku] ubZ fnYyh
31	MkW t;arh izlknukSV;ky	%	vuqokn fl)kar vkSj O;ogkj] ykd Hkkjrh izdk'ku] ubZ fnYyh
32	MkW Jhukjk;.k lehj	%	vuqokn vkSj mRrj vk/kqfud vo/kkj.kk,¡] ykd Hkkjrh izdk'ku] ubZ fnYyh
33	MkW Jhukjk;.k lehj	%	vuqokn dh izfØ;k %rduhd vkSj leL;k,¡] ykd Hkkjrh izdk'ku] byykgkckn
34	th0 xksihukFku	%	vuqokn dh leL;k,¡] ykd Hkkjrh izdk'ku] byykgkckn
35	d'.k dekj xksLokeh	%	vuqokn foKku dh Hkwfedk] jkt dey izdk'ku] ubZ fnYyh

LHC5001

l`tu ek/;e ys[ku ¼,sfPNd½

Nk=ksa esa vf/kdre laHkkfor dkS'ky ,oa ifjofrZr gks jgs ekuo thou esa rduhdh ds lkFk lkfgR; dh le> fodflr djuk iz;kstuewyd fgUnh dh {kerk,¡ fodflr djus vkSj mls iz;ksx esa ykus ds dkS'ky dk fodkl djus gsrq ;g ikB~;Øe j[kk x;k gSA Nk=ksa esa l`tu ek/;e ys[ku ls ifjfpr djkuk] muesa fpUru dh izfØ;k fodflr djuk] fo"k;oLrq ds izfr le>] jsfM;ks] Vsyhfotu] uohu ekè;eksa esa fofHkUu mi;ksx ds fy, l`tukRed ys[ku dk fodkl djuk ,oa ekuo thou ds fofHkUu igyqvksa dks ljy :i esa izLrqr djus dh {kerk fodflr djuk gSA l`tu ys[ku esa fofHkUu mi;ksxh ik;sa yxuk ,oa fgUnh fo/kkvksa ds ekè;e ls u;k lkfgR; l`ftr djus esa Nk=ksa dh izfrHkk dk fodkl djukA

l`tu ek/;e ys[ku

- l`tu ek/;e ys[ku dk Lo:i o izdkj
- l`tu ys[ku dk bfrgkl
- jsfM;ks ukVd
- MkD;qesaVªh
- VsyhfQYe
- /kkjkokfgd ys[ku
- l`tu o foKkiu ys[ku
- l`tu ek/;eksa dh Hkk"kk

lanHkZ xzaFk %

1	d0,u0 xksoknek] lR;sUnz.k ekdaMs;	%	vkdk'kok.kh okrkZ] rhu [k.M
2	MkW0 jkeLo:i prqosZnh	%	n"; J0; ek/;e ys[ku] r{kf'kyk izdk'ku] ubZ fnYyh
3	nsosUnz bLlj	%	tuek/;e laizs"k.k vkSj fodkl
4	lqf"kZ.kk nhf{kr	%	tul`tu %izd`fr vkSj ijaijk
5	,u0lh0 iar	%	ehfM;k ys[ku fl)kar] r{kf'kyk izdk'ku] fnYyh
6	jes'kpUnz f=ikBh	%	ehfM;k ys[ku
7	jkepanz tks'kh	%	ehfM;k foe"kZ
8	ujs'k feJk	%	ehfM;k ys[ku %Hkkjrh; fparu] n"kZu vkSj lkfgR;
9	lqf"kZ.kk nhf{kr	%	i=dkfjrk tul`tu vkSj tulEidZ
10	uhjtk ek/ko	%	jsfM;ks dk dyk i{k
11	m'kk lDlsuk	%	jsfM;ks ukVd ys[ku
12	ih0d0 vk;Z	%	lekpkj ys[ku] fo|kfogkj] fnYyh
13	ukjk;.k nokys	%	laokn ladyu foKku
14	xkSjh'kadj jSuk	%	l`tu ek/;e ys[ku] ok.kh izdk'ku] fnYyh
15	ua fd'kksj f=[kk	%	laokn ladyu vkSj ys[ku
16	gfjekgu	%	lapkj dyk vkSj i) lapkju
17	iBkqfttaju	%	Vsyhfotu dh nqfu;k
18	lqèkh'k ipkSjh vkSj vpyk "kekZ	%	u;s l`tu ek/;e vkSj fgUnh] jkt dey izdk'ku] ubZ fnYyh
19	MkW0 iho.k euks	%	i=dkfjrk dk lalkj vkSj fgUnh mi U;kl] tokgj iqLrdky;] eFkqjk
20	Ravindra vajpai	:	Communication through the Ages, Publication Society of India, Communication Today, Jaipur
21	Prabhu Jingaran	:	Film Cinematography
22	Angela Philips	:	Good Writing for Journalism, Sage, New Delhi
23	Sajitha jayaprakash	:	Technical Writing, Himalaya Publication, Delhi

24	Edward S Herman	:	The Global Media
25	Esta de Fossad	:	Writing and producing for television and film, Saga Publications Delhi
26	fo'.kqjkt xf<+k	%	tulapkj fl)kar vkSj vuqiz;ksx] jk/kkd".k izdk'ku] ubZ fnYyh
27	lak"k HkVukxj	%	i=dkfjrk %u;k nkSj u;s izfreku] jk/kkd".k izdk'ku] ubZ fnYyh
28	MkW vtq pkSgku	%	ehfM;k dkyhu fgUnh Lo:i vkSj laHkkouk,¡ jkt dey izdk'ku] ubZ fnYyh
29	"kkfyuh tks"kh	%	os i=dkfjrk %u;k ehfM;k u, #>ku] jkt dey izdk'ku] ubZ fnYyh
30	vf[kys"k feJ	%	i=dkfjrk fe"ku ls ehfM;k rd] jkt dey izdk'ku] ubZ fnYyh

LHC5002

fgUnh dFkk; f=ha ¼,sPNd½

orZeku ;qx dFkk; f=j dk gSA Kku&foKku lsy dj lekt dsfd lh Hkh v ax esa dFkk; f=j dk vuqçz;ksx vc cgqr Li'V :i lsgekjs lkeusgSA fgUnh lkfgR; dk v/;;u djusokysNk=ksadksHkh Kku dh uohure~miyfC/k;ksalsifjfpr djkusdsfy, fgUnh dFkk; f=a dsi zkÑui= dksoSfYid :i esaj[kk x;k gSA Nk=ksadksdFkk; f=j vuqçz;ksx lsifjfpr djkusdslkFk mUgsadFkk; f=j ea fgUnh iz;ksx ij {kerk c<kusdh ijs.kk fnykuk ikB;Øe dk mn~ns'; gSA

fgUnh dFkk; f=a

- fgUnh dFkk; f=a %lS)kfUrd ifjp;
- ite[k ifof/k %vkisulksZ lksZ
- bUVjuSV] oc ifÙkdk, a o fgUnh dFkk; f=a
- fgUnh dFkk; f=a dsfofHkUu /kjkry
- fgUnh dFkk; f=a o rduhdh fgUnh

lanHkZ xzaFk %

1	fouhr k lgxy	%	vkt dk ;qx %bUVjuSV ;qx
2	euks fl g	%	vkv ksdFkk; f=j lh[k
3	foukn dqekj feJ k	%	vk/kqfud dFkk; f=j foKku
4	xtqu "kek	%	dFkk; f=j %cSld f"k{kk
5	fo'.kqfiz;k fl g	%	dFkk; f=j dk ifjp;
6	jkt"k dqekj	%	dFkk; f=j ,d vnHkqr vkfo'dkj
7	"kknkc eksyd	%	dFkk; f=j vkSj bl dsvuqçz;ksx
8	uhfr eggrk	%	dFkk; f=j bUVjuSV "kCndks'k
9	jkt xksky fl g tknu	%	dFkk; f=j dsfofo/k vk;ke
10	fo'.kqfiz;k fl g	%	dFkk; f=j uSVofdZx dksZ
11	ih0d0 "kekZ	%	dFkk; f=j ifjiksyu dh i) fr;k;
12	xqkkdj eqys	%	DFkk; f=j D;k gS] jkt dey izdk'ku] ubZfnYyh
13	foukn dqekj feJ	%	dFkk; f=j o lwpuk ikS|ksfxdh "kCndks'k] jkt dey izdk'ku] ubZfnYyh

LHC5003

i;kZoj.kh; fgUnh ¼,sPNd½

i;kZoj.kh; fgUnh dsi\`"B i= esa Nk=ksa dks fgUnh Hkk"kk dsQ\`kogkfjd vuqiz;ksx dsfo"k; esa tkudkjh nh tk,xhA Nk=ksa dks bl ckr ls ifjfpr djk;k tk,xk fd fgUnh ds i;kZoj.kh; iz;ksx fdl rjg ls mUgsa jkstxkj dsfy, volj iznku djrs gSaA bl ds vykok Hkk"kk ds fo/kku fdl rjg ls fgUnh dks jkt Hkk"kk dk ntkZ nsus gSa vkSj jkt Hkk"kk dh dk;kZy; h iz;ksx dseku d fdl rjg dsgSa vkfn dk ifjp; Hkh bl ipsZ ls lhkko gks tk,xkA fgUnh ds fofo/k dk;kZy; h iz;ksx ds lkFk&lkFk fgUnh i=dkfjrk] ehfM;k o tul pkj y[ku rFkk dEI;wVj esa iz;ksx fgUnh dk Hkh ifjp; i;kZoj.kh; fgUnh ds vUrxZr gks tk,xkA

i;kZoj.kh; fgUnh

- dk;kZy; h fgUnh ¼ tudkjh Hkk"kk] lapkj Hkk"kk] jkt Hkk"kk½
- dk;kZy; h fgUnh ¼i= i.k] vky[ku] i= y[ku] lajs.k] fVIi.kh½
- fgUnh dEI;wVj ¼ fjp;] iz;ksx] ifQy f"kaM] bUVjusV½
- i=dkfjrk %Lo:i ,oa fofHkUu ikd kj
- ehfM;k o tul pkj y[ku

lanHkZ xzUFk %

1	ckys"khq iksj frokjh	%	i;kZoj.kh; fgUnh] lsa;q cqd fMiks okjk.klh
2	fot;iky flag	%	dk;kZy; fgUnh] fo"ofo|ky; izdk"ku] okjk.klh
3	MkW Hkksykukfk frokjh	%	jkt Hkk"kk fgUnh] iHkkr izdk"ku] fnYyh
4	MkW jkexksiky flag	%	fgUnh ehfM;k y[ku vkSj vuqokn] ik"oZ] vgenkckn
5	MkW lqxkky{eh	%	i;kZoj.kh; fgUnh % iz/kkxdrk ,oa ifjn";] tokgj iqLrdky;] eFkqjk
6	MkW 'kkrck eukst	%	i=dkfjrk dk tul pkj vkSj fgUnh miU;kl] tokgj iqLrdky;] eFkqjk
7	vehvk 'kkj fuMj	%	lekpkj laiknu vkSj vuqkn] tokgj iqLrdky;] eFkqjk
8	MkW gfjeksgu	%	lwpukØkfr vkSj fo"oHkk"kk fgUnh] tokgj iqLrdky;] eFkqjk
9	MkW gfjeksgu	%	vk/kqfud lapkj vkSj fgUnh] tokgj iqLrdky;] eFkqjk
10	,u0lh0 ia	%	ehfM;k y[ku dsfl)kar] tokgj iqLrdky;] eFkqjk
11	MkW ek/kko lksuVdsz	%	i;kZoj.kh; fgUnh] yksdHkkjrh izdk"ku] bykgkckn
12	MkW jke izdk"k	%	i;kZoj.kh; fgUnh % lajpuk vkSj iz;ksx] jk/kkd\`".k izdk"ku] ubZ fnYyh
13	MkW d\`".kdqekj xks Ms	%	i;kZoj.kh; fgUnh dh ubZ Hkwfedk
14	ih0 yrk	%	i;kZoj.kh; fgUnh] yksdHkkjrh izdk"ku] bykgkckn

LHC5004

fgUnh f"k{k.k ¼,sfPNd½

fgUnh HkK'kk ds oSKkfud f"k{k.k ds Nk=ksa dks l {ke djus dk i z;kl fd;k tk;sxkA fgUnh f"k{k.k dh fof/k;ksa l e>us i gyk mn~ns"; gS fQj f"k{k.k dk bfrgkl Hkh ost kuk A HkK'kkbZ f"k{k.k dh ckjhfd;ksa dks l e>rs gq i Fke] f}rh; v kS rr`rh; HkK'kk ds rkS ij fgUnh HkK'kk dks i<kus ds rjhdk] f"k{k.k ds pkjksa dkS"kyksa dks fgUnh f"k{k.k esa Hkh i z;ks esa yku s dh v ko";drk v kfn l s Nk= v oxr gksaxsA Nk=ksa dks fgUnh f"k{k.k ds lkFk tMqha gqbZ jksfs xkj l aHkkoukv ksa dh t kudkjh feysxhA

fgUnh f"k{k.k

- fgUnh f"k{k.k dh fofHkUu fof/k;k¡ & fuxeukRed o v kxeukRed] l äy"k.kkRed o fo"y"k.kkRed] oLrqfof/k] n`'Vka fof/k] dFkk fof/k ,oa O;k[;ku fof/k
- iž ukRrj fof/k ¼dq jkrh fof/k½] "kksk fof/k] i kstsDV fof/k] MkYVu ;kstuk ,oa o/kkZ ;kstuk
- "kS{kd fof/k;ksa ds fodkl dk bfrgkl %fgUnh f"k{k.k esa f}rh; HkK'kk v kS i Fke HkK'kkbZ f"k{k.k
- v kfnd kyhu f"k{k.k ,oa e/;dkyhu f"k{k.k
- mUuhl oha "krkCnh dk f"k{k.k & v fuok;Z f"k{k.k
- chl oha "krkCnh dk f"k{k.k

l aHkZ xzaFk %

1	v kpk;Z jkepUnz "kqDy oekZ	%	v PNh fgUnh] jkt dey izdk'ku] ubZ fnYyh
2	fd "kksjhyky "kekZ	%	HkK'kk ek/;e rFkk izdk'ku
3	,u0 ih0 dVVu fiYyS	%	HkK'kk i z;ks
4	johUnzukFk JhokLro	%	HkK'kk f"k{k.k] okk.kh izdk'ku] ubZ fnYyh
5	eukjek xqIrk	%	HkK'kk f"k{k.k %fl) kar v kS i z;ks] dsanz; fganh l aLFkku] v kxjk
6	dso oh0 oh0 oh0 ,y0 ujfl ag jko	%	HkK'kk f"k{k.k %i jh{k.k rFkk eW;kadu] dfyadk] fnYyh
7	okbZ oadVsoj jko	%	HkK'kk foKku v kS HkK'kk f"k{k.k] v Uu i wkkZ izdk'ku] dkui qj
8	fnyhi fl ag	%	HkK'kk] l kfgR; v kS l aLd`fr f"k{k.k] okk.kh izdk'ku] ubZ fnYyh
9	v kedkj fl ag nsky	%	njwLFk f"k{k.k esa HkK'kk f"k{k.k
10	dS k'kpanz HkkfV;k	%	fgUnh HkK'kk f"k{k.k
11	oh0 ,u0 frokjh	%	fgUnh HkK'kk
12	gjnso ckgjh	%	fgUnh dk l kekU; i z;ks
13	oh0 oh0 gsMs	%	fgUnh dsfyas i z;ks
14	,y0 ,u0 "kekZ	%	fgUnh l apuk
15	fd "kksjhyky ckt isb:	%	fgUnh "kCnkuq"kkl u
16	l wjZ izkn nh{kr	%	i z;ks ueyd fgUnh] HkkjrÞ cqd l sUVj] y[kuÅ
17	gjnso ckgjh	%	"kq) fgUnh
18	dso dso xksokeh	%	O;kdj f.kd fgUnh v kS jpuk
19	dso dso jRrw	%	O;kdj f.kd fgUnh
20	i wjupn V.Mu	%	O;kdj f.kd fgUnh
21	l qHkk'k pUnz xqIr	%	fgUnh f"k{k.k] [kaa l kfgR; dsUnz
22	Jack C Richards & Theodore S Rodgers	:	Approaches and Methods of language teaching
23	Little Wood		Communicative Language Teaching, Longman, London
24	Richard C Jack	:	(Ed.), Error Anlysis, Longman
25	Robert Lado	:	Language Teaching
26	C-DAC, Pune	:	Leela (Set of Com. Web/Cassetes)

LHC5005

nfyr v/;;u ¼sSPNd½

nfyr v/;;u

- nfyr %vo/kkj.kk ¼Hkkjr dh fof"kV tkfr xr o oxZ r voLFkk&,sfrgkfld ifjizs{;½
- nfyr lkfgR; dh vo/kkj.kk] ifjHkk"kk o nfyr lkfgR; dk lkekftd&jktuhfrd v/;;u
- Hkkjrh; nfyr lkfgR; dk mnHko o fodkl ¼bfrgkl&fo"ks'k lanHkZ ejkBh nfyr lkfgR;½
- fgUnh nfyr lkfgR; dk bfrgkl
- fof"kV dfr;ksa dk v/;;u %¼tBwu& vkse izdk'k ckYehfd] ifjf"kV& fxfjjkt fd"kksj] mBkbZ hj& y{e.k xk;dokM½

1	Eleanor Zelliot	:	from Untouchable to Dalit, Mnohar
2	Ghanashyam Sha	:	Dalit AIdentity and Politics, Saga Delhi
3	Harold R Issac	:	Indias Ex-Untouchables, Harper & Row
4	S M Micheal	:	Dalit in Modern India: Vision & Values, Vistar
5	Y Chinna Rao	:	Writing Dalit History and other Essays, Manohar
6	V.K. Krishna Iyer	:	Dr. Ambedkar & Dalit Future, B.R. Publication
7	Nandu Ram	:	Ambedkar, Dalit a& Buddism, Mankak
8	Narayan Das	:	Abmbedkar, Ghandhi and Empowerment of Dalits, ABD Publication
9	Gail Omvet	:	Dalit Vision, Orient Blackswan
10	S.K. Thorat	:	Dalit in India, Search for a common destiny, Saga
11	Kanch Ilaiah	:	Post – Hindu India: A discourse in Dalit-Bahujan,Socio-spiritual and Scientific revolution, Saga
12	Tamo, Nibang & MC Behera	:	Nadeem HasnainTribal India, Harnam
13	Govindachandra Rath	:	Tribal Development in India: The contemporary debate, Saga
14	Sunil Janah	:	The Tribals of India, Oxford
15	Priyaram M Chaco	:	Tribal Communities and Social Change, Oxford
16	G Stanley & Jay Kumar	:	Tribals from tradition to transition, M D Publications
17	L P Vidhyardhi &B K Ray	:	Tribal culture in India, Concept
18	Devi K Uma	:	Tribal Rights in India, Eastern Corporation
19	K Mann		Tribal Women: on the threshold of 21st century, M D Publication
20	Munni Lakara	:	Tribal India, Communities, Custom & Cultures and Dominant
21	vkse izdk'k ckYehfd	%	nfyr lkfgR; dk lkSan;ZkkL=] jk/kkd`".k izdk'ku] ubZ fnYyh
22	eksgunkl uSfe"kjk;	%	Hkkjrh; nfyr vkUnksyu dk bfrgkl ¼pkj [k.Mksa esa½ jk/kkd`".k izdk'ku] ubZ fnYyh
23	MkW ,y0 th0 ef.ke	%	vkS cksck lkgsc vkEcsMdj usd gk ¼ikp [k.Mksa esa½ jk/kkd`".k izdk'ku] ubZ fnYyh
24	vkse izdk'k ckYehfd	%	nfyr lkfgR; %vuqHko] la?k"kZ ,oa ;FkkFkZ jk/kkd`".k izdk'ku] ubZ fnYyh
25	vkse izdk'k ckYehfd	%	tBwu ¼nks Hkkxksa esa½ jk/kkd`".k izdk'ku] ubZ fnYyh
26	fxfjjkt fd"kksj	%	ifjf"kV] jk/kkd`".k izdk'ku] ubZ fnYyh

LHC5006

efgykys[ku ¼,sfPNd½

efgyk ys[ku lexz:i ls efgyk vkUnksyu dh bdkbZ ds:i esa gS A efgyk vkUnksyu dh eny /kkj.kk iq#'k vkSj fL=;ksa ds leku lkekftd] jktuhfrd vkSj vkfFkZd vf/kdkj gksus ds:i esa gS A bl fopkj lj.kh esa L=h dks iq#'k ds cjkcj le>us ij tksj fn;k x;k gS A nks;e ntsZ dh ukxfjdrk ls vlgefr ds lkFk efgyk vkUnksyu bl ckr dh Hkh ekax djrk gS fd ftu lkekftd vkpkj&fopkjksa dh cqfu;kn L=h&iq#'k Hksn ds vk/kkj ij gS mUgsa lekIr fd;k tk;s A bu efgyk vf/kdkjksa dh i{k/kjrk djrk gqvk lkfgR; efgyk ys[ku ds nk;js esa vkrk gS A fofHkUu iq#'kksa o efgykvksa }kjk fy[ks x;s lkfgR; dk eWw;kadu L=hoknh fopkjksa ds vk/kkj ij djuk L=hoknh vkykspuk ds nk;js esa vkrk gS A bl oSfYid i= esa Nk=ksa dks efgyk ys[ku dh lS)kfUrdh o nk'kZfud vk/kkjHkwfe ls ifjfpr djkus ds lkFk gh L=hoknh vkykspuk ds eWw;ksa dks fu/kkZfjr djus esa l{ke djus dk iz;kl fd;k tk;sxkA

efgyk ys[ku

- L=hoknh vkUnksyu dk ifjp;
- L=hoknh ¼efgyk½ ys[ku dh nk'kZfud i`'BHkwfe
- L=hoknh vkUnksyu vkSj fgUnh lkfgR;
- L=hoknh vkykspuk ds eWw;
- fgUnh lkfgR; dh fofHkUu ys[kdkvksa dk L=hoknh vkykspuk dh n`f"V ls eWw;kadu ¼d`".kk lkscrh] eUuw Hk.Mkjh] m'kk fiz;aonk] vukfedk½

laHkZ xzUFk %

1	fy;ksrkWyLrkW	%	L=h vkSj iq#'k] lLrk lkfgR; e.My
2	jktfd"kksj	%	L=h vkSj iq#'k % iqufoZpkj] ok.kh izdk'ku] ubZ fnYyh
3	eUeFkukFk	%	L=h iq#'k lEcU/kksa dk jkseka dkjh bfrgkl] ok.kh izdk'ku] ubZ fnYyh
4	izdk'k ljks ¼ laikndh½	%	L=h iq#'k lEcU/kksa ds vkbus esa ekuo jkd"k] Lojkt izdk'ku] fnYyh
5	jktsUnz ;kno	%	firlRrk ds u;s:i] jktdey izdk'ku] ubZ fnYyh
6	vukfedk	%	L=hRo dk ekufp=
7	byhuk flag ¼ laikndh½	%	lkaLd`fr ds chp
8	txnh'k prqosZnh	%	L=hoknh lkfgR; foe"kZ vukfedk izdk'ku
9	{kek 'kekZ	%	L=hoknh foe'kZ % lekt vkSj lkfgR;] jk/kk—".k çdk'ku] ubZ fnYyh
10	jsks dLrokj	%	L=h fparu dh pqukSfr;k] jktdey çdk'ku] ubZ fnYyh
11	çHkk [ksrku	%	mifuos'k esa L=h] jktdey çdk'ku] ubZ fnYyh
12	jkts'k ;kno	%	vrhr gksrh lnh vkSj L=h dk Hkfo";] jktdey çdk'ku] ubZ fnYyh
13	vjfoUn tSu	%	vkSjr vfLrRo vkSj vfLerk] jktdey çdk'ku] ubZ fnYyh
14	esjh okWyLVu ØkW¶V	%	L=h vf/kdkjksa ds vkSfpR; lk/ku] jktdey çdk'ku] ubZ fnYyh
15	jkts'k ;kno	%	vkSjr mÙkjdFkk] jktdey çdk'ku] ubZ fnYyh
16	e`.kky ik.Ms	%	ifjf/k ij L=h] jktdey çdk'ku] ubZ fnYyh
17	jksfg.kh vxzoky	%	fganh mi U;kl dk L=h ikB] jktdey çdk'ku] ubZ fnYyh
18	jksfg.kh vxzoky	%	L=h ys[ku : Lolu vkSj laLYi] jktdey çdk'ku] ubZ fnYyh
19	pk: xqIrk	%	L=hRo lsfgaLÙo rd] jktdey çdk'ku] ubZ fnYyh
20	nq;Z;a	%	fL=;k : inZs ls çtkra= rd] jktdey çdk'ku] ubZ fnYyh

LHC5007

fo"o'k lkfgR; dk,j ¼,sPNd½

fo"ks'k lkfgR;dkj uked ikB~;Øe esa fofHkUu fgUnh lkfgR;dkjksa dk fo"ks'k v/;;u djuk vHkh"V gSA blesa fof"k"V lkfgR;dkj dh d`fr;ksa dsfo"ys'k.k dslkFk d`frdkj dslek; o mudh ,sfrgkfld fLFkfr;ksa dscksjs esa Nk=ksa dks iwoZ:i ls ifjfpr djk;k tk;sxkA fo"ks'k lkfgR;dkj dspqust kusdsek;usgSfd dghaos;qx iorZd gksa dghamUgsafd lh fo"ks'k lEeku lsfoHkwf"kr fd;k x;k gksvkSj dghamudh vfeV Nki fgUnh lkfgR; txr esa yx x;h gksA bu eqn~nksa dks/;ku esa j[kdj Nk=ksa dh #fp dsvuqi vius eu&ilan lkfgR;dkj v/;;u dsfy, pqust k;saxsA

fo"ks'k lkfgR;dkj

- fof"k"V lkfgR;dkjksa dh ,sfrgkfld i`'BHkwfe
- pqsgq ikB~;d lkfgR;dkj dk laf{kIr thou ifjp;
- fgUnh lkfgR; esamDr lkfgR;dkj dk ;ksxnku
- fof"k"V lkfgR;dkj dh izfrfuf/k d`fr;ksa dk v/;;u
- fo"ks'k d`fr;ksa dk lkekftd ;FkkFkZ=h; vkLoknu

laHkZ xzUFk %

1	jkefoykl "kekZ	%	fujkyk jktdey izdk"ku] ubZ fnYyh
2	jkefoykl "kekZ	%	fujkyk dh lkfgR; lk/kuk ¼rhu [k.Mksa esa½ jktdey izdk"ku] ubZ fnYyh
3	jkefoykl "kekZ	%	egkohj izlkn f}osnh vkSj fgUnh uotkxj.k] jktdey izdk"ku] ubZ fnYyh
4	jkefoykl "kekZ	%	Hkkjrsanq gfj"pUnz] jktdey izdk"ku] ubZ fnYyh
5	nwljukFk flag	%	egknsoh] jktdey izdk"ku] ubZ fnYyh
6	v"kksd pØ/kj	%	eqfDrcks/k dh dfork
7	v"kksd pØ/kj	%	eqfDrcks/k dh dforkbZ
8	t;fr izlkn ukSfV;ky	%	lkfgR; foe"kZ fdrkc ?kj izdk"ku] ubZ fnYyh

LHC5008

vuwfnr Hkkjrh; lkfgR;

Hkkjr ds LkkaLd`frd ifjos'k dks fof"kÔV cukus esa vuwfnr jpukvksa dk vHkwriwoZ ;ksxnku jgk gSA Hkkjrh; lkaLd`frd ifjos'k dks lexzrk ls le>us ds fy, vuwfnr Hkkjrh; jpukvksa dk v/;;u Nk=ksa ds fy, vfuok;Z gSA bl vfuok;Zrk dk dkj.k ;g gS fd ;g v/;;u vyx&vyx Hkk"kkvksa ds fofHkUu Hkkoc¨/kksa ,oa fopkjksa ds vUrlZEcU/kksa dk rkfdZd fu/kkZj.k ^Hkkjrh;rk* dk lk{kkRdkj djkrk gSA bl [k.M esa ;wjksi nks Hkkjrh; lkfgR;dkj vkj0,u0oh0dqi] ;w0vkj0 vuarewfrZ vejdkar] egk'osrk nsoh vkfn dk v/;;u visf{kr gSA

vuwfnr Hkkjrh; lkfgR;

- vuwfnr Hkkjrh; lkfgR; dk laf{kIr ifjp;
- pquh gqbZ vuwfnr jpukvksa dk v/;;u& vkj0,u0oh0 dqi ¼vuqokn& raxe f.kvEek½ dk laxzg ^,d /kjrh ,d vkleku ,d lwjt* ls nl dfork
- miU;kl %lLadkj ¼;w0vkj0 vuarewfrZ½
- dgkuh& d".k}hn"kh ¼egk'osrk nsoh½
- Hkk"k.k& v{kjksa dh vtej ¼vejdkar½ ls 10 Hkk"k.k

lanHkZ xzaFk %

1	Hkkjrh; ukVîk fl)kar ,oa fdj.kcsyk	%	Hkkjrh; Hkk"kkvksa ls vuqfnr dh lelkef;d "kkqnd fnYyh
2	Hkkjrh; ukVîk fl)kar ,oa vkpkfrd xgrk	%	vuqfnr dh Ok`ogkfjd lef;;k "kkqnd fnYyh
3	,u0bZ fo"oukFk v¸;j ¼vuqokn½	%	Hkk"kk;] lef;;k Lokfr izdk"ku] fÙk=e
4	vej flag o/kku ¼lEikfnr½	%	vuqfnr vkSj laLd`fr] fÙkiBh ,.M lUl] vgenkckn
5	dçq vxzoky	%	vuqfnr f"kYi&lSedkyhu laHkZ lfgR; lgdkj] fnYyh
6	dsÜlh0dqekju ,oa izeksn dkSjoiz ¼lEikfnr½	%	bDdhl ohaa lnh esa vuqokn %n"kk ,oa fn"kk] tokgj iqLrdky;] eFkqjk
7	MkW vej flag o/kku	%	ey;kye lkfgR; vkSj laLd`fr] vfHk"ksd izdk"ku] fnYyh
8	lq/kkäkqpr qsZh	%	bUnzqçksÜk] ,u0ch0Vh0] ubZ fnYyh
9	,u0bZ fo"oukFk v¸;j	%	jkejkt cgknqj] ,u0oh0Vh0 ubZ fnYyh
10	Hkkjrh fo|kFkhZ	%	eNqokjs$ lkfgR; vdkneh] ubZ fnYyh
11	ih0 d".ku	%	dFkk ,d izkUr dh] Hkkjrh; KkuihB] ubZ fnYyh
12	,u0 dqÙkqfiYyS	%	dkye] Hkkjrh; KkuihB] ubZ fnYyh
13	jkd"k dkfy;k	%	/kku] ,u0ch0Vh0] ubZ fnYyh
14	t;"kadj izlkn	%	dkek;uh ¼vuq0½ ch0,l0lkguh] ;wcks/k izdk"ku
15	t;"kadj izlkn	%	dkek;uh ¼vuq0½ gfjgju mf..kRrku] Mh0Lh0 cqDl] dksV;e
16	t;"kadj izlkn	%	dkek;uh ¼vuq0½ Jh/kj lsuu] lkfgR; vdkneh] ubZ fnYyh
17	v"kksd flUgk	%	mej [k¸;ke dh #ckb;kj lkFkZd izdk"ku] ubZ fnYyh
18	eksgu d".k cksgjk	%	bfy;V vkSj fgUnh lkfgR; fpUru] ok.kh izdk"ku] ubZ fnYyh
19	jkeNcyh f=ikBh	%	;w0th0lh0 dsuohure ikB;Øe ds vuqlkj Hkkjrh; lkfgR; n"kk ds leLr fo"ofo|ky;ksa ds Lukrd¨Ùkj Lrj ds laiw.kZ ikB;Øe] ok.kh izdk"ku] ubZ fnYyh

LHC5009

lkfgfR;d vuqokn ¼fØfMV 4½

lkfgfR;d vuqokn uked ikB~; lkexzh esa fgUnh lkfgR; dks fofHkUu lkfgfR;d vuqoknksa dk fo"ks'k v/;;u djuk vHkh'V gS bl izdkj = esa fof"k'V lkfgfR;d vuqokn dh euw psuk dks lkFk ml dsmn; dh ,sfrgkfld ifjfLFkfr;ksa dk v/;;u Nk=ksa dks djk;k tk;sxkA bl ds vykok fgUnh lkfgR; ds lexz bfrgkl esa fof"k'V lkfgR; vuqokn dh D;k Hkwfedk ;k vofLFkfr jgh gS bl ls Hkh Nk=ksa dks ifjfpr djk;k tk;sxkA

lkfgR; vuqokn

- fo"ks'k lkfgfR;d vuqokn dh ,sfrgkfld ifjfLFkfr;k¡
- lkfgfR;d vuqokn ds mnHko ds dkj.k % Hkkjrh; ,oa ik'pkR; vuqoknksa dk lS)kfUr ifjp;
- lkfgfR;d vuqoknksa dh fof"k'Vrk
- fofHkUu iz;ksx;k¡
- fgUnh lkfgR; ds lkfgR; fofHkUu lkfgfR;d vuqokn dk eWy;kadu

lanHkZ xzaFk %

1	eqj'k xxZ	%	le; vkSj lkfgR; cksck dfu'dk ifCy"kl
2	uan¡ykj scht ik	%	Nk;kokn] jktdey izdk"ku] ubZ fnYyh
3	fot;eksgu flag	%	le; vkSj lkfgR;] jk/kk d`'.k izdk"ku] ubZ fnYyh
4	J hykyk "kqDy	%	dkO; lkfgR; ppkZ Hkkjr] jktdey izdk"ku] ubZ fnYyh
5	pUnzdk Bkdqj	%	fgUnh lkfgR; ds fofo/k i{k] vkyksd izdk"ku
6	x.ki fr pUnz xqIr	%	fgUnh lkfgR; % ijaijk] fooknvkSj u;s leh{kk
7	lqjs'k egšojh	%	Lokra=;ksRrj fgUnh HkkSfrd lkfgR;] vVykfVd ifCyd'ku
8	jkeLo:i prqosZnh	%	ledkyhu fgUnh lkfgR; % fofo/k ifjn`";] jktdey çdk'ku] ubZ fnYyh
9	uafd "kksj frokjh	%	pkn dk vNw vd] jk/kkd`'.k çdk'ku] ubZ fnYyh
10	uj'k pazprqosZnh	%	pkn dk Qkj h vd] jk/kkd`'.k çdk'ku] ubZ fnYyh
11	;"ki ky	%	;"kiky dk folyo] ykdHkkjrh çdk'ku] ubZ fnYyh
12	lqdkk Mkyfe;k@l a ho dqekj ¼laik½	%	ckykckS/kuh] jktdey izdk"ku] ubZ fnYyh
13	"kf"ki Hkk pkSkjh	%	Lokra;kskj fgaUh dsfodkl esa dYiuk dsnksn'kd] jktdey izdk"ku] ubZ fnYyh

LHC5010

fQYe v/;;u ¼izk;ksfxd½

vk/kqfud ;qx dh lwpukRed fo/kk ds :i esa fQYe dk egÙo vlafnX/k gSA fQYeksa us lkfgR; dk vkil esa cgqr xgjk vkSj ykHkizn lEca/k gSA nksuksa gh lwpukRed fo/kk,¡ euq"; thou dks lekt ds Lrj ij le>us dk iz;kl djrh gSaA fgUnh lkfgR; ds Nk=ksa dks fQYe v/;;u ds ek/;e ls vk/kqfud fo/kk ls fofHkUu Lrjksa ij ifjfpr djk;k tk;sxkA rduhdh Lrj ij fQYeksa dks le>us ds lkFk fQYe fdl rjg lekt ls lEcU/k LFkkfir djrh gS bl v/;;u dk fof"k"V fcUnq gSA

fQYe v/;;u

- fQYe % mn~Hko vkSj fodkl
- fQYe dh Hkk"kk
- fgUnh flusek dk bfrgkl
- fQYe vkykspuk
- fQYe % lekt dk ifjis{;

lanHkZ xzUFk %

1	tojheYy ikj[k	%	fgUnh flusek dk lekt "kkL=] xzaFk f"kYih] ubZ fnYyh
2	tojheYy ikj[k	%	yksdfiz; flusek vkSj lkekftd ;FkkFkZ] xzaFk f"kYih] fnYyh
3	jkgh eklwe jtk	%	flusek vkSj laLd`fr] jktdey izdk"ku] ubZ fnYyh
4	fpnkuan xqIr	%	lR;ftr jk; dk flusek] u'kuy cqd VªLV
5		%	fQYe dk lkSUn;Z"kkL= vkSj Hkkjrh; flusek] f"kYik;u] ubZ fnYyh
6	dqynhi flUgk	%	fQYe funZs'ku] jk/kk d`".k izdk"ku] ubZ fnYyh
7	vuqie vks>k	%	Hkkjrh; flus fl)kar] jk/kk d`".k izdk"ku] ubZ fnYyh
8	tkosn v[rj	%	flusek ds ckjs esa] jktdey izdk"ku] ubZ fnYyh
9	jktsUnz ;kno	%	lkjk vkdk"k %iVdFkk] jktdey izdk"ku] ubZ fnYyh
10	euksgj ";ke tks'kh	%	iVdFkk y{ku %,d ifjp;] jktdey izdk"ku] ubZ fnYyh
11	vlxj otkgr	%	Q`ogkfjd funsZ'kdk %iVdFkk y{ku] jktdey izdk"ku] ubZ fnYyh
12	foiqy dqekj	%	fQYe dh dgkuh dSls fy[ksa] jktdey izdk"ku] ubZ fnYyh
13	MkW euksj iHkkdj	%	Qhpj y{ku %Lo:i vkSj f"kYi] jktdey izdk"ku] ubZ fnYyh
14	vlxj otkgr	%	Vsyhfotu y{ku] jktdey izdk"ku] ubZ fnYyh
15	vlxj otkgr	%	Q`ogkfjd funsZ'kdk %iVdFkk y{ku] jktdey izdk"ku] ubZ fnYyh
16	foiqy dqekj	%	fQYe dh dgkuh dSls fy[ksa jktdey izdk"ku] ubZ fnYyh
17	MkW ijwupan V.Mu	%	Qhpj y{ku
18	ih0dqekj vk;Z	%	Qhpj y{ku] fo|k fogkj] fnYyh
19	euksgj ";ke tks'kh	%	iVdFkk y{ku %,d ifjp;] jktdey izdk"ku] fnYyh
20	dqequ ukxj	%	Vsyhfotu y{ku %fl)kar vkSj iz;ksx

LHC5011

Mk; Likjsk@foLFkkiu v/;;u ¼bSPNd½

euq"; lekt dsmn; dslkFk gh foLFkkiu tqMk gqvk gS vkthfodk lsysdj jktuhfr rd lHkh fdlh u fdlh Lrj ij foLFkkiu dsdkj.k curs gSA ysfdu foLFkkfir gksusdscko t w euq"; viuh Hkk'kk] viusiwoZrhZ lekt lsfdlh u fdlh :i easa tqMk gh jgrk gS blI tqMko dh dbZ ckj lkaLd`frd Q,sfr;k Hkh n'kusdksfeyrh gSA Hkkjr lscgkj bl izdkj lsfoLFkkfir cgqr gS tks fgUnh dksgh viuh tcku ds:i eaxzg easi;zks djrsvk jgsgSa vkS mudk lkfgR; Hkh fgUnh gS bl rjg dh ltZuk foLFkkiu lkfgR; dsnk;js eav krh gS bl lst qMsgq fofHkUu vk;keksadk v/;;u izLrqr oSdfYid iz"ui= easv HkhiV gSA

MkW;Likjsk v/;;u

- izoklh lkfgR; dh vo/kkj.kk
- izoklh lkfgR; dh lkekft d eWY; oRrk
- izoklh lkfgR; dk eq[; /kkjk dsl kfgR; lsv arj@fof"k'Vrk
- izoklh lkfgR; dk fof"k'V Hkk'kk'kkL=h; eWY;kadu
- izoklh lkfgR; dk vkykspukRed eWY;kadu

laHkZ xzaFk %

1	v jfoUn ekgu	%	izoklh egnjwksadh ihMk] jktdey izdk'ku] ubZ fnYyh
2	ifr Hkk lfjks	%	izoklh dh dye lS jktdey izdk'ku] ubZ fnYyh
3	foeyšk dkfr oek	%	ljhuke dslkaLd`frd fgUnh lkfgR;] jk/kkd`".k izdk'ku] ubZ fnYyh
4	jke"kj.k tks'kh@jktho jatu ¼la	%	Hkkjrh; Mk;Likjsk] fofo/k vk;ke] jktdey izdk'ku] ubZ fnYyh

LHC5012

vkfnoklh lkfgR; v/;;u ¼oSdfYid½

vkfnoklh lkfgR; eas fofHkUu tu&tkrh; lewgksa }kjk fyf[kr ;k okfpd] ftl rjg ls Hkh lkfgR; dk l`tu gqvk gS] izLrqr ikB~;Øe eas mldk v/;;u fd;k tkuk gSA blls v/;;u eas vkfnoklh ;ksa ds thou ij fy[ks x;s lkfgR; dks Hkh "kkfey dj ldrs gSA vkfnoklh lkfgR; v/;;u eas vkfnoklh lkfgR; ds fofHkUu vk;keksa o i{kksa ij fopkj djuk vHkh"V gSA

vkfnoklh lkfgR; v/;;u

- vkfnoklh lkfgR; dh vo/kkj.kk o ifjHkk"kk
- vkfnoklh lkfgR; ds lksans;Z ijaijk o HkkIk'kd laLdkj ¼okfpd@fyf[kr½
- vkfnoklh lkfgR; dk lekftd v/;;u
- eq[;/kkjk ds lkfgR; lsa vkfnoklh lkfgR; dk varj o fo"ys"k.k
- vkfnoklh lkfgR; ds ewY;kadu dh izfof/k

lanHkZ xzaFk %

1	egk"osrk nsoh	%	taxy ds nkosnkj] jkt dey izdk"ku] ubZ fnYyh
2	"kkuh	%	"kky cusdh nhi] jkt dey izdk"ku] ubZ fnYyh
3	ch0Mh0 "kekZ	%	cslgkjk o ixMaMh
4	rstsUæ	%	dkyk ikFkj
5	xksiky jkt ifjofr	%	tc ikuh tkx mBk
6	gjhjke ehuk	%	nwljh ijsrh
7	gjhjke ehuk	%	taxy taxy tfy;kokyk
8	xkihukFk egkUrh	%	ekVh eVky] lkfgR; vdkneh] fnYyh
9	ufnuh lqaj	%	xqykcksa dh ryk"k
10	oh0Mh0 "kekZ	%	VkWsokdkads dk vkW bfrgkl
11	gjh ykyk "kkSyk	%	cLrj dk eqfDr laxzke
12	unhe glu$	%	tutkrh; Hkkjr
13	jke"kj.k tks'kh	%	vkfnoklh lekt vkSj f"k{kk] jkt deyizdk"ku] ubZ fnYyh
14	jke"kj.k tks'kh	%	vkneh] cSy vkSj liusa] jkt deyizdk"ku] ubZ fnYyh
15	K.S.Singh	%	The Tribal Situation in India
16	jef.kdk xqIrk	%	vkfnoklh "kkSZ, oa fonzksg] jk/kkd`".k izdk"ku] ubZ fnYyh
17	jef.kdk xqIrk	%	vkfnoklh fodkl ls foLFkkiu rd] jk/kkd`".k izdk"ku] ubZ fnYyh
18	jef.kdk xqIrk	%	vkfnoklh lkfgR; ;k=k] jk/kkd`".k izdk"ku] ubZ fnYyh
19	jef.kdk xqIrk	%	vkfnoklh dkSu] jk/kkd`".k izdk"ku] ubZ fnYyh
20	gfjgj oS".ko	%	cLrj dh vkfnoklh ,oa yksd gLrf"kYi ijEijk] jk/kkd`".k izdk"ku] ubZ fnYyh

LHC5013

yksd lkfgR; ¼,sfPNd½

yksd lsvk'k; lekt dsml oxZ ls gS ftldk viuk gh jhfr&fjokt] laLdkj o lkfgR; gksrk gS vkS eq[; /kkjk ls tksnjw jgrs gSA mudk lkfgR; okfpd T;knk gksrk gS vkS mUgsa i<uk&fy[kuk de gh vkrk gSA nšk Hkk'kkvksa dh Q;fDr cksy;ksa mudsvkpkjkuqdBkkukao lkfgfR;d xfrfof/k;ksa esa lekfgr gSA mUgsa ladfyr djuk rksnjw dgha vkpj.k dsrkS ij og lkfgR; nšk dh veW; lEifRr gksk gSA lkfgR; dsfo|kFkhZ,sa s yksd ,oa mudsa}kjk lftr lkfgR; dk v/;;u vo"; dj ldasvkS eq[;/kkjk lkfgR; lsml dk rkyesy fcBk;saA bl ikB;&fo'k; esa yksd lkfgR; dsfofHkUu i{kksa lsNk=ksa dks ifjfpr djk;k tk;sxkA yksd lkfgR; dk eq[;/kkjk dslkfgR; dslkFk D;k fj"rk gS bl izu ij Hkh fopkj fd;k tk;sxkA yksd lkfgR; dseW;kadu dsD;k vk/kkj gksa Nk=ksa dksmulsHkh ifjfpr djk;k tk;sxkA

yksd lkfgR;

- yksd lkfgR; dh vo/kkj.kk
- yksd lkfgR; dk lksa ijaijk o Hkkf'kd lapuk ¼okfpd @fyf[kr½
- yksd lkfgR; dk lkekftd vk/kkj
- yksd lkfgR; dk eq[;/kkjk dslkfgR; ij izHkko o eq[;/kkjk dslkfgR; dk yksd lkfgR; ij izHkko
- yksd lkfgR; dseW;kadu dh izfof/k

lanHkZ xzUFk %

1	gjhjke ;kno	%	yksd lkfgR;] ckgjk izdk'ku] t;iqj
2	MkWa Yiuk flg@MkWa v"kksd eM	%	yksd lkfgR; vkS lalÑfr dk ortZku Lo:i] okMe; cqDl] vyhx<
2	MkWa fnušoj iz kn	%	yksd lkfgR; vkS lalÑfr
3	fo'.kqjkuk fMfy;k	%	tu"kfDr dk yksd lkfgR;] vk;Zizdk'ku e.My] fnYyh
4	d'.knso mik/;k;	%	yksd lkfgR; dh Hkwfedk] lkfgR; Hkou] byykgkckn
5	e/kqmi kšVl	%	czt yksd lkfgR;] baqizdk'ku] vyhx<
6		%	vo/kh dk yksd lkfgR;] uškuy ifCyf"kax gkml] fnYyh
7	eukgj "kekZ	%	yksd lkfgR; dh lkaLÑfrd ijaijk
8	"kkakjke nškeq[k foey	%	yksdepa dsi qjk'kk
9	gfjnjw HkVVk "kS ršk	%	Hkk'kk vkS ml dk lkfgR;] fgUnh laLFkku] y[kuÅ
10	okipj.kk egra	%	vle dscksjxhr] deyd qkjh QkmaMšku] vle